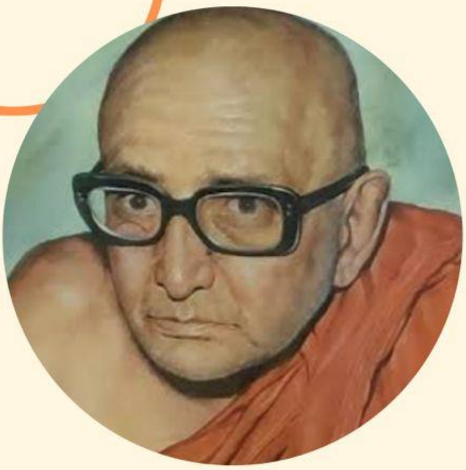

डॉ. भदन्त आनन्द कौसल्यायन

पालि – हिंदी शब्दकोश

पालि – हिंदी शब्दकोश संक्षिप्त परिचय

आदरणीय भदन्त आनन्द कौसल्यायनजी द्वारा रचित पालि-हिंदी कोश का यह डिजिटल संस्करण है। पालि भाषा के छात्रों के लिए यह एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण कोश रहा है। किंतु अब तक यह कोश केवल पुस्तक रूप में उपलब्ध था।

डिजिटल रूप में इस पुस्तक की PDF आवृत्ति उपलब्ध तो है, लेकिन यह scanned copy होने के कारण इसमें शब्दों को आसानी से ढूँढना संभव नहीं हो पाता। इस कमी को ध्यान में रखते हुए प्रस्तुत पालि-हिंदी कोश का यह डिजिटल संस्करण प्रस्तुत किया गया है, इसी आशा के साथ कि पालि भाषा के छात्र इसे आसानी से अपने मोबाईल फोन अथवा कंप्यूटर में पढ़ सकेंगे और शब्दों के अर्थों को भी आसानी से ढूँढ पाएंगे।

संक्षेप सूची और कुछ टिप्पणियां

इस पालि हिंदी कोश में निम्नलिखित प्रकार के शब्दों का संकलन है। हरेक शब्द के पश्चात उस शब्द की श्रेणी को कोष्ठक में लिखा गया है। जैसे की – **नर** (पु.), **माला** (स्त्री.), **गच्छति** (क्रि.) आदि।

अ. = अव्यय

पु. = पुल्लिंग संज्ञा

स्त्री. = स्त्रीलिंग संज्ञा

नपुं = नपुंसकलिंग संज्ञा

सं. = संख्या

सर्व. = सर्वनाम

वि. = विशेषण

क्रि.वि. = क्रिया विशेषण

पू.क्रि. / पूर्व. क्रि. = पूर्वकालिक क्रिया

क्रि. = क्रिया

कृ. = कृदंत

- अनेक स्थानों पर संख्याओं का वर्गीकरण ‘विशेषणों’ को श्रेणी में किया गया है, क्योंकि संख्याओं का प्रयोग अधिकतर विशेषणों के तौर पर होता है।
- इसी प्रकार सभी कृदंतों को (वर्तमान, भूत तथा भविष्यत्कालिक कृदंत) भी विशेषणों की श्रेणी में समाविष्ट किया गया है।
- कोश में सम्मिलित सभी संज्ञाओं के रूप (पु., स्त्री. तथा नपुं.) उन शब्दों के मूल रूप हैं। विभक्ति और वचन के अनुसार इन संज्ञाओं के विविध अन्य रूप बनते हैं।

उदा. मूल रूप – **बुद्ध**, विभक्ति लगने से बनाने वाले रूप – बुद्धो, बुद्धं, बुद्धे, बुद्धस्स, बुद्धानं आदि।

- संख्या, सर्वनाम, विशेषण आदि शब्द भी संज्ञाओं की तरह भिन्न-भिन्न रूपों में पाएं जाते हैं।
- पालि कोशों में समाविष्ट क्रियाओं के रूप – (क्रि.) – हमेशा वर्तमान काल के तृतीय पुरुष एकवचन के रूप होते है। अन्य काल, वृत्ति, पुरुष, वचन अनुसार, तथा कृदंत आदि के अनेक भिन्न रूप बनते हैं।

इसे एक उदाहरण से समझते हैं।

क्रिया – **भासति**

प्रस्तुत कोश में केवल - **भासति** (क्रि.) = बोलता है। - इस शब्द का समावेश है। लेकिन इस क्रिया के अनेक रूप सुत्तों में पाए जाते है। जिनमें से कुछ एक उदाहरण इस प्रकार हैं -

भासति (वर्तमान काल) = वह बोलता है / बोलती है
भासामि (वर्तमान काल) = मैं बोलता हूं / बोलती हूं
भासिस्ससि (भविष्यतकाल) = तुम बोलोगे / बोलोगी
भासि / अभासि (भूतकाल) = उसने बोला / कहा
भासिम्ह / अभासिम्ह (भूतकाल) = हमने बोला / कहा
भासेय्य (विधिलिंग) = अगर वह बोले / कहे
भासाहि (अनुज्ञा) = तुम बोलो / कहो
भासन्त / भासमान (कृ. / वि.) = बोलता हुआ, बोलने वाला
भासन्ती / भासमाना (कृ. / वि.) = बोलती हुई, बोलने वाली
भासित (कृ. / वि.) = जो बोला / कहा गया
भासितब्ब (कृ. / वि.) = बोलने / कहने योग्य
भासित्वा (पू.क्रि. / अ.) = बोलकर / कहकर
भासितुं (निमित्तार्थक अ.) = बोलने / कहने के लिए

- इससे यह स्पष्ट है कि, कोश की सहायता से हम किसी भी शब्द के मूल रूप का अर्थ जान सकते हैं। उस शब्द के अन्य रूपों को समझने के लिए और उनका सही अनुवाद करने के लिए हमें पालि व्याकरण की जानकारी होना आवश्यक है।

अ

अ : १. देवनागरी वर्णमाला का पहला अक्षर; २. संयुक्त व्यञ्जन के पूर्व आने वाले 'आ' उपसर्ग का ह्स्वीकरण, जैसे - आ+कोसति (अक्कोसति); ३. संज्ञाओं तथा विशेषणों आदि के पूर्व आने वाला उपसर्ग, जैसे - अ+कुसल (अकुसल); ४. भूतकालिक क्रिया के पूर्व आनेवाला उपसर्ग, जैसे – अकासि।

अकट / अकत (वि.) : अकृत, अनिर्मित।

अकतञ्ञु (वि.) : अकृतज्ञ।

अकथंकथी (वि.) : असन्देही।

अकनिट्ठदेव : पांच शुद्धावासों में से उच्चतम आवास में रहने वाले देवतागण।

अकप्पिय (वि.) : अनुचित, अयोग्य।

अकम्पिय (वि.) : स्थिर।

अकम्मनिय (वि.) : निष्क्रिय, निकम्मा।

अकाच (वि.) : निर्दोष, दोषरहित।

अकामक (वि.) : अनिच्छुक।

अकाल (पु.) : असमय।

अकालरावी-जातक : असमय बांग देनेवाले मुर्गे की जातक कथा (११९)।

अकासि (भू.क्रि.) : किया ।

अकिञ्चन (वि.) : गरीब, निर्धन, जिसके पास कुछ न हो।

अकित्ति-जातक : एक उदार-ज्ञानी की जातक कथा (४८०)।

अकिरिय (नपुं.) : अ-क्रिया।

अकिरियवाद (पु.) : किसी कर्म का कोई फल नहीं होता, यह मान्यता ।

अकिलन्त (वि.) : अक्लांत, बिना थके।

अकिलन्तकाय (वि.) : अक्लांत शरीर, न थकी काया।

अकिलासु (वि.) : क्रियाशील, अप्रमादी।

अकुटिल (वि.) : जो कुटिल नहीं।

अकुतोभय (वि.) : जिसे किसी ओर से भय न हो।

अकुप्प (वि.) : स्थिर, अचंचल।

अकुसल (नपुं.) : अकुशल, पापकर्म।

अकोविद (वि.) : अदक्ष, जो होशियार नहीं।

अक्क (पु.) : १. अर्क (सूर्य); २. एक पौधा-विशेष, वनस्पति (मदार नाम का)।

अक्कन्त (कृ.) : आक्रान्त।

अक्कन्दति (क्रि.) : रोता है, विलाप कहता है, चिल्लाता है।

अक्कमन (नपुं.) : आक्रमण, हमला, चढाई, धावा।

अक्कमति (क्रि.) : आक्रमण करता है, हमला करता है, चढाई करता है।

अक्कम्म (पू.क्रि.) : आक्रमण कर के।

अक्कोस (पु.) : आक्रोश, अपमान, गुस्सा।

अक्कोसक (पु.) : आक्रोश, अपमान, गुस्सा करने वाला।

अक्ख (पु.) : १. अक्ष - गाड़ी की धुरी, २. जुए का पासा, ३.अक्ष - आंख।

अक्खक (नपुं.) : हंसली, गरदन के पास की हंसली नाम की हड्डी।

अक्खण (पु.) : अक्षण, अनुचित समय।

अक्खणवेधी (पु.) : बिजली चमकने भर के समय में तीर मारने वाला।

अक्खत (वि.) : अक्षत, जिसे चोट न लगी हो।

अक्खदस्स (पु.) : न्यायाधीश, निर्णायक।

अक्खधुत्त (वि.) : जुआरी।

अक्खय (वि.) : अक्षय, जिसका क्षय न हो, समाप्त न होनेवाला ।

अक्खर (नपुं.) : १. अक्षर - जिसका क्षरण न होता हो, २. अक्षर - अ, आ, आदि।

अक्खरफलक (पु.) : लिखने की पाटी, स्लेट, तख्ती।

अक्खरसमय (पु.) : लिखने-पढने की कला / विद्या।

अक्खात (वि.) : कहा गया, व्याख्या किया गया।

अक्खातर (वि.) : कहनेवाला, मार्ग प्रदर्शित करने वाला, उपदेशक, मार्गदर्शक।

अक्खाति (क्रि.) : कहता है, सुनाता है, समझाता है।

अक्खान (नपुं.) : आख्यान, कथा-वार्ता।

अक्खि (नपुं.) : अक्षि, आंख।

अक्खिकूप (पु.) : आंख का गोलक।

अक्खिगूथ (नपुं.) : आंख की मैल।

अक्खितारा (स्त्री.) : आंख की पुतली।

अक्खिदल (नपुं.) : आंख की पलक ।

अक्खिमल (नपुं.) : आंख की मैल, आंख की गंदगी।

अक्खिरोग (पु.) : आंख की बीमारी, नेत्ररोग।

अक्खित्त (वि.) : जो फेका न गया हो।

अक्खोब्भ (वि.) : अक्षुब्ध, शांत, अविचलित।

अक्खोहिणी / अक्खोहिनी (स्त्री) : सैन्य व्यूह की एक प्राचीन इकाई, सेनादल।

अखेत्त (नपुं) : अक्षेत्र, उपज के अयोग्य, बंजर भूमि ।

अग (पु.) : पर्वत, पहाड, पेड़, वृक्ष ।

अगति (स्त्री) : कुपथ, पक्षपात, विनाशकारी मार्ग।

अगद (नपुं.) औषधी, दवाई, रोगनाशक दवा।

अगरु (वि.) : १. हलका। २. (पु.) अगर नाम का पेड जिसकी सुगंधीत लकडी, छाल का लेप, चूर्ण प्रसाधन में होता है। मुसव्वर की लकड़ी।

अगलु (पु.) : देखो – अगरु (लकड़ी)

अगाध (वि.) : १. अत्यधिक गहरा, २. बिना आधार का।

अगार (नपुं.) : घर, निवास-स्थान।

अगारिक (वि.) : घरवाला, गृहस्थ, सांसारिक व्यक्ति।

अग्ग (वि.) : अग्र, प्रथम, श्रेष्ठतम।

अग्गञ्ञ (वि.) : जो श्रेष्ठ, अग्रतम जाना जाता है।

अग्गता (स्त्री.) : अग्रता, श्रेष्ठता।

अग्गत्त (नपुं.) : अग्रता, श्रेष्ठता।

अग्गफल (नपुं.) : १. पहली फसल, पहली उपज; २. अर्हत्व-प्राप्ति।

अग्गमग्ग (पु.) : अग्रमार्ग, निर्वाण प्राप्ति का श्रेष्ठ मार्ग।

अग्गमहेसी (स्त्री.) : महारानी, प्रमुख रानी।

अग्गल (नपुं.) : अर्गल, दरवाजे के पीछे लगाई हुई डण्डी।

अग्गि (पु.) : अग्नि, आग।

अग्गिक्खन्ध (पु.) : आग की ढेरी, अग्नि-राशि।

अग्गिपरिचरण (नपुं.) : अग्निचर्या, अग्निहोत्र ।

अग्गिसाला (स्त्री.) : अग्निशाला, अग्निहोत्र का क्षेत्र, यज्ञशाला

अग्गिसिखा (स्त्री.) : अग्निशिखा, ज्वाला, आग की लौ।

अग्गिहुत्त (नपुं.) : यज्ञ, अग्निहोत्र।

अग्गिक-जातक : उस गीदड़ की जातक कथा, जिसके बाल जंगल की आग से जल गए थे (१२९)।

अग्गिक-भारद्वाज : भारद्वाज गोत्र का सावत्थी का एक ब्राह्मण ।

अग्गि ब्रह्मा : संघमित्रा का पति तथा असोक का जामाता। उसने असोक के भाई तिस्सकुमार के प्रव्रजित होने के दिन ही प्रव्रज्या ग्रहण की थी।

अग्घ (पु.) : अर्घ, मूल्य।

अग्घकारक (पु.) : मूल्य निर्धारण करने वाला, मूल्य तय करने वाला।

अग्घति (क्रि.) : उतने मूल्य का होना।

अग्घापन (नपुं.) : मूल्य निर्धारण करना, कीमत तय करना।

अग्घापनक (पु.) : मूल्य निर्धारण करने वाला, मूल्य तय करने वाला ।

अग्घापनीय (वि.) : कीमत तय करने योग्य वस्तु ।

अग्घिक (नपुं.) : पुष्प-मालाओं से सुसज्जित स्तम्भ।

अग्घिय (नपुं.) : १. पुष्प-मालाओं से सुसज्जित स्तम्भ, २. आदर-सत्कार, आतिथ्य।

अघ (नपुं.) : १. आकाश, २. दुक्ख, दर्द; ३. दुर्भाग्य।

अङ्क (पु.) : १. गोद, २. चिन्ह, ३. संख्या।

अङ्कित (वि.) : अंकित, चिन्हित किया हुआ।

अङ्कुर (पु.) : अंकुर, अंखुआ, डाभ, कली, कोंपल।

अङ्कुस (पु.) : अंकुश, लोहे का तेज नोकवाला औजार।

अङ्केति (क्रि.) : चिन्ह लगाता है, अंकन करता है।

अङ्ग (नपुं.) : १. सोलह जनपदों में से एक, २. शरीर का अंग, भाग; ३. गुण, विशेषता।

अङ्गपच्चङ्ग (नपुं.) : शरीर के सभी छोटे-बड़े अंग, अंग प्रत्यंग।

अङ्गराग (पु.) : शरीर पर लगाने का चूर्ण या उबटन।

अङ्गण (नपुं.) : १. आंगन, निवास के सामने की खुली जगह; २. मन की मैल।

अङ्गद (नपुं.) : बाजूबंद, भुजापर बांधने का एक अलंकार।

अङ्गना (स्त्री.) : औरत, नारी, स्त्री।

अङ्गविज्जा (स्त्री.) : शरीरांगों के आधार पर भविष्य कथन करने की विद्या।

अङ्गार (पु.) : अंगार, जलता हुआ कोयला।

अङ्गीरस (पु.) : तेजस्वी, बुद्ध का एक नाम।

अङ्गुट्ठ (पु.) : अंगूठा।

अङ्गुत्तर-निकाय (पु.) : सुत्तपिटक के पांच निकायों में से एक निकाय ।

अङ्गुत्तरट्ठकथा (स्त्री) : अंगुत्तर निकाय की अट्ठकथा ।

अङ्गुल (नपुं.) : अंगुल, एक गज का सोलहवा भाग, उंगली भर का माप।

अङ्गुलि / अङ्गुली (स्त्री) : अंगुली, उंगली।

अङ्गुलिमाल : प्रसिद्ध डाकू, जो बुद्धानुभाव से प्रव्रजित, उपसंपन्न होकर अर्हंत हुआ।

अचल (वि.) : अचल, अपने स्थान से न हिलनेवाला, स्थिर।

अचिर (वि.) जो अभी-अभी हुआ हो, नया, नूतन।

अचिरप्पभा (स्त्री.) : बिजली, चंचला, अचिरप्रभा।

अचिरवती : अचिरवती नाम की नदी, पांच महानदियों में से एक, वर्तमान राप्ति नदी।

अचेतन (वि.) : अचेतन, चेतनारहित, बेहोश, जड़।

अचेल (वि.) : निर्वस्त्र, नंगा।

अचेलक (पु.) : नग्न रहनेवाला साधु, आजीवक संप्रदाय के साधु।

अच्चगा (भू. क्रि.) : लांघ गया, पार कर गया।

अच्चना (स्त्री) : अर्चना, पूजा, वंदना।

अच्चन्त (वि.) : निरन्तर, लगातार, अत्यंत।

अच्चय (पु.) अपराध, दोष।

अच्चायिक (वि.) : तुरन्त करने का कार्य।

अच्चासन्न (वि.) : अति समीप ।

अच्चि (स्त्री.) : अर्ची, ज्वाला

अच्चिमन्तु (पु.) : अग्नि, आग।

अच्चित (वि.) : अर्चित, पूजित, सम्मानित ।

अच्चुग्गत (वि.) : अत्यंत ऊंचा।

अच्चुण्ह (वि.) : अत्यंत ऊष्ण ।

अच्चुत (वि.) : शाश्वत, च्युत न होनेवाला।

अच्चुतपद (नपुं.) : निर्वाण।

अच्चुस्सन्न (वि.) : अत्यधिक, भरा हुआ ।

अच्चेति (क्रि.) : १. गुजरता है, (समय) काटता है; २. आदर, सम्मान करता है।

अच्चोगाळ्ह (वि.) : अत्यधिक प्रचुरता में गया हुआ।

अच्चोदक (नपुं.) : अत्यधिक जल, बहुत ही पानी।

अच्छ (वि.) : अच्छा, स्वच्छ, साफ।

अच्छक (पु.) : भालू, रीछ।

अच्छति (क्रि.) : १. बैठता है, २. रुकता है, ठहरता है।

अच्छम्भी (वि.) : निर्भय, निडर, भयरहित।

अच्छरा (स्त्री.) : १. अप्सरा, २. चुटकी, एक क्षण।

अच्छरासङ्घात (पु.) : चुटकी बजाना।

अच्छरासद्द (पु.) : चुटकी की आवाज।

अच्छरिय (नपुं.), आश्चर्य ।

अच्छादन (नपु.) : आच्छादन, वस्त्र, परिधान।

अच्छादेति (क्रि.) : आच्छादित करता है, कपड़ा पहनाता है।

अच्छिन्दति (क्रि.) : लूटता है, छिनता है।

अच्छेछि (भू.क्रि.) : काट दिया, नष्ट कर दिया ।

अच्छेज्ज (वि.) : जो काटा न जा सके, जो नष्ट न हो।

अज (पु.) : बकरा।

अजपाल (पु.) : बकरी पालने / चराने वाला।

अजगर (पु.) : अजगर, सांप।

अजञ्ञ (वि.) : दूषित, गंदा।

अजा / **अजी** (स्त्री) : बकरी।

अजातसत्तु : मगध नरेश बिम्बिसार का बेटा।

अजानन (नपुं.) : अज्ञान।

अजिन (नपुं.) : चीता ।

अजिनपत्ता (स्त्री.) : चमगादड़।

अजिनि (भू.क्रि.) : जीत लिया।

अजिम्ह (वि.) : सीधा, सरल, जो टेढा न हो ।

अजिर (नपु.) : आंगन।

अजीरक (नपुं.) : बदहज़मी, अजीर्ण, अपच।

अजेय्य (वि.) : जिसे जीता न जा सके।

अज्ज (अ.) : आज।

अज्जतग्गे (अ.) : आज से।

अज्जतन (वि.) : आधुनिक, मौजूदा, वर्तमानकालिक।

अज्जति (क्रि.) : अर्जन करता है, कमाता है।

अज्जव (पु.) : आर्जव, सीधापन ।

अज्जित (कृ.) : अर्जित, कमाया हुआ।

अज्जुन (पु.), १. अर्जुन नाम का पेड़, २. अर्जुन नाम का व्यक्ति।

अज्झगा (भू.क्रि.) : प्राप्त किया।

अज्झत्त (वि.) : स्वकीय, व्यक्तिगत।

अज्झत्तिक (वि.) : अपने आप संबंधी, आंतरिक, भीतरी।

अज्झयन (नपुं.) : अध्ययन, अभ्यास।

अज्झाचार (पु.) : सीमातिक्रमण, मैथुन-क्रिया।

अज्झाचिण्ण (वि.) : अभ्यस्त।

अज्झापन (नपुं.) : अध्यापन, पढाना-लिखाना।

अज्झाय (पु.) : अध्याय, परिच्छेद।

अज्झायक (पु.) : अध्यापक, शिक्षक ।

अज्झारुहति (क्रि.) : चढता है, ऊपर उठता है।

अज्झावसति (क्रि.) : घर में वास करता है, घर में रहता है।

अज्झासय (पु.) : आशय, इरादा।

अज्झुपगच्छति (क्रि.) : प्राप्त होता है, सहमत होता है

अज्झुपगमन (नपु.) : १. आगमन, पहुंच २. सहमति।

अज्झुपेक्खति (क्रि.) : उपेक्षा करता है, नजरअंदाज करता है।

अज्झुपेक्खन (नपुं.) : उपेक्षा भाव।

अज्झुपेति (क्रि.) : समीप पहुंचता है।

अज्झेन (नपुं.) : अध्ययन, अभ्यास।

अज्झेसति (क्रि.) : प्रार्थना करता है, निमंत्रित करता है।

अज्झेसना (स्त्री.) : प्रार्थना, निमंत्रण।

अज्झेसित (वि.) : निमंत्रित।

अज्झोकास (पु.) : खुला आकाश।

अज्झोकिरति (क्रि.) : बिखेरता है, फैलाता है।

अज्झोगाहति (क्रि.) : डूबता है, डुबकी लगता है।

अज्झोसान (नपुं.) : आसक्ति।

अज्झोहत (वि.) : खाया गया।

अज्झोहरण (नपुं.) : निगलना, खा लेना।

अञ्जति (क्रि.) : आंख में अंजन लगाता है, लेप लगाता है।

अञ्जन (नपुं.) : अंजान, सुरमा ।

अञ्जन : सुद्धोदन की दोनों रानियों, महामाया और महापजापति गोतमी के पिता।

अञ्जलि (स्त्री.) : हाथ जोडना ।

अञ्जलिपुट (नपुं.) : कोई चीज लेने के लिये दोनों हाथों को मिलाकर बनाया जानेवाला डूना या हाथों का पात्र।

अञ्जस (नपुं.) : रास्ता, मार्ग, पथ।

अञ्ञ (सर्व.) : अन्य, दूसरा।

अञ्ञतम (सर्व.) : अन्यतम, अनेकों में से एक।

अञ्ञतर (सर्व.) : अन्यतर, दुसरा, कोई, जो अच्छी तरह परिचित न हो।

अञ्ञतित्थिय (पु.), अन्य संप्रदाय का अनुयायी।

अञ्ञत्थ / **अञ्ञत्र** (अ.) : अन्यत्र, कहीं और।

अञ्ञथत्त (नपुं.) : मन का अन्यथा-भाव को प्राप्त होना, बदलना।

अञ्ञथा (अ.) : अन्यथा, दूसरी तरह।

अञ्ञदत्थु (अ.) : निश्चय से, निश्चित ही।

अञ्ञदा (अ.) : अन्यदा, किसी अन्य दिन / समय।

अञ्ञमञ्ञ (वि.) : परस्पर।

अञ्ञा (स्त्री.) : संपूर्ण ज्ञान, अर्हत्त्व।

अञ्ञाण (नपुं.) : अज्ञान।

अञ्ञात (वि.) : १. ज्ञात अथवा ज्ञाता, २. अज्ञात, अपरिचित।

अञ्ञात कोण्डञ्ञ : भगवान बुद्ध का पहला प्रव्रजित शिष्य।

अञ्ञातक (वि.) : जो सगा-संबंधी नहीं।

अञ्ञातावी (पु.) : जानकार, ज्ञानी।

अञ्ञातुकाम (वि.) : जानने की इच्छा रखनेवाला।

अटन (नपुं.) : भ्रमण करना, घूमना।

अटवि (स्त्री.) : जंगल।

अट्ट (नपुं.) : १. मुकदमा, वाद, अभियोग, २. मकान के ऊपर का कमरा, बुर्जी, अटारी।

अट्टाल / अट्टालिका (नपुं., स्त्री.) : एक से अधिक छतोंवाला मकान।

अट्टित (वि.) : पीड़ित।

अट्ठ (सं.): आठ, संख्या-विशेष ।

अट्ठक (वि.) : आठगुणा।

अट्ठम (वि.), आठवां।

अट्ठकथा (स्त्री.) : अर्थकथा, अर्थकथन, व्याख्या।

अट्ठकथाचरिय (पु.) : अर्थकथाचार्य, कर्थकथन करनेवाला आचार्य ।

अट्ठङ्गिक (वि.) : आठ अंगों वाला, अष्टांगिक।

अट्ठपद (नपुं.) : शतरंज का फलक।

अट्ठस (नपुं.) : अठकोना, आठ कोनों वाला।

अट्ठान (नपुं.) : अस्थान, असंभव।

अट्ठारस (वि.) : अट्ठारह।

अट्ठि (नपुं.) : १. हड्डी, २. बीज।

अट्ठिकङ्काल (पु.) : अस्थिकंकाल, शरीर की हड्डियों का ढांचा।

अट्ठिमय (वि.) : अस्थिमय, हड्डी से निर्मित।

अट्ठिमिजा (स्त्री.) : अस्थि-मज्जा, हड्डी के भीतर का नर्म गूदा।

अट्ठिकत्वा (पूर्व. अ.) : ध्यान देकर।

अट्ठित (वि.) : अस्थित, अस्थिर।

अट्ठिसङ्घाट (पु.) : अस्थि-पंजर, हड्डियों का जाल, कंकाल।

अट्ठिसेन-जातक : राजा के उद्यान में रहते हुए, उससे कुछ भी याचना न करनेवाले तपस्वी की जातक कथा (४०३)।

अड्ढ (वि.) : १. अर्ध, आधा; २. धनवान, धनाढ्य, समृद्धशाली।

अड्ढता (स्त्री.) : समृद्धि, सम्पन्नता।

अड्ढतिय (वि.) : ढाई, अढाई।

अड्ढमास (पु.) : आधा माह, पखवाडा।

अड्ढरत्त (नपुं.) : आधी रात, अर्धरात्रि।

अड्डुड्ढ (पु.) : साढे तीन।

अण (नपुं.) : ऋण, कर्ज।

अनण (वि.) : ऋण-रहित।

अणु (पु.) : छोटे से भी छोटा कण।

अणुमत्त (पु.) : अणुमात्र, बहुत ही छोटा, कम।

अण्ड /अण्डक (पु.) : १. अण्डा, २. अण्डकोश।

अण्डज (वि.) : अण्डे से उत्पन्न होने वाले, पंछी, सांप।

अण्डभूत-जातक : स्त्रियों की 'स्वाभाविक' चरित्रहीनता का ज्ञापन करनेवाली जातक कथा (६२)।

अण्डूपक (नपुं.) : चुम्बटक, बर्तन के नीचे रखने का कपडे का रस्सी का बना घेरा ।

अण्ण (पु.) : जल, पानी।

अण्णव (पु.) : अर्णव, समुद्र, सागर।

अण्ह (पु.) : दिन, पूर्वान्ह तथा अपरान्ह।

अतच्छ (वि.) : मिथ्या, अयथार्थ।

अतन्दित (वि.) : निरालस, अप्रमादी।

अतप्पिय (वि.) : अतृप्य, अतोषणीय, जो संतुष्ट नहीं होता हो।

अति (उप.) : अतिशयता, अधिकता का अर्थ लिए हुए।

अतिक्कमति (क्रि.) : अतिक्रमण करता है, सीमा पार करता है।

अतिकड्ढति (क्रि.) : भारी मेहनत से खींचता है, बड़े जोर से खींचता है।

अतिकर (वि.), अत्यभिनय, हद से ज्यादा।

अतिक्कन्त (वि.), अतिक्रान्त, अतिक्रमण का शिकार।

अतिखिप्पं (अ.) : अतिशीघ्र, तुरंत।

अतिखीण (वि.) : अतिशय क्षीण, दुर्बल।

अतिगच्छति (क्रि.) : पार कर करता है, जीत लेता है।

अतिगाळ्ह (वि.) : अतिनिकट, अतिसघन।

अतिघोर (वि.) : अतिभयंकर, भीषण।

अतिचरति (वि.), नियमों का उल्लंघन करता है, परस्त्रीगमन / व्यभिचार करता है।

अतिचारिणी (स्त्री.) : व्यभिचारिणी, कुलटा, जारकर्म करनेवाली।

अतिचारी (पु.) : अतिक्रमणकारी, परस्त्रीगामी, जारकर्मी।

अतित्त (वि.) : अतृप्त, असंतुष्ट।

अतित्थ (नपुं.) : गलत तरीका, बेसमय, अनुचित समय।

अतिथि (पु.) : मेहमान, आगन्तुक, अतिथि।

अतिदिवा (अ.) : दिन चढे, दोपहर में ।

अतिदिसति (क्रि.) : निर्देश करता है, स्पष्ट करता है।

अतिदूर (अ.) : बहुत दूर, अत्यधिक दूर।

अतिदेव (पु.) : श्रेष्ठतर देवता, महान देवता।

अतिधमति (क्रि.) : ढोल को या तो बहुत जोर से या बार-बार बजाता है।

अतिधावति (क्रि.) : दौड़कर आगे बढ जाता है, सीमा पार कर जाता है।

अतिनामेति (क्रि.) : समय गुजारता है।

अतिनिग्गण्हाति (क्रि.) : अधिक डांटता-डपटता है, फटकारता है।

अतिपण्डित (वि.) : अति होशियार, अति बुद्धिमान।

अतिपपञ्च (पु.) : अत्यधिक विलंब, अतिव्यवधान ।

अतिपात (पु.) : वध करना, मार डालना, हत्या करना।

अतिपाती (पु.) : हत्यारा, वध करने वाला।

अतिप्पगो (अ.) : बहुत जल्दी।

अतिबहल (वि.) : बहुत मोटा।

अतिबाळ्ह (वि.) : बहुत श्रेष्ठ, बहुत शक्तिशाली।

अतिबाळ्हं (अ.) : अत्यधिक।

अतिबाहेति (क्रि.) : भगा देता है, बाहर कर देता है, हटा देता है।

अतिभगिनी (स्त्री.) : अत्यंत प्रिय बहन।

अतिभारिय (वि.) : अत्यंत भारी, अत्यंत गंभीर।

अतिमञ्ञति (क्रि.) : घृणा करता है, नफरत करता है।

अतिमनाप (वि.) : अत्यंत प्रिय।

अतिमत्त (वि.) : अतिमात्र, अत्यधिक।

अतिमान (पु.) : अभिमान, अहंकार, गर्व, घमंड।

अतिमुखर (वि.) : अत्यंत वाचाल, बेहद बडबोला।

अतियक्ख (पु.) : अतियक्ष, झाड-फूंक करनेवाला ओझा।

अतियाचक (वि.) : अत्यंत याचना करनेवाला।

अतियति (क्रि.), लांघ जाता है, पार कर जाता है।

अतिरत्तिं (अ.) : अधिक रात बीते।

अतिरिच्चति (क्रि.), छूट जाता है, बचा (शेष) रहता है।

अतिरित्त (वि.) : अतिरिक्त।

अतिरिव (अ.) : अत्यधिक।

अतिरेक (वि.) : अतिरेक, अधिकता, प्रचुरता।

अतिरोचति (क्रि.) : अधिक चमकता है ।

अतिलुद्ध (वि.) : अत्यंत लोभी, बडा लालची ।

अतिवङ्की (वि.) : अत्यंत टेढा।

अतिवत्त (वि.) : विजित, जिसे जीता गया हो।

अतिवत्तति (क्रि.) : लांघ जाता है, पार कर जाता है।

अतिवस (वि.) : किसी के वश में, किसी पर निर्भर।

अतिवस्सति (कि.) : खूब बरसता है, बहुत बरसता है ।

अतिवाक्य (नपुं.) : अपशब्द, गाली।

अतिवात (पु.) : आंधी, तूफान।

अतिवायति (क्रि.) : (सुगंधि) लेकर जाता है।

अतिवाहक (पु.) : भार ढोनेवाला।

अतिविकाल (वि.) : अत्यन्त, असमय ।

अतिविज्झति (क्रि.) : पूरी तरह बींध देता है, आर-पार देखता है।

अतिविय (अ.) : अत्यंत, बहुत।

अतिविस्सट्ठ (वि.) : बक बक करनेवाला, व्यर्थ बोलनेवाला।

अतिविस्सासिक (वि.) : अत्यन्त रहस्यपूर्ण।

अतिविस्सुत (वि.) : अत्यंत प्रसिद्ध, प्रख्यात, ख्यातनाम।

अतिवेलं (अ.) : अतिसमय, अधिक समय बीत जाना।

अतिसण्ह (वि.) : अति-सूक्ष्म, अति चिकना।

अतिसम्बाध (वि.) : जहां बहुत भीड़-भाड़ हो, जो रास्ता तंग हो।

अतिसय (पु.) : अतिशय, बहुत ज्यादा, आधिक्य, अधिक।

अतिसन्त (वि.) : अति शान्त (व्यक्ति)।

अतिसायं (वि.) : अत्यंत सायंकाल, देर शाम।

अतिसार (पु.) : १. सीमोल्लंघन, २. दस्त लग जाना।

अतिसिथिल (वि.) : अत्यंत शिथिल, बहुत ढीला, बहुत सुस्त।

अतिसीत (वि.) : अत्यंत ठंडा।

अतिहट्ठ (वि.) : अत्यंत प्रसन्नचित्त।

अतिहरति (क्रि.) : १. अपहरण करता है, २. लाता है।

अतिहीन (वि.) : अत्यंत हीन, अत्यंत दरिद्र।

अतिहीलेति (क्रि.) : घृणा करता है।

अतीत (वि.) : भूत-काल।

अतीव (अ.) : बहुत अधिक, बहुत ज्यादा।

अतो (अ.) : अतः, इसके बाद, इसलिए, अतएवं।

अत्त (पु.) : अपना-आप, स्वयं, खुद।

अत्तकाम (पु.) : आत्म-प्रेम, अपने प्रति प्रेम ।

अत्तकिलमथ (पु.) : कामक्लेश, अपने शरीर को पीड़ा देना।

अत्तगुत्त (वि.) : आत्मसंयमित, अपने ऊपर संयम करने वाला।

अत्तगुत्ति (स्त्री.) : आत्म-संयम।

अत्तघञ्ञ (नपुं.) : आत्म-विनाश।

अत्तदत्थ (पु.) : आत्महित, स्वहित।

अत्तदन्त (वि.) : आत्मदमित, स्वसंयम करने वाला।

अत्तदिट्ठि (स्त्री.) : आत्मदृष्टि, 'आत्मा' का अस्तित्व मानना।

अत्तभाव (पु.) : आत्मभाव, व्यक्तित्व।

अत्तवाद (पु.) : 'आत्मा' के संबंध का पक्ष या मत, आत्मवाद ।

अत्तवध (पु.) : अपनी हत्या, अपना विनाश, आत्म-विनाश ।

अत्तहित (नपुं.) : आत्महित, स्वहित।

अत्तज (वि.) : आत्मज, पुत्र।

अत्तदीप (वि.) : आत्मदीप, आत्मनिर्भर।

अत्तनीय (वि.) : १. अपने आप सम्बन्धी, २. आत्मा संबंधी।

अत्तन्तप (वि.) : अपने आप को तपाने वाला, अपने आप को पीड़ा देनेवाला।

अत्तपच्चक्ख (वि.) : आत्म-प्रत्यक्ष, आत्म-साक्षी, स्वयं-साक्षी।

अत्तपटिलाभ (पु.) : आत्म-प्रतिलाभ, जन्म।

अत्तमन (वि.) : प्रसन्न-मन, आनंदित।

अत्तमनता (स्त्री.) खुशी, आनंद।

अत्तसम्भव (वि.) : आत्म-संभव, अपने-आप से उत्पन्न।

अत्तहेतु (अ) : आत्म-हेतु, अपने आप के लिए।

अत्ताण (वि.) : बिना त्राण के, बिना संरक्षण के।

अत्थ (पु.) : १. कल्याण, हित, २. लाभ, धन; ३. आवश्यकता, उपयोग; ४. अर्थ, मतलब; ५. अस्त, विनाश।

अत्थ (क्रि.) – ['अत्थि' (क्रि.) का रूप], (तुम लोग) हो।

अत्थक्खायी (वि.) : हितकर बात कहनेवाला।

अत्थकर (वि.) : हितकारी, कल्याणकारी।

अत्थकाम (वि.) : हितचिन्तक, कल्याण चाहनेवाला।

अत्थकुसल (वि.) : हितकर बात का पता लगाने में दक्ष, अर्थ बताने में दक्ष।

अत्थचर (वि.) : परोपकारी, दूसरों की भलाई चाहनेवाला।

अत्थचरिया (स्त्री.) : परोपकार।

अत्थदस्सी (वि.) : हितचिंतक, शुभेच्छु।

अत्थभञ्जक (वि.) : अहितकारी, हित-विनाशक, बुरा चाहनेवाला।

अत्थवादी (वि.) : हितकर बात कहनेवाला।

अत्थकथा (स्त्री.) : अर्थकथा, भाष्य, अर्थों की व्याख्या।

अत्थगम (पु.) : अस्तगत होना, छिप जाना, आंख से ओझल होना, डूब जाना।

अत्थञ्ञु (वि.) : अर्थ का जानकार, हितकर बात का जानकार।

अत्थर (पु.) : आस्तरण, अस्तर, बिछाने की चादर।

अत्थरक (पु.) : बिछानेवाला।

अत्थत (वि.) : बिछाया गया, आच्छादित किया गया।

अत्थरण (नपुं.) : बिस्तर की चादर, अंथरण।

अत्थरति (क्रि.) : बिछाता है।

अत्थरापेति (क्रि.) : बिछवाता है।

अत्थवस (पु.) : अर्थवश, कारण, उपयोग।

अत्थसालिनी / अट्ठसालिनी : अभिधम्मपिटक के धम्मसङ्गणी प्रकरण पर आचार्य बुद्धघोस द्वारा रचित अट्ठकथा ।

अत्थस्सद्वार-जातक : वाराणसी के सेट्ठी के पुत्र की जातक-कथा, जो सात वर्ष की आयु में ही सुपथगामी बना (८४)।

अत्थाय : (**अत्थ** की चौथी विभक्ति), के लिए; उदा. किमत्थाम = किसलिए।

अत्थि (क्रि.) : है।

अत्थिभाव (पु.) : अस्तित्व, होने का भाव।

अत्थिक (वि.) : अर्थी, किसी चीज की इच्छा करनेवाला, इच्छुक, चाहनेवाला।

अत्थ / अत्र (अ.) : यहां, इस जगह।

अत्तज / अत्रज (पु.) : पुत्र, बेटा।

अत्तजा / अत्रजा (स्त्री.) : पुत्री, बेटी।

अत्रिच्छ (वि.) : अति इच्छा वाला, अत्यन्त लोभी।

अत्रिच्छा / अत्रिच्छता (स्त्री.) : अत्यंत लोभ, उत्कट इच्छा।

अथ (अ.) : तब, उस समय।

अथब्बण (पु.) : अथर्व-वेद।

अथ / अथो (अ.) : निपात मात्र, फिर।

अदक (वि.) : खाने वाला, भोजन करने वाला।

अदति (क्रि.) : खाता है, भोजन करता है।

अदन (नपुं.) : खाना, भोजन।

अदस्सन (नपुं.) : अदर्शन, दिखाई न देना।

अदिट्ठ (वि.) : अदृष्ट, जो दिखाई न दिया हो।

अदिन्न (वि.) : जो दिया न गया हो।

अदिन्नादान (नपुं.) : बिना अनुमति / बिना दिये हुए दूसरे की वस्तू लेना, चोरी।

अदिस्समान (वि.) : जो दिखाई न दे, अदृश्यमान।

अदु (सर्व. नपुं.) : अमुक, फलाना।

अदूभक (वि.) : जो विश्वासघाती नहीं।

अदूसक (वि.) : निर्दोष, निरपराध।

अद्द (नपुं.) : काई, गीलापन।

अद्दक (नपुं.) : अदरक।

अद्दक्खि (भू.क्रि.) : देखा।

अद्दसा (भू.क्रि.) : देखा।

अद्दि (पु.) : पर्वत, पहाड।

अद्दित (वि.) : दबाया गया, दमित, दबोचा गया।

अद्ध (पु.) : आधा।

अद्धमास (पु.) : आधा महिना, एक पक्ष।

अद्धगत (वि.) : जीवन-पथ का यात्री।

अद्धगू (पु.) : यात्री, प्रवासी।

अद्धनिय (वि.) : १. यात्रा करने योग्य, २. चिरकाल तक बना रहनेवाला।

अद्धा (अ.) : निश्चित रूप से।

अद्धा (पु.) : मार्ग, रास्ता, समय ।

अद्धान (नपुं.) : लंबा रास्ता, दीर्घ समय।

अद्धिक (पु.) : यात्री, प्रवासी।

अद्धुव (वि.) : अध्रुव, अस्थिर, अनिश्चित।

अद्वेज्झ (वि.) : असंदिग्ध, संदेहरहित ।

अधम (वि.) : नीच, पापी।

अधम्म (पु.) : दुराचार, मिथ्या-मत।

अधर (पु.) : होंठ, (वि.) नीचे का।

अधि (उप.) : तक, पर।

अधिकत (वि.) : अधिकृत, कारणीभूत।

अधिकरण (नपुं) : मुकदमा।

अधिकरणसमथ (पु.) : विवाद का निर्णय, मुकद्दमे का फैसला ।

अधिकरणिक (पु.) : न्यायाधीश।

अधिकरणी (स्त्री.) : लोहार की निहाई।

अधिकरणं (अ.) : के कारण, परिणामस्वरूप, के लिए।

अधिकार (पु.) : पद, आकांक्षा।

अधिकुट्टना (स्त्री.) / **अधिकोट्टन** (पु.) : जल्लाद का थड़ा, लकड़ी का गद्दा, जिस पर कसाई मांस को काटता है।

अधिकोधित (वि.) : अत्यंत क्रोधित।

अधिगच्छति (क्रि.) : प्राप्त करता है।

अधिगच्छि (भू. क्रि.) : प्राप्त किया।

अधिगण्हाति (क्रि.) : पार कर जाता है, प्राप्त करता है, लांघ जाता है।

अधिगत (कृ.,वि.) : प्राप्त।

अधिगम (पु.) : प्राप्ति, ज्ञान।

अधिग्गहित (वि.) : अधिग्रहण किया हुआ।

अधिचित्त (नपुं.) : चित्त को एकाग्र करने की साधना।

अधिच्च (पू.क्रि.) : पढकर या पाठ करके।

अधिच्चसमुप्पन्न (वि.) : बेवहज उत्पन्न, अकारण उत्पन्न।

अधिट्ठाति (क्रि.), दृढ संकल्प करता है, अधिष्ठान करता है, मजबूत इरादा करता है।

अधिट्ठातब्ब (कृ.) : अधिष्ठान करने योग्य, दृढ संकल्प योग्य, अधिष्ठान करना चाहिये।

अधिट्ठान (नपुं.) : अधिष्ठान, संकल्प, दृढ फैसला।

अधिट्ठायक (वि.) : निरीक्षक, निगरानी रखनेवाला, अधिष्ठाता ।

अधिप / अधिपति (पु.) : स्वामी, राजा, शासक, अधिपति, मालिक।

अधिपञ्ञ (वि.) : प्रज्ञावान।

अधिपञ्ञा (स्त्री.) : श्रेष्ठ प्रज्ञा।

अधिपतन (नपुं.) : १. आक्रमण, ऊपर आ पडना, २. उछलना-कूदना।

अधिपन्न (वि.) : गृहीत।

अधिपात (पु.) : टुकड़े-टुकड़े हो जाना, विनाश।

अधिपातक (पु.) : झींगुर, अंख-फोड़वा, कीट।

अधिपातेति (क्रि.) : नाश कर डालता है।

अधिप्पघरति (क्रि.) : चूता है।

अधिप्पाय (पु.) : अभिप्राय, इरादा, उद्देश।

अधिप्पेत (कृ.) : अभिप्रेत, चाहित, वांछित, इच्छित।

अधिभवति (क्रि.) : नीचे दबा देता है।

अधिभू (पु.) : स्वामी, शासक, राजा।

अधिमत्त (वि.) : अत्यधिक मात्रा।

अधिमन (पु.) : चित्त की एकाग्रता।

अधिमान (पु.) : अभिमान, अहंकार।

अधिमानिक (वि.) : ऐसा व्यक्ति जो झूठ-मूठ ही समझता है कि उसने कोई सिद्धि प्राप्त कर ली है।

अधिमुच्चति (क्रि.) : झुकता है, अनुरक्त होता

अधिमुच्चन (नपुं.) : संकल्प करना, इरादा करना।

अधिमुच्छित (वि.) : सम्मोहित, बेहोश।

अधिमुत्ति (स्त्री.) : संकल्प, झुकाव।

अधिमोक्ख (पु.) : दृढ निश्चय।

अधिरोहनी (स्त्री.) : सीढी।

अधिवचन (नपुं.) : संज्ञा, नाम, नामकरण।

अधिवत्तति (क्रि.) : अतिक्रमण कर जाता है, परास्त कर देता है।

अधिवत्थ (वि.) : रहनेवाला, निवासी, निवास करनेवाला ।

अधिवसति (क्रि.) : रहता है, निवास करता है।

अधिवासक (वि.) : सहनशील।

अधिवासना (स्त्री.) : सहनशीलता।

अधिवासेति (क्रि.) : १. सहन करता है, २. रह देखता है, ३. सहमति / अनुमति दर्शाता है।

अधिसील (नपुं.) : श्रेष्ठतर सदाचार।

अधिसेति (क्रि.), लेटता है, बैठता है, रहता है, अनुकरण करता है।

अधीन (वि.) : निर्भर।

अधीयति (क्रि.), अध्ययन करता है, कंठस्थ करता है।

अधुना (अ.), अब, अचिरकाल पूर्व, अभी।

अधो (अ) : नीचे।

अधोकत (वि.) : नीचे किया गया।

अधोगम (वि.) : पतनोन्मुख।

अधोभाग (पु.) : नीचे का हिस्सा।

अधोमुख (वि.) : नीचे मुंह किये।

अनङ्गण (वि.) : राग-द्वेष रहित।

अनण (वि.) : ऋण-मुक्त।

अनत्त (वि.) : अनात्म, आत्मा-रहित, अहंकार-रहित।

अनत्तमन (वि.), असंतुष्ट, असमाधानी।

अनत्थ (पु.) : अनर्थ, हानि, दुर्भाग्य ।

अनधिवर (पु.) : तथागत, बुद्ध, बुद्ध का एक संबोधन।

अननुच्छविक (वि.) : अनुचित, अयोग्य।

अननुसोचिय-जातक : वाराणसी में धनी ब्राह्मण के रूप में बोधिसत्त्व की जातक कथा (३२८)।

अनन्त (वि.) : अनंत, अंतरहित, सीमा-रहित।

अनन्तर (वि.) : बाद में, इसके बाद।

अनपेक्ख (वि.), अनपेक्ष, अपेक्षारहित।

अनप्पक (वि.) : अनल्प, प्रचुर, पर्याप्त, जो अल्प न हो।

अनभाव (पु.) : (अनु + अभाव), जन्म-मरण का संपूर्ण अभाव।

अनभिरत (वि.) : रस न लेता हुआ, रमण न करता हुआ।

अनभिरति-जातक : १. स्त्रियों को निजी संपत्ति मानना अनुचित है, प्रसंग की जातक-कथा (६५), २. अच्छी स्मरण-शक्ति के लिए चित्त की स्थिरता आवश्यक है, इस प्रसंग की जातक कथा (१८५)।

अनमतग्ग (वि.) : जिसका आरंभ अज्ञात है।

अनय (पु.) : दुर्भाग्य।

अनरिय (वि.) : असभ्य, गंवार, अनार्य।

अनरियवोहार (पु.) : अनार्य-व्यवहार, आठ प्रकार के अनुचित व्यवहार।

अनल (पु.) : अग्नि, आग।

अनलङ्कत (वि.) : १. असमाधानी, असंतुष्ट; २. अनलंकृत, जो अलंकृत नहीं है।

अनवट्ठित (वि.) : अनवस्थित, अस्थिर।

अनवय (वि.) : न्यून नहीं, संपूर्ण।

अनवरत (वि.) : लगातार, निरंतर ।

अनवसेस (वि.) : निरवशेष, संपूर्ण।

अनवोसित (वि.) : असमाप्त, असंपूर्ण।

अनसन (नपुं.) : अनशन, आहार-त्याग, व्रत।

अनस्सासिक (वि.) : आश्वासन-रहित।

अनाकुल (वि.) : उलझन-रहित, शांत, निर्भय।

अनागत (वि.) : भावी, न आया हुआ।

अनागतवंस : चोल देश के वासी कस्सप थेर द्वारा भावी मेत्तेय (मैत्रेय) बुद्ध के बारे में रची गई एक पद्यबद्ध रचना। पालि वंस-साहित्य का एक ग्रंथ।

अनागमन (नपुं.) : आगमन का निषेध, न आना।

अनागामी (पु.) : फिर इस संसार में लौटकर न आनेवाला; सोतापन्न, सकदागामी, अनागामी और अर्हंत इन चार अवस्थाओं में से तीसरी अवस्था।

अनाचार (पु.) : दुराचार, बूरा व्यवहार, गलत व्यवहार।

अनाजानीय (वि.) : अच्छी नसल का नहीं।

अनाथ (वि.) : अनाथ, दुखी, असहाय।

अनाथपिण्डिक : सावत्थी (श्रावस्ती) का प्रसिद्ध दानी सेठ सुदत्त (अनाथपिण्डिक)।

अनादर (पु.) : अनादर, अ-गौरव, असम्मान।

अनादा / अनादाय (पू.क्रि.) : बिना लिये, न लेकर।

अनापाद (वि.) : अविवाहित।

अनापुच्छा (पू.क्रि.) : बिना पूछे, बगैर पूछे।

अनाबाध (वि.) : बाधा-रहित, सुरक्षित।

अनामन्त (वि.) : अनिमंत्रित, जिससे कुछ पूछा न गया हो।

अनामय (वि.) : रोग-मुक्त, विकार-रहित।

अनामसित (वि.) : जो छुआ न गया हो, अस्पृष्ट, अस्पर्शित।

अनायतन (नपुं.) : अयोग्य स्थान।

अनायास (वि.) : बिना कष्ट के, आसानी से।

अनारम्भ (वि.) : बिना परिश्रम के, बिना खट-पट किये।

अनाराधक (वि.) : असफल।

अनालम्ब (वि.) : आलम्बन-रहित, आधार-रहित।

अनालय (वि.) : आसक्ति-रहित, अनासक्त।

अनावट (वि.) : अनावृत्त, बिना ढका हुआ, खुला।

अनावत्ती (पु.) : जो न लौटने वाला हो।

अनावास (वि.) : जहां किसी का निवास न हो।

अनावरण (वि.) : जो ढका न हो, आवरण-रहित ।

अनाविल (वि.) : जो गंदा न हो, साफ हो।

अनावुत्थ (वि.) : जहां कोई रहा न हो।

अनासक (वि.) : निराहार, व्रत्ती, उपवास करने वाला।

अनासव (वि.) : आस्रव-रहित, निर्मल, चित्त-मैल रहित।

अनाव्हिक (वि.) : गरीब, धनहीन।

अनिक्कसाव (वि.) : काषाय अर्थात चित्त-मलों से युक्त।

अनिखात (वि.) : जो खोदा नहीं गया।

अनिघ (वि.) : दुःख-रहित, दुःख-मुक्त।

अनिच्च (वि.) : अनित्य, अस्थिर।

अनिच्छमान (कृ.) : जो इच्छा न करे, इच्छा-रहित।

अनिच्छा (स्त्री.), अनिच्छा, अरुचि।

अनिञ्जन (नपुं.) : स्थिरता।

अनिट्ठ (वि.) : अनिष्ट, जिसकी इच्छा न हो।

अनिट्ठित (वि.) : असमाप्त।

अनिन्दित (वि.) : निंदा-रहित।

अनिन्दिय (वि.) : अनिंदनीय।

अनिमिस (वि.) : बिना पलके झपके।

अनियत (वि.) : अनिश्चित।

अनिल (पु.) : हवा।

अनिलपथ (पु.) : आकाश, वायुमार्ग।

अनिलोध्दुत (वि.) : वायु से कंपित, हवा से हिला हुआ।

अनिवत्तन (नपुं.), रूकने का अभाव, गतिमान, घूमनेवाला।

अनिसम्मकारी (वि.) : बिना सोच-विचार किये करनेवाला, जल्दबाज।

अनिस्सर (वि.) : १. ईश्वर के बिना, बगैर ईश्वर के; २. ऐश्वर्य के बिना।

अनीक (नपुं.) : सेना, फौज।

अनीघ (वि.) : देखे - **अनिघ**

अनीतिक (वि.) : हानि-रहित, उपद्रव-रहित, शांत।

अनीतिह (वि.) : सुनी-सुनाई बात नहीं, स्वानुभव से ज्ञात।

अनुकङ्खी (वि.) : आकांक्षा करने वाला, इच्छा करने वाला।

अनुकन्तति (क्रि.) : फाड़ता है, काटता है, चीरता है।

अनुकम्पक / अनुकम्पी (वि.) : दयालु, अनुकंपा करने वाला।

अनुकम्पति (क्रि.) : अनुकंपा करता है।

अनुकम्पन (नपुं.) : दया-भाव, अनुकंपा।

अनुकम्पित (वि.) : अनुकंपा-प्राप्त, जिस पर अनुकंपा की गई हो।

अनुकरोति (क्रि.) : नकल करता है, अनुकरण करता है।

अनुकस्सति (क्रि.) : खींचता है, दुहराता है ।

अनुकार (पु.) : नकल, अनुकृति।

अनुकारी (पु.), अनुकरण करने वाला।

अनुकिण्ण (वि.) : बिखेरा हुआ ।

अनुकूल (वि.) : अनुकूल, मेल रखने वाला, प्रतिकूल न होना।

अनुक्कम (पु.) : अनुक्रम, सिलसिला, सूची।

अनुक्कमेन (क्रि.वि.) : क्रमानुसार ।

अनुखुद्दक (वि.) : कम महत्त्व की चीज, मामूली बात।

अनुग (वि.) : १. पीछे चलने वाला, २. जिसका अनुगमन होता हो।

अनुगच्छति (क्रि.) : पीछे चलता है, अनुगमन करता है।

अनुगत (वि.) : जिसका कोई अनुगामी हो।

अनुगति (स्त्री.) : अनुगमन करना।

अनुगामिक / अनुगामी (वि.) : अनुगामी, शिष्य, पीछे चलने वाला।

अनुगायति (क्रि.) : दूसरे गाने वाले के साथ-साथ गाता है।

अनुगाहति (क्रि.) : गोता लगाता है, डूबकी लगाता है।

अनुगिज्झति (क्रि.) : लोभ करता है।

अनुगिद्ध (वि.) : लालची, लोभी।

अनुग्गण्हाति (क्रि.) : अनुग्रह करता है।

अनुग्गण्हन / अनुग्गह (नपुं.) : अनुग्रहण, दया, मदद।

अनुग्गहित (वि.) : अनुग्रहित ।

अनुग्गाहक (वि.) : अनुग्रह करने वाला।

अनुग्गिरन्त (कृ.) : न बोलते हुए, बिना बोले।

अनुग्घाटेति (क्रि.) : उद्घाटन करता है।

अनुचङ्कमति (क्रि.) : साथ-साथ चंक्रमण करता है, पीछे-पीछे चंक्रमण करता है।

अनुचर (पु.) : अनुचरण करने वाला, पीछे चलने वाला, सेवक।

अनुचरण (नपुं.), अभ्यास।

अनुचरित (वि.) : अभ्यस्त।

अनुचिण्ण (वि.) : अभ्यस्त।

अनुचित (वि.) : अनुपयुक्त, अयोग्य।

अनुचिनाति (क्रि.) : संग्रह करता है।

अनुचिन्तेति (क्रि.) : विचार करता है, चिंतन करता है।

अनुच्चारित (वि.) : उच्चारण न किया गया।

अनुच्चिट्ठ (वि.) : ऐसा भोजन जो जूठा नहीं किया गया।

अनुच्छविक (वि.) : योग्य, समीचिन, उचित, सही।

अनुज (पु.) : भाई।

अनुजा (स्त्री) : बहन।

अनुजानाति (क्रि.) : अनुमति देता है।

अनुजीवति (क्रि.) : जीवित रहता है।

अनुजीवी (वि.) : जिसका जीवन किसी दूसरे पर निर्भर हो।

अनुजु (वि.) : जो ऋजु / सीधा न हो, टेढ़ा।

अनुञ्ञा (स्त्री.) : अनुमति, अनुज्ञा।

अनुट्ठान (नपुं.) : अक्रियाशीलता, निष्क्रियता, निठल्लापन।

अनुडसति (क्रि.) : डंक मारता है।

अनुडहति (क्रि.) : जलाता है।

अनुतप्पति (क्रि.) : पछतावा करता है।

अनुताप (पु.) : पश्चाताप, मनोव्यथा, परिताप।

अनुतिट्ठति (क्रि.) : १. पास में खड़ा होता है, २. सहमत होता है।

अनुतीर (नपुं.) : किनारे के पास।

अनुत्तर (वि.) : जिससे बढकर कुछ नहीं, अनुत्तर, सर्वोत्तम, सर्वश्रेष्ठ।

अनुत्तान (वि.) : १. गहरा, गंभीर, जो उथला नहीं; २. अस्पष्ट।

अनुत्थुनाति (क्रि.) : चिल्लाता है, अनुताप करता है।

अनुत्रासी (वि.) : जो भयभीत नहीं।

अनुथेर (पु.) : स्थविर के बाद द्वितीय भिक्खू।

अनुददाति (क्रि.) : देता है।

अनुदहति (क्रि.) : देखे – **अनुडहति :** जलाता है ।

अनुदिसा (स्त्री.) : अनुदिशा, दो दिशाओं के बीच की दिशा।

अनुद्दया (स्त्री.) : अनुकंपा, अनुकृपा।

अनुद्दिट्ठ (वि.) : जिसका संकेत नहीं किया गया, जिसका उच्चारण नहीं किया गया, अनिर्दिष्ट।

अनुध्दत (वि.) : निरंहकारी, जो उध्दत न हो।

अनुधम्म (पु.) : धम्म के अनुसार, धम्मानुकूल।

अनुधावति (क्रि.) : पीछे दौड़ता है।

अनुनय (पु.) : अनुनय, मैत्री-भाव।

अनुनेति (क्रि.), संतुष्ट करता है, मना लेता है, समझा लेता है ।

अनुप / अनूप (पु.) : गीली जमीन।

अनुपकुट्ठ (वि.) : निर्दोष, दोषरहित।

अनुपखज्जति (क्रि.) : दखल देता है।

अनुपगच्छति (क्रि.) : जाता है, वापिस आता है।

अनुपघात (पु.) : अहिंसा।

अनुपचित (वि.) : असंग्रहीत, असंचित।

अनुपच्छिन्न (वि.) : सतत, लगातार, अखंडित, निरंतर।

अनुपञ्ञत्ति (स्त्री.) : उपनियम।

अनुपटिपाति (स्त्री.) : क्रम, क्रमानुसार।

अनुपट्ठित (वि.) : अनुपस्थित, गैर-हाजिर।

अनुपतति (क्रि.) : १. पीछा करना, पीछे जाना; २. हमला करना, जुल्म करना।

अनुपतित (वि.) : पतित, पीड़ित।

अनुपत्ति (स्त्री.) : प्राप्ति, लाभ।

अनुपद (वि.) : पदानुसार, पीछे-पीछे।

अनुपद्दव (वि.) : उपद्रव का न होना।

अनुपधारेति (क्रि.) : विचार नहीं करता है।

अनुपब्बज्जा (स्त्री.) : किसी दूसरे से प्रभावित होकर प्रव्रजित्त होना।

अनुपमेय (वि.) : जिसकी तुलना न की जा सके, अतुलनीय।

अनुपरिगच्छति (क्रि.) : चारों ओर घूमता है।

अनुपरिवत्तति (क्रि.) : लुढ़कता है, गोल-गोल घूमता है, चक्कर लगता है।

अनुपरिवारेति (क्रि.) : घेर लेता है।

अनुपलित्त (वि.) : जो लिबाडा / लिप्त नहीं, जिसको कुछ लगा नहीं, अ-लिप्त।

अनुपवज्ज (वि.) : निर्दोष, दोषरहित।

अनुपविसति (क्रि.) : प्रवेश करता है।

अनुपसम्पन्न (वि.) : जो उपसम्पन्न नहीं हुआ, सामणेर।

अनुपस्सक (वि.) : द्रष्टा, पर्यवेक्षक।

अनुपस्सति (क्रि.) : देखता है, विचार करता है।

अनुपस्सना (स्त्री.) : अनुपश्यना, विचार करना, चिंतन करना।

अनुपहच्च (पू.क्रि.) : बिना हानि किए, बिना आघात किए।

अनुपहत (वि.) : जिसे कुछ हानि नहीं हुई, जो नष्ट नहीं हुआ।

अनुपात (पु.) : अपशब्द, कठोर शब्द, अप्रिय बोल।

अनुपाती (वि.) : १. जो वाक्य प्रहार करता हो, आघात करता हो; २. जो पीछा करता हो।

अनुपादान (वि.) : अनासक्त, बिना ईंधन के।

अनुपादाय (पू.क्रि.) : बिना पकड़े, बिना चपके, अनासक्त होकर।

अनुपादिसेस (वि.) : अशेष उपाधि के निरोध वाली (निर्वाण धातु)।

अनुपापुणाति (क्रि.) : प्राप्त करता है।

अनुपापेति (क्रि.) : प्राप्त करता है।

अनुपाय (पु.) : अनुचित उपाय।

अनुपायास (वि.) : चिन्ता-रहित।

अनुपालक (वि.) : संरक्षण करने वाला, पालन करने वाला।

अनुपालेति (क्रि.) : पालता है।

अनुपाहन (वि.) बिना जूते के।

अनुपिय : कपिलवत्थु की पूर्व दिशा में मल्ल-जनपद का एक नगर।

अनुपुच्छति (क्रि.) : पूछता है, प्रश्न करता है।

अनुपुट्ठ (कृ., वि.) : पूछा गया ।

अनुपुब्ब (वि.) : क्रमशः।

अनुपेक्खति (क्रि.) : ध्यान देता है, विचार करता है

अनुपेक्खना (स्त्री.) : ध्यान, विचार।

अनुपेसेति (क्रि.) : पीछे भेजता है।

अनुपोसिय (वि.) : जिसका पालन-पोषण करना हो।

अनुप्पत्ति (स्त्री.) : १. प्राप्ति, २. (**अन+उप्पत्ति**) जन्म का न होना।

अनुप्पदातु (पु.) : दाता, देने वाला।

अनुप्पदाति (क्रि.) : देता है, दे डालता है।

अनुप्पन्न (वि.) : जो उत्पन्न नहीं हुआ।

अनुप्पीळ (वि.) : जो पीड़ित नहीं किया गया, जिसे कष्ट नहीं दिया गया।

अनुप्पबन्ध (पु.) / **अनुप्पबन्धना** (स्त्री.) : निरंतरता।

अनुप्फरण (नपुं.) : व्याप्त होना, व्याप्त करना।

अनुफुसीयति (क्रि.) : भिगोता है, छिडकता है।

अनुबद्ध (वि.) : जिसका पीछा किया जाता हो।

अनुबन्धति (क्रि.) : पीछा करता है।

अनुबन्धन (नपुं.) : पीछा करना।

अनुबल (नपुं.) : सहायता देना, समर्थन करना।

अनुबुज्झति (क्रि.) : बोध प्राप्त करता है, समझता है।

अनुबुज्झन (नपुं.) : बोध, ज्ञान।

अनुबुद्ध (वि.) : बोध-प्राप्त, ज्ञानी, अल्पतर बुद्ध।

अनुबोध (पु.) : समझ, ज्ञान।

अनुब्बजति (क्रि.) : अनुगमन करता है।

अनुब्बत (वि.) : श्रद्धावान, अनु-व्रत्ती, दूसरे की इच्छानुरूप आचरण करने वाला।

अनुब्यञ्जन / अनुव्यञ्जन (नपुं.) : दूसरे दर्जे के चिन्ह, अतिरिक्त / सहायक / गौण चिन्ह।

अनुब्रूहेति (क्रि.) : बढता है, अभ्यास करता है, सुधारता है।

अनुभवति (क्रि.) : अनुभव करता है, खाता है, चखता है।

अनुभवन (नपुं.) : अनुभव करना, खाना, चखना।

अनुभाग (नपुं.) : गौण हिस्सा, अल्प अंश, मामूली अंश।

अनुभायति (क्रि.) : डरता है।

अनुभाव (नपुं.) : प्रताप, तेजस्विता।

अनुभासति (क्रि.) : दोहराता है।

अनुभूत (कृ., वि.) : अनुभव में आया हुआ, अनुभव किया हुआ।

अनुभुत्त (कृ., वि.), अनुभव में आया हुआ, अनुभव किया हुआ।

अनुभोति (क्रि.) : देखे - **अनुभवति**

अनुमज्जति (क्रि.) : थपथपाता है।

अनुमज्जन (नपुं.) : थपथपाना।

अनुमज्झ (वि.) : मध्यस्थ।

अनुमञ्ञति (क्रि.), स्वीकार करता है, सहमत होता है।

अनुमत (वि.) : अनुमति-प्राप्त।

अनुमति (स्त्री.) : सहमति, अनुज्ञा।

अनुमान (नपुं.) : अनुमान, निष्कर्ष।

अनुमीयति (क्रि.) : अनुमान करता है, परिणाम पर पहुंचता है।

अनुमोदक (वि.) : अनुमोदन करने वाला, समर्थक, प्रसन्न होने वाला।

अनुमोदति (क्रि.) : अनुमोदन करता है।

अनुम्मत (वि.) : जो उन्मत्त (पागल) नहीं।

अनुयात (कृ., वि.) : जिसके पीछे-पीछे कोई आता हो ।

अनुयायी (वि.) : अनुयायी, अनुगामी ।

अनुयुञ्जति (क्रि.) : किसी काम में लगता है, किसी काम में जुटता है।

अनुयोग (पु.) : साधना, जूड़ना।

अनुयोगी (पु., स्त्री., नपुं) : साधक, साधना में लगा हुआ।

अनुरक्खक / अनुरक्खी (वि.) : रक्षक, पहरेदार।

अनुरक्खण (नपुं.) : अनुरक्षण, पहरा।

अनुरक्खति (क्रि.) : रक्षा करता है।

अनुरक्खा (स्त्री.) : आरक्षा, रखवाली।

अनुरक्खिय (वि.) : संरक्षणीय, देखभाल करने योग्य।

अनुरञ्जति (क्रि.) : आकर्षित होता है, आनंदित होता है।

अनुरञ्जित (वि.) : सुशोभित, सजाया हुआ।

अनुरञ्जेति (क्रि.) : सजाता है, चमकाता है, सुशोभित करता है।

अनुरत्त (वि.) : आसक्त, अनुरक्त।

अनुरव (पु.) : गूंज, प्रतिध्वनि, आवाज, मधुर आवाज।

अनुरुद्ध थेर (स्थविर) : अमितोदन शाक्य का पुत्र तथा महानाम का भाई। भगवान बुद्ध के प्रधान भिक्षु शिष्यों में से एक।

अनुरूप (वि.) : अनुकूल, अनुरूप, समानरूप, अनुसार।

अनुरोदति (क्रि.) : चिल्लाता है, चिखता है।

अनुरोध (पु.) : स्वीकृति, अनुकूलता।

अनुलिम्पति (क्रि.) : अभिसिंचन करता है, लीपता / पोतता है।

अनुलिम्पन (नपुं.) : लीपना, अनुलेपन, पोतना।

अनुलोम (वि.) : सीधे क्रम से।

अनुलोमेति (क्रि.) : क्रम का अनुगमन करता है।

अनुवज्ज (वि.) : दोषभागी, निंद्य।

अनुवत्तक (वि.) : अनुगामी।

अनुवत्तति (क्रि.) : अनुकूल आचरण करता है।

अनुवत्तन (नपुं.) : अनुसरण, अनुवर्तन, अनुपालन, अनुगमन।

अनुवत्तेति (क्रि.) : उत्तराधिकारी होता है, अनुकरण करता है।

अनुवदति (क्रि.) : दोषारोपण करता है, दोष लगाता है।

अनुवसति (क्रि.) : किसी के साथ रहता है।

अनुवस्सं (क्रि.वि.) : हर वर्षा काल में।

अनुवस्सिक (वि.) : वार्षिक, सालाना।

अनुवात (पु.) : अनुकूल-वायु, हवा की दिशा में।

अनुवाद (पु.) : दोषारोपण, अनुवाद (एक भाषा से दूसरी भाषा में) रूपांतर।

अनुवासन (नपुं.) : सुगंध से सुवासित करना, सुगंधित करना।

अनुवासित (वि.) : सुवासित किया हुआ, सुगंधित किया हुआ।

अनुवासेति (क्रि.) : सुगंधित करता है।

अनुविचरति (क्रि.) : इधर-उधर घूमता है।

अनुविचरणा (स्त्री.) : इधर-उधर घूमना, टहलना।

अनुविचिनाति (क्रि.), विचार करता है, चिंतन करता है।

अनुविच्च (पू.क्रि.) : जानकर, परीक्षण कर, सोचकर।

अनुविज्जक (पु.) : परीक्षक, खोजकर्ता।

अनुविज्झति (क्रि.) : बींधता है, परीक्षण करता है।

अनुवितक्केति (क्रि.) : तर्क-वितर्क करता है, मनन करता है।

अनुविदित (वि.) : जान लिया गया, विदित, पहचान लिया गया।

अनुविध्द (वि.) : बींधा हुआ।

अनुविधीयति (क्रि.) : (विधी के), अनुसार आचरण करता है।

अनुविलोकेति (क्रि.) : निरीक्षण करता है, अवलोकन करता है।

अनुव्यञ्जन (नपुं.) : देखे - **अनुब्यञ्जन**

अनुसक्कति (क्रि.) : एक ओर हट जाता है, पीछे हट जाता है ।

अनुसंवच्छर (क्रि.वि.) : प्रति-वर्ष, हर साल।

अनुसञ्चरति (क्रि.), चलता-फिरता है, घूमता है।

अनुसञ्चरण (नपुं.) : घूमना, इधर-उधर टहलना, चलना, फिरना ।

अनुसट (वि.) : अभिसिंचित।

अनुसत्थर / अनुसत्थु (पु.) : शिक्षक, उपदेशक, मार्गदर्शक।

अनुसत्थि (स्त्री.) : निर्देश, नियम।

अनुसन्दति (क्रि.) : पीछे लगा रहता है, जुड़ा रहता है।

अनुसन्धि (स्त्री.) : मेल, परिणाम।

अनुसय (पु.) : चित्त का झुकाव, चित्त की प्रवृत्ति (कुपथगामी)।

अनुसरति (क्रि.) : अनुगमन करता है, पीछे चलता है।

अनुसवति (क्रि.) : चूता रहता है, बहता रहता है।

अनुसयित (वि.) : सोया हुआ।

अनुसावक (वि.) : सुनाने वाला, घोषणा करनेवाला।

अनुसावेति (क्रि.) : घोषणा करता है, सुनाता है।

अनुसासक (पु.) : अनुशासक, अनुशासन करने वाला, प्रवचन करने वाला।

अनुसासति (क्रि.), अनुशासन करता है, उपदेश देता है।

अनुसासिक-जातक : एक स्वार्थी भिक्षुणी के बारे में जेवतन में उपदिष्ट जातक कथा (११५)।

अनुसिक्खति (क्रि.) : शिक्षा ग्रहण करता है।

अनुसिक्खन (नपुं.) : किसी प्रसंग से सीख लेना।

अनुसिट्ठ (वि.) : अनुशासित।

अनुसुणाति (क्रि.) : सुनता है।

अनुसूयक (वि.) : ईर्षा-रहित।

अनुसेति (क्रि.) : साथ लेटता है।

अनुसोचति (क्रि.) : शोक करता है, पछताता है।

अनुसोचना (स्त्री.) : विलाप, रोना।

अनुसोत (पु.) : स्त्रोत के अनुसार, प्रवाह की दिशा में।

अनुसोतगामी (पु.) : प्रवाह के अनुसार चलनेवाला।

अनुस्सति (स्त्री.) : याद, स्मृति, जागरूकता।

अनुस्सरण (नपुं.) : अनुस्मरण ।

अनुस्सरति (क्रि.), अनुस्मरण करता है, याद करता है।

अनुस्सव (पु.) : सुनी-सुनाई बात।

अनुस्सुक (वि.) : अनुत्सक, जो कुछ करने के लिए उत्सुक नहीं।

अनुहसति (क्रि.) : हंसता है, मजाक करता है।

अनून (वि.) : अन्यून, संपूर्ण।

अनुपम (वि.) : अनुपम, जिसकी उपमा नहीं, श्रेष्ठ।

अनूहत (वि.) : जिसकी जड़ खुदी नहीं।

अनेक (वि.) : बहुत से, एक नहीं।

अनेकत्थ (वि.) : एक से अधिक अर्थ वाला, अनेकार्थ।

अनेज (वि.) : तृष्णा-विहीन।

अनेध (वि.) : ईंधन-रहित।

अनेळ / **अनेळक** (वि.) : निर्दोष, दोषरहित।

अनेळमूग (वि.) : जो गूंगा न हो, गूंगा नहीं ।

अनेसना (स्त्री.) : (जीविका), की अनुचित खोज।

अनोक (नपुं.) : बे-घर।

अनोकास (वि.) : स्थान, समय या अवसर का अभाव।

अनोजा (स्त्री.) : नारंगी के रंग के फूलों वाला पौधा या उसके फूल।

अनोतत्त (पु.) : हिमालय की कोई झील, संभवतः मानसरोवर।

अनोतप्प (नपुं.) : (पाप करने में) निर्भयता, दुस्साहस।

अनोदक (वि.) : जलरहित, जल के बिना।

अनोदिस्सक (वि.) : सर्व-सामान्य के लिए।

अनोनमति (क्रि.) : नहीं झुकता है।

अनोम (वि.) : श्रेष्ठ।

अनोमज्जति (क्रि.) : (शरीर को हाथ से) मलता है।

अनोमा : कपिलवत्थु के पूर्व की ओर से अनोमा नाम की नदी, जिसे गृहत्याग के अनंतर सिद्धार्थ गौतम ने सर्वप्रथम पार किया।

अनोरपार (वि.) : जिसका न ओर हो न पार, न इस ओर तीर न उस ओर तीर।

अनोवस्सक (वि.) : वर्षा से बचा हआ, वर्षा से सुरक्षित।

अन्त (पु.) : आखिर, अवसान।

अन्तकर (वि.) : अंतिम, आखरी, समापक, अन्त करनेवाला।

अन्तगुण (नपुं.) : आंत, अंतड़ी।

अन्तजातक : देवदत्त के बारे में वेळुवन में उपदिष्ट जातक कथा (२९५)।

अन्तक (पु.) : १. मरण, मृत्यु; २. मार।

अन्तमसो (अ.) : अन्तिम दर्जे का।

अन्तर (नपुं.) : १. भेद, दूरी; २. भीतरी।

अन्तरकप्प (पु.) : दो कल्पों के बीच।

अन्तरघर (नपुं.) : घरों के बीच या गांव में।

अन्तरसाटक (नपुं.) : अंदर का वस्त्र।

अन्तरट्ठक (नपुं.) : शीत-ऋतु के अत्यंत ठंडे आठ दिन, जिस समय (भारत में) बर्फ गिरती है ।

अन्तरधान (नपुं.) : अद्दश्य हो जाना, अन्तरध्यान हो जाना, दिखाई न पड़ना।

अन्तरवासक (पु.) : अन्दर का वस्त्र, लुंगी या धोती की तरह पहना जानेवाला चीवर, अंतरवासक, भिक्षु या भिक्षुणी के पहनने की विशेष आकार-प्रकार से सिलाई गई लुंगी।

अन्तरहित (वि.) : भीतर छिपा हुआ।

अन्तरंस (पु.) : दो कंधों के बीच की दूरी।

अन्तरा (क्रि.वि.) : बीच में।

अन्तरामग्गे (क्रि.वि.) : बीच रास्ते में।

अन्तरापण (पु.) : दुकानों के बीच, बाजार।

अन्तराय (पु.) : बाधा, खतरा।

अन्तरायिक (वि.) : बाधक कारण, बाधा डालनेवाला।

अन्तराल (नपुं.) : बीच की स्थिती।

अन्तरिक (वि.) : इसके बाद की स्थिति।

अन्तलिक्ख (नपुं.) : अंतरिक्ष, आकाश, आकाश और पृथ्वी के बीच का अवकाश।

अन्तवन्तु (वि.) : अन्तवान, जिसका आखिर हो।

अन्तिक (वि.) : सिरे पर।

अन्तिक (नपुं.) : पड़ोस ।

अन्तिम (वि.): आखिरी, अंतिम।

अन्तेपुर (नपुं.) : १. नगर का भीतरी भाग, २. महल का भीतरी भाग, अंतःपुर, रनिवास।

अन्तेवासी (पु.) : आचार्य के साथ रहनेवाला, शिष्य ।

अन्तो (अ.) : अन्दर, भीतर।

अन्तोकुच्छि (पु., स्त्री.) : पेट में, गर्भाशय।

अन्तोगत (वि.) : भीतर, समाहित।

अन्तोजन (पु.) : परिवार का सदस्य।

अन्तोजात (वि.) : अंत्यज, दास, गुलाम ।

अन्तोवस्स (नपुं.), वर्षा के अंदर, बारिश के दिनों में ।

अन्दु (पु.) : बेड़ी, जंजीर।

अन्दुघर (नपुं.) : जेलखाना, कारागार।

अन्ध (वि.) : १. अंधा, २. मूर्ख।

अन्धक (पु.) : मक्खी-विशेष।

अन्धक (पु.) : आंध्र-प्रदेश का निवासी।

अन्धकरण (वि.) : अंधा करने वाला, भ्रांति पैदा करने वाला।

अन्धबाल (वि.) : बहुत ही मूर्ख।

अन्धभूत (वि.) : महामूर्ख, अंधे-समान, अज्ञानी।

अन्धकविन्द : राजगह से तीन मील की दूरी पर मगध जनपद का एक गांव।

अन्धकार (पु.) : १. अंधेरा, २. चकित हो जाना।

अन्धतम (पु., नपुं.) : भयंकर अंधेरा।

अन्धवन : सावत्थी के दक्षिण-पश्चिम कुछ ही दूरी पर स्थित एक वन।

अन्न (नपुं.) : भोजन।

अन्नद (वि.) : भोजन-दाता, भोजन देने वाला।

अन्नपान (नपुं.) : खाना-पीना।

अन्वक्खर (वि.) : अक्षरानुसार।

अन्वगा (भू.क्रि.) : (वह) गया, उसने अनुगमन किया।

अन्वगू (भू.क्रि.) : (वे) गये, उन्होंने अनुगमन किया।

अन्वड्ढमासं (क्रि.वि.) : हर पन्द्रहवें दिन, हर आधे माह।

अन्वत्थ (वि.) : अर्थानुसार।

अन्वदेव (पु.) : पीछे लगा होना, पश्चात।

अन्वहं (क्रि.वि.) : दैनिक, रोजाना।

अन्वागच्छति (क्रि.) : पीछे, पीछे आता है।

अन्वाय (पू.क्रि.) : अनुभव करके, जान कर, हो करके।

अन्वायिक (वि.) : अनुगामी, साथी।

अन्वाहिण्डति (क्रि.) : घूमता है।

अन्वेति (क्रि.) : पीछे-पीछे आता है।

अन्वेसक (वि.) : खोजने वाला, अन्वेषक।

अन्वेसति (क्रि.) : अन्वेषण करता है।

अन्वेसणा (स्त्री.) : अन्वेषणा, गवेषणा, खोज।

अन्वेसी (पु.) : खोजकर्ता, अन्वेषी।

अन्ह (पु.) : दिन (पूर्वान्ह, मध्यान्ह, अपरान्ह)।

अपकड्ढति (क्रि.) : बाहर खींच लेता है, दूर खींच ले जाता है।

अपकरोति (क्रि.) : अपकार करता है, हानि करता है।

अपकस्सति (क्रि.) : एक ओर खींच लेता है, हटा देता है।

अपकार (पु.) : बुराई, हानि, दुष्कर्म।

अपक्कम (पु.) : निकल जाना, दूर करना।

अपक्कमति (क्रि.) : चला जाता है।

अपगच्छति (क्रि.) : हट जाता है, चला जाता है।

अपगब्भ (वि.) : १. फिर जन्म न ग्रहण करने वाला, २. अप्रगल्भ, जो अभिमानी नहीं।

अपगम (पु.) : चले जाना, अदृश्य हो जाना।

अपगम्म (पू.क्रि.) : दूर हट कर, दूर होकर।

अपचय (पु.) : निरोध, जन्म-मरण का निरोध।

अपचयगामी (वि.) : जन्म के निरोध के लिए प्रयत्नशील।

अपचायति (क्रि.) : आदर करता है, सम्मान करता है।

अपचायन (नपुं.) : पूजा, श्रद्धा, सम्मान।

अपचायक / अपचायी (वि.) : पूजा करनेवाला, सम्मान करनेवाला ।

अपचिनाति (क्रि.) : घटाता है, कमजोर करता है।

अपचिति (स्त्री.) : सम्मान, गौरव।

अपचिनन (नपुं.) : १. विनाश, नाश; २. पाप का प्रायश्चित।

अपच्च (नपुं.) : संतान, अपत्य।

अपच्चक्ख (वि.) : अप्रत्यक्ष, जिसका अनुभव नहीं हुआ।

अपजित (नपुं.) : पराजय, हार; (वि.) पराजित।

अपण्णक (वि.) : निर्दोष।

अपण्णक-जातक : अनाथपिण्डिक तथा उसके पांच सौ मित्रों को उपदेशित जातक-कथा (१)।

अपत्थट (वि. : जो फैला न हो।

अपत्थद्ध (वि.) : उत्तेजना-रहित।

अपत्थिय (वि.), जिसकी इच्छा करना अयोग्य है।

अपथ (पु.) : कुमार्ग, अकुशल मार्ग, कुपथ।

अपद (वि.) : बिना पांव के।

अपदान (नपुं.) : जीवनचर्या, अनुश्रुति।

अपदान : खुद्दक निकाय के पन्द्रह ग्रंथों में से एक। इसके दो भाग है – १. थेरापदान (भिक्षु अपदान), २. थेरीपदान (भिक्षुणी अपदान)। इनमें भगवान बुद्ध के समकालीन पांच सौ सैंतालीस भिक्षुओं के तथा चालीस भिक्षुणियों की जीवन-कथाएं संग्रहीत है।

अपदिस (पु.) : गवाही, साक्षी।

अपदिसति (क्रि.) : साक्षी उपस्थित करता करता है, उद्धृत करता है।

अपदेस (पु.) : तर्क, कथन।

अपधारण (नपुं.) : ढक्कन।

अपनामेति (क्रि.) : हटाता है, अलग करता है, दूर कर देता है।

अपनिदहति (क्रि.) : छिपाता है।

अपनिहित (वि.) : छिपा हुआ।

अपनीत (वि.) : हटाया हुआ, दूर कर दिया गया।

अपनुदति (क्रि.) : हांक देता है, दूर हटा देता है।

अपनुदन (नपुं.) : हटाना।

अपनुदितु (पु.) : हटानेवाला।

अपनेति (क्रि.) : दूर हटाता है।

अपमार (पु.) : मृगी, मिरगी का रोग।

अपयाति (क्रि.) : चला जाता है।

अपर (वि.) : दूसरा, पश्चिमीय, अन्य।

अपरगोयान : पृथ्वी के चार महाद्वीपों में से एक।

अपरज्जु (क्रि.वि.) : अगले दिन।

अपरज्झति (क्रि.) : अपराध करता है।

अपरन्न (नपुं.) : दाल, मोटा अनाज।

अपरध्द (वि.) : दोषी, असफल।

अपरन्त (पु.) दूसरा छोर।

अपरन्त : तीसरी संगिती के बाद सम्राट अशोक ने जिन देशों में भिक्षुओं को धम्मप्रचार के लिए भेजा उनमें से एक।

अपरप्पच्चय (वि.) : जो दूसरों पर निर्भर नहीं, स्वयंभू ।

अपरसेलिय : अन्धकों का एक उप-संप्रदाय।

अपराजित (वि.) : जो जीता नहीं गया।

अपराध (पु.) : दोष, कसूर, अपराध।

अपराधिक / अपराधी (पु.) : दोषी, गुनहगार।

अपरापरिय (वि.) : निरंतर, लगातार।

अपरिग्गहित (वि) : जिस पर अधिकार न किया गया हो, अपरिग्रहीत।

अपरिच्छिन्न (वि.) : असीम, अमर्याद, अखंडित।

अपरिमित (वि.) : असीम, अमर्याद।

अपरिमाण (वि.) : परिमाण-रहित, असीम, अमर्याद।

अपलायी (वि.) : पलायन न करने वाला, जो भागता नहीं।

अपलालेति (क्रि.) : लाड़-प्यार करता है।

अपलिबुद्ध (वि.) : बाधा-रहित, स्वतंत्र।

अपलिखति (क्रि.), खुरचता है, चाटता है।

अपलेखन (नपुं.) : खुरचना, चाटना।

अपलोकेति (क्रि.), उपर देखता है, अनुज्ञा प्राप्त करता है।

अपवग्ग (पु.) : मुक्ति, निर्वाण।

अपवत्तति (क्रि.) : घूम जाता है, चला जाता है।

अपवदति (क्रि.) : दोषारोपण करता है, बदनामी करता है।

अपवहति (क्रि.) : ले जाता है, हांकता है।

अपवाद (पु.) : निंदा, बदनामी, अपकीर्ति, दोषारोपण।

अपविद्ध (वि.) : फेंका गया, छोड़ दिया गया, त्यागा गया।

अपसक्कति (क्रि.) : चला जाता है, एक ओर चला जाता है ।

अपसव्य (नपुं.) : दाहिनी ओर।

अपसादन (नपुं.) : निग्रह, अप्रतिष्ठा, निंदा, बुराई।

अपसादित (वि.), निग्रह किया हुआ, उपेक्षित, निंदित।

अपसादेति (क्रि.), निग्रह करता है, उपेक्षा करता है, निंदा करता है।

अपस्मार : देखे - **अपमार**।

अपस्सय (पु.) : आश्रय, सहारा।

अपस्सित (वि.) : निर्भर, सहारे पर निर्भर।

अपस्सयति / अपस्सेति (क्रि.) : आश्रय ग्रहण करता है, सहारा लेता है।

अपस्सेनफलक (नपुं.) : सहारे का तख्ता।

अपहत्तु (पु.) : हटानेवाला।

अपहरति (क्रि.) : लूट ले जाता है, अपहरण करता है।

अपहरण / अपहार (नपुं.) : अपहरण करना, छीन लेना, लूटना।

अपाङ्ग (पु.) : आंख की कोर, अक्षि-कोण, आंख का कोना।

अपाकट (वि.) : अप्रकट, अज्ञात।

अपाकतिक (वि.) : अप्राकृतिक, अस्वाभाविक, अनैसर्गिक।

अपाची (स्त्री) : पश्चिम दिशा।

अपाचीन (वि) : पश्चिमीय, पश्चिम दिशा का।

अपाद / अपादक (वि.) : बिना पांव के रेंगने वाला, पांव-रहित।

अपादान (नपुं.) : १. अलग करना, पृथक्करण; २. पांचवी विभक्ति।

अपान (नपुं.) : प्रश्वास।

अपापक (वि.) : निर्दोष, पाप-रहित।

अपापुरण (नपुं.) : चाबी।

अपापुरति (क्रि.) : खोलता है।

अपाय (पु.) : १. हानि, २. नरक-लोक।

अपायगामी (वि.) : दुरवस्था को प्राप्त होने वाला, पतन की ओर जाने वाला।

अपायमुख (नपुं.) : दुरावस्था का कारण, पतन का कारण।

अपायसहाय (पु.) : फजूल खर्च का साथी, अपव्ययी दोस्त ।

अपार (वि.) : बिना पार के, बिना छोर के।

अपारनेय्य (वि.) : दूसरे छोर पर न पहुंचने वाला, पहुंच से परे।

अपारुत (वि.) : खुला हुआ, आवरण-रहित।

अपालम्ब (पु.) : गाड़ी के सहारे का तख्ता, टेक, ऊंटरा, बैलगाड़ी के सामनेवाले हिस्से में संतुलन बनाए रखने का टेका।

अपि (अ.) : भी, ही।

अपिच (अ.) : किंतु, परंतु, तथापि, तब भी, फिर।

अपि नु (अ.) : प्रश्नवाचक अव्यय।

अपिनाम (अ.) : यदि हम।

अपिस्सु (अ.) : इतना।

अपिधान (नपुं.) : ढक्कन।

अपिलापन (नपुं.) : दोहराना।

अपिह / अपिहालु (वि.) : निर्लोभी, लोभ-रहित।

अपिहित (वि.) : ढका हुआ।

अपुच्छ (वि.) : अप्रश्न, जो विषय प्रश्न करने योग्य नहीं।

अपुञ्ञ (नपुं.) : अपुण्य, पाप।

अपेक्खक (वि.) : अपेक्षा करने वाला।

अपेक्खति (क्रि.) : अपेक्षा करता है, आशा रखता है।

अपेक्खन (नपुं.) / **अपेक्खा** (स्त्री.) : आशा, उम्मीद, अपेक्षा।

अपेत (वि.) : जो चला गया हो।

अपेति (क्रि.) : चला जाता है।

अपेत्तेय्यता (स्त्री.) : पिता की अवज्ञा।

अपेय्य (वि.) : जो पीने योग्य न हो।

अप्प / अप्पक (वि.) : अल्प, थोडा।

अप्पकसिरेन (क्रि.वि.) : कुछ कठिनाई से।

अप्पकिच्च (वि.) : अल्प-कार्य, जिसे थोडा कार्य हो।

अप्पकिण्ण (वि.) : भीड़-रहित, शांत।

अप्पगब्भ (वि.) : निरभिमानी, अहंकार-रहित।

अप्पग्घ (वि.) : अधिक कीमती नहीं, ज्यादा मूल्यवान नहीं, साधारण।

अप्पच्चय : १. (वि.) असमाधान, नाराजगी; २. (पु.) बिना हेतु के।

अप्पटिघ (वि.) : बिना विरोध के, बिना क्रोध के।

अप्पटिपुग्गल (पु.) : ऐसा आदमी जिसका मुकाबला न हो, अतुलनीय व्यक्ति।

अप्पटिबद्ध (वि.) : अनासक्त, आसक्तिरहित, निर्लोभी।

अप्पटिभाग (वि.) : अप्रतिभाग, हिस्सेदार न होना।

अप्पटिभाण (वि.) : पलटकर उत्तर न देनेवाला, चकित होनेवाला।

अप्पटिम (वि.) : अप्रतिम, अतुलनीय।

अप्पटिवत्तिय (वि.) : जो उल्टा न घुमाया जा सके।

अप्पटिवानी (वि.) : पीछे न हटनेवाला।

अप्पटिविध्द (वि.) : अप्राप्त, अबुद्ध।

अप्पटिसञ्ञा (स्त्री) : समझ का या ज्ञान का अभाव।

अप्पटिसन्धिक (वि.) : प्रतिसंधि (=पुनर्जन्म) के अयोग्य।

अप्पटिसम (वि.) : अप्रतिसम, जिसके समान कोई न हो।

अप्पणा (स्त्री) : किसी वस्तु पर ध्यान एकाग्र करना, अर्पणा।

अप्पणिहित (वि.) : इच्छा-रहित, कामना-रहित।

अप्पतिट्ठ (वि.) : असहाय, बेसहारा।

अप्पतिस्सव (वि.) : विद्रोही।

अप्पतीत (वि.) : अप्रसन्न, नाखुश, निराश।

अप्पदुट्ठ (वि.) : अक्रुद्ध, अदुष्ट, अप्रदुष्ट।

अप्पधंसीय (वि.) : ध्वंश न करने योग्य।

अप्पमञ्ञा (स्त्री) : मैत्री, करूणा, मुदिता तथा उपेक्षा आदि चारों असीम भावनाएं।

अप्पमत्त (वि.) : जागरूक, अप्रमादी, अप्रमत्त, आलसरहित।

अप्पमाण (वि.) : असीम।

अप्पमेय्य (वि.) : अप्रमेय, जो मापा न जा सके।

अप्पवत्ति (स्त्री.) : अप्रवृत्ति, अभाव।

अप्पसाद (पु.) : अप्रसाद, असंतोष, असमाधान।

अप्पसत्थ (वि.) : अप्रशंसित।

अप्पसन्न (वि.) : अप्रसन्न।

अप्पसारम्भ (वि.) : विशेष कष्टकर नहीं।

अप्पस्सक (वि.) : निर्धन, गरीब, दरिद्री।

अप्पस्साद (वि.) : अल्प-आस्वाद।

अप्पहीन (वि.) : अप्रहीन, अविनष्ट।

अप्पाणक (वि.) : प्राण-रहित, कीडे-मकौडों रहित।

अप्पातङ्क (वि.) : आतंक-रहित, रोग-रहित।

अप्पिच्छ (वि.) : अल्पेच्छ, आसानी से संतुष्ट होनेवाला।

अप्पिय (वि.) : अप्रिय।

अप्पेकदा (क्रि.वि.) : कभी-कभी।

अप्पेव / अप्पेव नाम (अ.) : अच्छा है, यदि ऐसा है।

अप्पेसक्क (वि.) : अधिक प्रभावशाली नहीं।

अप्पोसुक्क (वि.) : (अप्प+उसुक्क) अल्प-उत्सुक, अनुत्साही।

अप्फुट (वि.) : अस्पृष्ट, जो छुआ नहीं गया।

अप्फोटेति (क्रि.) : उंगलियां चटखाता है, ताली बजाता है।

अफल (वि.) : निष्फल, व्यर्थ।

अफस्सित (वि.) : जिसे स्पर्श नहीं किया, अस्पर्शित।

अफासु (वि.) : असुविधा, कठिनाई।

अफेग्गुक (वि.) : दुर्बल नहीं, सबल, मजबूत।

अबद्ध / **अबन्धन** (वि.) : बन्धन-मुक्त, स्वतंत्र।

अबल (वि.) : कमजोर, दुर्बल।

अबला (स्त्री.) : औरत, स्त्री।

अबब (नपुं.) : १. संख्या विशेष, २. एक नरक-लोक।

अब्बण (वि.) : व्रण-रहित, घाव-रहित।

अब्बत (वि.) : अ-व्रत, व्रत-विहीन।

अबाध (वि.) : बाधा-रहित, निरोगी, रोगमुक्त।

अब्बुद (नपुं.) : १. गर्भाधान के पहले या दूसरे महीने में गर्भ की स्थिति, २. फोडा, ३. एक नरक-लोक।

अब्बूहति (क्रि.) : बाहर निकालता है, खींचकर निकालता है।

अब्बूळ्ह (वि.) : बाहर निकाला गया, खींचा गया।

अब्बोकिण्ण (वि.) : सतत, लगातार, विघ्न-रहित।

अब्बोच्छिन्न (वि.) : सतत, बाधा-रहित ।

अब्बोहारिक (वि.) : अव्यावहारिक, गैरकानूनी।

अब्भ (नपुं.) : आकाश, बादल।

अब्भपटल (नपुं.) : बादलों का समूह।

अब्भक (नपुं.) : सीसा, अबरक।

अब्भक्खाति (क्रि.), निंदा करता है, विरुद्ध बोलता है।

अब्भक्खान (नपुं.) : मिथ्या दोषारोपण।

अब्भञ्जति (क्रि.) : तेल की मालिश करता है।

अब्भञ्जन (नपुं.) : मालिश करना, तेल / उबटन लगाना।

अब्भतीत (वि.) : जो गुजर गया।

अब्भनुमोदति (क्रि.) : अत्यधिक संतोष प्रकट करता है।

अब्भनुमोदना (स्त्री.) : अत्यधिक संतोष प्रकट करना।

अब्भन्तर (नपुं.) : भीतर, अंदर।

अब्भन्तर-जातक : बिबांदेवी के लिए सारिपुत्त द्वारा आम्ररस प्राप्त किए जाने के संबंध में जातक-कथा (२८१)।

अब्भागत (वि.) : अतिथि, मेहमान, पधारा हुआ।

अब्भागमन (नपुं.) : आगमन, पदार्पण।

अब्भाघात (नपुं.) : वध-स्थल।

अब्भाचिक्खति (क्रि.) : दोषारोपण करता है।

अब्भाचिक्खन (नपुं.) : आक्षेप, आरोप, दोषारोपण।

अब्भान (नपुं.) : आवाहन, प्रायश्चित करने के बाद भिक्षु को संघ में वापिस लेना।

अब्भाहत (वि.) : आक्रमित, जिस पर आक्रमण किया गया।

अब्भुक्किरण (नपुं.) : बाहर खींचना, सींचना।

अब्भुक्किरति (क्रि.) : बाहर खींचता है, सींचता है।

अब्भुगच्छति (क्रि.) : ऊपर जाता है।

अब्भुग्गत (वि.) : ऊपर उठा, उभरा हुआ।

अब्भुगमन (नपुं.) : ऊपर उठना।

अब्भुग्गिरति (क्रि.) : (कुछ) उठाता है या उठाकर धमकाता है।

अब्भुग्गिरण (नपुं.) : (कुछ) उठाना या उठाकर धमकाना।

अब्भुट्ठान (नपुं.) : उठना, समृद्ध होना, बढना।

अब्भुत (वि.) : आश्चर्यजनक, विस्मयकारी, विलक्षण, अद्भुत।

अब्भुतधम्म : धर्म के नौ अंगों में से एक, आश्चर्यकर-प्रकरण।

अब्भुदेति (क्रि.) : ऊपर उठता है, अभ्युदय होता है, उन्नति करता है।

अब्भुन्नत (वि.) : ऊपर उठा, उन्नत।

अब्भुम्मे (अ.) : ओह! हाय!

अब्भुय्याति (क्रि.) : चढाई करता है, आक्रमण करता है।

अब्भुसूयक (वि.) : उत्साही।

अब्भेति (क्रि.) : आवाहन करता है।

अब्भोकास (पु.) : खुला आकाश, खुली जगह, खुला मैदान।

अब्भोकासिक (वि.) : खुले आसमान के नीचे रहनेवाला।

अब्भोकिण्ण (वि.) : भीड़-भाड़ वाला।

अब्भोकिरण (नपुं.) : अभिचिंतन ।

अब्भोकिरति (क्रि.) : सिंचन करता है, अभिषेक करता है ।

अभब्बो (वि.) : अयोग्य, अक्षम, असमर्थ।

अभय (वि.) : भय-रहित, निर्भय।

अभाव (पु.) : लोप, अदर्शन, न होना।

अभावित (वि.) : अनभ्यस्त, जिसका अभ्यास (भावना) नहीं किया, अविकसित।

अभिकङ्खति (क्रि.) : इच्छा करता है, कामना करता है।

अभिकङ्खन (नपुं.) : इच्छा, कामना।

अभिकिण्ण (वि.) : बिखरा हुआ, फैला हुआ।

अभिकिरण (नपुं.) : बिखराना, फैलाना।

अभिकिरति (क्रि.) : बिखेरता है, फैलाता है।

अभिकीळति (क्रि.) : खेलता है।

अभिकूजति (क्रि.) : गुंजा देता है, कूजन करता है, चहकता है।

अभिकूजन (नपुं.) : गुंजन, चहकना ।

अभिकूजित (वि.) : गुंजित।

अभिक्कन्त (वि.) : १. उन्नत, आगे बढा हुआ, २. अत्यंत सुंदर, बहुत ही सुंदर।

अभिक्कम (पु.) : आगे बढ़ना।

अभिक्कमति (क्रि.) : चल देता है, आगे बढ़ता है।

अभिक्खण (वि.) : निरंतर, नित्य।

अभिक्खणं (क्रि.वि.) : निरंतर, लगातार।

अभिक्खणति (क्रि.) : खोदता है।

अभिक्खणन (नपुं.), खोदना।

अभिगज्जति (क्रि.) : गर्जता है।

अभिगज्जन (नपुं.) : गर्जना, दहाड़ना।

अभिगिज्झति (क्रि.) : तरसता है, लालच करता है।

अभिगिज्झन (नपुं.) : लालच, अभिप्सा।

अभिघात (पु.) / : १. हत्या, प्रहार; २. संपर्क।

अभिघातन (नपुं) : हत्या करना।

अभिघाती (पु.) : घात करने वाला, नाश करने वाला, शत्रु।

अभिचेतसिक (वि.) : चित्त-संबंधी।

अभिचेतेति (क्रि.) : सोचता है।

अभिजच्च (वि.) : अभिजात, उच्चकुलोत्पन्न।

अभिजप्पति (क्रि.) : जाप करता है, इच्छा करता है, प्रार्थना करता है।

अभिजात (वि.) : कुलीन।

अभिजाति (स्त्री.) : १. पुनर्जन्म, २. वर्ग-विशेष।

अभिजानन (नपुं.) : पहचानना, याद करना।

अभिजानाति (क्रि.) : सम्यक प्रकार से जानता है।

अभिजायति (क्रि.) : उत्पन्न होता है, पैदा होता है।

अभिजिगिंसति (क्रि.) : जीतने की इच्छा करता है।

अभिज्जमान (वि.) : जो टूटे नहीं, जो पृथक न हो, विलग करने के अयोग्य।

अभिज्झा (स्त्री.) : अत्यंत लोभ।

अभिज्झायति (क्रि.) : इच्छा करता है।

अभिञ्ञ (वि.) : जानकार।

अभिञ्ञा (स्त्री.) : अभिज्ञा, विशेष प्रकार का ज्ञान ।

अभिञ्ञाण (नपुं.) : अभिज्ञान, पहचान।

अभिञ्ञाय (पू.क्रि.) : भली प्रकार जान कर, अच्छी तरह जान कर।

अभिञ्ञात (वि.) : प्रसिद्ध, सुविदित, अच्छी तरह ज्ञात ।

अभिञ्ञेय्य (वि.) : पूरी पहचान करने योग्य, अच्छी तरह जानने योग्य।

अभिण्ह-जातक : कुत्ते और हाथी की कथा, जो अभिन्न मित्र बन गये थे (२७)।

अभिण्ह (वि.) : लगातार।

अभिण्हं (क्रि.वि.) : प्रायः।

अभिण्हसो (क्रि.वि.) : सदैव, हमेशा।

अभितत्त (वि.) : तपा हुआ, तपाया हुआ, अभितप्त।

अभितपति (क्रि.) : १. तपता है, २. चमकता है।

अभिताप (पु.) : भयंकर गरमी, भयंकर उष्णता।

अभिताळित (वि.) : ताडित, पीटा गया (वाद्य आदि)।

अभिताळेति (क्रि.) : ताडता है, पीटता है।

अभितिट्ठति (क्रि.) : बाजी मार ले जाता है, आगे बढ़ जाता है।

अभितुण्ण (वि.) : सताया हुआ, व्याकुल।

अभितुदति (क्रि.) : आघात करता है, चुभोता है, पीड़ा देता है।

अभितो (अ) : चारों ओर से।

अभितोसेति (क्रि.) : अच्छी तरह संतुष्ट करता है।

अभित्थनति / **अभित्थनेति** (क्रि.) : गर्जना करता है, गरजता है।

अभित्थरति (क्रि.) : जल्दी करता है।

अभित्थवति (व.क्रि.), प्रशंसा करता है, स्तुति करता है।

अभित्थवन (नपुं.) : प्रशंसा, स्तुती।

अभित्थुत (वि.) : प्रशंसित।

अभित्थुनाति (क्रि.) : प्रशंसा करता है।

अभिदोस (पु.) : गत-संध्या, बिती शाम।

अभिदोसिक (वि.) : गत-संध्यासंबंधी।

अभिधमति (क्रि.) : बजाता है।

अभिधम्म (पु.) : विशेष धम्म, तात्त्विक धम्म, अभिधम्म पिटक की विश्लेषणात्मक देशना।

अभिधम्मपिटक : तीन पिटकों में से एक। इसके अंतर्गत सात ग्रंथ हैं - १. धम्मसङ्गणी, २. विभङ्ग, ३. धातुकथा, ४. पुग्गल पञ्ञत्ति, ५. कथावत्थु, ६. यमक, ७. पट्ठान।

अभिधम्मिक (वि.) : अभिधम्म का जानकार।

अभिधा (स्त्री.) / **अभिधान** (नपुं.) : नाम या संज्ञा।

अभिधानप्पदीपिका : बारहवी शताब्दी में लिखा गया पालि-कोश। इसकी रचना संस्कृत अमर-कोश के ढंग पर हुई है।

अभिधावति (क्रि.), दौड़ता है ।

अभिधेय्य (नपुं.) : अर्थ, (वि.) : नामवाला।

अभिनत (वि.) : नत, झुका हुआ।

अभिनदति (व.क्रि.), नाद करता है, करता है, ध्वनि करता है।

अभिनदित (कृ.) : आवाज, ध्वनि।

अभिनन्दति (क्रि.) : आनंदित होता है, संतुष्ट होता है।

अभिनन्दन (वि.) : आनंद, प्रसन्नता, संतोष।

अभिनमति (क्रि.) : झुकता है।

अभिनयन (नपुं.) : १. लाना, २. पूछताछ ।

अभिनय (नपुं.) : नाटक ।

अभिनव (वि.) : नूतन, ताजा।

अभिनादित (वि.) : निनादित, गुंजित।

अभिनिकूजित (वि.) : (पक्षियों की आवाज से) गुंजित।

अभिनिक्खमति (क्रि.) : अभिनिष्क्रमण करता है, गृहत्याग करता है।

अभिनिक्खमन (नपुं.) : अभिनिष्क्रमण, गृहत्याग।

अभिनिक्खिपति (क्रि.) : रख देता है।

अभिनिक्खिपन (नपुं.) : रख देना।

अभिनिपज्जति (क्रि.) : लेट जाता है।

अभिनिपतति (क्रि.) : नीचे गिरता है, आगे बढता है।

अभिनिपात (पु.) / **अभिनिपातन** (पु.) : गिर जाना, आगे बढ़ाना, चढाई, आक्रमण।

अभिनिप्पीळेति (क्रि.) : पीड़ा देता है, पीड़ता है।

अभिनिप्फज्जति (क्रि.) : उत्पन्न होता है, समर्थ होता है।

अभिनिप्फत्ति (स्त्री.) : अभिनिष्पत्ति, उत्पन्न होना, समर्थ होना।

अभिनिप्फादित (वि.) : निष्पन्न किया हुआ

अभिनिप्फादेति (क्रि.) : अभिनिष्पादन करता है, उत्पन्न करता है।

अभिनिब्बत्त (वि.) : उत्पन्न, जन्म ग्रहण किया हुआ।

अभिनिब्बत्ति (स्त्री.) : जन्म ग्रहण करना, उत्पत्ति।

अभिनिब्बत्तेति (क्रि.) : जन्म ग्रहण करता है।

अभिनिब्बिदा (स्त्री.) : वैराग्य।

अभिनिब्बुत (वि.) : पूर्ण शांत, पूरी तरह बुझा हुआ।

अभिनिमन्तेति (क्रि.) : निमंत्रण देता है।

अभिनिम्मिणाति (क्रि.) : उत्पन्न करता है, निर्माण करता है।

अभिनिरोपन (नपुं.) : अपने चित्त को लगाना, मन को केंद्रित करना।

अभिनिरोपेति (क्रि.) : (अपने चित्त में) स्थान देता है, टिकाता है।

अभिनिविसति (क्रि.) : आसक्त होता है, चिपकता है।

अभिनिवेस (पु.) : झुकाव, आसक्ति।

अभिनिसीदति (क्रि.) : पास बैठता है।

अभिनिस्सट (वि.) : निकाल दिया गया, बाहर किया गया।

अभिनीत (वि.) : लाया गया।

अभिनीहट (वि.) : बाहर लाया गया।

अभिनीहरति (क्रि.) : बाहर लाता है।

अभिनीहार (पु.) : संकल्प, अधिष्ठान।

अभिपत्थित (वि.) : वांछित, प्रार्थित।

अभिपत्थेति (क्रि.) : कामना करता है, इच्छा करता है।

अभिपालेति (क्रि.) : पालन करता है, संरक्षण करता है।

अभिपीळेति (क्रि.) : पीड़ा पहुंचाता है, पीड़ता है।

अभिपुच्छति (क्रि.) : पूछता है।

अभिपूरति (क्रि.) : भर जाता है, पूरा होता है।

अभिप्पकिरति (क्रि.) : बिखेरता है, फैलाता है।

अभिप्पकिण्ण (वि.) : बिखेरा हुआ, फैलाया हुआ।

अभिप्पमोदति (क्रि.) : आनंदित होता है, प्रमुदित होता है।

अभिप्पसाद (पु.) : श्रद्धा, भक्ति, विश्वास।

अभिप्पसारेति (क्रि.) : पसारता है, फैलाता है।

अभिप्पसीदति (क्रि.) : श्रद्धावान होता है।

अभिभवति (क्रि.) : जीत लेता है, पराजित करता है ।

अभिभवन (नपुं.) : जीत, विजय।

अभिभवनीय (वि.) : जिसे जीत लेना चाहिए, पराजित करने योग्य।

अभिभू (वि.) : विजेता।

अभिभूत (वि.) : विजित।

अभिमङ्गल (वि.) : मंगल, शुभ, अनुकूल।

अभिमण्डित (वि.) : सजाया गया।

अभिमत (वि.) : इच्छित।

अभिमत्थति (क्रि.) : मथता है, हिलाता है।

अभिमद्दति (क्रि.) : मर्दन करता है।

अभिमद्दन (नपुं.) : मर्दन।

अभिमनाप (वि.) : बहुत अच्छा लगनेवाला, मन को भाने वाला।

अभिमान (पु.) : स्वाभिमान।

अभिमार (पु.) : डाकू।

अभिमुख (वि.) : उपस्थित, आमने-सामने।

अभियाचति (क्रि.) : याचना करता है, मांगता है।

अभियाचन (नपुं.) : याचना।

अभियाति (क्रि.) : विरुद्ध जाता है।

अभियुञ्जति (क्रि.) : १. अभ्यास करता है, २. अभियोग लगाता है, दोषारोपण करता है।

अभियुञ्जन (नपुं.) : १. अभ्यास, २. मुकदमा, अभियोग।

अभियोग (पु.) : अभ्यास, विधि, पालन।

अभियोगी (पु.) : अभ्यासी।

अभिरक्खति (क्रि.) : रक्षा करता है।

अभिरक्खा (स्त्री.) / **अभिरक्खन** (नपुं.) : रक्षा, देखभाल, पहरा।

अभिरति (स्त्री.) : प्रीति, आसक्ति।

अभिरद्धि (स्त्री.) : समाधान, संतोष।

अभिरमति (क्रि.) : रमण करता है, आनंद लेता है।

अभिरमण (नपुं.) : आनंद, रमण।

अभिराम (वि.) : अनुकूल।

अभिरुचि (स्त्री.) : इच्छा, कामना।

अभिरुचित (वि.) : सुखद, प्रिय।

अभिरुचिर (वि.) : अत्यंत सुंदर।

अभिरुद (वि.) : गूंजता हुआ।

अभिरूप (वि.) : सुंदर।

अभिरूहति (क्रि.), ऊपर चढता है।

अभिरूहन (नपुं.) : चढाई, ऊपर चढ़ना।

अभिरूळ्ह (वि.), आरूढ, सवार, चढ़ा हुआ।

अभिरोचेति (क्रि.) : पसंद करता है।

अभिरोपन (नपुं.) : चित्त की एकाग्रता, ध्यान देना।

अभिरोपेति (क्रि.), चित्त को एकाग्र करता है, ध्यान देता है।

अभिलक्खित (वि.) : चिन्हित, निशान किया हुआ।

अभिलक्खेति (वि.) : चिन्ह लगाता है।

अभिलाप (पु.) : बोलना, बातचीत।

अभिलासा (स्त्री.) : अभिलाषा, इच्छा।

अभिवञ्चन (नपुं.) : ठगी, वंचना।

अभिवट्ठ (वि.) : जिस पर वर्षा हुई हो।

अभिवड्ढति (क्रि.) : बढता है, वृद्धि होती है।

अभिवड्ढन (नपुं.) : वृद्धी, बढोतरी।

अभिवण्णित (वि.) : प्रशंसित।

अभिवण्णेति (क्रि.) : प्रशंसा करता है।

अभिवदति (क्रि.) : घोषणा करता है।

अभिवन्दति (क्रि.) : वंदना करता है।

अभिवस्सति (क्रि.) : बरसता है।

अभिवादन (नपुं.) : नमस्कार, प्रणाम।

अभिवादेति (क्रि.) : अभिवादन करता है, नमन करता है।

अभिवायति (क्रि.) : हवा चलती है।

अभिवारेति (क्रि.) : रोकता है, निवारण करता है।

अभिविजयति (क्रि.) : जीतता है, विजयी होता है।

अभिविञ्ञापेति (क्रि.) : प्रेरित करता है, उत्साहित करता है।

अभिवितरण (नपुं.) : दान, वितरण।

अभिवुट्ठ (वि.) : देखे - **अभिवट्ठ**

अभिविसिट्ठ (वि.) : अत्यंत विशेष।

अभिसङ्खत (वि.) : अभिसंस्कृत, रचा गया।

अभिसङ्खरोति (क्रि.) : रचता है।

अभिसङ्खार (पु.) : उपक्रम, संस्कार, संग्रह, संचय।

अभिसङ्खारिक (वि.) : संस्कार-संबंधी, संस्कार से उत्पन्न।

अभिसङ्खरण (नपुं.) : प्रबंध, व्यवस्था।

अभिसङ्ग (पु.) : आसक्ति।

अभिसङ्गी (वि.) : आसक्त, अनुरक्त।

अभिसज्जति (क्रि.) : क्रोधित होता है ।

अभिसज्जन (नपुं.) : क्रोध।

अभिसञ्चेतेति (क्रि.) : विचार करता है, सोचता है।

अभिसट (वि.) : समागत, जिसके पास गए हो, जिससे मिलने गए हो।

अभिसत्त (वि.) : अभिशप्त, शापित।

अभिसद्दहति (क्रि.) : श्रद्धा करता है।

अभिसन्तापेति (क्रि.) : जलाता है।

अभिसन्द (पु.) : उतराना, परिणाम, प्रवाह, निस्राव।

अभिसन्दन (नपुं.) : प्रवाह, धारा, परिणाम।

अभिसन्दहति (क्रि.) : जोड़ता है, मेल बिठाता है।

अभिसन्देति (क्रि.) : उतराना करवाता है, प्रवाहित करता है।

अभिसपति (क्रि.) : शाप देता है, शपथ देता है, कसम खाता है।

अभिसपन (नपुं.) : शाप, कसम।

अभिसमय (पु.) : स्पष्ट ज्ञान।

अभिसमागच्छति (क्रि.) : पूर्णरूप से समझ लेता है।

अभिसमाचारिक (वि.) : सदाचार संबंधी।

अभिसमेच्च (पू.क्रि.) : अच्छी तरह समझकर, भली प्रकार समझकर।

अभिसमेत (वि.) : हृदयंगम किया हुआ, संपूर्ण रूप से जाना हुआ, अनुभव किया हुआ।

अभिसमेति (क्रि.) : संपूर्ण रूप से हृदयंगम कर लेता है, जान लेता है, अनुभव करता है।

अभिसम्पराय (पु.) : पुनर्जन्म, परलोक।

अभिसम्बुज्झति (क्रि.) : संबोधि प्राप्त करता है, बुद्धत्व प्राप्त करता है।

अभिसम्बुद्ध (वि.) : संपूर्ण ज्ञानी।

अभिसम्बोधि (स्त्री.) : संपूर्ण ज्ञान, परिपूर्ण ज्ञान।

अभिसम्भव (वि.) : जिसे प्राप्त करना कठिन हो, दुष्प्राप्य।

अभिसम्भवति (क्रि.) : पाने में समर्थ होता है, सामना करने में समर्थ होता है।

अभिसम्भुनाति (क्रि.) : प्राप्त करता है।

अभिसर (पु.) : साथी, अनुयायी।

अभिसाप (पु.) : अभिशाप।

अभिसारिका (स्त्री.) : राज-सेविका।

अभिसिञ्चति (क्रि.) : अभिषेक करता है, सींचता है, (जल), छिड़कता है।

अभिसेक (पु.) : अभिषेक, सिंचन।

अभिहट (वि.) : लाया गया।

अभिहनति (क्रि.) : चोट पहुंचाता है, मारता है।

अभिहरति (क्रि.) : लाता हरता है, भेंट करता है।

अभिहार (पु.) : समीप लाना, भेंट करना।

अभिहित (वि.), जो कहा गया।

अभीत (वि.) : निर्भय, निडर।

अभूत (वि.) : असत्य, अयथार्थ, अवास्तव।

अभेज्ज (वि.) : अभेद्य, जो बांटा न जा सके, जो काटा न जाए।

अभोज्ज (वि.) : अखाद्य, जो खाने योग्य न हो।

अमच्च (पु.) : सचिव, अमात्य, मंत्री।

अमज्ज (नपुं.) : अमद्य, निरासव, मदिरारहित।

अमज्जप (वि.) : अमद्यप, जो शराबी नहीं।

अमत (नपुं.) : जो मरता नहीं, अमर, अमृत।

अमत्त (वि.) जिसे नशा नहीं चढा।

अमत्तञ्ञु (वि.) : अमात्रज्ञ, जिसे (भोजन की) मात्रा का ज्ञान न हो।

अमत्तेय्य (वि.) : माता के प्रति अगौरव, माता के प्रति अनादरभाव।

अमनुस्स (पु.) : अमनुष्य, भूत-प्रेत, देवता आदि।

अमम (वि.) : निर्लोभी।

अमर (वि.) : १. जो मरे नहीं, २. देवता ।

अमरत्त (नपुं.) : अमरत्त्व, मरण का अभाव।

अमरा (स्त्री.) : फिसलनी मछली।

अमल (वि.) : निर्मल, मल-रहित, विशुद्ध।

अमस्सुक (वि.), बिना दाढी के।

अमातापितिक (वि.) : मातृ-पितृ हीन, अनाथ।

अमातिक (वि.) : मातृहीन।

अमानुस (वि.) : अमनुष्य।

अमायावी (वि.) : अमायावी, जो मायावी नहीं, छल-कपट रहित।

अमावसी (पु.) : अमावस, अमावस्या।

अमित (वि.) : असीम, अमर्याद, अपरिमित।

अमिताभ (वि.) : अनंत आभा वाले, बुद्ध का एक नाम।

अमिता : सिंहहनु की दो बेटियों में से एक। सुद्धोदन की बहन। देवदत्त की मां।

अमितोदन : सिंहहनु का पुत्र। सुद्धोदन का भाई। महानाम तथा अनुरुद्ध का पिता ।

अमित्त (पु.) : अमित्र, शत्रु ।

अमिलात (वि.) : जो म्लान नहीं, जो मुरझाया नहीं।

अमिस्स (वि.) : अमिश्रित।

अमु (सर्व.) : अमुक ।

अमुच्छित (वि.) : निर्लोभी, लोभरहित, अमोहित।

अमुत्त (वि.) : अमुक्त, जो मुक्त नहीं, बन्धन-युक्त।

अमुत्र (क्रि.वि.) : अमुक जगह, अमुक स्थान पर।

अमोघ (वि.), निष्फल नहीं, व्यर्थ नहीं।

अमोह (पु.) : प्रज्ञा, मोह का अभाव।

अम्ब (पु.) : आम, आम का फल।

अम्बङ्कुर (पु.) : आम का अंकुर।

अम्बपक्क (नपुं.) : पका आम।

अम्बपान (नपुं.) : आम का पन्ना, आम से बनाया गया पेय।

अम्बपिण्डी (स्त्री.) : आमों का गुच्छा।

अम्बवन (नपुं.) : आम्रवन।

अम्बलट्ठिका (स्त्री.) : आम का पौधा।

अम्ब-जातक : १. सूखे के समय हिमालय में रहनेवाले एक तपस्वी ने जानवरों के लिए जल की व्यवस्था की थी। कृतज्ञ जानवर उसके लिए अनेक उपहार लाए थे (१२४); २. बुद्धिमान चाण्डाल से शिल्प सीखनेवाले ब्राह्मण की जातक कथा (४७४)।

अम्बचोर-जातक : अम्बवन में अपने लिए एक कुटी बनाकर रहनेवाले दुष्ट तपस्वी की जातक-कथा (३४४)।

अम्बपाली : वेसाली की प्रसिद्ध गणिका जिसने अपना अम्बवन बुद्ध-प्रमुख भिक्षुसंघ को दान दिया था।

अम्बर (नपुं.) : १. वस्त्र, कपड़ा, २. आकाश।

अम्बा (स्त्री.) : मां।

अम्बिल (वि.) : खट्टा।

अम्बु (नपुं.) : जल, पानी।

अम्बुचारी (पु.) : मछली, पानी में रहने वाला जीव।

अम्बुज (वि.) : १. जलज, पानी में जन्मा हुआ; (नपुं) : कमल।

अम्बुधर (पु.) : बादल।

अम्बुजिनी (स्त्री.) : कमल का तालाब।

अम्भो (अ.) : अरे पुरूष!, पुरूष के लिए संबोधन।

अम्म (अ.) : मां, माता के लिए संबोधन।

अम्मण (नपुं.) : धान का माप-विशेष।

अम्मा (स्त्री.) : मां।

अम्ह (सर्व.) : मैं।

अम्हि (क्रि.) : (मैं) हूँ।

अम्ह, अम्हा (क्रि.) : (हम) हैं।

अय (पु.) : आय, आमदनी, कमाई; (पु., नपुं.) : लोहा या तांबा।

अयकूट-जातक : बोधिसत्त्व ने जानवरों की हत्या बंद कराई थी, उस सम्बन्ध में जातक कथा (३४७)।

अयं (सर्व.) : यह।

अयथा (अ.) : अयथार्थ, मिथ्या।

अयन (नपुं.) : मार्ग, पथ।

अयस (नपुं.) : अपयश, असफलता।

अयिर (पु.) : स्वामी।

अयुत्त (वि.) : अयोग्य, अन्याय।

अयोकूट (पु.) : लोहे का हथौड़ा।

अयोखील (नपुं.) : लोहे का कीला।

अयोगुळ (पु.) : लोहे का गोला।

अयोघन (नपुं.), लोहे का घन, डंडा, मुद्गर।

अयोमय (वि.) : लोहे से बना हुआ।

अयोसङ्कु (पु.) : लोहे का कांटा।

अयोघर-जातक : बोधिसत्त्व द्वारा लोहे के घर में जन्म लेने की जातक कथा (५१०)।

अयोग्ग (वि.) : अयोग्य, अनुचित।

अयोज्झ (वि.) : जिसके विरुद्ध युद्ध न किया जा सके।

अयोनिसो (क्रि.वि.) : अनुचित तौर पर, बेढंग।

अय्य (पु.) : मालिक, स्वामी।

अय्यपुत्त (पु.) : मालिक का बेटा, स्वामी-पुत्र।

अय्यक (पु.) : पितामह, पिता के पिता, दादा।

अय्यका / अय्यिका (स्त्री.) : पितामही, दादी ।

अय्या (स्त्री.) : महोदया, स्वामिनी, मालकीन।

अर (नपुं.) : पहिये की तीली या आरा।

अरक-जातक : बोधिसत्त्व ने अपने शिष्यों को चार ब्रह्म-विहारों (मैत्री, करुणा, मुदिता और उपेक्षा), की शिक्षा दी थी। उस संबंध में जातक कथा (१६९)।

अरक्खिय (वि.) : जिसे सुरक्षित न रखा जा सकता हो।

अरक्खेय्य (वि.) : जिसे आरक्षा की आवश्यकता न हो।

अरघट्ट (नपुं.) : रहट।

अरज (वि.) : रज-रहित, निर्मल।

अरञ्ञ (नपुं.) : अरण्य, जंगल।

अरञ्ञक (वि.) : अरण्य में रहनेवाला, अरण्यवासी।

अरञ्ञगत (वि.) : जंगल में गया हुआ।

अरञ्ञवास (पु.) : अरण्यवास, अरण्य में निवास।

अरञ्ञविहार (पु.) : अरण्यविहार, वन में विहार, जंगल में रहना।

अरञ्ञ-जातक : पत्नि के मरने के बाद बोधिसत्त्व पुत्र के साथ हिमालय में जाकर तपस्वी जीवन बिताने लगे। वहां एक लड़की ने तरुण का शील भंग किया। उस संबंध में जातक कथा (३४८)।

अरञ्ञानी (स्त्री.) : बड़ा जंगल।

अरण (वि.) : शांत चित्त।

अरणि / अरणी (स्त्री.) : रगड़कर आग पैदा करने के लिए लकड़ी का एक टुकड़ा।

अरणिमथन (नपुं.) : आग पैदा करने के लिए लकड़ी के दो टुकड़ों को रगड़ना।

अरणिसहित (नपुं.) : रगड़ने के लिए ऊपर की लकड़ी।

अरति (स्त्री.) : अरुचि।

अरती : मार की तीन कन्याओं में से एक। अन्य दो है तण्हा (तृष्णा), और रगा (राग, आसक्ति)।

अरविन्द (नपुं.) : कमल, कंवल।

अरह (वि.) : योग्य, उचित।

अरहध्दज (पु.) : अर्हत-ध्वजा, भिक्षु का काषाय वस्त्र, चीवर।

अरहति (क्रि.) : योग्य होता है।

अरहत्त (नपुं.) : अर्हत्त्व।

अरहत्तफल (नपुं.) : अर्हत्त्वफल।

अरहत्तमग्ग (पु.) : अर्हत्त्व-प्राप्ति का मार्ग।

अरहन्त (पु.) : जिसने अर्हत्त्व-फल प्राप्त कर लिया।

अरि (पु.) : शत्रु, दुश्मन।

अरिंदम (पु.) : विजेता।

अरिञ्चमान (वि.) : न छोडते हुए, सतत प्रयास करने वाला।

अरिट्ठ (वि.) : अरिष्ट, निर्दयी, अभागा।

अरिट्ठ (पुं.) : १. नीम का पेड़, २. कौवा, ३. रीठे का पेड़।

अरित्त (नपुं.) : पतवार, (वि.) बेकार नहीं।

अरिय (वि.) :आर्य, श्रेष्ठ।

अरियकन्त (वि.) : श्रेष्ठों के अनुकूल।

अरियधन (नपुं.) : आर्यों का श्रेष्ठ धन।

अरियधम्म (पु.) : श्रेष्ठ धर्म।

अरियपुग्गल (पु.) : श्रेष्ठ व्यक्ति, जिसने आर्य-ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।

अरियमग्ग (पु.) : श्रेष्ठ मार्ग।

अरियसच्च (नपुं.) : आर्य सत्य, श्रेष्ठ सत्य।

अरियसावक (पु.) : आर्य श्रावक, श्रेष्ठ जनों का शिष्य।

अरियूपवाद (पु.) : श्रेष्ठजनों का अपमान ।

अरिस (नपुं.) : बवासीर।

अरु (नपुं.) : जख्म, व्रण।

अरुचि (स्त्री.) : अप्रिय लगना, अच्छा न लगना।

अरुण (पु.) : सूर्योदय के समय की ललाई।

अरुणवण्ण (वि.) : लाल रंग का।

अरूप (वि.) : आकार-रहित।

अरूपकायिक (वि.) : आकार-रहित जीवों से संबंधित।

अरूपभव (पु.) : आकार-रहित अस्तित्व।

अरूपलोक (पु.) : आकार-रहित लोक।

अरूपावचर (वि.) : अरूपी से संबंधित।

अरूपी (पु.) : आकार रहित जीव।

अरे (अ.) : हे!, अरे! आदि संबोधन।

अरोग (वि.) : स्वस्थ, रोग-रहित, निरोग।

अरोगभाव (पु.) : स्वास्थ्य।

अल (पु., नपुं.) : बिच्छु का डंक, केकड़े का पंजा।

अलं (अव्यय) : पर्याप्त।

अलक्क (पु.) : पागल कुत्ता।

अलक्खिक (वि.) : अभागा, दुर्भाग्यग्रस्त।

अलक्खी (स्त्री.) : दुर्भाग्य।

अलगद्द (पु.) : सांप।

अलग्ग (वि.) : विलग, अनासक्त।

अलग्गन (नपुं.) : अनासक्ति।

अलङ्कत (वि.) : सजा हुआ, अलंकृत, मंडित।

अलङ्करण (नपुं.) : सजावट।

अलङ्कार (पु.) : गहना, आभरण।

अलज्जी (वि.) : लज्जा-रहित।

अलत्तक (नपुं.) : लाख (लाल रंग की)।

अलम्ब (वि.) : जो लटकता न हो।

अलम्बुस-जातक : अलम्बुसा नाम की अप्सरा द्वारा ऋषि-पुत्र सिंगी के लुभाये जाने की जातक कथा (५२३)।

अलस (वि.) : आलसी।

अलसता (स्त्री.) : आलस्य।

अलसक (नपुं.) : बदहजमी।

अलहुक (वि.) : भारी।

अलात (नपुं.) : लुआठी।

अलापु / अलाबु (नपुं.) : लौकी।

अलाभ (पु.) : हानि, नुकसान।

अलाला (अ.) : जो गूंगा नहीं।

अलि (पु.) : १. शहद की मक्खी, मधुमक्खी २. बिच्छू।

अलिक (नपुं.) : मिथ्या, झूठ।

अलीन (वि.) : अप्रमादी।

अलीनचित्त-जातक : बोधिसत्त्व ने अलीनचित्त नामक वाराणसी के राजा का जन्म ग्रहण किया था, उस संबंध में जातक कथा (१५६)।

अलोभ (पु.) : निर्लोभ-भाव, लोभ-रहितता।

अलोल (वि.) : लोलुप नहीं।

अल्ल (वि.) : भीगा, गीला।

अल्लदारु (नपुं.) : भीगी लकड़ी।

अलोलुप (वि.) : लोलुप नहीं।

अल्लकप्प : मगध के पास का एक प्रदेश। अल्पकप्प के क्षत्रियों ने भी भगवान बुद्ध के शरीर के धातुओं पर अपना अधिकार जताया था।

अल्लाप (पु.) : बातचीत, संलाप।

अल्लीन (वि.) : आसक्त।

अल्लीयति (क्रि.) : आसक्त होता है।

अल्लीयन (नपुं.) : आसक्ति।

अवकङ्खति (क्रि.) : आकांक्षा करता है।

अवकड्ढति (क्रि.) : पीछे की ओर खींचता है।

अवकड्ढन (नपुं.) : पीछे की ओर खींचना।

अवकड्ढित (वि.) : पीछे की ओर खींचा गया।

अवकन्तति (क्रि.) : काट डालता है।

अवकस्सति (व.क्रि.), पीछे की ओर खींचता है।

अवकारण (वि.) : बिखेरना।

अवकास / ओकास (पु.) : अवसर, स्थान, मौका।

अवकिरति (क्रि.) : उंडेलता है, बिखेरता है, फेंक देता है।

अवकिरिय (पू.क्रि.) : फेंक कर, बिखेर कर।

अवकुज्ज (वि.) : अधोमुख, औंधा।

अवकन्त (वि.) : पराभूत, काटा गया।

अवक्कन्ति (स्त्री.) : प्रवेश।

अवक्कमति (क्रि.) : प्रवेश करता है।

अवक्कम्म (पू.क्रि.) : प्रवेश कर के।

अवक्कार (पु.) : कूड़ा, कचरा।

अवक्कारपाति (स्त्री.) : कूड़ा फेंकने का बर्तन।

अवक्खित्त (वि.) : फेंका हुआ।

अवक्खिपति (क्रि.) : नीचे फेंकता है।

अवक्खिपन (नपुं.) : फेंकना, नीचे गिराना।

अवगच्छति (क्रि.) : प्राप्त करता है, समझता है।

अवगण्ड (पु.) : मुंह फुलाना।

अवगत (वि.) : परिचित।

अवगाहति (क्रि.) : डुबकी लगाता है।

अवगाह (पु.) : डुबकी।

अवगाहन (नपुं.) : डुबकी लगाना।

अवगाही (पु.) : डुबकी लगाने वाला।

अवगुण्ठन (वि.) : घुंघट, आवरण।

अवग्गह (पु.) : बाधा, रुकावट।

अवच (अ.) : नीचे।

अवचनीय (वि.) : जिसे कुछ कहना-सुनना न हो।

अवचर (वि.) : घूमने-फिरने वाला, विचरने वाला।

अवचरक (पु.) : गुप्तचर।

अवचरण (नपुं.) : व्यवहार, बर्ताव।

अवच्छिद्द (वि.) : छिद्र-युक्त।

अवजय (पु.) : हार, पराजय।

अवजात (वि.), दोगला, हरामी।

अवजानन (नपुं.) : अवहेलना, उपेक्षा, अनादर।

अवजानाति (क्रि.) : घृणा करता है, अवहेलना करता है, अवज्ञा करता है।

अवजिनाति (क्रि.) : पुनः जीत लेता है।

अवजित (वि.) : पुनः जीत लिया गया।

अवज्ज (वि.) : दोष-रहित, अनिंद्य।

अवज्झ (वि.) : अवध्य, जिसे मारा न जा सके।

अवञ्ञा (स्त्री.) : अवज्ञा, उपेक्षा, घृणा।

अवञ्ञात (वि.) : उपेक्षित, अवज्ञात, तिरस्कृत।

अवट्ठान (नपुं.) : अवस्था, स्थिति।

अवड्ढि (स्त्री.) : अवनति, हानि, नुकसान।

अवण्ण (पु.) : दुर्गुण।

अवतरण (नपुं.) : नीचे उतरना।

अवतार (पु.) : नीचे उतरने वाला।

अवतंस (पु.) : मुकुट-माला।

अवतिण्ण (वि.) : पतित, अवनत।

अवत्थरति (क्रि) : ढकता है, आच्छादित करता है, धर दबाता है।

अवत्थु (वि.) : निराधार ।

अवदात (वि.) : सफेद, साफ, उजला।

अवदान : देखें **अपदान**

अवदायति (क्रि.) : अनुकंपा करता है।

अवधारण (नपुं.) : ध्यान देना।

अवधारेति (क्रि.) : चुनाव करता है, स्वीकार करता है।

अवधि (पु.) : सीमा, मर्यादा।

अवनति (स्त्री.) : गिरावट, पतन।

अवनि (स्त्री.) : पृथ्वी, धरती।

अवबुज्झति (क्रि.) : समझता है।

अवबोध (पु.) : ज्ञान, बोध, समझ।

अवबोधेति (क्रि) : समझा देता है, बोध करा देता है।

अवभास (पु.) : प्रकाश, प्रकट होना।

अवभासति (क्रि.) : प्रकाशित होता है, चमकता है।

अवभासित (वि.) : प्रकाशित।

अवभुञ्जति (क्रि.) : खा डालता है।

अवमङ्गल (नपुं.) : दुर्भाग्य, अमंगल, अहित।

अवमङ्गल (वि.) : दुर्भाग्यशाली, अभागा।

अवमञ्ञति (क्रि.) : नीची नजर से देखता है, अवमानना करता है।

अवमञ्ञना (स्त्री.) : घृणा, अनादर, उपेक्षा।

अवमानेति (क्रि.) : घृणा करता है, उपेक्षा करता है।

अवयव (पु.) : अंग, भाग, हिस्सा।

अवरज्झति (क्रि.) : उपेक्षा करता है, चूक जाता है, घृणा करता है।

अवरुन्धति (क्रि.) : काबू करता है, कैद करता है, नियंत्रित करता है।

अवरोधक (पु.) : रुकावट डालने वाला, बाधक।

अवरोधन (नपुं.) : रुकावट, बाधा, अवरोध।

अवलक्खण (वि.) : कुरूप, अपशकुन वाला, अशुभसूचक।

अवलम्बति (क्रि.) : लटकता है, सहारा लेता है।

अवलम्बन (नपुं.) : सहारा, लटकना, शरण।

अवलम्बित (वि.) : सहारा लिया हुआ, लटका हुआ, शरण आया हुआ।

अवलिखति (क्रि.) : काट छाट करता है, टुकडे टुकडे कर डालता है।

अवलिम्पति (क्रि.) : लेप करता है, लेप लगाता है, लीपता है।

अवलेखन (नपुं.) : खुरचना।

अवलेपन (नपुं) : लेप।

अवलेखनकट्ठ (नपुं.) : खुरचने के लिए बांस की खपत्री।

अवलेहन (नपुं.) : चाटना।

अवस (वि.) : शक्ति-हीन, दुर्बल, कमजोर।

अवसर (पु.) : मौका।

अवसरति (क्रि.) : चल देता है, चला जाता है, पहुंच जाता है।

अवसान (नपुं.) : अंत।

अवसिञ्चति (क्रि) : सींचता है।

अवसिट्ठ (वि.) : अवशेष, बाकी, बचा हुआ।

अवसिस्सति (क्रि.) : बाकी बचता है।

अवसुस्सति (क्रि.) : सूख जाता है।

अवसुस्सन (नपुं.) : सूखना।

अवसेस (नपुं) : शेष, बाकी, बचा हुआ।

अवस्सं (वि.) : अनिवार्य तौर पर, अवश्य।

अवस्सय (पु.) : आश्रय, सहारा, मदद, सहयोग।

अवस्सावन (नपुं.) : छानना।

अवस्सित (वि.) : आश्रित, आधारित।

अवस्सुत (वि.) : चूने वाला, स्त्रावयुक्त, तृष्णा-युक्त।

अवहरण (नपुं.) : चोरी, हरण, अपहरण।

अवहरति (क्रि.) : चुराता है।

अवहसति (क्रि.) : मुंह चिढाता है।

अवहीयति (क्रि.) : पीछे छूट जाता है।

अवन्ति : बुद्ध के समय के सोलह जनपदों में से एक। अवन्ति की राजधानी उज्जेनि थी। यह आज मध्य प्रदेश का एक प्रसिद्ध धार्मिक नगर है और इसके इर्द गिर्द कई बौद्ध पुरातात्विक अवशेष है।

अवापुरण (नपुं.) : चाबी।

अवापुरति (क्रि.) : दरवाजा खोलता है।

अवारिय-जातक : बोधिसत्त्व द्वारा उपदिष्ट एक मूर्ख नाविक की जातक कथा (३७६)।

अविकम्पी (पु.) : स्थिर-चित्त, अविचल मन वाला।

अविक्खेप (पु.) : शांति, विक्षेप का अभाव।

अविग्गह (पु.) : अशरीरी, कामदेव।

अविज्जमान (वि.) : अविद्यमान, अनुपस्थित।

अविज्जा (स्त्री.) : अविद्या, अज्ञान, मूर्खता।

अविञ्ञाणक (वि.) : चेतना-रहित, बेहोश।

अविञ्ञात (वि.) : अज्ञात, अप्रसिद्ध, ज्ञात नहीं, अपरिचित।

अवितथ (वि.) : सत्य, यथार्थ।

अविदित (वि.) : अज्ञात।

अविदूर (वि.) : समीप, नजदीक।

अविदूरे-निदान : सिद्धार्थ गौतम का बोधिवृक्ष के नीचे बुद्धत्व प्राप्त करने तक का गौतम-चरित्र अविदूरे-निदान कहलाता है।

अविद्दसु (पु.) : मूर्ख, अज्ञानी।

अविनासक (वि.) नाश न करने वाला।

अविनिब्भोग (वि.) : अस्पष्ट, जो पृथक न किया जा सके।

अविनीत (वि) : जो विनम्र नहीं, अविनम्र।

अविप्पवास (पु.) : उपस्थिती, ध्यान, वियोग का अभाव।

अविभूत (वि.) : अस्पष्ट।

अविरुद्ध (वि.) : अविरोधी, अनुकूल।

अविरूळ्हि (स्त्री.) : १. वृद्धि न होना, २. (पुनः) जन्म का निरोध।

अविरोध (पु.) : विरोध का अभाव, बाधा न होना, सौम्यता, नम्रता।

अविसंवादक (पु.) : वंचा न करने वाला, झूठ न बोलने वाला, सत्यवादी।

अविसग्गता (स्त्री.) : चित्त की स्थिरता, शांतचित्त होना।

अविस्सासनिय (वि) : अविश्वसनीय।

अविलम्बितं (क्रि.वि) : तुरंत, जल्दी, तेजी से, शीघ्रता से।

अविवय्ह (वि.) : विवाह के अयोग्य।

अविसंवाद (पु.) : सत्य, यथार्थ।

अविहित (वि.) : अकृत, जो कभी किया नहीं गया।

अविहिंसा (स्त्री.) : हिंसा का अभाव, दया, अहिंसा।

अविहेठक (वि.) : कष्ट न देने वाला, हैरान न करने वाला।

अवीचि (वि.) : बिना लहर के, (स्त्री.) : एक नरक-विशेष।

अवीतिक्कम (पु.) : नियम के अतिक्रमण का अभाव, नियम का उल्लंघन न करना।

अवुट्ठिक (वि.) : वर्षा का अभाव।

अवेक्खति (क्रि) : देखता है।

अवेच्च (पू.क्रि.) : जानकर, (क्रि.वि.) : निश्चित रूप से, पूर्णतया।

अवेच्चपसाद (पु.) : दृढ-श्रद्धा।

अवेभङ्गिक (वि.) : जो बांटा न जा सके, जो विभाजित न किया जा सके।

अवेर (नपुं.) : मैत्री; (वि.) : अवैर।

अवेरी (वि.) : शत्रुता रहित, मैत्रीपूर्ण।

अवेला (स्त्री.) : असमय, अनुचित समय।

अव्यत्त (वि.) : १. अव्यक्त, २. बुद्धिहीन, अज्ञानी।

अव्यय (नपुं.) : १. सभी वचनों, विभक्तियों, पुरुषों में एकरूप रहने वाला शब्द, २. हानि का अभाव ।

अव्ययेन (वि.) : बिना किसी खर्च के।

अव्ययीभाव : वह सामासिक पद जिसका किसी किसी अव्यय के साथ समास हो।

अव्याकत (वि.) : अव्याख्यात, जो नहीं कहा गया।

अव्यापज्झ (वि.) : रोष-रहित, दुःख-रहित।

अव्यापाद (वि.) : ईर्ष्या-रहित।

अव्यावट (वि.) : उपेक्षावान।

अव्हय (पु.) : नाम, बुलाना।

अव्हयति (क्रि.) : बुलाता है।

अव्हात (वि.) : बुलाया गया।

अव्हान (नपुं.) : नाम, बुलावा ।

असंवर (नपुं.) : असंयम, संयम का अभाव।

असकिं (वि.) : एक से अधिक बार।

असक्क (वि.) : असमर्थ।

असङ्किण्ण (वि.) : बिना मिलावट के, बिना भीड़-भाड़ वाला।

असङ्किय-जातक : बोधिसत्त्व की जागरूकता के कारण डाकू व्यापारियों को लूट न सके, इसके संबंधित जातक-कथा (७६)।

असङ्किलिट्ठ (वि.) : अलिप्त, बिना मैल के।

असङ्खतधातु (स्त्री.) : असंस्कृत धातु, अनिर्मित / अविरचित तत्त्व।

असङ्खेय्य (वि.) : अगणित, असीम, अमर्याद।

असङ्ग (पु.) : अनासक्ति।

असच्च (नपुं.) : असत्य।

असज्जमान (वि.) : अनासक्त, आसक्ति-रहित।

असञ्ञी (वि.) : चेतना-रहित, चेतनाहीन।

असञ्ञत (वि) : संयम-रहित, असंयमित।

असठ (वि.) : जो शठ नहीं, अदुष्ट।

असण्ठित (वि.) : जो स्थिर नहीं, चंचल।

असति (क्रि.) : खाता है।

असति (अधिकरण, सप्तमी विभक्ति) : न होने पर।

असतिया (क्रि.वि.) : अनजाने, असावधानी में।

असत्त (वि.) : अनासक्त।

असत्थ (वि.) : शस्त्र-रहित।

असदिस (वि.) : असदृश, अनुपम।

असदिस-जातक : असदिस राजकुमार की जातक-कथा (१८१)।

असद्धम्म (पु.) : १. अधर्म, २. मैथुन।

असन (नपुं.) : १. खाना, २. भोजन, ३. तीर, ४. पत्थर।

असनि (स्त्री.) : वज्र, बिजली।

असनि-पात (पु.) : वज्रपात, बिजली गिरना।

असन्त (वि.) : १. जिसका अस्तित्व न हो, २. दुष्ट, ३. अशांत।

असन्तासी (वि.) : निर्भय, भयरहित।

असन्तुट्ठ (वि.) : असंतुष्ट, असमाधानी।

असन्तुट्ठि (स्त्री.) : असंतोष, अप्रसन्नता।

असन्धिता (स्त्री.) : संधि का अभाव।

असन्धिमित्ता : सम्राट अशोक की पटरानी।

असपत्त (वि.) अजात-शत्रु, शत्रु-विहीन।

असप्पाय (वि.) : प्रतिकूल।

असप्पुरिस (पु.) : असत्पुरुष, दुष्ट व्यक्ति।

असबल (वि.) : बिना धब्बे के।

असब्भ (वि.) : असभ्य।

असम / **असमान** (वि.) : जो समान नहीं, अतुलनीय।

असमण (पु.) : जो समण नहीं।

असमाहित (वि.) : जिसका चित्त एकाग्र नहीं।

असमेक्खकारी (पु.) : जल्दबाज, बिना विचारे करने वाला।

असमोसरण (नपुं.) : न मिलना, अलगाव।

असम्पकम्पिय (वि.) : कंपन-रहित, अडौल।

असम्पजञ्ञ (नपुं.) : ज्ञान के अभाव की स्थिती।

असम्पत (वि.) : अप्राप्त।

असम्पदान-जातक : अस्सी करोड के धनी संख सेठ की जातक कथा (१३१)।

असम्मूळ्ह (वि.) : जो मूढ नहीं, जो मूर्ख नहीं।

असम्मोस / असम्मोस (पु.) : मूढ़ता का अभाव।

असयंवसी (वि.) : जो अपने आप के वश में न हो, जिसका अपने पर नियंत्रण न हो।

असय्ह (वि.) : जो सहन न किया जा सके।

असरण (वि.) : जिसके लिये कोई शरण नहीं।

असहाय (वि.) : अकेला, जिसका कोई सहायक नहीं।

असंवास (वि.) : सहवास के अयोग्य।

असंवुत (वि) : जो बंद नहीं, अनाच्छादित, जो वश में / नियंत्रण में नहीं।

असंसट्ठ (वि.) : मिलावट-रहित।

असंहारिम / असंहारिय (वि.) : जिसे हिलाया न जा सके, जिसको नष्ट न किया जा सके।

असात (वि.) : प्रतिकूल, (नपुं) : दुःख-कष्ट, परेशानी।

असातमन्त-जातक : मां की आज्ञानुसार तरुण ब्राह्मण ने बोधिसत्त्व से असातमंत्र सीखे, इस संबंध में जातक-कथा (६१)।

असातरूप-जातक : कोशल-नरेश तथा काशी-नरेश के परस्पर युद्ध करने के संबंध में जातक-कथा (१००)।

असाद (वि.) : अस्वादिष्ट।

असार (वि.) : सार-हीन, सत्त्व-हीन।

असारद्ध (वि.) : अनुत्तेजित।

असाहस (वि.) : दुस्साहस का अभाव।

असि (पु.) : तलवार।

असिग्गाहक (पु.) : तलवार धारी, जिसके हाथ में तलवार हो।

असिचम्म (नपुं.) : ढाल।

असिधारा (स्त्री.) : तलवार की धार।

असिपत्त (नपुं.) : तलवार का फल, तलवार का चपटा हिस्सा।

असित (नपुं., वि.) : १. भोजन, खाया हुआ; २. असंलग्न, स्वतंत्र; ३. जला हुआ, काला; ४. दरांती, हंसिया।

असित (काल-देवल) : शुद्धोदन का राजगुरू ।

असिताभु-जातक : राजा ने राजकुमार तथा उसकी पत्नि असिताभु को देशनिकाला किया, इस संबंध में जातक-कथा (२३४)।

असिलक्खण-जातक : तलवार को सूंघ कर उसके भाग्य संपन्न होने न होने की बात बताने वाले ब्राह्मण की जातक-कथा (१२६)।

असिथिल (वि.) : जो ढीला नहीं।

असिनिद्ध (वि.) : खुरदुरा, चिकना नहीं।

असीति (स्त्री.) : अस्सी, ८०।

असीतिम (वि.) : अस्सीवां।

असु (वि.) : अमुक।

असुचि (पु.) : गंदगी, विष्ठा; (वि.) गंदा, अशुद्ध।

असुद्ध (पु.) : अस्वच्छ, मैला, गंदा।

असुभ (वि.) : अशुभ, अमंगल

असुर (पु.) : देवताओं के विरोधी असुर।

असूर (वि.) : जो शूर नहीं, पराक्रमी नहीं।

असेख (वि.) : अशैक्ष, अर्हंत, अब जिसे शिक्षा की आवश्यकता नहीं।

असेचनक (पु.) : संतोषप्रद।

असेवना (स्त्री.) : संगति न करना, साथ न करना।

असेस (वि.) : अशेष, संपूर्ण।

असोक (वि.) : शोक-रहित, (पु.) एक वृक्ष-विशेष।

असोक : बिन्दुसार राजा का बेटा मगध सम्राट अशोक।

असोकाराम : पाटलिपुत्र का एक प्रसिद्ध बौद्ध विहार ।

असोभन (वि.) : कुरूप, अशोभनीय।

अस्नाति (क्रि.) : खाता है।

अस्मा (पु.) : पत्थर।

अस्मि (क्रि) : मैं हूँ।

अस्मिमान (पु.) : अहंकार।

अस्स (पु.) : घोड़ा, अश्व।

अस्सतर (पु.) : खच्चर।

अस्सपोतक (पु.) : बछेड़ा, घोड़े का बच्चा।

अस्समण्डल (नपुं.) : घुडदौड की भूमि।

अस्समेध (पु.) : अश्वमेध यज्ञ।

अस्सवाणिज (पु.) : घोडों का व्यापारी।

अस्ससेना (स्त्री.) : घुडसवार सेना।

अस्साजानिय (पु.) : अच्छी नसल का घोडा।

अस्सक (वि.) : गरीब, दरिद्र।

अस्सक-जातक : अस्सक राजा के संबंध में जातक-कथा (२०७)।

अस्सकण्ण (पु.) : १. साल-वृक्ष, २. पर्वत-विशेष।

अस्सत्थ (पु.) : अश्वत्थ, पीपल का पेड़, बोधि-वृक्ष।

अस्सद्ध (वि.) : अश्रद्ध, अश्रद्धावान।

अस्सम (पु.) : आश्रम।

अस्समण (पु.) : अश्रमण, जो श्रमण नहीं।

अस्सयुज (पु.) : असौज (महीना), आश्विन माह।

अस्सव (पु.) : स्वामी-भक्त, श्रद्धालु, सावधान।

अस्सवनता (स्त्री.) : ध्यान न देना, न सुनना।

अस्सवनीय (वि.) : जो सुनना अच्छा न लगे, अश्रवणीय, सुनने योग्य नहीं।

अस्ससति (क्रि.) : आश्वास लेता है।

अस्साद (पु.) : आस्वाद, भोग, रस।

अस्सादेति (क्रि.) : आस्वाद लेता है, आनंद उठाता है।

अस्सास (पु), आश्वास।

अस्सासक (वि.) : सांत्वना देने वाला।

अस्सासेति (क्रि.) : आश्वस्त करता है।

अस्सु (नपुं.) : अश्रु, आंसु।

अस्सुत (वि.) : अश्रुत, जो सुना नहीं गया।

अस्सुतवन्त (वि.) : अश्रुतवन्त, जिसने सुना नहीं, अज्ञानी, नासमझ।

अह (नपुं.) : दिन, दिवस।

अहं (सर्व.) : मैं।

अहंकार (पु.) : अहंकार, अभिमान, घमंड।

अहारिय (वि.) : अचल, स्थिर, अटल।

अहि (पु.) : सर्प, सांप।

अहिगुण्ठिक (पु.) : संपेरा।

अहिच्छत्तक (पु.) : खुम्भी, मशरूम, कुकुरमुत्ता।

अहिगुण्डिक-जातक : बनारस के एक संपेरे की जातक-कथा (३६५)।

अहिरिक (वि.) : लज्जा-रहित, बेशर्म।

अहिवातकरोग (पु.) : महामारी, प्लेग (बीमारी)।

अहुहालिय (नपु.) : उंची हंसी, जोर की हंसी।

अहेतुक (वि.) : अहेतुक, बिना हेतु के।

अहो (अ.) : आश्चर्य-बोधक शब्द।

अहोगङ्ग : उत्तर भारत का एक पर्वत।

अहोरत्त (नपुं.) : दिन-रात।

अहोसि (भू.क्रि) : (वह) था।

अहोसिकम्म (नपुं.) : वह कर्म जो अब फलीभूत न होगा।

अंस (पु., नपुं.) : १. हिस्सा, २. कंधा।

अंसकूट (नपुं.) : कंधा ।

अंसु (पु.) : १. किरण, रोशनी; २. धागा, तंतु।

अंसुक (नपुं.) : कपड़ा, वस्त्र।

अंसुमाली (पु.) : सूर्य, सूरज।

आ

आ : (उपसर्ग) : संयुक्त व्यंजन के पूर्व आ ह्रस्व 'अ' हो जाता है।

आकङ्खति (क्रि.) : इच्छा करता है, चाहता है।

आकङ्खा (स्त्री.) : आकांक्षा, इच्छा।

आकड्ढति (क्रि.) : खींचता है।

आकड्ढन (नपु.) : खींचना।

आकप्प (पु.) : १. चाल-ढाल, २. पोशाक, पहनावा।

आकप्पसम्पन्न (वि.) : १. सदाचरणयुक्त, २. आकर्षक पोशाक वाला।

आकम्पित (वि.) : कांपता हुआ।

आकर (पु.) : खान (सोने-चांदी की)।

आकस्सति (क्रि.) : खींचता है, आकर्षित करता है।

आकार (पु.) : शक्ल, बनावट।

आकास (पु.) : आकाश, आसमान।

आकासगङ्गा (स्त्री.) : आकाशगंगा।

आकासचारी (वि.) : आकाश में विचरण करने वाला।

आकासट्ठ (वि.) : आकाशस्थित।

आकासतल (नपुं.) : किसी मकान की छत।

आकिञ्चञ्ञ (नपुं.) : 'कुछ नहीं' की अवस्था।

आकिण्ण (वि.) : भीड़-युक्त।

आकिरति (क्रि.) : फैला देता है।

आकुल (वि.) : उलझा हुआ।

आकोटन (नपुं.) : खटखटाना।

आखु (पु.) : चूहा।

आख्या (स्त्री.) : नाम, संज्ञा।

आख्यात (वि.) : कहा हुआ, बताया हुआ।

आख्यायिका (स्त्री.) : कहानी।

आगच्छति (क्रि.) : आता है।

आगत (कृ., वि.) : आया हुआ।

आगद (पु.) : वचन, भाषण।

आगन्तु (वि.) : आनेवाला।

आगन्तुक (पु.) : अतिथि, अपरिचित।

आगम (पु.) : १. आना, २. धर्म, धर्म-ग्रंथ, ३. मित्र की तरह आकर दो अक्षरों के बीच में बैठ जानेवाला तीसरा व्यंजन।

आगमन (नपुं.) : आना।

आगमेति (क्रि.) : प्रतीक्षा करता है।

आगम्म (पू.क्रि.) : पहुंचकर।

आगामी (वि.) : आने वाला।

आगामीकाल (पु.) : भविष्य।

आगारक / आगारिक (वि.) : घर वाला (भण्डागारिक, खजानची)।

आगाळ्ह (वि.) : मजबूत, कठोर।

आगिलायति (क्रि.) : पीड़ा देता है।

आगु (नपुं.) : दोष, अपराध।

आगुचारी (पु.) : अपराधी।

आघात (पु.) : १. रोष, घृणा, २. रगड़।

आघातन (नपुं.) : कसाई-खाना।

आचमति (क्रि.) : कुल्ला करता है, आब-दस्त लेता है।

आचमन (नपुं.) : (मुंह) धोना।

आचमनकुम्भी (स्त्री.) : मुंह धोने का पात्र।

आचय (पु.) : संग्रह।

आचरति (क्रि.) : आचरण करता है।

आचरिय (पु.) : आचार्य, शिक्षक।

आचरियधन (नपुं.) : आचार्य को दी जानेवाली फीस।

आचरियमुट्ठि (स्त्री.) : आचार्य का ज्ञान-विशेष।

आचरियवाद (पु.) : परंपरागत मत।

आचरियानी (स्त्री.) : स्त्री-आचार्या अथवा आचार्य की भार्या।

आचाम (पु.) : उबलते चावलों की मांड या पिच्छा।

आचार (पु.) : व्यवहार, आचरण।

आचारकुसल (वि.) : व्यवहार-कुशल, सदाचार-युक्त।

आचिक्खक (पु.) : कहने वाला, बताने वाला।

आचिक्खति (क्रि.) : कहता है, बताता है।

आचिण्ण (वि.) : अभ्यस्त।

आचिण्णकप्प (पु.) : रिवाज के अनुसार।

आचित (वि.) : संग्रहीत।

आचिनाति (क्रि.) : इकट्ठा करता है।

आचीयति (क्रि.) : ढेर हो जाता है।

आचेर (पु.) : 'आचरिय' का संक्षिप्त रूप, अध्यापक।

आजञ्ञ (वि.) : अच्छी नसल का।

आजञ्ञ-जातक : बोधिसत्त्व के श्रेष्ठ नसल के घोड़े की योनि में उत्पन्न होने की जातक कथा (२४)।

आजानन (नपुं.) : ज्ञान।

आजानाति (क्रि.) : जानता है।

आजानीय (पु.) : अच्छी नसल का घोड़ा।

आजि (स्त्री.) : युद्ध।

आजीव (पु.) : जीविका, जीविका का साधन।

आजीवक (पु.) : निर्वस्त्र रहनेवाले तपस्वियों का एक संप्रदाय।

आजीवन (नपुं.) : जीविका।

आट (पुं.) : पक्षी-विशेष।

आणा (स्त्री.) : आज्ञा।

आणासम्पन्न (वि.) : अधिकृत।

आणापक (पु.) : आज्ञा देने वाला।

आणापेति (क्रि.) : आज्ञा देता है।

आणि (स्त्री.) : मेख, अर्गल, नाभि।

आतङ्क (पु.) : रोग, बीमारी, भय।

आतत (नपुं.) : एक प्रकार का ढोल।

आततवितत (नपुं.) : आतत-वितत नाम के दोनों प्रकार के ढोल।

आततायी (पु.) : जो वध आदि अत्याचार करने के लिए उद्यत रहे।

आतत्त (वि.) : तप्त, तपाया हुआ।

आतपत्त (नपुं.) : छाता।

आतप (पु.) : धूप।

आतपाभाव (पु.) : धूप का अभाव, छांव।

आतपति (क्रि.) : चमकता है।

आतप्प (पु.) : प्रयत्न, प्रयास।

आताप (पु.) : चमक, गर्मी।

आतापन (नपुं.) : काय-क्लेश, आत्म-पीड़ा।

आतापी (वि.) : प्रयत्नशील।

आतापेति (क्रि.) : (अपने आप को) शारीरिक कष्ट देता है।

आतुमा : कुसीनारा तथा श्रावस्ती के बीच का एक नगर।

आतुर (वि.) : रोगी, बीमार।

आदर (पु.) : गौरव।

आददाति / आदाति (क्रि.) : लेता है।

आदान (नपुं.) : ग्रहण करना।

आदायी (पु.) : ग्रहण करने वाला।

आदास (पु.) : मुँह देखने का शीशा।

आदासतल (नपुं.) : शीशे का तला, शीशे का पृष्ठ।

आदि (पु.) : आरंभ।

आदिकम्मिक (वि.) : आरंभ करने वाला।

आदिकल्याण (वि.) : आरंभ में कल्याणकारक।

आदिम (वि.) : पहला।

आदिच्च (पु.) : सूर्य, सूरज।

आदिच्चपथ (पु.) : आकाश।

आदिच्चबन्धु (पु.) : सूर्यवंशी, बुद्ध का एक नाम।

आदिच्चुपट्ठान-जातक : तपस्वियों के आश्रम को नष्ट-भ्रष्ट करनेवाले बंदर की जातक कथा (१७५)।

आदितो (क्रि.वि.) : आरंभ से।

आदित्त (कृ., वि.) : जलता हुआ।

आदित्त-जातक : सोवीर राष्ट्र के रोरुव के राजा भरत की कथा (४२४)।

आदिन्न (वि.) : गृहीत, लिया हुआ।

आदियति (क्रि.) : ग्रहण करता है।

आदिसति (क्रि.) : कहता है, घोषणा करता है।

आदीनव (पु.) : दुष्परिणाम, दोष।

आदु (अ.) : या, लेकिन।

आदेति (क्रि.) : लेता है, ग्रहण करता है।

आदेय्य (वि.) : अनुकूल।

आदेय्यवचन (नपुं.) : स्वागत।

आदेवना (स्त्री.) : रोना-पीटना।

आदेस (पु.) : आदेश।

आदेस : अक्षर-विशेष के स्थान पर किसी दूसरे व्यंजन का शत्रुवत् आ बैठना।

आदेसना (स्त्री.) : भविष्यवाणी करना, अनुमान लगाना।

आधानगाही (पु.) : दुराग्रही।

आधार (पु.) : सहारा।

आधावति (क्रि.) : दौड़ता है।

आधावन (नपुं.) : दौड़।

आधिपच्च (नपुं.) : स्वामित्व।

आधुनाति (क्रि.) : धुन डालता है, हिला देता है।

आधूत (वि.) : हिलाया गया।

आधेय्य (वि.) : धारण करने योग्य।

आन / आण (नपुं.) : आश्वास।

आनक (पु.) : भेरी।

आनण्य (नपुं.) : ऋण-मुक्ति।

आनन (नपुं.) : चेहरा।

आनन्तरिक (वि.) : ठीक बाद में घटने वाला, बिना किसी अंतर के घटने वाला।

आनन्द (पु.) : प्रीति, प्रसन्नता।

आनन्द : भगवान बुद्ध के प्रधान शिष्यों में से एक, जिन्होंने अनन्य भाव से भगवान बुद्ध की सेवा की थी।

आनन्द-बोधि : जेतवन-द्वार पर भिक्षु आनन्द द्वारा रोपा गया बोधि वृक्ष।

आनापान (नपुं.) : आश्वास-प्रश्वास।

आनाय (पु.) : जाल।

आनिसंस (पु.) : शुभ परिणाम।

आनिसद (नपुं.) : नितंब, कूल्हा।

आनीत (वि.) : लाया हुआ।

आनुपुब्बी (स्त्री.) : क्रम से।

आनुभाव (पु.) : प्रताप, तेज।

आनेञ्ज (वि.) : स्थिर, अचंचल।

आनेति / आनयति (क्रि.) : लाता है।

आप (पु., नपुं.) : जल, पानी।

आपगा (स्त्री.) : नदी।

आपज्जति (क्रि.) : पाता है, मिलता है, भोगता है, (किसी परिस्थिति से) गुजरता है।

आपण (पु.) : बाजार।

आपण : अंगुत्तराप जनपद का एक नगर, शायद राजधानी।

आपणिक (पु.) : व्यापारी, दुकानदार।

आपतति (क्रि.) : गिरता है।

आपतन (नपुं.) : गिरावट।

आपत्ति (स्त्री.) : विनय का उल्लंघन, अपराध।

आपदा (स्त्री.) : दुःख, कष्ट, दुर्भाग्य।

आपन्न (वि.) : अनुप्राप्त।

आपन्नसत्ता (स्त्री.) : गर्भिणी, गर्भवती।

आपाण (नपु.) : श्वास लेना, प्रश्वास।

आपाणकोटिक (वि.) : प्राण रहने तक।

आपाथ (पु.) : इंद्रिय का गोचर क्षेत्र।

आपाथगत (वि.) : इंद्रिय-गोचर होना।

आपादक (पु.) : बच्चे की देखभाल करने वाला।

आपादिका (स्त्री.) : दाई।

आपादेति (क्रि.) : दूध पिलाती है।

आपान (नपुं.) : पेय-भवन।

आपानक (वि.) : पियक्कड़।

आपानीय (वि.) : पीने योग्य।

आपानीयकंस (पु.) : सुरा-पात्र।

आपायिक (वि.) : नारकीय।

आपुच्छति (क्रि.) : पूछता है, अनुज्ञा चाहता है।

आपुच्छा (स्त्री.) : अनुज्ञा।

आपूरति (क्रि.) : भरता है, संपूर्ण होता है।

आपूरण (नपुं.) : पूर्ति।

आपेति (क्रि.) : बहता है।

आपोधातु (स्त्री.) : जलीय तत्त्व।

आफुसति (क्रि.) : प्राप्त करता है, साक्षात करता है।

आबद्ध (वि.) : बंधा हुआ।

आबन्धक (वि.) : बांधने वाला।

आबन्धति (क्रि.) : बांधता है।

आबाध (पु.) : रोग।

आबाधिक (वि.) : रोगी।

आबाधित (वि.) : बाधित, दलित, दबाया हुआ।

आबाधेति (क्रि.) : दबाता है, हैरान करता है।

आभत (वि.) : लाया हुआ।

आभरण (नपुं.) : गहना, अलंकार।

आभरति (क्रि.) : लाता है।

आभस्सर (वि.) : प्रकाशमान।

आभा (स्त्री.) : प्रकाश, रोशनी।

आभाकर (पु.) : सूर्य, सूरज।

आभास (पु.) : रोशनी।

आभाति (क्रि.) : चमकता है।

आभावेति (क्रि.) : अभ्यास करता है।

आभिदोसिक (वि.) : गत रात्रि से संबंधित।

आभिधम्मिक (वि.) : अभिधम्म का जानकार।

आभिन्दति (क्रि.) : काटता है।

आभिसमाचारिक (नपुं.) : छोटे-मोटे कर्तव्य।

आभिसेकिक (वि.) : अभिषेक संबंधी।

आभुजति (क्रि.) : झुकाता है।

आभुजन (नपुं.) : झुकाना।

आभुजी (स्त्री.) : भोजपत्र।

आभोग (पु.) : विचार।

आम (अ.) : हां।

आम / आमक (वि.) : कच्चा, जो पका नहीं।

आमगन्ध (पु.) : १. मांस, २. दुर्गंध, कच्चे / सड़े हुए मांस की सी गंध।

आमकसुसान (नपुं.) : कच्चा-श्मशान।

आमट्ठ (वि.) : स्पृष्ट, छुआ हुआ, हाथ लगाया हुआ।

आमण्ड (पु.) : एरंड का पौधा।

आमण्डलीय (वि.) : मंडल के समान।

आमत्तिक (नपुं.) : मिट्टी का बर्तन।

आमद्दन (नपुं.) : पीसना, मर्दन करना।

आमन्तन (नपुं.) : निमंत्रण, आमंत्रण, संबोधित करना।

आमन्तित (वि.) : निमंत्रित, संबोधित किया हुआ।

आमन्तेति (क्रि.) : निमंत्रित करता है, संबोधित करता है।

आमय (पु.) : रोग।

आमलक (नपुं.) : आंवला।

आमसति (क्रि.) : स्पर्श करता है।

आमसन (नपुं.) : स्पर्श करना, मलना।

आमा (स्त्री.) : दासी।

आमासय (पु.) : पेट।

आमिस (नपुं.) : भोजन, मांस; (वि.) : भौतिक।

आमिसगरु (वि.) : भौतिक चीजों को महत्त्व देने वाला।

आमिसदान (नपुं.) : भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति।

आमुञ्चति (क्रि.) : धारण करता है।

आमुत्त (वि.) : धारण किये हुए।

आमेण्डित (नपुं.) : घोषित, घोषणा, उद्गार।

आमो (अ.) : हां।

आमोद (पु.) : आनंदित होना, प्रमुदित होना।

आमोदति (क्रि.) : प्रमुदित होता है।

आमोदना (स्त्री.) : प्रमुदित होना।

आमोदमान (वि.), आनंदित, प्रमुदित।

आमोदेति (क्रि.) : प्रमुदित करता है।

आय (पु.) : आमदनी, लाभ।

आयकम्मिक (पु.) : आय एकत्र करने वाला।

आयकोसल्ल (नपुं.) : आमदनी बढाने में कुशल होना।

आयमुख (नपुं.) : आमदनी का साधन।

आयत (वि.) : लंबा।

आयतन (नपुं.) : क्षेत्र, इंद्रिय, स्थिति।

आयतनिक (वि.) : क्षेत्र-संबंधी।

आयति (स्त्री.) : भविष्य।

आयतिक (वि.) : भावी।

आयतिका (स्त्री.) : नली।

आयत्त (वि.) : अधीन, निभृत, (नपुं.) : मलकीयत, स्वामित्त्व।

आयस (वि.) : लोह-निर्मित।

आयसक्य (नपुं.) : अगौरव, अपमान।

आयस्मन्त (वि.) : आयुष्मान, आदरणीय।

आयाग (पु.) : यज्ञ संबंधी दान।

आयाचक (वि.) : मांगने वाला, याचना करने वाला।

आयाचति (क्रि.) : मांगता है।

आयाचना (स्त्री.) : मांग, प्रार्थना।

आयाचमान (वि.) : प्रार्थना करते हुए, याचना करते हुए।

आयाचिका (स्त्री.) : याचना करने वाली स्त्री।

आयाचितभत्त-जातक : वृक्ष-देवता ने पशु-हत्या की निंदा की संबंधी जातक (१९)।

आयात (कृ., वि.) : आगत।

आयाति (क्रि.) : आता है।

आयाम (पु.) : लंबाई।

आयामति (क्रि.) : फैलता है।

आयास (पु.) : कष्ट, परेशानी।

आयु (नपुं.) : उमर।

आयुक (वि.) : आयुवाला।

आयुकप्प (पु.) : जीवन-भर।

आयुक्खय (पु.) : आयु का क्षय।

आयुसङ्खय (पु.) : आयु-समाप्ति।

आयुसङ्खार (पु.) : जीवन, आयु की लंबाई।

आयुत्त (वि.) : जुता हुआ।

आयुत्तक (पु.) : एजेण्ट (मुनीम), ट्रस्टी (धरोहर रखने वाला)।

आयुध (नपुं.) : हथियार, शस्त्र।

आयुवन्त (वि.) : अधिक आयु वाला।

आयुस्स (वि.) : आयु-संबंधी।

आयूहक (वि.) : क्रियाशील।

आयूहति (क्रि.) : प्रयत्न करता है, परिश्रम करता है।

आयूहन (नपुं.) : प्रयत्न, परिश्रम।

आयूहापेति (क्रि.) : अन्य से प्रयत्न करवाता है।

आयोग (पु.) : अनुरक्ति, प्रयत्न, बंधन।

आर (पु.) : सूई।

आरग्ग (नपुं.) : सूई का सिरा।

आरकत्त (नपुं.) : दूरीपन।

आरका (अ.) : दूरी।

आरकूट (पु.) : पीतल।

आरक्खक (पु.) : पहरेदार।

आरक्खा (स्त्री.) : पहरा, हिफाजत।

आरञ्ञक / आरञ्ञिक (वि.) : आरण्यक, अरण्य (जंगल) में रहने वाला।

आरञ्ञकत्त (नपुं.) : अरण्य में रहने का भाव।

आरञ्जित (नपुं.) : खरोंच, (वि.) : हल चलाया गया।

आरति (स्त्री.) : दूरी, त्याग।

आरद्ध (वि.) : आरंभ किया गया।

आरद्धचित्त (वि.) : जिसने अपना चित्त जीत लिया हो।

आरद्धविरिय (वि.) : प्रयत्नशील।

आरब्भ (अ.) : संबंध में, बारे में।

आरब्भति (क्रि.) : १. आरंभ करता है, २. वध करता है, ३. कष्ट पहुंचाता है।

आरभन (नपुं.) : आरंभ करना।

आरंभ (पु.) : शुरुआत।

आरम्मण (नपुं.) : इंद्रियों का विषय, जैसे – चक्षु का विषय 'रूप'।

आरा (अ.) : दूर।

आराचारी (वि.) : दूर रहने वाला।

आराधक (पु.) : प्रसन्न करने वाला।

आराधना (स्त्री.) : निमंत्रण, प्रसन्न करना।

आराधेति (क्रि.) : निमंत्रण देता है, प्रसन्न रखता है।

आराधित (वि.) : निमंत्रित, प्रसन्न कृत।

आराम (पु.) : आनंद, बगीचा, विहार।

आरामपाल (पु.) : माली।

आरामवत्थु (नपुं.) : बगीचे का स्थान।

आरामिक (पु.) : विहार-सेवक, (वि.) विहार-संबंधी।

आरामता (स्त्री.) : आसक्ति।

आरामदूसक-जातक : बंदरों द्वारा सात दिन तक बगीचे के सींचे जाने की कथा (४६)।

आराव (पु.) : चिल्लाहट, रोना।

आरुण्ण (नपुं.) : रोना, पश्चाताप करना।

आरुप्प (वि.) : आकार-रहित, (नपुं.) : रूप-विहीन स्थिति।

आरुहति (क्रि.) : चढ़ता है।

आरुहन (नपुं.) : चढाई।

आरुहन्त (कृ.) : चढता हुआ।

आरूळ्ह (कृ., वि.) : चढा हुआ।

आरोग्य (नपुं.) : स्वास्थ्य।

आरोग्यमद (पु.) : स्वास्थ्य का अहंकार।

आरोग्यसाला (स्त्री.) : अस्पताल, दवाखाना।

आरोचना (स्त्री.) : घोषणा।

आरोचापन (नपुं.) : किसी दूसरे के द्वारा घोषणा कराना।

आरोचापेति (क्रि.) : किसी दूसरे के द्वारा घोषणा कराता है।

आरोचित (कृ., वि.) : सूचित।

आरोचेति (क्रि.), सूचना देता है।

आरोदना (स्त्री.) : रोना-धोना, विलाप करना, दुःख व्यक्त करना।

आरोपन (नपुं.), दोष लगाना।

आरोपित (वि.) : जिस पर दोष लगाया गया हो।

आरोपेति (क्रि.) : दोषारोपण करता है।

आरोह (पु.) : ऊपर चढ़ना, वृद्धि, ऊंचाई।

आरोहणीय (वि.) : चढ़ने योग्य।

आरोहक (पु.) : चढ़ने वाला।

आरोहति (क्रि.) : चढ़ता है।

आरोहन (नपुं.) : चढ़ाई।

आलकमंदा / आलका : कुबेर की पुरी, एक पौराणिक नगर का नाम।

आलग्गित (वि.) : लगा हुआ, लटकता हुआ।

आलग्गेति (क्रि.) : लगा रहता है, लटका रहता है।

आलपति (क्रि.) : बातचीत करता है।

आलपन (नपुं.) : बातचीत, संबोधन करना।

आलम्ब (पु.) : सहारा, लटके रहने का आधार।

आलम्बति (क्रि.) : लटकता है, पकड़े रहता है, सहारा लिए रहता है।

आलम्बन (नपुं.) : लटकना, आधर।

आलम्बर (पु.) : एक प्रकार की भेरी।

आलय (पु.) : स्थान, इच्छा, आसक्ति।

आलवालक (नपुं.) : उपजाऊ जमीन।

आलस (नपुं.) : आलस्य।

आलान (नपुं.) : हाथी बांधने का स्तंभ।

आलाप (पु.) : बातचीत।

आलि (स्त्री.) : एक प्रकार की मछली, तटबंध, खाई।

आलिखति (क्रि.) : आलेखन करता है, चित्र बनाता है।

आलिङ्गति (क्रि.) : आलिंगन करता है, गले लगाता है।

आलित्त (वि.) : लिप्त।

आलिन्द (पु.) : घर का बरामदा।

आलिम्पन (नपुं.) : लीपना।

आलिम्पित (वि.) : लीपा हुआ।

आलिम्पेति (क्रि.) : लीपता है।

आली (स्त्री.) : सखी।

आलु (नपुं.) : जमीकन्द।

आलुम्पति (क्रि.) : खोद डालता है।

आलुळति (क्रि.) : हलचल करता है।

आलेप / आलेपन (पु., नपुं.) : लेप।

आलोक (पु.) : प्रकाश, उजाला।

आलोकन (नपुं.) : १. खिडकी, २. बाहर देखना।

आलोकसन्धि (पु.) : झरोखा।

आलोकित (वि.) : देखा हुआ।

आलोकेति (क्रि.) : बाहर देखता है।

आलोप (पु.) : कौर, आहार-पिंड।

आलोळ (पु.) : हलचल।

आलोळेति (क्रि.) : हलचल करता है, (छाछ) बिलोता है।

आवज्जति (क्रि.) : आवर्जन करता है, विचार करता है।

आवज्जेति (क्रि.) : ध्यान लगाता है।

आवट्ट (वि.) : आवृत्त, ढका हुआ।

आवट्टति (क्रि.) : उलटता है, पलटता है ।

आवट्टन (नपुं.) : १. आवर्तन, २. किसी भूत-प्रेत का सिर आना।

आवट्टनी (स्त्री.) : जादू, आवर्तनी-माया।

आवट्टेति (क्रि.) : जादू कर देता है।

आवत्त (वि.) : पीछे लौटा हुआ।

आवत्तक (वि.) : पीछे लौटने वाला।

आवत्तति (क्रि.) : वापस लौटता है, पीछे मुड़ता है।

आवत्तन (नपुं.) : वापस लौटना।

आवत्तिय (वि.) : जो वापस लौट सके या वापिस लौटाया जा सके।

आवत्थिक (वि.) : योग्य, मौलिक।

आवपति (क्रि.) : भेंट करता है।

आवपन (नपुं.) : बोना, बखेरना।

आवर (वि.) : बाधक।

आवरण (नपुं.) : परदा, ढक्कन।

आवरणीय (वि.) : परदा रखने के योग्य।

आवरति (क्रि.) : बाधा उपस्थित करता है, रूकावट पैदा करता है।

आवरित (वि.) : बाधित।

आवरिय (पू.क्रि.) : बाधा उपस्थित कर, परदा डाल कर।

आवली (स्त्री.) : पंक्ति, माला।

आवसति (क्रि.) : वास करता है, रहता है।

आवसथ (पु.) : निवास-स्थान।

आवहति (क्रि.) : लाता है।

आवाट (पु.) : गड्ढा।

आवहन (नपुं.) : लाना।

आवाप (पु.) : कुम्हार का आवा।

आवास (पु.) : निवास-स्थान, घर।

आवाह-विवाह (नपुं.) : सगाई-विवाह।

आवासिक (वि.) : नैवासिक, रहने वाला।

आवि (अ.) : प्रकट रूप से, सबकी आंखों के सामने।

आविकत (वि.): आविष्कृत, प्रकट।

आविज्झति (क्रि.) : चारों ओर से घेर लेता है।

आविज्झन (नपुं.) : चक्कर काटना।

आविञ्जति (क्रि.) : बिलोता है।

आविञ्जनक (वि.) : लटकता हुआ।

आविट्ठ (वि.) : प्रविष्ट।

आविद्ध (वि.) : बींधा गया, घेरा गया।

आविभाव (पु.) : प्रकट होता है।

आविल (वि.) : गन्दला, मलिन।

आविलत्त (नपुं) : गन्दला या मैला होने का भाव, हलचल, खलबली।

आविसति (क्रि.) : प्रवेश करता है।

आवुणाति (क्रि.) : पिरोता है, धागा बांधता है।

आवुत (वि.) : घिरा हुआ।

आवुध (नपुं.) : हथियार, आयुध।

आवुसो (अ.) : सम्बोधन-पद, मित्र!, आयुष्मान!

आवेठन (नपुं.) : लपेटना।

आवेठेति (क्रि.) : लपेटता है।

आवेणिक (वि.) : विशेष, असाधारण।

आवेला (स्त्री.) : फूलों का गजरा।

आवेल्लित (वि.) : टेढा।

आवेसन (नपुं.) : प्रवेश-द्वार।

आसङ्क-जातक : राजा ने लड़की के नाम का पता लगाकर उसका पाणि-ग्रहण किया। लड़की का नाम था आसङ्का (३८०)।

आसङ्कति (क्रि.) : शंका करता है, संदेह करता है।

आसङ्का (स्त्री.) : शंका, संदेह।

आसङ्कित (वि.) : आशंकित।

आसङ्ग (नपुं.) : १. आसक्ति, चिपकना; २. वस्त्र।

आसंस (वि.) : चाहने वाला, इच्छा करने वाला।

आसंसा (स्त्री.) : इच्छा, कामना।

आसज्ज (पू.क्रि.) : प्राप्तकर पहुंचकर, समीप जाकर।

आसज्जति (क्रि.) : आसक्त होता है, क्रोधित होता है, विरोध करता है।

आसज्जन (नपुं.), निग्रह करना, अपमानित करना, आसक्त होना।

आसति (क्रि.) : बैठता है।

आसत्त (वि.) : आसक्त।

आसन (नपुं.) : बैठने का आसन।

आसनसाला (स्त्री.) : बैठने का स्थान।

आसन्दि (स्त्री.) : कुर्सी, चौकी।

आसन्न (वि.) : जो समीप हो, (नपुं.) : पड़ोस।

आसभ (वि.) : वृषभ, बैल, बैल के समान।

आसय (पु.) : १. आशय, २. आश्रय, निवासस्थान।

आसव (पु.) : आस्रव, जो बहे, अकुशल-विचार।

आसवक्खय (पु.) : आस्रवों का क्षय।

आससान (वि.) : इच्छा करते हुए, आशा करने वाला।

आसा (स्त्री.) : आशा, इच्छा।

आसाभङ्ग (पु.) : निराश होना।

आसाटिका (स्त्री.) : मक्खी का अंडा।

आसादेति (क्रि.) : अपमानित करता है।

आसार (पु.) : अतिवृष्टि।

आसाळ्ह (पु.) : आषाढ का महीना।

आसि (भू.क्रि.) : (वह) था।

आसिञ्चति (क्रि.) : छिडकता है।

आसिट्ठ (वि.), आशीर्वाद प्राप्त ।

आसित्त (कृ.) : सींचा हुआ।

आसित्तक (नपुं.) : मसाला।

आसिंसक (वि.) : इच्छा करनेवाला, आशान्वित।

आसिंसना (स्त्री.) : इच्छा, आशा।

आसी (स्त्री.) : आशीर्वाद, सांप का फन।

आसीतिक (वि.) : अस्सी वर्ष का।

आसीन (वि.) : बैठा हुआ।

आसीविस (पु.) : सर्प।

आसु (अ.) : शीघ्रता से।

आसुम्भति (क्रि.) : किसी तरल पदार्थ को फेंकता है।

आसेवति (क्रि.) : अभ्यास करता है, संगति करता है।

आसेवना (स्त्री.) : अभ्यास, संगति।

आह (भू.क्रि.) : (उसने) कहा।

आहच्च (वि.) : जो हटाया जा सके।

आहच्चपाद (नपुं.) : पलंग।

आहट (वि.) : लाया हुआ।

आहत (वि.) : चोट खाया हुआ।

आहनति (क्रि.) : चोट पहुंचाता है।

आहनन (नपुं.) : चोट पहुंचाना।

आहरण (नपुं.) : लाना।

आहरति (क्रि.) : लाता है।

आहार (पु.) : भोजन।

आहारट्ठितिक (वि.) : आहार पर निर्भर।

आहारेति (क्रि.) : भोजन ग्रहण करता है।

आहिण्डति (क्रि.) : घूमता है, इधर-उधर डोलता है।

आहुति (स्त्री.) : यज्ञ-आहुति, समर्पण।

आहुण (नपुं.) : भेंट।

आहुणेय्य / आहुनेय्य (वि.), भेंट देने के योग्य, दान के योग्य।

आहुंदरिक (वि.) : ठसाठस।

आळवी : श्रावस्ती से तीस और बनारस से लगभग बारह योजन की दूरी पर बसा हुआ एक नगर। यह श्रावस्ती तथा राजगृह के बीच में बसा हुआ था।

आळारकालाम : गृहत्याग के अनंतर सिद्धार्थ गौतम ने सर्वप्रथम जिस आचार्य से शिक्षा ग्रहण की।

आळाहन (नपुं.) : दाह-क्रिया का स्थान, श्मशान।

आळारिक (वि.) : बावर्ची ।

आळ्हक (नपुं.) : हाथी बांधने का खूंटा।

इ

इक्क (पु.) : रीछ, भालु।

इक्खण / इक्खन (नपुं.) : देखना।

इक्खणिक (पु.) : ज्योतिषी।

इक्खति (क्रि.) : देखता है।

इङ्गित (नपुं.) : संकेत, इशारा।

इङ्घ (अ.) : इधर देखें, आओ।

इच्छ / इच्छक (वि.) : इच्छा करने वाला।

इच्छति (क्रि.) : इच्छा करता है।

इच्छा (स्त्री.) : कामना।

इच्छानङ्गल : कोसल जनपद का एक ब्राह्मण गांव।

इज्झति (क्रि.) : सफल होता है, उन्नति करता है।

इज्झन (नपुं.) : सफलता, वृद्धि।

इञ्जति (क्रि.) : हिलता है, कंपित होता है।

इञ्जन (नपुं.) : हलचल, कंपन।

इञ्जित (वि.) : अस्थिर, चंचल, कांपता हुआ।

इट्ठ (वि.) : इष्ट, अनुकूल।

इट्ठका / इट्ठिका (स्त्री.) : ईंट।

इट्ठिय : जो भिक्षु महास्थविर महिंद्र के साथ सिंहल द्वीप पधारे थे, उनमें से एक भिक्षु।

इण (नपुं.) : ऋण।

इणपण्ण (नपुं.) : ऋण-पत्र, हुंडी।

इणमोक्ख (पु.) : ऋण-मोक्ष, कर्ज से मुक्ति।

इणसामिक (पु.) : ऋण देने वाला, लेनदार।

इणसोधन (नपुं.) : ऋण उतारना।

इणायिक (पु.) : ऋणी, कर्जदार।

इतर (वि.) : दूसरा।

इतरीतर (वि.) : कोई।

इति (अ.) : १. ऐसे, इस प्रकार; २. वाक्य की समाप्ति का संकेत। बहुधा इसका आरंभिक स्वर 'इ' लुप्त रहता है, और केवल 'ति' लिखा जाता है।

इतिवृत्तक : खुद्दक निकाय की चौथी पुस्तक। इसकी प्रथम पंक्ति एक-विध है – कहने के अधिकारी भगवान बुद्ध द्वारा यह कहा गया।

इतिह (नपुं.) : १. परंपरागत उपदेश, २. निश्चित रूप से।

इतिहास (पु.) : परंपरा का इति-वृत्त।

इतो (अ.) : इससे आगे।

इतो-पट्ठाय (अ.) : यहां से आरंभ करके।

इत्तर (वि.) : संक्षिप्त, थोड़ा।

इत्तरकाल (पु.) : थोड़ासा समय।

इत्थं (अ.) : इस प्रकार।

इत्थत्त (नपुं.) : १. (इत्थं + त्त) वर्तमान अवस्था, २. (इत्थि + त्त) स्त्रीत्व।

इत्थन्नाम (वि.) : इस नाम का।

इत्थम्भूत (वि.) : इस प्रकार का।

इत्थागार (पु.) : स्त्रियों के रहने का हिस्सा, जनानखाना।

इत्थि / इत्थी / इत्थिका (स्त्री.) : औरत, महिला।

इत्थिधुत्त (पु.) : स्त्रियों के चक्कर में रहने वाला।

इत्थिलिङ्ग (नपुं.) : स्त्रीत्व का चिन्ह, स्त्रीलिंग (व्याकरण)।

इदं (सर्व., नपुं.) : यह।

इदपच्चयता (स्त्री.) : 'इस' का हेतु होना।

इदानि (क्रि.वि.) : अब।

इद्ध (वि.) : संपन्न।

इद्धि (स्त्री.) : ऋद्धि।

इद्धिबल (नपुं.) : अलौकिक शक्ति।

इद्धिमन्तु (वि.) : अलौकिक बलसंपन्न।

इद्धिविसय (पु.) : अलौकिक शक्ति का क्षेत्र, ऋद्धि-विषय।

इध (क्रि.वि.) : यहां, इस जन्म में, इस लोक में।

इधुम (नपुं.) : जलावन।

इन्द (पु.) : इन्द्र, (देवताओं का) अधिपति।

इन्दखील (पु.) : नगर-द्वार के बाहर गड़ा हुआ मजबूत खंभा।

इन्दगज्जित (नपुं.) : बादलों का गर्जन।

इन्दगोपक (पु.) : वर्षा ऋतु में पृथ्वी से बाहर आने वाला लाल रंग का कीड़ा, वीर बहूटियां।

इन्दग्गि (पु.) : बिजली।

इन्दजाल (नपुं.) : इंद्रजाल, जादू।

इन्दजालिक (पु.) : जादूगर।

इन्दधनु (नपुं.) : इंद्र-धनुष।

इन्दनील (पु.) : नीलम।

इन्दपत्त : कुरू जनपद का एक नगर, इंद्रप्रस्थ। आधुनिक दिल्ली इंद्रप्रस्थ की भूमि पर ही बसी है।

इन्दवारुणी (स्त्री.) : खीरे, ककड़ी की बेल।

इन्दसाल (पु.) : इंद्रसाल (वृक्ष)।

इन्दीवर (नपुं.) : नीलकमल।

इन्द्रिय (नपु.) : १. चक्षु आदि इन्द्रियां, २. क्षमता।

इन्द्रियगुत्ति (स्त्री.) : इन्द्रियों का संरक्षण।

इन्द्रियदमन (नपुं.) : इन्द्रियों का दमन।

इन्द्रियसंवर (पु.) : इन्द्रियों का संयम।

इन्द्रिय-जातक : नारद तपस्वी का एक अप्सरा के द्वारा लुभाया जाना (४२३)।

इन्दु (पु.) : चंद्रमा।

इन्धति (क्रि.) : जलाता है।

इन्धन (नपुं.) : ईंधन, जलावन।

इब्भ (वि.) : नौकर, सेवक।

इभ (पु.) : हाथी।

इभपिप्फली (स्त्री.) : काली मिर्च के समान तिक्त, लंबाकार औषधविशेष।

इरिण / इरीण (नपुं.) : महान जंगल, रेगिस्तान, बंजर-भूमि।

इरियति (क्रि.), हलचल करता है।

इरिया / इरियना (स्त्री.) : चाल-ढाल, शरीर की मुद्रा / आसन।

इरियापथ (पु.) : अंग-संचालन, शरीर की मुद्रा / आसन – जैसे की चलना, खड़े होना, बैठना या लेटना।

इरुब्बेद : ऋग्वेद।

इल्ली (स्त्री.) : छोटी तलवार।

इल्लीस-जातक : इल्लीस नामक कंजूस सेठ की कथा (७८)।

इसि (पु.) : ऋषि।

इसिपब्बजा (स्त्री.) : ऋषियों के ढंग की प्रव्रज्या, संन्यासी बनना।

इसिगिलि : राजगृह के आसपास के पांच पर्वतों में से एक।

इसिपतन : बनारस के पास के प्रसिद्ध मिगदाय की भूमि (वर्तमान सारनाथ)। यहीं भगवान बुद्ध का धर्मचक्र प्रवर्तित हुआ था।

इस्स (पु.) : भालू।

इस्सति (क्रि.) : ईर्षा करता है।

इस्सत्थ (नपुं.) : धनुर्विद्या; (पु.) : धनुर्धारी।

इस्सर (पु.) : स्वामी, मालिक, ईश्वर।

इस्सरजन (पु.) : धनी या प्रभावशाली लोग।

इस्सरिय (नपुं.) : ऐश्वर्य।

इस्सरियमद (पु.) : ऐश्वर्य-मद, संपत्ति का घमंड।

इस्सरियता (स्त्री.) : ऐश्वर्य-भाव।

इस्सा (स्त्री.) : ईर्षा, विद्वेष, असूया।

इस्सामनक (वि.) : ईर्षालु ।

इस्सास (पु.) : धनुषधारी, धनुर्धर।

इस्सुकी (वि.) : ईर्षालु ।

इह (अ.) : यहां।

इहलोक (नपुं.) : यह लोक, यह जन्म।

ई

ईघ (पु.) : पीड़ा, कठिनाई, खतरा।

ईति / ईती (स्त्री.) : संकट, विपत्ति, आपत्ति।

ईतिक (वि.) : विपत्ति-ग्रस्त।

ईदिस (वि.) : ऐसा।

ईरति (क्रि.) : चलाता है, हिलाता-डुलाता है।

ईरित (कृ., वि.) : १. कंपित, हिलाया हुआ; २. बोला गया, उद्गार।

ईरेति (क्रि.) : बोलता है।

ईस (पु.) : ईश, स्वामी।

ईसक (वि.) : थोड़ा।

ईसधर : सिनेरु पर्वत के चारों ओर की सात पर्वत श्रृंखलाओं में से एक।

ईसा (स्त्री.) : हल का अथवा वाहन का बीच वाला डंडा।

ईसादन्त (वि.) : हल के डंडे समान दांतोंवाला हाथी।

ईहति (क्रि.) : प्रयत्न करता है।

ईहा (स्त्री.) : प्रयत्न, प्रयास।

उ

उक्कंस (पु.) : उत्कृष्ट होना, श्रेष्ठ होना।

उक्कंसक (वि.) : बड़ाई करने वाला, प्रशंसा करने वाला।

उक्कंसना (स्त्री.) : बड़ाई करना, उत्साहित करना, बढावा देना।

उक्कंसेति (क्रि.) : बड़ाई करता है, बढावा देता है।

उक्कट्ठ (वि.) : उत्कृष्ट, श्रेष्ठ, उत्तम।

उक्कट्ठता (स्त्री.) : उत्कृष्टता ।

उक्कण्ठति (क्रि.) : उत्कंठित होता है, असन्तुष्ट होता है।

उक्कण्ठना (स्त्री.) : उत्कंठा, असंतोष।

उक्कण्ठित (वि.) : उत्कंठित, असंतुष्ट।

उक्कण्ण (वि.) : जिसके कान सीधे खड़े हों।

उक्कन्तति (क्रि.) : काटता है, फाड़ डालता है।

उक्कमति (क्रि.) : एक ओर हट जाता है ।

उक्कल : उत्कल-जनपद, आधुनिक उड़ीसा।

उक्कलिस्सति / उक्किलिस्सति (क्रि.) : पतित होता है।

उक्का (स्त्री.) : १. मशाल, २. उल्का, ३. लोहार की भट्ठी।

उक्काचेति (क्रि.) : उलीचता है ।

उक्कार (पु.) : गोबर, गूँह।

उक्कारभूमि (स्त्री.) : मैला स्थान, गंदी जगह ।

उक्कासति (क्रि.) : खांसता है, गला साफ करता है।

उक्किण्ण (वि.) : खोदा हुआ, उत्कीर्ण।

उक्किलेदेति (क्रि.) : कूड़ा साफ करता है।

उक्कुज्ज (वि.) : सीधा रखा हुआ।

उक्कुज्जति (क्रि.) : मोड़ता है, पलटता है, (औंधे को) सीधा करता है।

उक्कुटिक (वि.) : उकडू बैठा हुआ।

उक्कुट्ठि (स्त्री.) : चिल्लाना, घोषणा करना।

उक्कुस (पु.) : मछली खानेवाला पक्षी।

उक्कूल (वि.) : ढलवान।

उक्कोटन (नपुं.) : रिश्वत लेकर न्याय न करना।

उक्कोटेति (क्रि.) : किसी मुकद्दमे को नये सिरे से उठाता है।

उक्खलि (स्त्री.) : बर्तन, ऊखली।

उक्खलिका (स्त्री.) : छोटा बर्तन।

उक्खित्त (वि.) : उठाया गया, हटाया गया।

उक्खित्तपलिघ (वि.) : बाधा-रहित।

उक्खिपति (क्रि.) : १. ऊपर उठाता है, २. धारण करता है, ३. फेंकता है।

उक्खिपन (नपुं.) : ऊपर उठाना, फेंकना।

उक्खेपक (वि.) : ऊपर उठाने वाला, फेंकने वाला।

उक्लाप (पु.) : कूड़ा-कचरा।

उग्ग (वि.) : बड़ा, भयानक, शक्तिशाली, उग्र।

उग्गच्छति (क्रि.) : ऊपर जाता है।

उग्गज्जति (क्रि.) : चिल्लाता है।

उग्गण्हन (नपुं) : सीखना, पढ़ना।

उग्गण्हाति (क्रि.) : सीखता है, पढ़ता है।

उग्गण्हापेति (क्रि.) : सिखाता है।

उग्गय्ह / **उग्गहेत्वा** (पू. क्रि.) : सीखकर।

उग्गत (वि.) : ऊपर उठा हुआ।

उग्गट्ठन / **उग्गत्थन** (नपुं.) : आभरण विशेष।

उग्गम (पु.) / **उग्गमन** (नपुं.) : १. ऊपर उठना, २. चढाई, वृद्धि।

उग्गहित (वि.) : १. सीखा हुआ, २. ऊपर उठा हुआ, ३. अनुचित तौर पर लिया हुआ।

उग्गहेतु (पु.) : सीखने वाला।

उग्गार (पु.) : उल्टी करना, डकार, थूकना।

उग्गाहक (वि.) : सीखने वाला।

उग्गिरति (क्रि.) : मुंह से शब्द निकालता है, डकार लेता है ।

उग्गिरण (नपुं.) : उद्गार।

उग्गिलति (क्रि.) : थूकता है, उल्टी करता है।

उग्घटित (वि.) : प्रयत्नशील।

उग्घरति (क्रि.) : बूंद-बूंद टपकता है।

उग्घंसेति (क्रि.) : रगड़ता है।

उग्घाटन (नपुं.) : उद्घाटन, विवृत करना, खोलना।

उग्घाटित (वि.) : विवृत किया हुआ, खोला हुआ।

उग्घाटेति (क्रि.) : उद्घाटन करता है, खोलता है।

उग्घात (पु.) : झटका।

उग्घातित (वि.) : झटका खाया हुआ।

उग्घातेति (क्रि.) : अचानक झटका देता है।

उग्घोस (पु.) / **उग्घोसना** (स्त्री.) : घोषणा।

उग्घोसित (वि.) : घोषित।

उग्घोसेति (क्रि.) : घोषणा करता है।

उच्च (वि.) : ऊँचा, श्रेष्ठ।

उच्चत्त (नपुं.) ऊँचाई।

उच्चय (पु.) : संग्रह।

उच्चार (पु.) : गोबर, गूँह।

उच्चारण (नपुं.) : १. ऊपर उठाना, २. (शब्द का) उच्चारण, बोलना, उद्गार।

उच्चारित (वि.) : १. उठाया गया, २. बोला गया ।

उच्चारेति (क्रि.) : १. ऊपर उठाता है, २. बोलता है, कहता है।

उच्चालिङ्ग (पु.) : भिनगा।

उच्चावच (वि.) : ऊँचा-नीचा।

उच्चासयन (नपुं) : ऊँचा पलंग।

उच्चिनाति (क्रि.) : चुनाव करता है।

उच्छङ्ग (पु.) : गोद।

उच्छङ्ग-जातक : स्त्री ने राजा की कैद से अपने पति तथा पुत्र को भी छोड़ देने की याचना न कर, अपने भाई को छोड़ देने की याचना की (६७)।

उच्छादन (नपु.) : बदन का मलना, रगड़ना।

उच्छादेति (क्रि.) : बदन को रगड़ता है।

उच्छिट्ठ (वि.) : जूठन, न खाने योग्य।

उच्छिट्ठभत्त-जातक, स्त्री ने अपने यार का जूठा भात ब्राह्मण को खिलाया (२१२)।

उच्छिज्जति (क्रि.) : नष्ट हो जाता है, समाप्त होता है।

उच्छिन्दति (क्रि.) : तोड़ डालता है, नाश कर डालता है।

उच्छिन्न (वि.) : टूटा हुआ, नष्ट हुआ।

उच्छु (पु.) : गन्ना।

उच्छुयन्त (नपुं.) : गन्ना पेरने की मशीन।

उच्छुरस (पु.) : गन्ने का रस।

उच्छेद (पु.) : नाश, विनाश।

उच्छेददिट्ठि (स्त्री.) : पुनर्जन्म में अविश्वास, उच्छेददृष्टि।

उच्छेदवादी (पु.), पुनर्जन्म को न माननेवाला।

उजु / उजुक (वि.) : सीधा।

उजुता (स्त्री.) : सीधापन।

उज्जुगत (वि.) : सरल सीधे स्वभाव का।

उजुं (क्रि.वि.) : सीधे।

उज्जग्घति (क्रि.) : जोर से खिलखिलाकर हँसता है।

उज्जग्घिका (स्त्री.) : जोर की हँसी।

उज्जङ्गल (वि.) : बंजर या बालू की जमीन।

उज्जल (वि.) : उज्ज्वल, चमकदार, प्रज्वलित।

उज्जलति (क्रि.) : चमकता है, प्रज्वलित होता है।

उज्जवति (क्रि.) : नदी के ऊपर की ओर जाता है।

उज्जवनिका (स्त्री.) : नदी में ऊपर की ओर जाने वाली नाव।

उज्जहति / उज्झति (क्रि.) : छोड़ देता है।

उज्जेनी : अवन्ति जनपद की राजधानी।

उज्जोत (पु.) : प्रकाश, तेज।

उज्जोतित (वि.) : प्रकाशित।

उज्जोतेति (क्रि.) : प्रकाशित करता है।

उज्झान (नपुं.) : शिकायत, नाराज होना।

उज्झानसञ्ञी (वि.) : दोषारोपण की चेतना-युक्त।

उज्झापन (नपुं.) : उत्तेजित करना, चिढ़ाना।

उज्झापेति (क्रि.) : चिढ़ाता है, शिकायत योग्य वर्तन करता है।

उज्झायति (क्रि.) : असंतोष प्रकट करता है।

उज्झित (वि.) : त्याग दिया गया, फेंका गया।

उञ्छति (क्रि.) : भिक्षा मांगता है, फेंकी हुई खाद्यसामग्री इकट्ठी करता है।

उञ्ञा (स्त्री.) : घृणा, तिरस्कार, अवमान।

उञ्ञातब्ब (वि.) : घृणास्पद।

उट्ठहति (क्रि.), उठ खड़ा होता है।

उट्ठातु (पु.) : उठ खड़े होने वाला।

उट्ठान (नपुं.) : उत्थान, उठ खड़े होना।

उट्ठानक (वि.) : सक्रिय।

उट्ठापेति (क्रि.) : उठा देता है, निकाल बाहर करता है।

उट्ठायक (वि.) : अप्रमादी, परिश्रमी।

उट्ठित (वि.) : उठा हुआ।

उड्डहति (क्रि.) : जलाता है।

उड्डेति (क्रि.) : उड़ता है।

उण्ण (नपुं.) / **उण्णा** (स्त्री.): ऊन, तंतु।

उण्णा (स्त्री.) : बुद्ध के भौंहों के बीच के बाल।

उण्णनाभि (पु.) : मकड़ी।

उण्णामय (वि.) : बालों का बुना हुआ (बिछावन)।

उण्ह (वि.) : ऊष्ण, गरम।

उण्हत्त (नपुं.) : गरमी।

उण्हीस (नपुं.) : पगड़ी, छत।

उतु (स्त्री.) : ऋतु, समय, काल।

उतुकाल (पु.) : स्त्री के मासिक धर्म का समय।

उतुपरिस्सय (पु.) : ऋतु परिवर्तन से उत्पन्न होने वाले कष्ट।

उतुसप्पाय (पु.) : ऋतु की अनुकूलता।

उतुनी (स्त्री.) : ऋतु-स्त्राव वाली स्त्री।

उत्त (कृ., वि.) : उक्त, कहा गया।

उत्तण्डुल (वि.) : कुपच (भात)।

उत्तत्त (वि.) : गरम किया हुआ, चमकता हुआ।

उत्तम (वि.) : श्रेष्ठ, उत्तम, अच्छा।

उत्तमङ्ग (नपुं.) : श्रेष्ठ अंग अर्थात् मस्तिष्क।

उत्तमङ्गरूह (नपुं.) : सिर के बाल।

उत्तमत्थ (पु.) : श्रेष्ठतम परमार्थ।

उत्तमपोरिस (पु.) : श्रेष्ठतम पुरुष।

उत्तर (वि.) : उच्चतर, उत्तर (दिशा); (नपुं.) : (प्रश्न का) उत्तर।

उत्तरकुरु : निकायों तथा उत्तरकालीन पालि वाङ्मय में वर्णित काल्पनिक प्रदेश।

उत्तरत्थरण (नपुं.) : ऊपर का बिछावन।

उत्तरसुवे / उत्तरस्वे (क्रि.वि.) : परसो।

उत्तरपञ्चाल : राष्ट्र-विशेष, जिसकी राजधानी कम्पिल्ल थी।

उत्तरण (नपुं.) : पार होना, उत्तीर्ण होना।

उत्तरति (क्रि.) : जल से बाहर आता है।

उत्तरा (स्त्री.) : उत्तर दिशा।

उत्तरा नन्द-माता : बुद्ध का उपस्थान (सेवा) करने वाली गृहस्थ उपासिकाओं में प्रमुख।

उत्तरापथ : जम्बु द्वीप का उत्तरी विभाग। पालि वाङ्मय में इसकी सीमाओं का कहीं स्पष्ट उल्लेख नहीं है। हो सकता है कि उत्तरापथ से श्रावस्ती से तक्षशीला तक जाने वाला महामार्ग अभिप्रेत हो।

उत्तरासङ्ग (पु.) : ऊपर का चीवर (कपड़ा)।

उत्तरि / उत्तरिं (क्रि.वि.) : अधिकतर, के उपरांत, के आगे।

उत्तरिकरणीय (नपुं.) : आगे का कार्य।

उत्तरिभङ्ग (पु.) : भोजन की समाप्ति पर दिया जाने वाला स्वादिष्ट खाद्य पदार्थ ।

उत्तरिमनुस्सधम्म (पु.) : परामानुषिक स्थिति।

उत्तरिसाटक (पु.) : ऊपर का वस्त्र।

उत्तरितर (वि.) : अधिक श्रेष्ठ।

उत्तरिय (नपुं.) : १. श्रेष्ठ अवस्था (अनुत्तरिय - श्रेष्ठतम अवस्था), २. प्रत्युत्तर।

उत्तरीय (नपुं.) : ऊपर की चादर।

उत्तसति (क्रि.) : त्रसित होता है, चौकन्ना हो जाता है।

उत्तसन (नपुं.) : त्रास, भय, डर।

उत्तस्त (वि.) : भयभीत, त्रसित।

उत्तान / उत्तानक (वि.) : १. सीधा, आकाश की ओर मुँह करके लेटा हुआ, २. प्रकट, ३. उथला।

उत्तानसेय्यक (वि.) : बच्चा।

उत्तानीकम्म / उत्तानीकरण (नपुं.) : स्पष्टीकरण, प्रकटीकरण।

उत्तानीकरोति (क्रि.) : स्पष्ट करता है।

उत्तापेति (क्रि.) : कष्ट देता है, त्रास देता है।

उत्तारित (वि.) : पार उतारा हुआ।

उत्तारेति (क्रि.) : पार उतारता है, रक्षा करता है, सहायता करता है।

उत्तास (पु.) : त्रास, भय।

उत्तासन (नपुं.) : त्रास देना, परेशान करना, मृत्यु-दंड देना।

उत्तासित (वि.) : जिसे त्रास दिया गया है, जिसे मृत्यु-दंड दिया गया है।

उत्तासेति (क्रि.) : त्रास देता है, डराता है।

उत्तिट्ठति (क्रि.) : उठ खड़ा होता है।

उत्तिण (वि.) : तृण-रहित।

उत्तिण्ण (वि.) : उत्तीर्ण, जो उस पार चला गया।

उत्रास (पु.) : त्रास, भय।

उत्रासी (वि.) : त्रसित, भयभीत, कायर।

उद (अ.) : अथवा, या।

उदक (नपुं.) : पानी।

उदककाक (पु.) : समुद्री चिड़िया।

उदकधारा (स्त्री.) : जल-धारा।

उदकबिन्दु (नपुं.) : जल-बिन्दु, पानी की बूंद।

उदकमाणिक (पु.) : जल रखने का बड़ा बर्तन।

उदकसाटक (पु.) / **उदकसाटिका** (स्त्री.) : नहाने के समय पहनने का वस्त्र।

उदकायतिक (पु.) : पानी का पाइप।

उदकुम्भ (पु.) : पानी का घड़ा।

उदग्ग (वि.) : प्रसन्न-(चित्त)।

उदञ्चन (नपुं.) : छोटी बाल्टी, जल-पात्र।

उदञ्चनि-जातक : स्त्री के आकर्षण के वशीभूत हुए पुत्र को पिता ने उसके साथ जाने की आज्ञा दी, इस संबंधी जातक-कथा (१०६)।

उदण्ह (नपुं.) : सूर्योदय।

उदधि (पु.) : समुद्र, सागर।

उदपादि (भू. क्रि.) : उत्पन्न हुआ।

उदपान (पु.) : कुआँ ।

उदपानदूसक-जातक : कुएँ के जल को खराब करने वाले गीदड़ की कथा (२७१)।

उदय (पु.) : ऊपर उठना, उन्नति, वृद्धि, आय, सूद।

उदय-जातक : उदयभद्द तथा उदयभद्दा की कथा (४५८)।

उदयत्थगम (पु.) : उन्नति तथा पतन।

उदयब्बय (पु.) : वृद्धि तथा ह्रास, जन्म तथा मृत्यु।

उदयति (क्रि.) : उदय होता है, ऊपर उठता है।

उदयन (नपुं.) : ऊपर उठना।

उदर (नपुं.) : पेट।

उदरग्गि (पु.) : भूख।

उदरावदेहकं (वि.) : पेट को गले तक भरना।

उदरिय (नपुं.) : पेट, पेट के अंदर वाला अन्न।

उदहारक (पु.) : पानी लाने वाला।

उदहारिय (वि.) : पानी लाने के लिए जाना।

उदागच्छति (क्रि.) : संपूर्ण होता है।

उदान (नपुं.) : उल्लासपूर्ण कथन, चित्तोल्लास से निकला वाक्य।

उदान : खुद्दक निकाय का एक ग्रंथ।

उदानेति (क्रि.), उल्लास पूर्ण कथन करता है, हर्षोद्गार निकालता है।

उदार (वि.) : विशाल-हृदय, महान।

उदासीन (वि.) : उपेक्षा-युक्त, उदास, निराश, अक्रियाशील।

उदाहट (वि.) : उक्त, बोला गया।

उदाहरण (नपुं.) : मिसाल, उदाहरण।

उदाहरति (क्रि.) : पाठ करता है, उच्चारण करता है।

उदाहार (पु.) : कथन।

उदाहु (अ.) : अथवा, या।

उदिक्खति (क्रि.) : देखता है, नजर घुमाता है।

उदिच्च (वि.) : श्रेष्ठ, उत्तर-कुलोत्पन्न।

उदित (वि.) : उदय हुआ, ऊपर उठा।

उदीरण (नपुं.) : कथन।

उदीरित (वि.) : कहा गया, कथित।

उदीरेति (क्रि.) : कहता है, बोलता है।

उदुक्खल (पु., नपुं.) : ऊखल।

उदुम्बर (पु.) : गूलर का वृक्ष।

उदुम्बर-जातक : एक बंदर द्वारा दूसरे बंदर के ठगे जाने की कथा (२९८)।

उदेति (क्रि.) : उदय होता है, वृद्धि को प्राप्त होता है।

उदेन : कोसंबी-नरेश।

उद्द (पु.) : ऊद-बिलाव।

उद्दकरामपुत्त : गृहत्याग के अनंतर जिन आचार्यों से गौतम बुद्ध ने शिक्षा ग्रहण की, उनमें से एक।

उद्दलोमी (पु.) : ऊर्ध्व-लोमी, ऐसा कंबल जिसके दोनों सिरों पर उसे हो।

उद्दस्सेति (क्रि.) : दिखाता है।

उद्दान (नपुं.) सूची-समूह।

उद्दाप (पु.) : प्राकार की नींव।

उद्दाम (वि.) : चंचल।

उद्दालन (नपुं.) : फाड़ डालना।

उद्दालक-जातक : उद्दालक पुरोहित की कथा (४८७)।

उद्दालेति (क्रि.) : फाड़ डालता है ।

उद्दिट्ठ (वि.) : बताया हुआ, इशारा किया हुआ।

उद्दिसति (क्रि.) : नियम करता है, उच्चारण करता है।

उद्दिस्स (अ.) : निर्देश करके, दिखा कर, संदर्भ में।

उद्दीपना (स्त्री.) : व्याख्या, तेज करना।

उद्देक / उद्रेक (पु.) : डकार।

उद्देस (पु.) : संकेत, व्याख्या, पाठ।

उद्देसक (पु.) संकेत करने वाला, व्याख्याता, पाठ करने वाला।

उद्देहक (वि.) : उबलने वाला।

उद्ध (वि.) : ऊपर का।

उद्धग्ग (वि.) : ऊपर की ओर मुँह वाला।

उद्धच्च (नपुं.) : उद्धतपन।

उद्धट (वि.) : खींचा हुआ, नष्ट किया हुआ।

उद्धत (वि.) : उद्धत, हिलाया हुआ।

उद्धन (नपुं.) : चूल्हा।

उद्धपाद (वि.) : ऊपर की ओर पाँव वाला।

उद्धम्म (पु.) : मिथ्या मत।

उद्धरण (नपुं.) : ऊपर उठाना, जड़ खोदना।

उद्धरति (क्रि.) : उठाता है, जड़ खोदता है।

उद्धं (क्रि.वि.) : ऊपर।

उद्धम्भागिय (वि.) : ऊपरी भाग से सम्बन्धित ।

उद्धंसोत (वि.) : जीवन-स्रोत पर ऊपर की ओर वाला।

उद्धंसेति (क्रि.) : नष्ट करता है, विनाश करता है।

उद्धार (पु.) : बाहर खींच लाना।

उद्धुमात / **उद्धुमातक** (वि.) : सूजा हुआ, फूला हुआ।

उद्धुमायति (क्रि.) : सूज जाता है।

उद्रय (वि.) : कारण होना।

उद्रीयति (क्रि.) : फूट पड़ता है, टुकड़े-टुकड़े हो जाता है।

उद्रीयन (नपुं.) : फूट पड़ना, गिर पड़ना।

उन्दुर / **उन्दूर** (पु.) : चूहा।

उन्नत (वि.) : ऊपर उठा हुआ।

उन्नति (स्त्री.) : ऊपर उठना, वृद्धि।

उन्नदति (क्रि.) : चिल्लाता है, गरजता है।

उन्नम (पु.) : ऊँचाई।

उन्नमति (क्रि.) : ऊपर उठता है।

उन्नल / **उन्नळ** (वि.) : अभिमानी, अहंकारी।

उन्नाद (पु.) : शोर।

उन्नादेति (क्रि.) : शोर करता है।

उप (उपसर्ग) : समीप आदि अनेक अर्थों का बोधक।

उपक / उपग (वि.) : समीप जाने वाला।

उपकच्छ (नपुं.) : बगल।

उपकट्ठ (वि.) : समीप।

उपकड्ढति (क्रि.) : खींचता है।

उपकण्णक (नपुं.) : ऐसा स्थान जहां से दूसरों की आपसी बातचीत सुनाई दे सके।

उपकप्पति (क्रि.) : १. पास जाता है, २. योग्य होता है, अनुकूल होता है।

उपकप्पन (नपुं.) : १. समीप जाना, २. उपयोगी होना, योग्य होना।

उपकरण (नपुं.) : साधन।

उपकरोति (क्रि.) : उपकार करता है।

उपकार (पु.) : सहायता।

उपकारक (पु.) : उपकार करनेवाला।

उपकिण्ण (कृ.), बिखेरा हुआ ।

उपकूजति (क्रि.) : (पक्षी) चहचहाता है।

उपकूल (वि.) : नदी-तट।

उपकूलित / उपकूळित (वि.) : उबाला हुआ, भूना हुआ।

उपक्कम (पु.) : साधन, उपाय, उपक्रम।

उपक्कमति (क्रि.) : प्रयास करता है, आक्रमण करता है।

उपक्कमन (नपुं.) : आक्रमण, समीप जाना।

उपक्किलिट्ठ (वि.) : मैला, दागी।

उपक्किलेस (पु.) : चित्त-मैल।

उपक्कीतक (पु.) : क्रीत दास, खरीदा हुआ दास।

उपक्कुट्ठ (वि.) : जिस पर दोषारोपण हुआ हो।

उपक्कोस (पु.) : दोषारोपण, निंदा।

उपक्कोसति (क्रि.) : दोषारोपण करता है, निंदा करता है।

उपक्खट (वि.) : तैयार किया हुआ, पास लाया हुआ।

उपक्खलन (नपुं.) : स्खलन, पाँव लड़खड़ाना, ढहना, लूडकना।

उपक्खलति (क्रि.) : लड़खडाता है।

उपगच्छति (क्रि.) : पास जाता है।

उपगत (वि.) : पास गया हुआ।

उपगमन (नपुं.) : पास जाना।

उपगूहति (क्रि.) : गले मिलता है।

उपगूहन (नपुं.) : गले मिलना।

उपग्घात / उपघात (पु.) : झटका, चोट।

उपघातक / उपघाती (वि.) चोट पहुंचाने वाला, मार डालने वाला।

उपचय (पु.) : संग्रह।

उपचरति (क्रि.), व्यवहार करता है, उद्यत रहता है।

उपचरित (वि.) : अभ्यस्त, सेवित।

उपचार (पु.) : पास-पड़ोस, पूर्व-तैयारी।

उपचिका (स्त्री.) : दीमक।

उपचिण्ण (वि.) : अभ्यस्त, एकत्रित।

उपचित (वि.) : ढेर लगा हुआ, एकत्र किया हुआ।

उपचिनाति (क्रि.) : एकत्र करता है, बनाता है।

उपच्छिन्दति (क्रि.) : तोड़ डालता है, नष्ट कर डालता है, बाधक होता है।

उपच्छिन्न (वि.) : तोड़ दिया गया, काट दिया गया, नष्ट कर दिया गया।

उपच्छेद (पु.) : रुकावट, विनाश।

उपच्छेदक (वि.) : रुकावट डालने वाला, नष्ट करने वाला।

उपजानाति (क्रि.) : सीखता है, प्राप्त करता है।

उपजीवति (क्रि.) : किसी के आश्रय से जीता है।

उपजीवी (वि.) : किसी के आश्रय से जीने वाला।

उपज्झाय (पु.) : उपाध्याय, आध्यात्मिक गुरु।

उपञ्ञात (वि.) : सीखा हुआ, ज्ञात।

उपट्ठपेति (क्रि.) : समर्पित करता है, सेवा में उपस्थित रहता है, स्थापित करता है।

उपट्ठहति / उपट्ठाति (क्रि.) : प्रतीक्षा / सेवा करता है, सेवा में उपस्थित रहता है।

उपट्ठाक (पु.) : सेवक।

उपट्ठान (नपुं.) : सेवा।

उपट्ठानसाला (स्त्री.) : सभा भवन।

उपट्ठित (वि.) : उपस्थित, तैयार।

उपडय्हति (क्रि.) : जलता है।

उपड्ढ (वि., नपुं.) : आधा।

उपतप्पति (क्रि.) : अनुत्तप्त होता है, पीड़ित होता है।

उपताप (पु.) : पश्चाताप।

उपतापक (वि.) : अनुत्ताप तथा पश्चाताप का कारण।

उपतापेति (क्रि.) : कष्ट देता है, पीड़ा पहुंचाता है।

उपतिट्ठति (क्रि.) : समीप खड़ा होता है, देखभाल करता है।

उपतिस्स : धम्म-सेनापति सारिपुत्त का गृहस्थ-नाम।

उपत्थद्ध (वि.) : कड़ा, कठोर, सहारे खड़ा।

उपत्थम्भ (पु.) : सहारा, आधार।

उपत्थम्भेति (क्रि.) : प्रदर्शित करता है।

उपदहति (क्रि.), देता हे, कारणीभूत होता है।

उपदा (नपुं.) : भेंट, उपहार।

उपदिट्ठ (वि.) : उपदिष्ट।

उपदिसति (क्रि.) : उपदेश देता है।

उपदिसन (नपुं.) : उपदेश।

उपदिस्सति (क्रि.) : प्रकट होता है।

उपदेस (पु.) : उपदेश।

उपद्दव (पु.) : उपद्रव, दुर्भाग्य।

उपद्दवेति (क्रि.) : कष्ट पहुंचाता है।

उपद्दुत (वि.) : उपद्रुत, कष्ट का भागी।

उपधान (नपुं.) : तकिया, सिरहाना।

उपधान (वि.) : कारण होना।

उपधानेति (क्रि.) : कल्पना करता है, विचार करता है।

उपधारण (नपुं.) : पात्र, दूध का बर्तन।

उपधारणा (स्त्री.) : विचार, सोच।

उपधारित (वि.) : विचारित।

उपधारेति (क्रि.) : विचार करता है, परिणाम निकालता है।

उपधावति (क्रि.) : दौड़ता है।

उपधावन (नपुं.) : पीछे दौड़ना।

उपधि (पु.) : पुनर्जन्म का कारण, आसक्ति।

उपनच्चति (क्रि.) : नृत्य करता है।

उपनत (वि.) : झुका हुआ।

उपनदति (क्रि.) : आवाज देता है, बुलाता है।

उपनद्ध (वि.) : जिसके प्रति शत्रु-भाव हो, कोसा गया।

उपनन्धति (क्रि.) : शत्रु-भाव रखता है।

उपनमति (क्रि.) : झुकता है।

उपनमन (नपुं.) : झुकना, नम्र होना।

उपनयन (नपुं.) : पास लाना, ब्राह्मणों का उपनयन संस्कार।

उपनय्हति (क्रि.) : १. शत्रु-भाव रखता है, २. लपेटता है।

उपनय्हना (स्त्री.) : १. शत्रु-भाव, २. लपेटना।

उपनामित (वि.) : पास लाया गया, भेंट।

उपनामेति (क्रि.) : पास लाता है, भेंट करता है।

उपनायिक (वि.) : समीप आता हुआ, पास में लाता हुआ।

उपनाह (पु.) : वैर, शत्रु-भाव।

उपनाही (वि.) : वैरी, पाखंडी।

उपनिक्खमति (क्रि.) : बाहर जाता है, निकलता है।

उपनिक्खित्त (वि.) : निक्षिप्त, रखा गया।

उपनिक्खित्तक (पु.) : चर-पुरुष, जासूस।

उपनिक्खिपति (क्रि.) : रखता है।

उपनिक्खिपन (नपुं.) / **उपनिक्खेप** (पु.): निक्षेप, रखना।

उपनिघंसति (क्रि.) : रगड़ता है, (कोल्हू में) पेरता है।

उपनिज्झान (नपुं.) : विचार, मनन।

उपनिज्झायति (क्रि.) : विचार करता है, मनन करता है।

उपनिधा (स्त्री.) / **उपनिधि** (पु.) : तुलना, वचन।

उपनिधाय (अ.) : तुलना किया गया।

उपनिपज्जति (क्रि.) : पास लेट जाता है।

उपनिबद्ध (वि.) : सटा हुआ।

उपनिबन्ध (पु.) : नजदीकी संबंध, (वि.) : निर्भर, संबंधित।

उपनिबन्धति (क्रि.) : सटाकर बाँधता है, मिन्नत करता है।

उपनिबन्धन (नपुं.) : नजदीकी संबंध, अति-विनम्र प्रार्थना।

उपनिसा (स्त्री.) : कारण, साधन, समानभाव, सरीखापन।

उपनिसीदति (क्रि.) : समीप बैठता है।

उपनिसेवति (क्रि.) : संगति करता है।

उपनिस्सय (पु.) : आधार, आश्रय।

उपनिस्सयति (क्रि.) : संगति करता है, सहारा लेता है।

उपनिस्साय (क्रि.वि.) : पास, समीप, कारण से, साधन से।

उपनिस्सित (वि.) : आधारित, आश्रित।

उपनीत (वि.) : लाया गया, पाला गया।

उपनीय (पू.क्रि.) : लाकर।

उपनीयति (क्रि.) : लाया जाता है, ले जाया जाता है।

उपनेति (क्रि.) : पास लाता है, भेंट करता है।

उपन्तिक (वि.) : पास, (नपुं.) : पास-पड़ोस।

उपपज्जति (क्रि.) : पुनः जन्म ग्रहण करता है।

उपपत्ति (स्त्री.) : जन्म, पुनर्जन्म।

उपपन्न (वि.) : जन्म ग्रहण किया।

उपपरिक्खण (नपुं.) / **उपपरिक्खा** (स्त्री.) : परीक्षा, जांच।

उपपरिक्खति (क्रि.) : परीक्षा लेता है, जांच करता है।

उपपातिक (वि.) : बिना माता-पिता के उत्पन्न - जैस-देवता होनेवाले सत्व।

उपपादित (वि.) : समुत्पन्न, संपन्न, सिद्ध किया गया।

उपपादेति (क्रि.) : उत्पन्न करता है, कार्यान्वित करता है।

उपपारमी (स्त्री.) : छोटी-पारमिताएं।

उपपीळक (वि.) : पीड़ा देने वाला, कष्ट देने वाला।

उपपीळा (स्त्री.) : पीड़ा, कष्ट।

उपपीळेति (क्रि.) : पीड़ा देता है, कष्ट पहुंचाता है।

उपप्फुसति (क्रि.) : स्पर्श करता है।

उपप्लवति (क्रि.) : तैरता है।

उपब्बजति (क्रि.) : जाता है, भेंट करता है, सहारा लेता है।

उपब्बूळ्ह (वि.) : भीड़ वाली जगह।

उपब्रूहण / **उपब्रूहन** (नपुं.) : वृद्धि।

उपब्रूहेति (क्रि.) : बढाता है, फैलाता है।

उपभुञ्जक (वि.) : खाने वाला, भोगने वाला ।

उपभुञ्जति (क्रि.) : भोगता है।

उपभोग (पु.) : भोगना, आनंद लेना, लाभ उठाना।

उपभोगी (वि.) : उपभोग करने वाला, आनंद लेने वाला, खाने वाला।

उपम (वि.) : समान, के जैसा।

उपमा (स्त्री.), समानता, तुलना।

उपमातु (स्त्री.) : दाई।

उपमान (नपुं.) : तुलना, जिससे तुलना की जाए।

उपमेति (क्रि.) : तुलना करता है।

उपमेय्य (वि.) : जिसकी तुलना की जाए।

उपय (पु.) : आसक्ति, उपक्रम।

उपयाचति (क्रि.) : याचना करता है।

उपयाचितक (नपुं.) : याचना।

उपयाति (क्रि.) : समीप जाता है।

उपयान (नपुं.) : पहुंच।

उपयानक (नपुं.) : केकड़ा।

उपयुञ्जति (क्रि.) : संबंध जोड़ता है, अभ्यास करता है, उपयोग करता है।

उपयोग (पु.) : संबंध, प्रयोग, विनियोग।

उपरचित (वि.) : निर्मित।

उपरज्ज (नपुं.) : उप-राजपना।

उपरत (वि.) : विरत हुआ।

उपरति (स्त्री.) : संयम।

उपरमति (क्रि.) : विरत रहता है, संयत रहता है।

उपराजा (पु.) : राजा का प्रतिनिधि, राजा का सहयोगी।

उपरि (अ.) : ऊपर।

उपरिट्ठ (वि.) : सर्वोपरि, सर्वश्रेष्ठ।

उपरिपासाद (पु.) : सबसे ऊपर का तल्ला।

उपरिभाग (पु.) : ऊपर का हिस्सा।

उपरिमुख (वि.) : ऊपर की ओर मुंह वाला, ऊपर मुंह किया हुआ।

उपरिम (वि.) : सर्वोच्च।

उपरुज्झति (क्रि.) : अवरोध को प्राप्त होता है, रुक जाता है।

उपरुन्धति (क्रि.) : रोकता है, रुकावट डालता है।

उपरूळ्ह (वि.) : (फिरसे) उगा हुआ।

उपरोचति (क्रि.), प्रसन्न करता है।

उपरोदति (क्रि.) : विलाप करता है।

उपरोधेति (क्रि.) : बाधा डालता है / डलवाता है।

उपरोप (नपुं.) : पौधा।

उपल (पु.) : पत्थर।

उपलक्खणा (स्त्री.) : विवेक करना, भेद करना।

उपलक्खित (वि.) : भेद किया हुआ, अंतर समझा हुआ, पहचाना हुआ।

उपलक्खेति (क्रि.) : विवेक करता है, भेद करता है।

उपलद्ध (वि.) : प्राप्त।

उपलद्धि (स्त्री.), प्राप्ति।

उपलब्भति (क्रि.) : पाया जाता है, विद्यमान होता है।

उपलभति (क्रि.) : प्राप्त करता है।

उपलापन (नपुं.) : बकवास करना, मनाना, अनुनय।

उपलापेति (क्रि.) : प्रेरित करता है, मनाता है।

उपलालेति (क्रि.) : दुलारता है, लालन करता है।

उपलिक्खति (क्रि.) : खरोचता है, उत्कीर्ण करता है।

उपलिप्पति (क्रि.) : मैला होता है, चिपक जाता है।

उपलिम्पति (क्रि.) : पोतता है, मैला करता है।

उपलेप (पु.) : लेप, अशुद्धि, मेल।

उपवज्ज (वि.) : सदोष, निंद्य।

उपवण्णेति (क्रि.) : वर्णन करता है।

उपवत्त / उपवत्तन : हिरण्यवती के तट पर कुसीनारा के मल्लों का शाल-वन। यहीं भगवान बुद्ध का महापरिनिर्वाण हुआ था।

उपवत्तति (क्रि.) : विद्यमान होता है।

उपवत्तन (वि.) : जो समीप हो।

उपवदति (क्रि.) : दोषारोपण करता है, अपमानित करता है।

उपवन (नपुं.) : छोटा जंगल, बगीचा।

उपवसति (कि.) : वास करता है, रहता है।

उपवाद (पु.) : दोष, अपमान।

उपवादक (वि.) : दोष देने वाला, अपमान करने वाला।

उपवायति (क्रि.) : हवा चलती है।

उपवास (पु.) : आहार-त्याग, व्रत।

उपवासन (नपुं.) : सुगंधित करना।

उपवासित (वि.) : सुगंधित।

उपवासेति (क्रि.) : सुगंधित करता है।

उपवाहन (नपुं.) : ले जाना, बहाकर ले जाना, ढोकर ले जाना।

उपविचरति (क्रि.) : घूमता है।

उपविजञ्ञा (स्त्री.) : ऐसी स्त्री जिसको प्रसव होने ही वाला हो।

उपविसति (क्रि.) : समीप आता है, समीप बैठता है।

उपवीण (पु.) : वीणा का सिरा।

उपवीत (वि.) : बुना हुआ।

उपवीयति (क्रि.) : बुनता है।

उपवुत्त (वि.) : दोषारोपित किया गया।

उपवुत्थ (वि.) : बसा हुआ, वास किया हुआ; जिसने (उपोसथ-) व्रत रखा था।

उपव्ह्यति (क्रि.) : बुलाता है, आह्वान करता है।

उपसंवसति (क्रि.) : किसी के साथ रहता है।

उपसंहरण (नपुं.) / **उपसंहार** (पु.) : एकत्र करना, तुलना करना।

उपसंहरति (क्रि.) : इकट्ठा करता है, समीप लाता है, ढेर लगाता है।

उपसङ्कमति (क्रि.) : पास जाता है।

उपसङ्कमन (नपुं.) : नजदीक जाना, पास में जाना।

उपसङ्कमित्वा (पू.क्रि.) : पास जाकर।

उपसग्ग (पु.) : खतरा, किसी क्रिया के पूर्व में आने वाले वर्ण-समूह (उपसर्ग)।

उपसन्त / **उपसमित** (वि.) : शांत-चित्त।

उपसम (पु.) : शांति, संतोष, समाधान।

उपसमेति (क्रि.) : संतुष्ट करता है, शांत करता है।

उपसम्पज्ज (पू.क्रि.) : पहुंच कर, प्राप्त करके, उपसंपादित होकर (भिक्षु बनकर)।

उपसम्पज्जति (क्रि.) : पहुंचता है, प्राप्त करता है, (भिक्षु) उपसंपन्न होता है।

उपसम्पदा (स्त्री.) : १. प्राप्ति, २. बौद्ध-भिक्षु की संघ के द्वारा दी जानेवाली दीक्षा।

उपसम्पन्न (वि.) : १. प्राप्त, पाया हुआ; २. उपसंपदा-प्राप्त।

उपसम्पादेति (क्रि.) : उपसंपदा (भिक्षु बनने की दीक्षा) देता है।

उपसम्फस्सति (क्रि.) : गले मिलता है।

उपसम्मति (क्रि.) : शांत होता है, संतुष्ट होता है।

उपसाव्ह-जातक : उस ब्राह्मण की कथा जिसने अपने लड़के को आदेश दिया था कि उसकी दाह-क्रिया ऐसी जगह की जाए, जहां पहले किसी की दाह-क्रिया न हुई हो (१६६)।

उपसिंघति (क्रि.) : नाक बजाता है, सूं-सूं करता है।

उपसिंघन (नपुं.) : नाक बजाना, सूं-सूं करना।

उपसुस्सति (क्रि.) : सूख जाता है।

उपसुस्सन (नपुं.) : सूख जाना।

उपसेचन (नपुं.) : भोजन को स्वादिष्ट बनाने के लिए उस पर (नमक-मिर्च), छिड़कना।

उपसेनिया (स्त्री.) : जो लड़की सदैव अपनी मां के पास रहना चाहे, लाड़ली।

उपसेवति (क्रि.) : अभ्यास करता है, संगति करता है।

उपसेवना (स्त्री.) : अभ्यास, संगति।

उपसेवित (वि.) : जिसने अभ्यास किया हो, जिसने संगति की हो।

उपसेवी (वि.) : अभ्यास करने वाला, संगति करने वाला।

उपसोभति (क्रि.) : सुशोभित होता है, सुंदर लगता है।

उपसोभित (वि.) : सुशोभित।

उपसोभेति (क्रि.) : सुशोभित करता है।

उपसोसेति (क्रि.) : सुखाता है।

उपसट्ठ (वि.) : दमित, जिसका दमन किया गया, नियंत्रित ।

उपस्सय (पु.) : निवासस्थान।

उपस्सास (पु.) : साँस लेना।

उपस्सुति (स्त्री.) : उपश्रुति, दूसरों की गुप्त बातचीत।

उपस्सुतिक (वि.) : दूसरों की बातचीत सुनने वाला।

उपहञ्ञति (क्रि.) : भ्रष्ट होता है, चोट खाता है।

उपहत (वि.) : चोट खाया हुआ।

उपहत्तु (पु.) : लाने वाला।

उपहनति (क्रि.) : हानि पहुंचाता है, चोट पहुंचाता है।

उपहरण (नपुं.) : १. भेंट करना, २. लेना, झपटना।

उपहरति (क्रि.) : भेंट लाता है।

उपहार (पु.) : भेंट, पुरस्कार।

उपहिंसति (क्रि.) : हानि पहुंचाता है, चोट पहुंचाता है।

उपागच्छति (क्रि.) : समीप आता है।

उपागत (वि.) : समीप आया हुआ।

उपातिधावति (क्रि.) : दौड़ता रहता है।

उपातिपन्न (वि.) : गिरा हुआ, शिकार जाले में फंसा हुआ।

उपातिवत्त (वि.) : सीमातिक्रान्त हुआ, पार चला गया हुआ।

उपातिवत्तति (क्रि.) : सीमोल्लंघन करता है, मर्यादा पार करता है।

उपादा (क्रि.वि., पू.क्रि.) : उपादाय का संक्षिप्त रूप, सकारण।

उपादान (नपुं.) : आसक्ति, ईंधन ।

उपादानक्खन्ध (पु.) : आसक्ति के रूप, वेदना आदि स्कन्ध ।

उपादानक्खय (पु.) : आसक्ति का क्षय।

उपादानिय (वि.) : आसक्ति से संबंधित।

उपादाय (पू.क्रि.) : कारण होकर।

उपादि (पु.) : जीवन का ईंधन।

उपादिसेस (वि.) : जिसमें स्कन्ध अवशेष हो।

उपादिन्न (वि.) : गृहीत, पकड़ा हुआ।

उपादियति (क्रि.) : ग्रहण करता है।

उपाधि (पु.) : पद, गद्दी, जोड़ देना, पूरक।

उपाय (पु.) : साधन।

उपायकुसल (वि.) : साधनसंपन्न।

उपायकोसल्ल (नपुं.) : उपायकुशलता।

उपायन (नपुं.) : भेंट।

उपायास (पु.) : चिंता, दुःख, पश्चाताप।

उपारम्भ (पु.) : डाँट-डपट।

उपालि-स्थविर : भगवान बुद्ध के महाश्रावकों में से एक अत्यंत प्रसिद्ध महास्थविर। इनका जन्म कपिलवस्तु के नाई परिवार में हुआ था। बुद्ध के परिनिर्वाण के अनन्तर प्रथम संगीति में उपालि स्थविर ही विनय के विषय में प्रमाण माने गये थे।

उपाविसि (भू.क्रि.) : पास आया, स्थान ग्रहण किया।

उपासक (पु.) : गृहस्थ-शिष्य।

उपासकत्त (नपुं.) : उपासक-भाव।

उपासति (क्रि.) : उपासना करता है, सेवा में रहता है।

उपासन (नपुं.) : १. सेवा, २. धनुर्विद्या।

उपासिका (स्त्री.) : गृहस्थाश्रमी शिष्या, स्त्री-धर्मानुयायी।

उपासित (वि.) : पूजित, सेवित।

उपासीन (वि.) : पास बैठा हुआ।

उपाहत (वि.) : जिसे आघात लगा हो, जिसने चोट खाई हो ।

उपाहन (नपुं.) : जूता।

उपेक्खक (वि.) : उपेक्षा करने वाला, उदासीन, अपक्षपाती, निर्लिप्त।

उपेक्खति (क्रि.) : उपेक्षा करता है, निर्लिप्त / अनासक्त रहता है ।

उपेक्खना (स्त्री.) / **उपेक्खा** (स्त्री.) : उपेक्षा-भाव, समता-भाव, संतुलन।

उपेत (वि.) : पास गया हुआ, प्राप्त हुआ।

उपेति (क्रि.) : पास जाता है, प्राप्त करता है।

उपोचित (वि.), संग्रहित, ढेर लगा हुआ, सुखद।

उपोसथ : महीने की दोनों अष्टमियां, अमावस्या तथा पूर्णिमा के चार उपोसथ (व्रत), के दिन।

उपोसथकम्म (नपु.) : उपोसथ (व्रत) का क्रियात्मक रूप।

उपोसथागार (नपुं.) : उपोसथ-भवन।

उपोसथिक (वि.) : उपोसथ (व्रत) के दिन आठ शील ग्रहण करने वाला।

उप्पक्क (वि.) : सूजा हुआ, फूला हुआ।

उप्पच्चति (क्रि.) : पकता है।

उप्पज्जति (क्रि.) : उत्पन्न होता है।

उप्पज्जन (नपुं.) : उत्पन्न होना, पैदा होना।

उप्पज्जमान (वि.) : उत्पन्न होनेवाला।

उप्पटिपाटि (स्त्री.) : व्यवस्था का अभाव, अनियमितता।

उप्पण्डना (स्त्री.) : हँसी उड़ाना, मजाक उड़ाना।

उप्पण्डुकजात (वि.) : पीला पड़ा हुआ, फीका / कमजोर।

उप्पण्डेति (क्रि.) : मुंह चिढाता है।

उप्पतति (क्रि.) : उड़ता है, उछलता है, कूदता है।

उप्पतन (नपुं.) : उड़ान, उछलन, कूदना।

उप्पतमान (वि.) : उड़ता हुआ, उछलता हुआ, कूदता हुआ।

उप्पतित (वि.) : उड़ा, उछला।

उप्पत्ति (स्त्री.) : उत्पत्ति, पुनर्जन्म।

उप्पथ (पु.) : कुमार्ग, अकुशल मार्ग।

उप्पन्न (वि.) : उत्पन्न।

उप्पब्बजति (क्रि.) : भिक्षु-संघ से निकल जाता है, पुनः गृहस्थ हो जाता है।

उप्पब्बजित / उप्पब्बज्जित (वि.) : भिक्षु-संघ से निकला हुआ, पुनः गृहस्थ बना हुआ।

उप्पब्बाजेति (क्रि.) : भिक्षु-संघ से निकाल देता है।

उप्पल (नपुं.) : कंवल, कमल।

उप्पलवण्णा थेरी : भगवान बुद्ध की दो प्रधान भिक्षुणियों में से एक।वह एक सेठ की पुत्री थी। उसकी त्वचा उत्पल-वर्ण होने के कारण ही उसका नाम उप्पलवण्णा स्थविरी पड़ा था।

उप्पलिनी (स्त्री.) : कमल के फूलों से भरा हुआ तालाब।

उप्पाटन (नपुं.) : उखाड़ना।

उप्पाटित (वि.) : उखाड़ा गया ।

उप्पाटेति (क्रि.) : उखाड़ता है, छीलता है।

उप्पात (पु.) : ऊपर उडना, उल्कापात, असाधारण घटना, उत्पात।

उप्पाद (पु.) : उत्पन्न होना, अस्तित्व में आना।

उप्पादक (वि.) : उत्पन्न करने वाला।

उप्पादन (नपुं.) : उत्पत्ति, बनाना।

उप्पादेति (क्रि.) : उत्पन्न करता है।

उप्पादेतु (पु.) : उत्पन्न करने वाला।

उप्पीळन (नपुं.) : पीड़ा देना, दबाना, दमन करना।

उप्पीळित (वि.) : पीड़ित।

उप्पीळेति (क्रि.) : पीड़ा देता है, दबाता है, कष्ट देता है।

उप्पोठन (नपुं.) : झाड़ना, पीटना।

उप्पोठेति (क्रि.) : झाड़ता है, पीटता है।

उप्लवन (नपुं.) : तैरना।

उप्लवति (क्रि.) : तैरता है।

उप्लापेति (क्रि.) : डुबकी लगाता है।

उप्फासुलिक (वि.) : पसली मात्र दिखाई देने वाला।

उब्बट्टन (नपुं.) : बदन को रगड़ना, उबटन लगाना।

उब्बट्टित (वि.) : मला गया, उबटन लगाया गया, लेप किया गया।

उब्बट्टेति (क्रि.) : मालिश करता है, उबटन लगाता है।

उब्बत्तेति (क्रि.) : ऊपर उठाता है, फूलाता है, सुपथ से हट जाता है।

उब्बन्धति (क्रि.) : फांसी लटका देता है, गला घोंट देता है।

उब्बन्धन (नपुं.) : गला घोंटना, फांसी लटकाना।

उब्बहति (क्रि.) : खींचता है, ले जाता है, उठाता है।

उब्बहन (नपुं.) : खींचना, ले जाना, उठाना ।

उब्बाधति (क्रि.) : हैरान करता है।

उब्बाधिक (वि.) : हैरान करने वाला।

उब्बाळ्ह (वि.) : कष्ट प्राप्त, हैरान किया गया, सताता गया।

उब्बिग्ग (वि.) : उद्विग्न, त्रस्त, परेशान, व्याकुल।

उब्बिज्जति (क्रि.) : सताता है, भयभीत करता है।

उब्बिज्जना (स्त्री.) : उद्वेग, अशांति।

उब्बिलावितत्त (नपुं.) : अत्यंत आल्हाद।

उब्बेग (पु.) : उद्वेग, उत्तेजना, घबराहट।

उब्बेजेति (क्रि.) : उद्वेग उत्पन्न करता है, भयभीत करता है।

उब्बेध (पु.) : ऊंचाई।

उब्भट्ठक (वि.) : सीधा खड़ा हुआ।

उब्भत (वि.) : वापिस ले लिया गया, खींच लिया गया।

उब्भव (पु.) : उद्भव, उत्पत्ति।

उब्भार (पु.) : हटा दिया जाना।

उब्भिज्ज (पू.क्रि.) : बाहर आकर, अंखुआ फूट निकलकर।

उब्भिज्जति (क्रि.) : ऊपर उछलता है, अंखुआ फूट निकलता है।

उब्भिद : १. (नपुं., पु) खाने का नमक, २. (नपुं) : अंकुर निकलता हुआ ।

उब्भुजति (क्रि.) : ऊपर उठाता है।

उभ / उभय (सर्व.) : दोनों।

उभतो (अ.) : दोनों, दोनों तरह से, दोनों ओर से।

उभतोभट्ठ-जातक : एक मछुवे की कथा, जो दोनों ओर से गया (१३९)।

उम्मग्ग (पु.) : सुरंग, चोर-रास्ता।

उम्मत्त (वि.) : पागल।

उम्मदन्ती-जातक : एक सेठ की लड़की की कथा, जो अपने सौंदर्य के कारण देखने वालों को उन्मत्त बना देती थी (५२७)।

उम्मा (स्त्री.) : अलसी, अलसी के बीज।

उम्माद (पु.) : उन्माद, पागलपन।

उम्मार (पु.) : देहली, चौखट।

उम्मि (स्त्री.) : ऊर्मि, लहर।

उम्मिसति (क्रि.) : आंख खोलता है।

उम्मिहति (क्रि.) : पेशाब करता है।

उम्मीलन (नपुं.) : उन्मीलन, आंख खोलना।

उम्मीलेति (क्रि.) : उन्मीलन करता है, आंख खोलता है।

उम्मुक (नपुं.) : लुआठी, मशाल।

उम्मुख (वि.) : जिसका मुंह आकाश की ओर हो।

उम्मुज्जति (क्रि.) : बाहर आता है, पानी से बाहर निकलता है।

उम्मुज्जन (नपुं.) : बाहर निकलना।

उम्मुज्जनिमुज्जा (स्त्री.) : इतराना-डूबना, पानी से बाहर निकलना और फिर डुबकी लगाना।

उम्मूल / उम्मूलित (वि.) : उन्मूल, जड़ खोदा हुआ।

उम्मूलन (नपुं.) : जड़ खोदना, जड़ से उखाड़ना।

उम्मूलेति (क्रि.) : जड़ खोदता है, जड़ से उखाड़ता है।

उय्यम / उय्याम (पु.) : उद्यम, प्रयत्न।

उय्यान (नपुं.) : उद्यान, बगीचा।

उय्यानकीळा (स्त्री.) : उद्यान-क्रीड़ा।

उय्यानपाल (पु.) : उद्यान-पालक, माली, उद्यान का रखवाला ।

उय्युञ्जति (क्रि.) : जुतता है, प्रयास करता है।

उय्युञ्जन (नपुं.) : उद्योग, क्रियाशीलता।

उय्युत्त (वि.) : उत्साही, लगा हुआ।

उय्योग (पु.) : उद्योग।

उय्योजन (नपुं.) : प्रेरणा, भेज देना।

उय्योजित (वि.) : प्रेरित, भेज दिया गया।

उय्योजेति (क्रि.) : प्रेरित करता है, भेज देता है।

उय्योधिक (नपुं.) : लड़ाई की योजना, सेना की (झूठ-मूठ) की लड़ाई।

उर (पु., नपुं.) : छाती।

उरग (पु.) : सर्प, सांप।

उरग-जातक : सांप तथा गरूड का संघर्ष। बोधिसत्त्व ने दो स्थायी बैरियों में मैत्री कराई, इसकी जातक-कथा (१५४)।

उरग-जातक : पुत्र की मृत्यु पर घर का कोई भी व्यक्ति नहीं रोया इस संबंध में जातक-कथा (३५४)।

उरचक्क (नपुं.) : छाती पर रखा हुआ लोह-चक्र।

उरच्छद (पु.) : छाती की ढाल।

उरण (पु.) : भेड़, मेंढा।

उरणी (स्त्री.), भेड़ी।

उरत्ताळिं (क्रि.वि.) : अपनी छाती पीटना।

उरब्भ (पु.) : मेंढा।

उरु (वि.) : बड़ा, चौड़ा, प्रमुख।

उरुवेलकप्प : मल्ल जनपद में मल्लों का एक नगर।

उरुवेला : बोधगया में बोधिवृक्ष के समीप, नेरञ्जरा नदी के तट पर एक स्थान।

उलूक (पु.) : उल्लू।

उलूक-जातक : पक्षियों द्वारा उल्लू को अपना राजा बनाये जाने का प्रस्ताव किया गया, इस संबंध में जातक-कथा (२७०)।

उल्लङ्घन (नपुं.) / **उल्लङ्घना** (स्त्री.) : सीमोल्लंघन, सीमा पार करना, छलांग लगाना।

उल्लङ्घेति (क्रि.) : सीमा लांघ जाता है, छलांग लगाता है।

उल्लपति (क्रि.) : स्वयं की प्रशंसा करता है।

उल्लपना (स्त्री.) : अपनी प्रशंसा।

उल्लिखति (क्रि.) : अलग करता है, लकीर खींचता है, खरोंचता है।

उल्लिखन (नपुं.) : अलग करना, लकीर खींचना, खरोंचना।

उल्लित्त (वि.) : उपलिप्त, लेप किया गया।

उल्लुम्पति (क्रि.) : ऊपर उठाता है, सहायक होता है।

उल्लुम्पन (नपुं.) : ऊपर उठाना, संरक्षण देना, बचाना।

उल्लोकक (वि.) : द्रष्टा, जानकार।

उल्लोकन (नपुं.) : १. दृष्टि, २. खिड़की।

उल्लोकेति (क्रि.) : देखता है।

उल्लोल (पु.) : हलचल, बड़ी लहर।

उल्लोलेति (क्रि.), हलचल पैदा करता है।

उसभ (पु.) : वृषभ, श्रेष्ठ पुरुष, दूरी का माप-विशेष।

उसीर (नपुं.) : खस।

उसु (पु., स्त्री.) : तीर।

उसुकार (पु.) : तीर बनाने वाला, बढई ।

उसुमा / **उस्मा** (स्त्री.) : उष्णता, गरमी।

उसूयक (वि.) : ईर्षा करने वाला।

उसूयति (क्रि.) : ईर्षा करता है, मत्सर जगाता है।

उसूया / **उसूयना** (स्त्री.) : ईर्षा।

उस्सङ्की (वि.) : शंकालु, भयभीत।

उस्सद / **उस्सन्न** (वि.) : विपुल।

उस्सन्नता (स्त्री.) : विपुलता।

उस्सव (पु.) : उत्सव।

उस्सहति (क्रि.) : कोशिश करता है, प्रयास करता है।

उस्सहन (नपुं.) : प्रयास, प्रयत्न।

उस्सापन (नपुं.) : उठाना।

उस्सापित (वि.) : उठाया गया।

उस्सापेति (क्रि.) : ऊपर उठाता है, ऊंचा करता है।

उस्सारणा (स्त्री.) : भीड़, कोलाहल।

उस्सारित (वि.) : एक ओर ढकेल दिया गया।

उस्सारेति (क्रि.) : एक ओर ढकेल देता है।

उस्साव (पु.) : ओस।

उस्सावबिन्दु (नपुं.) : ओस की बूंद।

उस्साह (पु.) : उत्साह।

उस्साहवन्तु (वि.) : उत्साही, कार्यशील।

उस्साहेति (क्रि.) : उत्साहित करता है, प्रवृत्त करता है।

उस्सिञ्चति (क्रि.) : पानी उठाता है, सींचता है।

उस्सिञ्चन (नपुं.) : पानी उठाना, सींचना।

उस्सित (वि.) : उठाया गया, ऊँचा किया गया।

उस्सीसक (नपुं.) : सिर रखने की जगह, तकिया।

उस्सुक (वि.) : उत्सुक, उत्साही, क्रियाशील।

उस्सुक्क (नपुं.) : औत्सुक्य, उत्साह, क्रिया-शीलता।

उस्सुक्कति (क्रि.) : कोशिश करता है, प्रयत्न करता है।

उस्सुक्कापेति (क्रि.) : प्रेरित करता है।

उस्सुस्सति (क्रि.) : सूख जाता है।

उस्सूर (वि.) : सूर्योदय के बाद का।

उस्सूरसेय्या (स्त्री.), सूर्योदय के बाद सोते रहना।

उस्सोळ्ही (स्त्री.) : उत्साह, प्रयास।

उळार (वि.) : उदार, विशाल, श्रेष्ठ, प्रमुख।

उळारत्त (नपुं.) / **उळारता** (स्त्री.) : उदारता, विशालता, श्रेष्ठत्व, प्रमुखत्व।

उळु (पु.) : तारा, नक्षत्र।

उळुङ्क (पु.) : करछुल।

उळुम्प (पु.) : डोंगी, छोटी नाव।

उळुराज (पु.) : चांद।

ऊ

ऊका (स्त्री.) : जूँ, चीलर।

ऊन (वि.) : कम, न्यून।

ऊनत्त (नपुं.) / **ऊनता** (स्त्री.) : कमी, न्यूनता।

ऊमि / **ऊमी** (स्त्री.) : लहर।

उरट्ठि (नपुं.) : जांघ की हड्डी ।

ऊरु (पु.) : जाँघ, जंघा।

ऊरुपब्ब (नपुं.) : जांघ का जोड़।

ऊस (पु.) : खारी मिट्टी।

ऊसर (वि.) : क्षार-युक्त, ऊसर।

ऊहच्च (पू.क्रि.) : खींच कर, हटा कर।

ऊहदति (क्रि.) : मैला करता है, गंदा करता है।

ऊहन (नपुं.) : विचार, चिंतन, संग्रह।

ऊहनति (क्रि.) : खींचता है, हटाता है।

ऊहसति (क्रि.) : हंसता है, मुंह चिढाता है।

ऊहा (स्त्री.) : चिंतन-मनन।

ए

एक (वि.) : समान, कोई एक; संख्यावाचक शब्द, बहुवचन में 'एक' का अर्थ हो जाता है कुछ।

एकंस (वि.) : निश्चित, एक कंधे के विषय में।

एकक (वि.) : अकेला।

एकक्खरकोस : सोलहवीं शताब्दी में भदन्त सद्धम्मकित्ति द्वारा रचित पालि शब्द-सूची।

एकक्खी (वि.) : एक आंख वाला।

एकग्ग (वि.) : एकाग्र, शांत।

एकग्गता (स्त्री.) : एकाग्रता, मन की शांति।

एकच्च / **एकच्चिय** (वि.) : कुछ, चंद, कोई एक।

एकचर / **एकचारी** (वि.) : अकेला रहने वाला।

एकज्झं (क्रि.वि.) : एक साथ, एक ही स्थान पर।

एकतो (अ.) : एक ओर।

एकत्त (नपुं.) : १. एकता, २. अकेलापन, ३. अनुकूलता।

एकदा (क्रि.वि.) : एक बार।

एकदेस (पु.) : एक विभाग, एक हिस्सा।

एकन्त (वि.) : निश्चय से, पूर्ण निश्चय से, एकतरफा।

एकन्तरिक (वि.) : एक का बीच देकर, एक के बाद एक छोड़कर।

एकपट्ट / **एकपटलिक** (वि.) : एक तह वाला कपड़ा।

एकपण्ण-जातक : बोधिसत्त्व ने राजकुमार को नीम के पत्ते खिलाकर अपना आचरण सुधारने की शिक्षा दी, इस के संबंधी जातक-कथा (१४९)।

एकपद-जातक : बोधिसत्त्व ने एक शब्द द्वारा अपने पुत्र को उपदेश दिया। वह शब्द था दक्खेय्य - अर्थात् दक्षता संबंधी जातक-कथा (२३८)।

एकपदिकमग्ग (पु.) : पगडंडी, पैदल का रास्ता।

एकमन्तं (क्रि.वि.) : एक ओर।

एकमेक (वि.) : एक-एक करके, हर एक।

एकराजजातक : वाराणसी के राजा एकराज की जातक-कथा (३०३)।

एकभत्तिक (वि.) : दिन में एक ही बार खाने वाला।

एकविध (वि.) : एक ही तरह का, समान।

एकसो (क्रि.वि.) : अकेले, एक-एक करके।

एकाकी (वि) : अकेला (आदमी)।

एकाकिनी / एकिका (स्त्री.) : अकेली (स्त्री)।

एकागारिक : (पु.) चोर, (वि.) एक ही घर से भोजन मांगने वाला।

एकादस (संख्या) : ग्यारह।

एकायन (वि.) : एक ही मार्ग, एक ही लक्ष्य को ले जाने वाला मार्ग, सीधा मार्ग।

एकालोपिको : एक ही बार भोजन करने वाला, एक ही कौर खाने वाला।

एकीभाव (पु.) : एकता, एकांत।

एकीभूत (वि.) : एकत्रित, संबंधित, इकट्ठा।

एकून (वि.) : एक कम।

एकूनचत्तालीसति (स्त्री.) : उनतालीस।

एकूनतिंसति (स्त्री.) : उनत्तीस।

एकूनपञ्ञासा (स्त्री.) : उनंचास।

एकूनवीसति (स्त्री.) : उन्नीस।

एकूनसट्ठि (स्त्री.) : उनसठ।

एकूनसत्तति (स्त्री.) : उनहत्तर।

एकूननवुति (स्त्री.) : नवासी।

एकूनसत (नपुं.) : निन्नानवे।

एकूनासीति (स्त्री.) : उनास्सी।

एकोदिभाव (पु.) : एकाग्रता।

एजा (स्त्री.) : तृष्णा, चलन (हिलना)।

एट्ठि (स्त्री.) : तलाश, इच्छा, चाह।

एणिमिग / एणेय्य (पु.) : मृग-विशेष।

एणेय्यक (नपुं.) : एक प्रकार का कष्ट-दान।

एत (सर्व.) : वह यह।

एतरहि (क्रि.वि.) : अब, इस समय।

एतादिस (वि.) : ऐसा, इस तरह का।

एति (क्रि.) : आता है।

एत्तक (वि.) : इतना।

एत्तावता (क्रि.वि.) : यहां तक, इतनी दूर तक, इतने से।

एत्तो (अ.) : यहां से, यहां।

एत्थ (क्रि.वि.) : यहां।

एदिस / एदिसक (वि.) : ऐसा, इस प्रकार का।

एध (पु.) : ईंधन, जलावन।

एधति (क्रि.) : प्राप्त करता है, सफल होता है।

एन (सर्व.) : एत सर्वनाम का ही रूप।

एरक (नपुं.) : घास विशेष।

एरकदुस्स (नपु.) : एरक घास की बनी चादर।

एरण्ड (पु.) : एरंड, एक विशेष प्रकार का पौधा।

एरावण (पु.) : इंद्र के हाथी का नाम।

एरावत (पु.) : नारंगी, संतरा।

एरित (वि.) : कंपित, हिलाया हुआ।

एरेति (क्रि.) : हिलता है, कांपता है।

एला (स्त्री.) : थूक।

एव (अ.) : निश्चयदर्शक अव्यय – (ऐसे) ही।

एवं (क्रि.वि.) : ऐसे, इस प्रकार; (उत्तर देते समय) - हां।

एवंरूप / **एवरूप** (वि.) : ऐसा, ऐसे रूप (शरीर) वाला।

एवमेव (अ.) : इसी प्रकार।

एवमेवं (अ.) : बिल्कुल, ऐसे ही।

एसति (क्रि.) : खोजता है, चाहता है।

एसना (स्त्री.) : खोज, चाह।

एसन्त / **एसमान** (कृ.) : खोजता हुआ।

एसिकत्थम्भ (पु.) / **एसिका** (स्त्री.) : नगर-द्वार के सामने गड़ा हुआ खंभा।

एसित (कृ., वि.) : खोजा गया।

एसितब्ब (कृ., वि.) : खोजने योग्य।

एसी (पु.) : खोजने वाला।

एसिनी (स्त्री.) : खोजने वाली।

एहि (क्रि. **एति** का रूप) : आओ।

एहिपस्सिक (वि.) : जो सभी को कहे कि आओ और परीक्षा करके देखो।

एहिभिक्खु : प्राचीनतम समय में किसी को भिक्षु बनाने की पद्धति 'भिक्षु, आओ।'

एळक (पु.) : भेड़, मेंढा।

एळगल (वि.) : जिसके मुँह से लार टपकती हो।

एळमूग (पु.) : बहरा तथा गूँगा, मूर्ख व्यक्ति।

एळा (स्त्री.) : थूक।

एळालुक (नपुं.) : खीरा, ककड़ी।

ओ

ओक (नपुं.) : १. जल, २. निवास-स्थान।

ओकड्ढति (क्रि.) : खींच लाता है, हटा देता है।

ओकन्तति (क्रि.) : काटता है।

ओकप्पति (क्रि.) : व्यवस्था करता है, तैयारी करता है, विश्वास करता है।

ओकप्पना (स्त्री.) : मन को (किसी चीज पर) लगाना, विश्वास करना।

ओकप्पनिय (वि.) : विश्वसनीय।

ओकप्पेति (क्रि.) : विश्वास करता है।

ओकम्पेति (क्रि.) : हिलाता है।

ओकार (पु.) : नीचपन, विकृति।

ओकास (पु.) : स्थान, अवसर, अनुज्ञा।

ओकासकम्म (नपुं.) : अनुज्ञा, इजाजत।

ओकिण्ण (वि.) : बिखरा हुआ, फैला हुआ।

ओकिरण (नपुं.) : बिखेरना, फैलाना।

ओकिरति (क्रि.) : बिखेरता है।

ओक्कन्त (वि.) : प्रवेश किया हुआ, आगत, घटित।

ओक्कन्ति (स्त्री.) : प्रवेश करना, प्रकट होना, घटित होना।

ओक्कन्तिक (वि.) : बार-बार घटित होने वाला, पुनरावर्ती।

ओक्कमति (क्रि.) : प्रवेश करता है, आता है।

ओक्कमन (नपुं.) : प्रवेश, आगमन।

ओक्कमन्त (वि.) : प्रवेश करता हुआ।

ओक्कम्म (पू.क्रि.) : हटकर।

ओक्काक : शाक्यों तथा कोलियों का पूर्वज ओकाक नरेश ।

ओक्खित्त (वि.) : नीचे गिराये हुए।

ओक्खित्तचक्खु (वि.) नीची नजर वाला।

ओक्खिपति (क्रि.) : फेंकता है, गिराता है।

ओगच्छति (क्रि.) : नीचे जाता है, अस्त होता है।

ओगण (वि.) : गण से पृथक् हुआ, अकेला।

ओगत (वि.) : गया हुआ, डूबा हुआ।

ओगध (वि.) : सम्मिलित, डूबा हुआ।

ओगमन (नपुं.) : अस्त होना।

ओगय्ह (पू.क्रि.) : मिल जाने पर, डूब जाने पर, डुबकी लगाकर।

ओगाह (पु.) / **ओगाहन** (नपुं.) : डुबकी लगाना।

ओगाहति (क्रि.) : डुबकी लगाता है।

ओगिलति (क्रि.) : निगलता है।

ओगुण्ठित (वि.) : पर्दा किया हुआ, ढका हुआ।

ओगुण्ठेति (क्रि.) : पर्दा करता है, ढकता है।

ओगुम्फेति (क्रि.) : (माला) पिरोता है, (माला से) सजाता है।

ओग्गत (वि.) : अवगत, अस्त हुआ।

ओघ (पु.) : बाढ।

ओघतिण्ण (वि.) : जिसने बाढ़ को पार किया हो, बाढ़ से सुरक्षित।

ओचरक (पु.) : गुप्तचर, सूचना देने वाला।

ओचरति (क्रि.) : पीछे लगा रहता है, खोजता है, छानबीन करता है।

ओचिण्ण (वि.) : १. खोजा गया, २. संगृहीत।

ओचिनन (नपुं.) : संग्रह करना, एकत्र करना, चुनना।

ओचिनाति (क्रि.) : संग्रह करता है, एकत्र करता है।

ओच्छिन्दति (क्रि.) : काट डालता है।

ओज (पु.) / **ओजा** (स्त्री.): शरीर-शक्ति, पोषक सार।

ओजवन्त (वि.) : शक्तिवर्धक, पौष्टिक, पोषक।

ओजवन्तता (स्त्री.) : शक्तिवर्धक भाव।

ओजहाति (क्रि.) : छोड़ देता हे, त्याग देता है।

ओजिनाति (क्रि.) : जीतता है, विजयी होता है।

ओट्ठ (पु.) : १. ऊँट, २. होंठ।

ओट्ठुभति (क्रि.) : थूकता है ।

ओड्डित (वि.) : (जाल), फेंका गया, बिछाया गया।

ओड्डेति (क्रि.) : (जाल), बिछाता है।

ओणमति (क्रि.) : झुकता है।

ओणमन (नपुं.) : झुकना।

ओणमित (वि.) : झुका हुआ।

ओतरण (नपुं.) : उतरना, नीचे आना।

ओतरति (क्रि.) : नीचे उतरता है।

ओतरन्त (वि.) : नीचे उतरता हुआ।

ओतापेति (क्रि.) : धूप में तपता है ।

ओतार (पु.) : उतराव, पहुँच, अवसर, दोष, छिद्र, छेद।

ओतारगवेसी (वि.) : अवसर खोजने वाला।

ओतारेति (क्रि.) : उतारता है ।

ओतिण्ण (वि.) : उतरा हुआ, अवतरित, घिरा हुआ।

ओत्तप्प (नपुं.) : पाप-भीरुता।

ओत्तप्पति (क्रि.) : पाप करने से भयभीत होता है।

ओत्तप्पी (वि.) : पाप-भीरू।

ओत्थट (वि.) : फैला हुआ, डुबा हुआ।

ओत्थरक (नपुं.) : कपड़-छान, छानने का कपडा, छलनी।

ओत्थरति (क्रि.) : फैलाता है, नीचे जाता है।

ओदकन्तिक : १. (नपुं.) जल-समीप स्थान, २. (वि.) जिसका अंत जल में हो।

ओदग्य (नपुं.) : उदग्र भाव, तेजस्वी भाव।

ओदन (नपुं., पु.) : पकाया हुआ चावल, भात।

ओदनिक (पु.) : रसोइया।

ओदरिक (वि.) : पेटू, पेट भरने के लिए जीने वाला।

ओदहति (क्रि.) : रखता है, ध्यान देता है, निगरानी रखता है।

ओदहन (नपुं.) : नीचे रखना, ध्यान देना, कार्यान्वित करना।

ओदात (वि.) : सफेद, स्वच्छ।

ओदातकसिण (नपुं.) : श्वेत रंग का चित्त को एकाग्र करने का साधन।

ओदातवसन (वि.) : सफेद वस्त्रधारी।

ओदिस्स (क्रि.वि.) : उद्देश्य से।

ओदिस्सक (वि.) : विशेष रूप से।

ओदुम्बर (वि.) : गूलर-वृक्ष ।

ओधि (पु.) : अवधि, सीमा।

ओधिसो (क्रि.वि.) : सीमित मात्रा में।

ओधुनाति (क्रि.) : धुनता है।

ओनत (वि.) : झुका हुआ।

ओनद्ध (वि.) : बंधा हुआ, ढका हुआ, लिपटा हुआ।

ओनन्धति (क्रि.), बांधता है, ढकता है, लपेटता है।

ओनमक (वि.) : झुकता हुआ।

ओनमति (क्रि.) : झुकता है।

ओनमन (नपु.) : झुकना, नमन करना।

ओनय्हति (क्रि.) : ढकता है, बांधता है।

ओनहन (नपुं.) : ढकना।

ओनीत (वि.) : हटाया गया, ले जाया गया।

ओनेति (क्रि.) : हटाता है, ले जाता है।

ओनोजन (नपुं.) : बँटवारा, भेंट करना।

ओनोजेति (क्रि.) : बाँटता है, भेंट / समर्पित करता है।

ओनोजित (कृ.), बाँटा हुआ, भेंट किया हुआ, समर्पित।

ओपक्कमिक (वि.) : किसी उपक्रम अथवा उपाय-विशेष से उत्पन्न (हुआ कष्ट)।

ओपक्खी (वि.) : जिसके पर कटे हो, बलहीन।

ओपतति (क्रि.) : गिरता है, उड़ कर नीचे आता है।

ओपतित (वि.), गिरा हुआ ।

ओपत्त (वि.) : ऐसा पेड़ जिसके पत्ते गिर गये हो।

ओपधिक (वि.) : पुनर्जन्म के आधार से संबंधित।

ओपनयिक (वि.) : पास ले जाने वाला।

ओपपातिक (वि.) : प्रत्यक्ष कारण के बिना उत्पन्न, सहज रूप से उत्पन्न हुआ।

ओपम्म (नपुं.) : उपमा, तुलना।

ओपरज्ज (नपुं.) : उपराजपन।

ओपवय्ह (वि.) : चढने के योग्य ।

ओपसमिक (वि.) : शांति-कारक।

ओपात (पु.) : गड्ढा, पतन।

ओपातेति (क्रि.), गिराता है ।

ओपान (नपुं.) : कुआँ।

ओपारम्भ (वि.) : सहायक।

ओपायिक (वि.) : योग्य।

ओपिलापित (वि.) : तैराया गया ।

ओपिलापेति (क्रि.) : तैराता है।

ओपुणाति / ओपुनाति (क्रि.) : साफ करता है, पछोरता है।

ओपुप्फ (नपुं.) : कली।

ओबन्धति (क्रि.) : बाँधता है।

ओभग्ग (वि.) : टूटा हुआ।

ओभञ्जति (क्रि.) : तोड़ डालता है, मोड़ता है।

ओभत (वि.) : ले जाया गया।

ओभरति (क्रि.) : ले जाता है।

ओभास (पु.) : प्रकाश, रोशनी, उजाला।

ओभासति (क्रि.) : चमकता है, प्रकाशित होता है।

ओभासन (नपुं.) : चमक।

ओभासित (वि.) : प्रकाशित ।

ओभासेति (क्रि.) : चमकाता है, प्रकाशित करता है।

ओभोग (पु.) : झुकना, लपेटना, (चीवर का) तह करना।

ओम / ओमक (वि.) : निम्न कोटि का।

ओमट्ठ (वि.) : छुआ गया, मैला किया गया।

ओमद्दति (क्रि.) : मलता है, दबाता है।

ओमसति (क्रि.) : स्पर्श करता है ।

ओमसना (स्त्री.) : स्पर्श करना, अवमान।

ओमसवाद (पु.) : अपमान, निंदा।

ओमान (नपुं.) : अवमान, अगौरव।

ओमिस्सक (वि.) : मिश्रित, विविध।

ओमुक्क (वि.) : फेंका गया, वस्त्र उतारा हुआ।

ओमुञ्चति (क्रि.) : खोलता है (वस्त्र), उतारता है।

ओमुत्त (वि.) : मुक्त, स्वतंत्र।

ओमुत्तेति (क्रि.) : मूत्र त्यागता है, पेशाब करता है।

ओयाचति (क्रि.) : बुरा चाहता है, शाप देता है।

ओर (नपुं.) : इस ओर का तट, यह संसार; (वि.) निम्न स्तर का।

ओरं (क्रि.वि.) : अंदर, नीचे, इस तरफ, इस ओर।

ओरपार (नपुं.) : नीचे-ऊपर, इस और उस छोर, इहलोक तथा परलोक।

ओरमत्तक (वि.) : तुच्छ, मामूली ।

ओरब्भिक (पु.) : भेड़ों को मारने वाला कसाई।

ओरमति (क्रि.) : अपने स्थान पर रुक जाता है, आगे नहीं बढ़ता है।

ओरमापेति (क्रि.) : (किसी अन्य को) रोक देता है।

ओरम्भागिय (वि.) : निचले लोगों से संबंधित, काम-लोकों के विषय में।

ओरस (वि.) : स्वकीय, अपना, वैध।

ओरिम (वि.) : इस ओर का।

ओरिमतीर (नपुं.) : नजदीक का तट।

ओरुद्ध (वि.) : जिसके मार्ग में बाधा डाली गई हो, अवरुद्ध।

ओरुन्धति (क्रि.) : प्राप्त करता है, बाधा डालता है, कैद करता है।

ओरूळ्ह (वि.) : उतरा हुआ।

ओरोध (पु.) : रनिवास, बाधा।

ओरोपन (नपुं.) : उतारना, हटाना।

ओरोपेति (क्रि.), उतारता है, हटाता है।

ओरोहण / **ओरोहन** (नपुं.) : उतरना।

ओरोहति (क्रि.) : नीचे उतरता है।

ओलग्गेति (क्रि.) : टंगाता है, लटकाता है, चिपकाता है।

ओलङ्घना (स्त्री.) : नीचे झुकना।

ओलम्बति (क्रि.) : लटकाता है, (किसी चीज का) सहारा लेता है।

ओलम्बन (नपुं.) : लटकना।

ओलिखति (क्रि.) : लकीर खींचता है, खरोचता है।

ओलिगल्ल / **ओळिगल्ल** (पु.) : चहबच्चा, नावदान।

ओलीन (वि.) : प्रमादी, ढीला-ढाला।

ओलीयति (क्रि.) : प्रमाद करता है, आलस करता है।

ओलीयना (स्त्री.) : आलस्य।

ओलीयमान (वि.) : पीछे छूट गया।

ओलुग्ग (वि.) : टुकडे टुकडे हो गया, सड़ता हुआ।

ओलुज्जति (क्रि.) : टुकड़े टुकड़े हो जाता है, बर्बाद होता है।

ओलुम्पेति (क्रि.) : छिलका उतारता है, पकड़ता है, चुनता है, चुगता है।

ओलोकन (नपुं.) : देखना, अवलोकन।

ओलोकनक (नपुं.) : खिड़की, झरोखा।

ओलोकेति (क्रि.) : देखता है।

ओवज्जमान (वि.) : उपदिष्ट, अनुशासित।

ओवट्टिका (स्त्री.) : कमरबंद।

ओवदति (क्रि.) : उपदेश देता है।

ओवदन (नपुं.) : उपदेश देना।

ओवमति (क्रि.) : उल्टी करता है।

ओवरक (नपुं.) : अंदर का कमरा।

ओवस्सति (क्रि.) : बरसता है।

ओवस्सापेति (क्रि.) : बारिश में भिगवाता है।

ओवहति (क्रि.) : नीचे ले जाता है।

ओवाद (पु.) : उपदेश।

ओवादक (पु.) : उपदेश देने वाला।

ओवादक्खम (वि.) : शिक्षा-प्रेमी, उपदेश मानने वाला।

ओविज्झति (क्रि.) : बींधता है।

ओसक्कति (क्रि.) : पीछे हटता है।

ओसज्जति (क्रि.) : छोड़ता है, त्यागता है।

ओसध (नपुं.) : औषध, दवाई।

औसधी (स्त्री.) : १. दवाई का पौधा, २. चमकदार तारा-विशेष ।

ओसन्न (वि.) : त्यागा हुआ, थका हुआ, कमजोर।

ओसप्पति (क्रि.) : पीछे हटता है।

ओसरण (नपुं.) : वापसी, प्रवेश, मिलना।

ओसरति (क्रि.) : वापस आता है, फिरसे प्रवेश करता है, एकत्र करता है।

ओसान (नपुं.) : रुकना, समाप्ति।

ओसापेति (क्रि.) : समाप्त करता है।

ओसारक (नपुं.) : आसरा, याद करने वाला।

ओसारणा (स्त्री.) : पुनर्नियुक्ति, व्याख्या करना।

ओसारेति (क्रि.) : पुनर्नियुक्त करता है, व्याख्या करता है।

ओसिञ्चति (क्रि.) : सींचता है।

ओसीदन (नपुं.) : डूबना।

ओसीदापन (नपुं.) : डुबाना।

ओसीदापेति (क्रि.) : डुबाता है।

ओस्सग्ग (नपुं.), शिथलीकरण, असावधानी, बेपरवाही।

ओस्सजति (क्रि.) : ढीला छोड़ता है, मुक्त करता है, त्यागता है।

ओस्सजन (नपुं.) : मुक्ति, परित्याग।

ओस्सट्ठ (वि.) : छोड़ दिया गया, त्यक्त।

ओहरति (क्रि.) : ले जाता है।

ओहाय (पू.क्रि.) : छोड़कर।

ओहारण (नपुं.) : १. हटाना, २. हजामत करना।

ओहित (वि.) : छिपा हुआ, नीचे रखा गया।

ओहीन (वि.) : पीछे छूटा हुआ।

ओहीयति (क्रि.), पीछे रह जाता है।

ओहीयन (नपुं.) : पीछे रह जाना।

ओळारिक (वि.) : स्थूल, भद्दा।

क

क : पालि वर्णमाला का प्रथम व्यंजन; प्रश्नवाचक सर्वनाम 'किं' का एक रूप - कौन, क्या, कौनसा।

कंस (नपुं.) : काँसा धातु।

ककच (पु.) : आरा।

ककण्टक (पु.) : गिरगिट।

ककण्टक-जातक : महाउम्मग जातक में आगत ककण्टक-पञ्ह कथा।

ककु (पु.) : गांठ, शिखर।

ककुत्था : कुसीनारा के समीप की एक नदी, जिसमें परिनिर्वाण से पूर्व भगवान बुद्ध ने स्नान किया था और जिसका जल ग्रहण किया था ।

ककुध (पु.) : सांड की पीठ का ककुद, अर्जुन-वृक्ष।

ककुधभण्ड (नपुं.) : राजकीय चिन्ह।

कक्क (नपुं.) : लेप-विशेष, तलछट।

कक्कट / **कक्कटक** (पु.) : केकड़ा।

कक्कट-जातक : कुलीरदह में रहने वाले हाथियों को खानेवाले केकड़े की जातक कथा (२६७)।

कक्कर (पु.) : तीतर।

कक्कर-जातक : बुद्धिमान पक्षी की जातक कथा (२०९)।

कक्करता (स्त्री.) : कर्कश-भाव।

कक्कस (वि.) : कर्कश, बेसूरा।

कक्कारी (स्त्री.) : ककड़ी।

कक्कारू-जातक : दुर्गुणी पुरोहित द्वारा देवताओं द्वारा दी गई माला के पहनने की माँग संबंधी जातक कथा (३२६)।

कक्कारेति (क्रि.) : खखारता है।

कक्खळ (वि.) : खुरदुरा।

कक्खळता (स्त्री.) : कठोरपन।

कङ्क (पु.) : सारस, बगुला।

कङ्कट (पु.) : कवच।

कङ्कण (नपुं.) : कंगन।

कङ्खावितरणी : विनय-पिटक के पातिमोक्ख पर बुद्धघोसाचार्य द्वारा रचित अट्ठकथा।

कङ्खति (क्रि.) : संदेह करता है।

कङ्खना / कङ्खा (स्त्री.) : संदेह।

कङ्खनीय (वि.) : संदिग्ध, अस्पष्ट।

कङ्खी (वि.) : संदेह करने वाला।

कङ्गु (स्त्री.) : बाजरा, कदन्न।

कच (नपुं.) : बाल।

कचवर (पु.) : कूड़ा-करकट।

कच्चानि-जातक : धम्म के श्राद्ध की जातक कथा (४१७)।

कच्चायन-व्याकरण : कच्यायन द्वारा रचित पालि व्याकरण।

कच्चि (अ.) : संदेहार्थक-पद।

कच्छ (पु., नपुं.) : १. दलदल, २. बगल।

कच्छक (पु.) : अंजीर का पेड़।

कच्छन्तर (नपुं.) : १. राजा का अपना कमरा, २. बगल के नीचे।

कच्छप (पु.) : कछुआ।

कच्छप-जातक : एक कछुवे की कथा, जिसने सूखा पड़ने पर भी अपना तालाब नहीं छोड़ा था (१७८)।

कच्छप-जातक : एक कछुवे की कथा, जिसकी दो हंसों से दोस्ती थी (२१५)।

कच्छप-जातक : एक बंदर की कछुवे के साथ की गई शरारत की कथा (२७३)।

कच्छपुट : बगली बाँधकर सौदा बेचने वाला व्यक्ति।

कच्छबन्धन (नपुं.) : कमरबंद।

कच्छा (स्त्री.) : काछ।

कच्छु (स्त्री.) : खुजलाहट, चर्मरोग विशेष।

कजङ्गल : मध्यमंडल की पूर्वी सीमा।

कज्जल (नपुं.) : काजल।

कञ्चन (नपुं.) : स्वर्ण, सोना।

कञ्चनवण्ण (वि.) : सोने के रंग वाला।

कञ्चुक (पु.) : कंचुक, जाकेट, कवच, केंचुल।

कञ्जिक / कञ्जिय (नपुं.) : कांजी।

कञ्ञा (स्त्री.) : कन्या, बेटी, लड़की।

कट : (वि) कृत, किया गया; (पु.) चटाई, गाल।

कटक (नपुं.) : बाजूबंद, चक्का, गोलाकार वस्तु |

कटकटायति (क्रि.) : (दांतो से) कट-कट करता है।

कटच्छु (पु.) : कड़छी, चम्मच।

कटसार (पु.) : चटाई।

कटसी (स्त्री.) : श्मशान-भूमि।

कटाह (पु.) : कड़ाह, कड़ाही।

कटाहकजातक : दासी-पुत्र कटाहक की कथा (१२५)।

कटि (स्त्री.) : कमर।

कटुक (वि.) : तेज, तिक्त, कड़वा।

कटुकभण्ड (नपुं.) : मसाले।

कटुकविपाक (वि.) : दुष्परिणाम।

कटुवियकत (वि.) : कड़वा, मैला / अशुद्ध किया हुआ।

कट्ठ : (नपुं.) काष्ठ, लकड़ी; (वि.) कसा हुआ (खेत)।

कट्ठक (पु.) : बाँस का पेड़।

कट्ठत्थर (नपुं.) : लकड़ी के तख्तों का आस्तरण।

कट्ठमय (वि.) : लकड़ी का बना।

कट्ठहारि-जातक : दुश्यन्त के शकुन्तला को अंगूठी देने की तरह राजा ने लकड़ी चुनने वाली स्त्री को अपनी अंगूठी दी (७)।

कट्टिस्स (नपुं.) : रेशमी चादर।

कठल (नपुं.) : ठीकरे।

कठिन (वि.) : मुश्किल, (नपुं.) प्रतिवर्ष भिक्षुओं को दिया जानेवाला चीवर-विशेष।

कठिनत्थार (पु.) : कठिन चीवर को भेंट करना या दानरूप में देना।

कड्ढति (क्रि.) : खींचता है।

कड्ढन (नपुं.) : खींचना, चूसना।

कण (पु.) : (चावल के टूटे) कण।

कणय (पु.) : बर्छी।

कणवीर (पु.) : करवीर, एक जहरी पौधा।

कणवेरजातक : सामा नामक राज्यगणिका द्वारा मृत्युदण्ड को प्राप्त कैदी को मुक्त कराने का प्रयत्न किया गया (३१८)।

कणाजक (नपुं.) : टूटे या खण्डा चावलों की खिचड़ी।

कणिका (स्त्री.) : कर्णिका।

कणिकार (पु.) : फलदार वृक्ष-विशेष।

कणेरु (स्त्री.) : हथिनी।

कण्टक (नपुं.) : काँटा।

कण्टकापस्सय (पु.) : काँटों का बिस्तरा या शयनाशन।

कण्टकाधान (नपुं.) : काँटों की झाड़ी।

कण्टकीफल (पु.) : कटहल।

कण्ठ (पु.) : गला।

कण्ठज (वि.) : गले में उच्चारित।

कण्ड (पु.) : परिच्छेद; तीर।

कण्डरा (स्त्री.) : पुट्ठा, पट्टा, तांत।

कण्डरि-जातक : रानी किन्नरा के एक कोढी पर आसक्त हो जाने की कथा (३४१)।

कण्डिन-जातक : एक मृग के एक मृगी पर आसक्त होने की कथा (१३)।

कण्डु / **कण्डुति** (स्त्री.) : खाज, खुजली।

कण्डूवति (क्रि.) : खुजलाता है।

कण्डोलिका (स्त्री.) : टोकरी।

कण्ण (नपुं.) : कान।

कण्णकटुक (वि.) : सुनने में अप्रिय।

कण्णगूथ (नपुं.) : कान का मैल।

कण्णछिद्द (नपुं.) : कान का छेद।

कण्णछिन्न (वि.) : कान कटा।

कण्णजप्पक (वि.) : कानाफूसी करने वाला।

कण्णजलूका (स्त्री.) : कान-खजूरा।

कण्णभुसा (स्त्री.) : कर्णाभूषण।

कण्णमूल (नपुं.) : कान की जड़।

कण्णविज्झन (नपुं.) : कान का बींधना।

कण्णवेठन (नपुं.) : कान का आभरणविशेष।

कण्णसक्खलिका (स्त्री.) : कान का बाह्य भाग।

कण्णसुख (वि.) : सुनने में सुखद।

कण्णसूल (नपुं.) : कान का दर्द।

कण्णधार (पु.) : नौका की पतवार पकड़ने वाला।

कण्णिका (स्त्री.) : शिखर, कान का आभरण।

कण्ह : (वि.) कृष्ण, काला; (पु.) काला रंग।

कण्ह-जातक : काले तपस्वी की कथा (४४०)।

कण्हतुण्ड (पु.) : बंदर।

कण्हदीपायन-जातक : कोसाम्बी के दीपायन तथा मण्डव्य नामक दो ब्राह्मणों की कथा (४४४)।

कण्हपक्ख (पु.) : महीने का कृष्ण-पक्ष।

कण्हवत्तनी (पु.), आग।

कण्हविपाक (वि.) : दुष्परिणाम।

कण्हसप्प (पु.) : कृष्णसर्प, काला साँप।

कत (वि.) : कृत, किया हुआ।

कतकल्याण (वि.) : शुभ-कर्मी।

कतकिच्च (वि.) : कृत-कृत्य, जो करणीय कर चुका।

कतञ्जली (वि.) : जिसने दोनों हाथ जोड़ रखे हो।

कतञ्ञुता (स्त्री.) : कृतज्ञता।

कतञ्ञू (वि.) : कृतज्ञ ।

कतपटिसन्थार (वि.) : जिसका स्वागत हुआ हो।

कतपरिचय (वि.) : अभ्यस्त, परिचित।

कतपातरास (वि.) : जिसने सुबह का भोजन किया हो।

कतपुञ्ञ (वि.) : जिसने पुण्य किये हो।

कतभत्तकिच्च (वि.) : जिसने भोजन पूरा कर लिया।

कतम (वि.) : कौन-सा।

कतमत्ते (अधिकरण) : ज्यों ही कोई कार्य संपन्न हुआ।

कतर (वि.) : (दोनों में से) कौन-सा।

कतवेदी (वि.) : कृतज्ञ।

कतसङ्केत (वि.) : कृत-संकेत।

कतसङ्गह (वि.) : जिसे आतिथ्य प्राप्त हुआ, आतिथ्य प्राप्त।

कताधिकार (वि.) : जिसने कोई संकल्प-विशेष किया हो।

कतापराध (वि.) : दोषी।

कताभिसेक (वि.) : जिसका अभिषेक हुआ हो।

कतावकास / कतोकास (वि.) : जिसे अनुज्ञा मिली हो, आज्ञा-प्राप्त, अवसर-प्राप्त।

कति (सर्व.) : कितने।

कतिका (स्त्री.) : वार्तालाप।

कतिकावत्त (नपुं.) : निश्चय, करणीय।

कतिपय (वि.) : कुछ, कई।

कतिपाह (नपुं.) : कुछ दिन।

कतिपाहं (क्रि.वि.) : कुछ दिनों के लिए।

कतिवस्स (वि.) : कितने वर्ष का।

कतिविध (वि.) : कितने प्रकार का।

कतुपासन (वि.), धनुर्विद्या में चतुर।

कतूपकार (वि.) : उपकृत।

कते (क्रि.वि.) : के लिए, कारण से।

कत्तब्ब (नपुं., वि.) : कर्तव्य।

कत्तर (वि.) : बहुत छोटा।

कत्तरदण्ड (पु.) / **कत्तरयट्ठि** (स्त्री.) : सैर करने की लाठी।

कत्तरसुप्प (पु.) : छोटा छाज।

कत्तरिका (स्त्री.) : कैंची।

कत्तिकमास (पु.) : कार्तिक मास।

कत्तिका (स्त्री.) : कृतिका नक्षत्र।

कत्तु (पु.) : कर्ता, लेखक, (व्याकरण में) वाक्य का कर्ता।

कत्तुकाम (वि.) : करने की इच्छा वाला।

कत्तुं (अ.) : करने के लिए।

कत्थ (क्रि.वि.) : कहाँ।

कत्थचि (अ.) : कहीं न कहीं।

कत्थति (क्रि.) : शेखी मारता है।

कत्थना (स्त्री.) : शेखी।

कत्थी (वि.) : शेखी मारनेवाला ।

कथं (क्रि.वि.) : कैसे।

कथंकथा (स्त्री.) : सन्देह, शंका।

कथंकथी (वि.) : सन्देही, शंकालु।

कथंभूत (वि.) : कैसा, किस प्रकार का।

कथंविध (वि.) : किस प्रकार का।

कथंसील (वि.) : कैसे शील का।

कथन (नपुं.) : बातचीत, कहना।

कथा (स्त्री.) : बातचीत, कहानी, उपदेश।

कथापाभत (नपुं.) : कथा का विषय।

कथापेति (क्रि.) : कहलवाता है, सन्देश भेजता है।

कथामग्ग (पु.) : कथा का वर्णन।

कथावत्थु (नपुं.) : विवाद का विषय; अभिधम्म के सात प्रकरणों में से पांचवा ग्रंथ।

कथासल्लाप (पु.) : मैत्री-पूर्ण बातचीत।

कथित (वि.) : जो कहा गया।

कथुद्दिका (स्त्री.) : कस्तूरी।

कथेति (क्रि.) : कहता है।

कदन्न (नपुं.) : खराब अन्न।

कदम्ब (पु.) : वृक्ष-विशेष।

कदर (वि.) : दिन, अभागा, खराब हालत वाला।

कदरिय : (नपुं) कंजूसी; (वि.) कंजूस।

कदलि (स्त्री.) : केले का पेड़।

कदलिफल (नपुं.) : केले का फल।

कदलिमिग (पु.) : मृग-विशेष, जिसकी चमड़ी मूल्यवान मानी जाती है।

कदा (क्रि.वि.) : कब।

कदाचिकरहचि (अ.) : कभी-कभी।

कद्दम (पु.) : कर्दम, दलदल।

कद्दमबहुल (वि.) : बहुत कीचड़ वाला।

कद्दमोदक (नपुं.) : मटमैला पानी।

कनक (नपुं.) : सोना।

कनकच्छवी (वि.) : सुनहरी त्वचा वाला।

कनकप्पभा (स्त्री.) : स्वर्ण-प्रभा।

कनकविमान (नपुं.) : सुनहरा महल।

कनिट्ठ / **कनिट्ठक** (वि.) : छोटा।

कनिय (वि.) : छोटा, हीन।

कन्त (वि.) : प्रियकर, अनुकूल।

कन्तति (क्रि.) : कातता है, काटता है।

कन्तन (नपुं.) : कताई, काट।

कन्ता (स्त्री.) : औरत, पत्नी।

कन्तार (पु.) : जंगल, बियाबान।

कन्तारनित्थरण (नपुं.) : रेगिस्तान में से गुजरना।

कन्तित (वि.) : काता हुआ, काटा गया।

कन्थक : वह घोड़ा जिस पर बैठकर सिद्धार्थ गौतम ने महाभिनिष्क्रमण किया था।

कन्द (पु.) : कन्द-मूल।

कन्दगलक-जातक, खदिरवनिय नामक कठफोड़े तथा कंदगलक नामक उसके मित्र की कथा (२१०)।

कन्दति (क्रि.) : चिल्लाता है, रोता है, पश्चाताप करता है।

कन्दन (नपुं) : रोना, विलाप करना।

कन्दर (पु.) / **कन्दरा** (स्त्री.) : गुफा।

कन्दुक (पु.) : गेंद।

कपण : (वि.) दरिद्र; (पु.) भिखमंगा, गरीब।

कपल्लक (नपुं.) : चूल्हे का तवा।

कपल्लकपूव (पु.) : तवे का पुआ।

कपाल (नपुं.) : खोपड़ी।

कपि (पु.) : बंदर।

कपिकच्छु (नपुं.) : वृक्ष-विशेष, केवांच।

कपि-जातक : एक बन्दर तपस्वी का रूप बनाये आ पहुँचा (२५०)।

कपि-जातक : एक बन्दर ने पुरोहित के मुँह में विष्ठा गिरा दी (४०४)।

कपिञ्जल (पु.) : तीतर की जाति का एक पक्षी।

कपिट्ठ / **कपित्थ** (पु.) : कैथ का पेड़ और उसका फल।

कपिल : (वि., पु.) भूरा रंग, भूरे रंग का, ऋषि का नाम।

कपिलवत्थु : शाक्यों की राजधानी का नाम, कपिलवस्तु।

कपिला (स्त्री.) : शीशम का पेड़।

कपिसीस (पु.) : अर्गल-स्तम्भ, खूंटी।

कपोत (पु.) : कबूतर।

कपोत-जातक : कौवे ने मांस-लोभ से पिंजरे में रहनेवाले कबूतर से दोस्ती की, इसके संबंधी जातक-कथा (४२) ।

कपोत-जातक : बहुत कुछ उक्त जातक के समान ही जातक कथा (३७५)।

कपोतपालिका (स्त्री.) : चिड़िया खाना।

कपोल (पु.) : गाल।

कप्प : (पु.) **कल्प**; (वि.) योग्य, अनुकूल।

कप्पक (पु.) : नाई, राजमहल का कर्मचारी।

कप्पक्खय (पु.) : कल्प का क्षय।

कप्पट्ठायी (वि.) : कल्प-स्थायी।

कप्परुक्ख (पु.) : कल्पवृक्ष।

कप्पविनास (पु.) : कल्प के अन्त में संसार का विनाश।

कप्पट (पु.) : पुराना कपड़ा, चीथड़ा।

कप्पति (क्रि.) : योग्य होता है।

कप्पन (नपुं.) / **कप्पना** (स्त्री.) : व्यवस्थित करना।

कप्पबिन्दु (नपुं.) : भिक्षु के चीवर पर बना हुआ काला निशान।

कप्पर (पु.) : कोहनी।

कप्पास (नपुं.) : कपास।

कप्पासपटल (नपुं.) : कपास की तह।

कप्पासिक (वि.) : रुई का बना।

कप्पासी (पु.) : कपास का पौधा।

कप्पिक (वि.) : कल्प-संबंधी।

कप्पित (वि.) : तैयार किया हुआ।

कप्पिय (वि.) : योग्य, उचित।

कप्पियकारक (पु.) : जो व्यक्ति भिक्षुओं की उचित आवश्यकताएं पूरी करता है।

कप्पियभण्ड (नपुं.) : वे चीजें जिनका उपयोग भिक्षुओं के लिए विहित है।

कप्पूर (पु.) : कपूर।

कप्पेति (क्रि.) : तैयार करता है, काटता है, बनाता है, (जीवन), व्यतीत करता है।

कबन्ध (पु.) : बिना सिर का शरीर, धड़।

कबर (वि.) : चितकबरा।

कबल (पु., नपुं.) : कौर।

कबळीकार (पु.) : मुँह भरा कौर, भोजन का पिंड।

कबळीकाराहार (पु.) : भोजन, भौतिक आहार।

कब्ब (नपुं.) : काव्य, काव्यात्मक रचना।

कम (पु.) : क्रम।

कमति (व.क्रि.) : जाता है।

कमण्डलु (पु., नपुं.) : कमण्डल।

कमनीय (वि.) : वांछनीय, सुंदर, आकर्षक।

कमल (नपुं.) : कँवल, कमल का फूल।

कमलदल (नपुं.) : कमल की पंखुड़ी।

कमलिनी (स्त्री.) : कमल के फूलों वाला तालाब या झील।

कमुक (पु.) : सुपारी का पेड़।

कम्पक (वि.) : कँपा देने वाला।

कम्पति (क्रि.) : काँपता है।

कम्पिय (वि.) : जो कँपाया जा सके, हिलाया जा सके।

कम्पेति (क्रि.) : कँपाता है।

कम्पेत्वा (पू.क्रि.) : हिलाकर।

कम्बल (नपुं.) : कंबल।

कम्बली (वि.) : कंबल वाला।

कम्बु (पु., नपुं.) : स्वर्ण, शंख।

कम्बुगीव (वि.) : त्रि-रेखा युक्त गर्दन वाला।

कम्बोज (पु.) : देश-विशेष।

कम्म (नपुं.) : कर्म, कार्य।

कम्मकर / कम्मकार (पु.) : कर्मकार, मजदूर।

कम्मकरण (नपुं.) : परिश्रम, मजदूरी।

कम्मकारणा (स्त्री.) : शारीरिक दंड।

कम्मक्खय (पु.) : जन्म के कर्मों का क्षय।

कम्मज (वि.) : कर्म से उत्पन्न।

कम्मजात (नपुं.) : नाना प्रकार के कर्म।

कम्मञ्ञता (स्त्री.) : तत्परता, उत्साह, चुस्ती।

कम्मट्ठान (नपुं.) : कर्मस्थान, साधना का आलंबन, ध्यान का विषय।

कम्मट्ठानिक (पु.) : योगाभ्यास करनेवाला, ध्यानसाधना करने वाला।

कम्मदायाद (वि.) : कर्म का उत्तराधिकारी।

कम्मनानत्त (नपुं.) : कर्मों का नानाविध होना।

कम्मनिब्बत्त (वि.) : कर्मों के द्वारा उत्पन्न।

कम्मनिय / कम्मनीय (वि.) : कर्मनीय, काम करने योग्य।

कम्मपथ (पु.) : कर्म-मार्ग, कर्म करने का तरीका।

कम्मप्पच्चय (वि.) : जिसका मूल (कारण) कर्म हो, कर्माधारित।

कम्मफल (नपुं.) : कर्म-फल, कर्म का परिणाम।

कम्मबन्धु (वि.) : कर्म ही जिसका बन्धु हो।

कम्मबल (नपुं.) : कर्म का बल।

कम्मयोनि (वि.) : कर्म से ही जिसकी उत्पत्ति हुई हो।

कम्मवाद (पु.) : कर्मों और उनके फलों का मानना।

कम्मवादी (वि.) : कर्म-वादी, कर्म के महत्त्व को मानने वाला।

कम्मविपाक (पु.) : कर्मों का फल।

कम्मवेग (पु.) : कर्मों का वेग।

कम्मसक (वि.) : कर्म ही जिसका अपना आप है।

कम्मसमुट्ठान (वि.) : कर्मोत्पन्न, कर्म से उत्पन्न।

कम्मसम्भव (वि.), कर्मों से उत्पन्न ।

कम्मसरिक्खक (वि.) : कर्मों के सदृश परिणाम।

कम्मायूहन (नपुं.) : कर्मों का ढेर।

कम्मधारय (पु.) : कर्मधारय समास।

कम्मन्त (नपुं.) : काम, कारोबार।

कम्मन्तट्ठान (नपुं.) : कारोबार की जगह, कर्म का स्थान।

कम्मन्तिक (वि.) : मजदूर, कर्म करनेवाला।

कम्मप्पत्त (वि.) : ऐसे भिक्षु जो विनय-कर्म करने के लिए एकत्र हुए हो।

कम्मवाचा (स्त्री.) : विनय-कर्म का पाठ।

कम्मस्सामी (पु.) : कारोबार का स्वामी।

कम्माधिट्ठायक (पु.) : कारोबार का निरीक्षक।

कम्मानुरूप (वि.) : कर्मानुसार।

कम्मार (पु.) : लोहार या सुनार।

कम्मारभण्ड (नपुं.) : लोहार का सामान।

कम्मारसाला (स्त्री.) : लोहार या सुनार की काम करने की जगह।

कम्मारम्भ (पु.) : कार्य-विशेष का आरम्भ करना।

कम्मारह (वि.) : काम के योग्य।

कम्माराम (वि.) : कार्य में रस लेना।

कम्मारामता (स्त्री.) : सांसारिक कार्यों में मन लगे रहने का भाव।

कम्मास (वि.) : चितकबरा, बेमेल।

कम्मासदम्म / कम्मासधम्म : कुरूओं का एक नगर, जहां भगवान बुद्ध एक से अधिक बार ठहरे और जहां उन्होंने महासतिपट्ठान-सुत्त सदृश महत्त्वपूर्ण सूत्रों का उपदेश दिया।

कम्मिक, कम्मी (पु.) : काम करनेवाला, मजदूर।

कम्मता (स्त्री.) : इच्छा।

कय (पु.) : क्रय, खरीद।

कयविक्कय (पु.), क्रय-विक्रय।

कयविक्कयी (पु.) : व्यापारी।

कयिक (पु.) : खरीददार।

कर (पु.) : १. हाथ; २. किरण; ३. शुल्क, टैक्स; ४. हाथी का सूंड।

करक : (पु.) अनार; (नपुं.) : जल-पात्र।

करका (स्त्री.) : ओला।

करकवस्स (नपुं.) : ओलों का तूफान।

करग्ग (पु.) : हाथ का सिरा।

करज (पु.) : हाथ का नाखून।

करजकाय (पु.) : शरीर (जो कि अशुद्धि से उत्पन्न हुआ है)।

करञ्ज (पु.) : करंजुआ।

करण (नपुं.) : करना, बनाना; उत्पत्ति।

करणत्थ (पु.) : साधन बनने का भाव।

करणविभत्ति (स्त्री.) : तीसरी विभक्ति।

करणीय (वि.) : करने योग्य, कर्तव्य।

करण्ड / करण्डक (पु.) : टोकरी, पिटारी।

करतल (नपुं.) : हाथ की हथेली।

करपुट (पु.) : जुड़े हुए हाथ।

करभ (पु.) : १. ऊँट, २. कलाई।

करभुसा (स्त्री.) : हाथ का आभरण, पहुँची।

करमद्द (पु.) : करौंदा, करमदा।

करमर (पु.) : कैदी।

करमरानीत (वि.) : युद्ध-बंदी।

करवीक (पु.) : कोयल।

करवीकभाणी (वि.) : स्पष्ट तथा मधुर स्वर वाला।

करसाखा (स्त्री.) : अंगुली।

करी (पु.) : हाथी।

करीयति (क्रि.) : किया जाता है।

करीस (नपुं.) : गोबर, गुंह।

करीसमग्ग (पु.) : गुदा।

करुणं (क्रि.वि.) : करूणा-पूर्वक।

करुणा (स्त्री.) : दया, करुणा।

करुणायति (क्रि.) : दया अनुभव करता है, करूणा-भाव रखता है।

करेणु (स्त्री.) : हथिनी।

करेरि (पु.) : वृक्ष-विशेष।

करोति (क्रि.) : करता है।

करोन्त (वि.) : करता हुआ।

कल (पु.) : मधुर आवाज।

कलङ्क (पु.) : चिन्ह, दाग, धब्बा।

कलण्डुक-जातक : बनारस के एक सेठ के पास कलण्डुक नाम का दास था। उसने जाली पत्र बना पड़ोसी प्रदेश के एक सेठ की लड़की से विवाह किया (१२७)।

कलत्त (नपुं.) : पत्नी।

कलन्दक (पु.) : गिलहरी।

कलन्दकनिवाप : वेळुवन का वह स्थान जहां गिलहरियों को नियम से खाना मिलता था। यहां भगवान बुद्ध ने कई बार विहार किया था।

कलभ (पु.) : हाथी का बच्चा।

कलल (नपुं.) : कीचड़।

कललमक्खित (वि.) : कीचड़ से सना हुआ।

कललरूप (नपुं.) : गर्भ की आरंभावस्था।

कलस (नपुं.) : कलश, जल-पात्र।

कलसिगाम : अलसन्दा (अलैक्जैण्डरिया) द्वीप का वह स्थान, जहां मिलिन्द राजा पैदा हुआ था।

कलह (पु.) : झगड़ा, विवाद।

कलहकारक (वि.) : झगड़ने वाला।

कलहकारण (नपुं.) : झगड़े का कारण।

कलहसद्द (पु.) : झगड़े की आवाज।

कला (स्त्री.) : १. संपूर्ण का एक भाग, हिस्सा; २.कला-शिल्प।

कलापी (पु.) : १. मोर, २. तरकश वाला या पोटली वाला।

कलायमुट्ठी-जातक : एक बंदर की कथा, जिसने एक मटर के दाने के लिए मुट्ठी के सभी मटर गँवा दिये थे (१७६)।

कलि (पु.), हार, दुर्भाग्य, पाप, कष्ट।

कलिका (स्त्री.) : फूल की कली।

कलिग्गह (पु.) : हार का पांसा।

कलिङ्गर (पु., नपुं.), लट्ठा, लकड़ी का सड़ा हुआ लट्ठा।

कलियुग (पु.) : एक युग का नाम।

कलीर (नपुं.) : ताड़-वृक्ष के तने का कोमल भाग।

कलुस : (नपुं.) अपवित्रता, अशुद्धता; (वि.) कलुष, पाप-कर्म।

कलेवर / कलेबर / कळेबर (नपुं.) : शरीर, शव, लाश।

कल्याण (वि.) : शुभ, कल्याण, भला।

कल्याणकाम (वि.) : भला चाहने वाला।

कल्याणकारी (वि.) : शुभ-कर्मी।

कल्याणदस्सन (वि.) : सुंदर।

कल्याणपटिभाण (वि.) : शीघ्र-बोध।

कल्याणमित्त (पु.) : शुभचिंतक मित्र।

कल्याणाज्झासय (वि.) : शुभ-चेतना वाला।

कल्याणधम्म-जातक : सास के बहरेपन के कारण बहू ने कुछ कहा और सास ने दूसरा ही समझा, संबंध में जातक कथा (१७१)।

कल्याणी (स्त्री.) : १. सुंदर स्त्री, २. लंका की एक नदी तथा एक नगरी।

कल्ल (वि.) : दक्ष, योग्य, स्वस्थ।

कल्लता (स्त्री.) : दक्षता।

कल्लसरीर (वि.) : स्वस्थ शरीरवाला।

कल्लहार (नपुं.) : श्वेत कँवल, सफेद कमल।

कल्लोल (पु.) : तरंग, बड़ी लहर।

कवच (पु.) : जिरह-बख्तर, सन्नाह, कवच।

कवन्ध (पु.) : बिना सिर का धड़।

कवाट (पु., नपुं.) : खिड़की, दरवाजे के किवाड़।

कवि (पु.) : कवि, शायर।

कविट्ठ (पु.) : कैथ, वृक्ष-विशेष।

कविता (स्त्री.) : काव्य-कृति ।

कवित्त (नपुं.) : कवित्व, कवि की अवस्था या काव्य-सामर्थ्य।

कसट (पु.) : कूड़ा-करकट, कसैला स्वाद।

कसति (क्रि.) : हल चलाता है।

कसन (नपुं.) : हल चलाना।

कसम्बु (पु.) : कूड़ा-करकट।

कसम्बुजात (वि.) : कूड़े-करकट में से उत्पन्न, अशुद्ध, बुरे आचरण वाला।

कसा (स्त्री.) : चाबुक।

कसाहत (वि.) : चाबुक के आघात प्राप्त।

कसाय (नपुं.) : दुछान्दा, काढा।

कसाव (पु., नपुं.) : १. कसैला स्वाद, २. काषाय-रंग।

कसि (स्त्री.) : कृषि, खेती-बाड़ी।

कसिकम्म (नपुं.) : खेती, खेती काम।

कसिण : (वि.) संपूर्ण, समस्त; (नपुं.), चित्त एकाग्र करने का साधन।

कसिणपरिकम्म (नपुं.) : चित्त एकाग्र करने के अभ्यास की पूर्व-तैयारी।

कसितट्ठान (नपुं.) : हल चलाई हुई भूमि।

कसिभण्ड (नपुं.) : कृषि के औजार।

कसिभारद्वाज : भारद्वाज गोत्र का एक ब्राह्मण, जो दक्षिणगिरि के एकनाळा में रहता था। बुद्धत्त्व-प्राप्ति के ग्यारहवें वर्ष में उसकी भगवान बुद्ध से भेंट हुई थी।

कसिणमण्डल (नपुं.) : चित्त एकाग्र करने के अभ्यास के लिए कागज या दीवार पर खींचा गया चक्र, अथवा गोल रिकेवी।

कसिर : (वि.) कठिन, (नपुं.) कठिनाई।

कसिरेन (क्रि.वि.) : कठिनाई से।

कस्मा (क्रि.वि.) : किसलिए।

कस्मीर : भारत का उत्तरी प्रदेश, कश्मीर।

कस्सक (पु.) : कृषक, किसान।

कस्सति (क्रि.) : खींचता है।

कस्सपमन्दिय-जातक : वृद्धों को तरुणों के साथ सहनशीलता का बर्ताव करने की शिक्षा के संबंध में जातक-कथा (३१२)।

कहं (क्रि.वि.) : कहां।

कहापण (नपुं.) : स्वर्ण-मुद्रा, कार्षापण।

कहापणक (नपुं.) : दण्ड-विधान, जिसमें अपराधी के मांस के कार्षापणों के समान छोटे-छोटे टुकड़े कर दिये जाते थे।

कळोपि (स्त्री.) : पात्र, टोकरी।

काक (पु.) : कौआ, राजा चण्ड प्रद्योत का अति शीघ्र चलनेवाला दास।

काकच्छति (क्रि.) : नाक बजाता है, खर्राटे भरता है।

काक-जातक : राजपुरोहित स्नान करके घर लौट रहा था। एक कौवे ने उस पर बीट कर दी। तबराजपुरोहित ने क्रुद्ध हो सभी कौवों को मरवा डालना चाहा। इसके संबंध में जातक-कथा (१४०)।

काक-जातक : कौवा तथा उसकी कौवी शराब पीकर मस्त हो गये। कौवी को समुद्र की लहर बहा ले गई। कौवे का विलाप सुन सभी कौवे समुद्र के शत्रु बन बैठे, इस संबंध में जातक-कथा (१४६)।

काक-जातक : लोभी कौवे ने मांस-लोभ से पिंजरे में रहनेवाले कबूतर से दोस्ती की और रसोई के हाथ पड़ जान गँवाई के सम्बन्ध में जातक-कथा।

काकणिका (स्त्री.) : काकणी, कौड़ी, एक हल्का सिक्का।

काकतिन्दुक (पु.) : काकतिन्दुक, कुचला का पेड़।

काकपक्ख (पु.) : बालों का गुच्छा, शिखा, बालों का जूड़ा।

काकपाद (पु.) : कौवे का पाँव, क्रास-चिन्ह।

काकपेय्य (वि.) : लबालब भरा हुआ पानी, ताकि कौवा भी पी सके।

काकवण्ण (वि.) : कौवे के रंग का, काला।

काकसूर (वि.) : कौवे की तरह शूर, निर्लज्ज, बेशरम।

काकाति-जातक : बनारस के राजा की काकाति नामक पटरानी पर गरुड़ मोहित हो गया और उसे उड़ा ले गया के संबंध में जातक-कथा (३२७)।

काकी (स्त्री.) : कौवी।

काकोल / काकोळ (पु.) : काला कौवा, जंगली कौआ।

काच (पु.) : काँच।

काचतुम्ब (पु.) : काँच की बोतल।

काचमय (वि.) : काँच-निर्मित।

काज (पु.), बहँगी, स्कंध-वाहिनी।

काजहारक (पु.) : बहँगी ढोने वाला।

काट (पु.), पुरूषेन्द्रिय।

काण (वि.) : काना, एक आँख का अंधा।

कातब्ब (वि., नपुं.) : कर्तव्य।

कातर (वि.) : दुःखी, दरिद्र।

कातवे, कातुं (अ.) : करने के लिए।

कातुकाम (वि.) : करने की इच्छा वाला।

कादम्ब (पु.) : बत्तख-विशेष।

कानन (नपुं.) : जंगल ।

कापिलवत्थव (वि.) : कपिलवस्तु का।

कापुरिस (पु.) : घृणित व्यक्ति।

कापोतक (वि.) : कबूतर के समान सफेद।

कापोतिका (स्त्री.) : एक तरह की शराब।

काम (पु.) : कामना, कामुकता।

कामगिद्ध (वि.) : इन्द्रिय-सुख का लोभी।

कामगुण (पु.) : इन्द्रिय-सुख।

कामगेध (पु.) : इन्द्रिय-सुख के प्रति आसक्ति।

कामच्छन्द (पु.) : कामुकता।

कामतण्हा (स्त्री.) : काम-तृष्णा।

कामता (स्त्री.) : आकांक्षा, इच्छा।

कामदद (वि.) : इच्छित वस्तु का देना।

कामधातु (स्त्री.) : इच्छा-लोक।

कामपङ्क (पु.) : इच्छाओं का कीचड़।

कामपरिळाह (पु.) : काम-ज्वर।

कामभव (पु.) : कामनाओं का संसार।

कामभोगी (वि.) : इन्द्रिय-सुख का भोगने वाला।

काममुच्छा (स्त्री.) : काम-मूर्च्छा।

कामरति (स्त्री.) : कामुकता का आनन्द।

कामराग (पु.) : काम-चेतना।

कामलोक (पु.) : कामनाओं का लोक।

कामवितक्क (पु.) : कामनाओं संबंधी विचार।

कामसङ्कप्प (पु.) : कामनाओं के संबंध में संकल्प-विकल्प।

कामसञ्ञोजन / कामसंयोजन (नपुं.) : कामनाओं के बंधन।

कामसुख (नपुं.) : कामेन्द्रिय-जनित सुख।

कामसेवना (स्त्री.) : मैथुन-धर्म का सेवन।

काम-जातक : राजकुमार की कामना उत्तरोत्तर बढ गई थी के संबंध में जातक-कथा (४६७)।

कामनीत-जातक : बहुत कुछ काम जातक के समान ही (२२८)।

कामी (वि.) : कामेन्द्रिय सुखों के साधनों से संपन्न, कामभोगी।

कामुक (वि.) : रागी।

कामेति (क्रि.) : इच्छा करता है।

कामेतब्ब (वि., कृ.) : इच्छा किये जाने के योग्य ।

काय (पु.) : ढेर, संग्रह, शरीर।

कायकम्म (नपुं.) : शारीरिक कर्म।

कायकम्मञता (स्त्री.) : शरीर की कमनीयता (कमाया हुआ होना)।

कायगत (वि.) : शरीर-संबंधी।

कायगन्थ (पु.) : शारीरिक बंधन।

कायगुत्त (वि.) : शरीर से संयत।

कायडाह (पु.) : शरीर-ज्वर।

कायदरथ (पु.) : शारीरिक कष्ट।

कायदुच्चरित (नपुं.) : शारीरिक दुश्चरित्र।

कायद्वार (नपुं.) : शारीरिक इन्द्रियाँ ।

कायधातु (स्त्री.) : स्पर्शेन्द्रिय।

कायप्पकोप (पु.) : शारीरिक दुष्कर्म।

कायप्पचालकं (क्रि.वि.) : शरीर का हिलना-डोलना।

कायपटिबद्ध (वि.) : शरीर से संबंधित।

कायप्पयोग (पु.) : शारीरिक साधन।

कायपरिहारिक (वि.) : शरीर का पालन।

कायप्पसाद (पु.) : स्पर्शेन्द्रिय का स्पष्ट बोध।

कायप्पसद्धि (स्त्री.) : इन्द्रियों की शान्ति।

कायपागब्भिय (नपुं.) : शारीरिक प्रगल्भता, शारीरिक असंयम।

कायबन्धन (नपुं.) : कमर की पट्टी।

कायबल (नपुं.) : शारीरिक बल।

कायमुदुता (स्त्री.) : इन्द्रियों की कोमलता।

कायलहुता (स्त्री.) : इन्द्रियों का हलकापन।

कायवङ्क (पु.) : टेढे कार्य।

कायविकार (पु.) : संकेत।

कायविञ्ञत्ति (स्त्री.) : शारीरिक सूचना।

कायविञ्ञाण (नपुं.) : स्पर्श द्वारा चेतना।

कायविञ्ञेय्य (वि.) : स्पर्श द्वारा जानने योग्य।

कायविवेक (पु.) : शारीरिक एकांत।

कायवेय्यावच्च (नपुं.) : शारीरिक सेवा-कार्य।

कायसंसग्ग (पु.) : शारीरिक संसर्ग।

कायसक्खी (वि.) : शरीर से सत्य का साक्षात् अनुभव करने वाला।

कायसङ्खार (पु.), शरीर का सूक्ष्म स्वरूप, शरीर की बुनियाद / आधार।

कायसमाचार (पु.) : सदाचरण।

कायसम्फस्स (पु.) : शारीरिक स्पर्श, काया से स्पर्श।

कायसुचरित (नपुं.) : शारीरिक सदाचरण, कायिक सदाचार।

कायसोचेय्य (नपुं.) : शारीरिक पवित्रता, कायिक विशुद्धी।

कायविच्छिन्द-जातक : धार्मिक जीवन बिताने का संकल्प करने पर पीलिका रोग चला गया के संबंध में जातक-कथा (२९३)।

कायिक (वि.) : शारीरिक, शरीर से संबंधित।

कायिकदुक्ख (नपुं.) : शारीरिक वेदना।

कायुज्जुकता (स्त्री.) : शरीर का सीधापन।

कायूपग (वि.) : शरीर से आसक्त, नया जन्म ग्रहण करने वाला।

कायूर (नपुं.) : बाजूबंद।

कार : (पु.) क्रिया, कर्म, सेवा; (वि.) बनाने वाला – जैसे : *रथकार* – रथ बनाने वाला।

कारक (पु.) : कर्ता, करने वाला; व्याकरण में कर्ता-कारक आदि 'कारक'।

कारण (नपुं.) : हेतु, कारणा।

कारण्डिय-जातक : बिना किसी की योग्यता-अयोग्यता परखे हर किसी को उपदेश देने वाले आचार्य की कथा (३५६) |

कारणा (स्त्री.) : यातना, शारीरिक दण्ड।

कारणिक (पु.) : यातना देनेवाला।

कारा (स्त्री.) / **काराघर** (नपुं.) : कारागृह, जेलखाना।

कारापक (पु.) : कराने वाला।

कारापन (नपुं.) : करवाना।

कारापिका (स्त्री.) : कराने वाली।

कारापित (वि.) : करवाया गया।

कारापेति (क्रि.) : करवाता है।

काराभेदक (वि.) : जेल से भाग आनेवाला।

कारिका (स्त्री.) : व्याख्या।

कारिय (नपुं.) : कार्य, कर्तव्य।

कारी (पु.) : करनेवाला।

कारुञ्ञ (नपुं.) : करुणा।

कारुणिक (वि.) : दयालु।

कारेति (क्रि.) : करवाता है।

काल (पु.) : समय।

कालं कत / **कालङ्कत** (कृ.) : मृत, मरा हुआ।

कालं करोति / **कालङ्करोति** (क्रि.) : मर जाता है।

कालकण्णी (पु.) : मनहूस।

कालकिरिया (स्त्री.) : मृत्यु।

कालञ्ञू (वि.) : उचित समय का जानकार।

कालन्तर (नपुं.) : व्यवधान, समय विभाग।

कालपवेदन (नपुं.) : समय की सूचना।

कालवादी (वि.) : समयोचित बोलने वाला।

कालस्सेव (अ.) : समय रहते।

कालिक (वि.) : समय संबंधी।

कालिङ्ग : पूर्व भारत का एक जनपद, कलिंग, वर्तमान ओडिशा।

कालुसिय (नपुं.) : मैल (कालुष्य)।

कालेन : ठीक समय पर।

कालेन कालं : समय समय पर।

कावेय्य (नपुं.) : काव्य।

कास (पु.) : नरकट, तपेदिक (रोग)।

कासाय / कासाव : (नपुं.) काषाय-वस्त्र; (वि.) काषाय-वर्ण युक्त।

कासाव-जातक : काषाय वस्त्र के कारण हाथी ने दुष्ट आदमी को क्षमा कर दिया (२२१)।

कासि : काशी, सोलह जनपदों में से एक। इसकी राजधानी वाराणसी थी।

कासिक (वि.) : काशी का, काशी में निर्मित, काशी का कपड़ा।

कासु (स्त्री.) : गड्ढा।

काळ : (पु.) काला रंग; (वि.) काला।

काळक : (वि.) काला (चिन्ह); (नपुं.) धब्बा, धान में काला दाना।

काळकण्णी-जातक : अनाथपिण्डिक के काळकण्णी मित्र की कथा के समान (८३)।

काळकूट (पु.) : हिमालय पर्वत का एक शिखर।

काळकेस (वि.) : काले बाल वाला, युवा।

काळतिपु (नपुं.) : काला सीसा।

काळपक्ख (पु.) : कृष्ण-पक्ष।

काळबाहु-जातक : काळबाहु बन्दर की कथा (३२९)।

काळलोण (नपुं.) : काला नमक।

काळसीह (पु.) : काला सिंह।

काळसुत्त (नपु.) : काला सूत्र।

काळहंस (पु.) : काला हंस।

काळाम / कालाम : गोत्र-विशेष। काळाम को ही भगवान बुद्ध ने प्रसिद्ध काळामसुत्त का उपदेश दिया था।

काळायस (नपुं.) : काला लोहा।

काळावक (पु.), एक प्रकार का हाथी

काळिङ्गबोधिजातक / कालिङ्गबोधिजातक : काळिंग नरेश के दो पुत्रों की कथा (४७९)।

किकी (पु., स्त्री.) : नील-कण्ठी, मुर्गी।

किं (सर्व.) : क्या।

किंकर (पु.) : नौकर, सेवक।

किं कारणा : किस कारण से।

किंकिणिकजाल (नपुं.) : घुँघरूओं की जाली।

किंकिणी (स्त्री.) : छोटी घंटी, घुँघरू।

किंवादी (वि.) : कौन-से मत / दृष्टि वाला।

किंसुकोपम-जातक : बुद्ध द्वारा चार भिक्षुओं को चार भिन्न-भिन्न कर्मस्थान दिये गये, चारों ने अर्हत्व-लाभ किया (२४८)।

किच्च (नपुं.) : कृत्य, कर्म, कार्य।

किच्चकारी (वि.) : अपना कर्तव्य निभाने वाला।

किच्चाकिच्च (नपुं.) : कृत्य तथा अकृत्य, करणीय तथा अकरणीय।

किच्छ : (वि.) कठिन, दुखद; (नपुं.) कठिनाई, दुःख।

किच्छति (क्रि.) : कष्ट पाता है।

किञ्चन (नपुं.) : कुछ, सांसारिक आसक्ति, तुच्छ।

किञ्चापि (अ.) : कुछ भी, कैसे भी, कितना भी, लेकिन।

किञ्चि (अ.) : कुछ।

किञ्चिक्ख (नपुं.) : तुच्छ।

किञ्छन्द-जातक : रिश्वत लेने वाले न्यायाधीश पुरोहित की कथा (५११)।

किञ्जक्ख (नपुं.) : रेणु, पराग।

किट्ठ (नपुं.) : उगता हुआ धान।

किट्ठसम्बाधसमय (पु.) : खेती पक जाने का समय।

किट्ठाद (वि.) : धान खाने वाला।

किण्ण : (वि.) बिखरा हुआ, विकिर्ण; (नपुं.) खमीर।

किणाति (क्रि.) : खरीदता है।

कितव (पु.) : ठग।

कित्तक (सर्व.) : कितना, किस सीमा तक, कितने।

कित्तन (नपुं.) : कीर्तन, प्रशंसा, स्तुति।

कित्तावता (क्रि.वि.) : कहाँ तक, किस संबंध में।

कित्ति (स्त्री.) : कीर्ति, ख्याति, प्रसिद्धि।

कित्तिघोस / **कित्तिसद्द** (पु.) : यश।

कित्तिम (वि.) : कृत्रिम, अस्वाभाविक।

कित्तिमन्तु (वि.) : यशस्वी।

कित्तेति (क्रि.) : प्रशंसा करता है।

किन्नर (पु.) : पक्षी-विशेष, जंगल में रहने वाली जाति-विशेष ।

किन्नरी (स्त्री.) : किन्नर-स्त्री।

किपिल्लिका (स्त्री.) : चींटी।

किब्बिस (नपुं.) : अपराध।

किब्बिसकारी (पु.) : अपराधी।

किमक्खायी (वि.) : किस उपदेश का उपदेशकर्ता।

किमत्थं (क्रि.वि.) : किसलिए।

किमत्थिय (वि.) : किस उद्देश्य से।

किमपक्कफल (नपुं.) : आम की शक्ल का जहरीला फल।

किम्पुरिस : (देखो) किन्नर।

किमि (पु.) : कीड़ा, कृमि।

किमिकुल (नपुं.) : कीड़ों का समूह।

किर (अ.) : वास्तव में।

किरण (पु., नपुं.) : (सूर्य या चंद्र की) किरण।

किरति (क्रि.) : बिखेरता है।

किरात (पु.) : जंगली जाति-विशेष।

किरिय (नपुं.) : क्रिया, कार्य, काम।

किरियवाद (पु.) : कर्म-फल में विश्वास।

किरियवादी (पु.) : कर्म-फल में विश्वासी।

किरीट (नपुं.) : राज-मुकुट।

किलञ्जा (स्त्री.) : चटाई।

किलन्त (वि.) : थका हुआ।

किलन्तकाया (स्त्री.) : क्लान्त काया।

किलमति (क्रि.) : थकता है।

किलमित (वि.) : थका हुआ।

किलमेति (क्रि.) : थकाता है।

किलास (पु.) : छूत का रोग, कोढ़।

किलिट्ठ (वि.) : मैला, गंदा।

किलिन्न (वि.) : भीगा, गीला।

किलिस्सति (क्रि.) : दाग लगता है, अशुद्ध होता है।

किलिस्सन (नपुं.) : मैला होना, गंदा होना, दाग लगना।

किलेस (पु.) : कामुकता, अशुद्धि।

किलेसक्खय (वि.) : कामुकता का क्षय।

किलेसप्पहाण (नपुं.) : कामुकता का नाश।

किलेसवत्थु (नपुं.) : आसक्ति के पात्र।

किलेसेति (क्रि.) : धब्बा या दाग लगाता है।

किलोमक (नपुं.) : फुफ्फुस का आवरण।

किस (वि.) : कृश, दुबला-पतला।

कीट / कीटक (पु.) : कीड़ा।

कीत (वि.) : खरीदा हुआ।

कीदिस (वि.) : कैसा।

कीर (पु.) : तोता।

कील (पु.) : खूँटा।

कीव (अ.) : कितना।

कीवतिक (वि.) : कितने, कितना।

कीळति (क्रि.) : खेलता है।

कीळनक (नपुं.) : खिलौना।

कीळना / केळी (स्त्री.) : क्रीड़ा, विनोद।

कीळा (स्त्री.) : क्रीड़ा।

कीळागोलक (नपुं.) : खेलने की गेंद।

कीळापसुत (वि.) : खेल में लगा हुआ।

कीळाभण्डक (नपुं.) : खिलौना।

कीळामण्डल (नपुं.) : क्रीड़ा-भूमि।

कीळित (वि.) : खेला हुआ।

कुकुत्थक (पु.) : एक प्रकार का पक्षी।

कुक्कु (पु.) : हाथ भर का माप।

कक्कु-जातक : राजा ब्रह्मदत्त (बनारस) को समझाने के लिए दी गई अनेक उपमाओं से युक्त कथा (३९६)।

कुक्कुच्च (नपुं.) : पछतावा, पश्चाताप।

कुक्कुचायति (क्रि.) : पश्चात्ताप करता है।

कुक्कुट (पु.) : मुर्गा।

कुक्कुट-जातक : एक बिल्ली ने एक मुर्गे की पत्नी बनने की बात बना उसे ठगना चाहा, जिसमें वह असफल हुई (३८३)।

कुक्कुट-जातक : एक बाज ने एक मुर्गी को ठगना चाहा (४४८)।

कुक्कुटी (स्त्री.) : मुर्गी।

कुक्कुर (पु.) : कुत्ता।

कुक्कुरवतिक (वि.) : कुक्कुर-व्रती, कुत्ते जैसा व्यवहार करने वाला।

कुक्कुर-जातक : बनारस के राजा ने अपने कुत्तों के अपराध के कारण सभी दूसरे निरपराध कुत्तों को भी मरवाने की आज्ञा दी (२२)।

कुक्कुळ (पु.) : गर्म राख।

कुङ्कुम (नपुं.) : केसर।

कुच्छि (पु.) : पेट।

कुच्छिट्ठ (वि.) : कुच्छि-स्थित।

कुच्छिदाह (पु.) : पेट की जलन।

कुज (पु.) : वृक्ष-विशेष, मंगल ग्रह।

कुज्झति (क्रि.) : क्रोधित होता है।

कुज्झन (नपुं.) : क्रोध।

कुञ्चनाद (पु.) : क्रोंच-नाद, हाथी की चिंघाड़।

कुञ्चिका (स्त्री.) : चाबी।

कुञ्चिकाविवर (नपुं.) : चाबी का छेद।

कुञ्चित (वि.) : टेढ़ा, मुड़ा हुआ।

कुञ्ज (नपुं.) : घाटी, लताओं आदि से ढका स्थान।

कुञ्जर (पु.) : हाथी।

कुट (पु., नपुं.) : जल-पात्र।

कुटज (पु.) : औषध-विशेष, बूटी- विशेष (कुरैया)।

कुटि / **कुटिका** (स्त्री.) : झोपड़ी।

कुटिदूसक-जातक : बये ने बरसात में भीगे बंदर को उपदेश दिया। बंदर ने बये का घोंसला ही उजाड़ दिया, इस संबंध में एक महत्त्वपूर्ण जातक कथा (३२१)।

कुटिल (वि.) : टेढ़ा, कुटिल।

कुटिलता (स्त्री.) : टेढ़ापन।

कुटुम्ब (नपुं.) : परिवार।

कुटुम्बिक (पु.) : परिवार का मुखिया, गृहस्थ।

कुट्ठ (नपुं.) : कुष्ठ, एक पौधा विशेष।

कुट्ठी (पु.) : कोढ़ी, कुष्ठरोगी।

कुठारी (स्त्री.) : कुल्हाड़ी।

कुड्मल (पु.) : कोंपल, मुकुल।

कुड्ड (नपुं.) : दीवार।

कुणप (पु.) : लाश।

कुणपगन्ध (पु.) : लाश की सड़ाँध।

कुणाल (पु.) : कोयल।

कुणाल-जातक : कोयलों के कुणाल नाम के राजा की कथा (५३६)।

कुणी (पु.) : लंगड़ा।

कुण्ठ (वि.) : भोथरा।

कुण्ठेति (क्रि.) : कुंठित कर देता है, भोथरा या पंगु कर देता है।

कुण्डक (नपुं.) : चावलों के भीतर से प्राप्त चूर्ण।

कुण्डकपूव (पु., नपुं.) : कुण्डक के बने पूए।

कुण्डल (नपुं.) : कान की बाली।

कुण्डलकेस (वि.) : जिस व्यक्ति के घुंघराले बाल हों।

कुण्डली (वि.) : जिसके कान में कुण्डल हो या जिसके बाल घुंघराले हों।

कुण्डिका (स्त्री.) : कूण्डी, मिट्टी का जल-पात्र।

कुतूहल (नपुं.) : उत्तेजना, कौतूहल।

कुतो (क्रि.वि.) : कहां से?

कुत्त (नपुं.) : आचरण, नखरा।

कुत्तक (नपुं.) : बड़ा गलीचा।

कुत्ति (स्त्री.) : सजावट।

कुत्थ / कुत्र (क्रि.वि.) : कहां?

कुथित (वि.) : उबाला गया।

कुदस्सु (अ.) : कब?

कुदाचन / कुदाचनं (अ.) : कभी, किसी समय।

कुद्दाल (पु.) : कुदाल।

कुद्दाल-जातक : कुद्दाल पण्डित अपनी कुदाली के प्रति असीम आसक्ति के कारण छह बार गृहस्थ बना और गृहस्थी के झंझटों के कारण छह बार साधु बना (७०)।

कुद्ध (वि.) : क्रुद्ध, क्रोधित।

कुद्रूस / कुद्रूसक (पु.) : धान्य-विशेष।

कुन्त (पु.) : बर्छी, पक्षी-विशेष।

कुन्तनी (स्त्री.) : सारस, बगुला।

कुन्तनि-जातक : लड़कों ने बगुली के दो बच्चे मरवा डाले। बगुली ने शेर को कहकर लड़कों को मरवा डाला और स्वयं हिमालय की ओर चली गई (३४३)।

कुन्तल (पु.) : केश।

कुन्थ (पु.) : चींटी-विशेष।

कुन्द (नपुं.) : जूही के समान सफेद फूल।

कुन्नदी (स्त्री.) : छोटी नदी।

कुपथ (पु.) : कुमार्ग।

कुपित (वि.) : क्रुद्ध, क्रोधित।

कुपुरिस (पु.) : दुष्ट आदमी।

कुप्प (वि.) : अस्थिर, चंचल।

कुप्पति (क्रि.) : क्रोधित होता है, उत्तेजित होता है।

कुप्पन (नपुं.) : उत्तेजना, क्रोध।

कुब्बति (क्रि.) : करता है।

कुब्बनक (नपु.) : छोटा जंगल।

कुब्बन्त (वि., कृ.) : करता हुआ।

कुब्बर (स्त्री.) : गाड़ी के पहियों की धुरी।

कुमति : (स्त्री.) मिथ्या दृष्टि, (वि.) : मिथ्या दृष्टि वाला।

कुमार (पु.) : लड़का।

कुमारकीळा (स्त्री.) : कुमार-क्रीड़ा।

कुमारपञ्ह : खुद्दक-पाठ (सुत्त-पिटक के खुद्दक-निकाय में)) का चौथा परिच्छेद। सात वर्ष के सोपाक अर्हत् से पूछे गये प्रश्न।

कुमारिका / कुमारी (स्त्री.) : लड़की, कुँवारी, अविवाहीत।

कुमुद (नपुं.) : श्वेत कँवल, सफेद कमल।

कुमुदनाळ (नपुं.) : श्वेत कँवल की नलिका।

कुमुदवण्ण (वि.) : श्वेत कमल के वर्ण का।

कुम्भ (पु.) : घड़ा।

कुम्भक (नपुं.) : जहाज का मस्तूल।

कुम्भकार (पु.) : कुम्हार।

कुम्भकार-जातक : बोधिसत्त्व के कुम्हार की जाति में उत्पन्न होने पर गृहत्याग की कथा (४०८)।

कुम्भकारसाला (स्त्री.) : बर्तन बनाने का स्थान।

कुम्भदासी (स्त्री.) : पानी लाने वाली दासी।

कुम्भजातक : शराब के आरंभ की कथा (५१२)।

कुम्भण्ड (पु.) : दिव्य-लोक के प्राणी विशेष, कद्दू।

कुम्भी (स्त्री.) : बर्तन, घड़ा।

कुम्भील (पु.) : मगरमच्छ।

कुम्म (पु.) : कछुआ।

कुम्मग्ग (पु.) : कुमार्ग।

कुम्मास (पु.) : कुल्माष, चावल या कोई अन्न उबालकर मथकर बनाया गया पदार्थ।

कुम्मासपिण्ड-जातक : कुल्माष-पिण्ड के दान की कथा (४१५)।

कुर (नपुं.) : भात।

कुरण्डक (पु.) : एक पौधा, जिसमें फूल लगते है।

कुरर (पु.) : कुररी, मछली खाने वाला पक्षी-विशेष।

कुरु : सोलह महा-जनपदों में से एक।

कुरुङ्ग (पु.) : मृगों की एक जाति।

कुरुङ्गमिग-जातक : शिकारी ने कुरूंग मृग को छलकर मारना चाहा। वह उसके छल को भाँप गया (२१)।

कुरुङ्गमिग-जातक : मृग, कठफोडे तथा कछुवे की कथा (२०६)।

कुरुधम्म-जातक : पंचशील अथवा कुरु-धम्म के पालन से जनपद समृद्ध हो गया (२७६)।

कुरुमान (वि.) : करता हुआ।

कुरुरट्ठ : उत्तर भारत का कुरु राष्ट्र।

कुरूर (वि.) : क्रूर, अत्याचारी।

कुल (नपुं.) : परिवार, जाति।

कुलगेह (नपुं.) : माता-पिता का घर।

कुलङ्गार (पु.) : जो कुल के विनाश का कारण बनता है।

कुलतन्ति (स्त्री.) : कुल-परंपरा।

कुलत्थ (पु.) : पौधा-विशेष।

कुलदूसक (पू.) : कुल को बदनाम करने वाला।

कुलधीता (स्त्री.) : कुल की बेटी।

कुलपुत्त (पु.) : कुल-पुत्र, अच्छे खानदान का पुत्र / युवक।

कुलल (पु.) : बाज, गीध।

कुलवंस (नपुं.) : वंश-परंपरा।

कुलाल (पु.) : कुम्हार।

कुलालाचक्क (नपुं.) : कुम्हार का चाक।

कुलावक (नपुं.) : घोंसला।

कुलावक-जातक : गाँव के उनतीस परिवारों के मुखिया के रूप में मघ की समाज सेवा की कथा (३१)।

कुलिस (नपुं.) : वज्र (इन्द्रायुध), गदा।

कुलीन (वि.) : श्रेष्ठ कुल का।

कुलीर (पु.) : केकड़ा।

कुलूपग (वि.) : परिवार-विशेष से सुपरिचित।

कुल्ल (पु.) : बेड़ा।

कुवलय (नपुं.) : जल-कँवल, जल का कमल।

कुवेर (पु.) : यक्षाधिपति।

कुस (पु.) : कुश (दर्भ)।

कुसग्ग (नपुं.) : कुश का सिरा।

कुसचीर (नपुं.) : कुश-निर्मित पहनावा।

कुस-जातक : स्त्री के प्रति आसक्त हुए एक भिक्षु को सावधान करने के लिए कही गई कथा (५३१)।

कुसल : (नपुं.); अच्छा, पुण्य; (वि.) कुशल, अच्छा, शुभ।

कुसलकम्म (नपुं.) : शुभ-काम, अच्छा आचरण।

कुसलचेतना (स्त्री.) : शुभ-चिंतन।

कुसलता (स्त्री.) : कुशलता, निपुणता।

कुसलधम्म (पु.) : कुशल-धर्म, शेष दो है - अकुशल-धर्म तथा अव्याकृत-धर्म।

कुसलविपाक (पु.) : शुभ-कर्मों का फल।

कुसि (पु.) : चीवर के अंग।

कुसिनारा : मल्लों की राजधानी।

कुसीत (वि.) : आलसी।

कुसीतता (स्त्री.) : आलस्य।

कुसुब्भ (नपुं.) : छोटा तालाब।

कुसुम (नपुं.) : फूल।

कुसुमित (वि.) : पुष्पित।

कुसूल (पु.) : धान्यागार।

कुह / **कुहक** (वि.) : ठग, ढोंगी।

कुहक-जातक : तपस्वी ने धनी गृहस्थ का सोना हड़पना चाहा (८९)।

कुहना (स्त्री.) : ढोंग।

कुहर (नपुं.) : सुराख, छिद्र।

कुहिं (क्रि.वि.) : कहां।

कुहेति (क्रि.) ठगता है।

कूजति (क्रि.) : कूजता है।

कूजन (नपुं.) : पक्षियों की आवाज।

कूट (पु., नपुं., वि.) : १.मिथ्या, झूठ, असत्य; २. सिरा, अग्र, शिखर।

कूटजटिल (पु.) : ढोंगी तपस्वी।

कूटट्ट (नपुं.) : झूठा मुकद्दमा।

कूटट्टकारक (पु.) : झूठा मुकद्दमा दायर करने वाला।

कूटवाणिज (पु.) : ठग व्यापारी।

कूटवाणिज-जातक : पंडित तथा अपंडित नाम के दो व्यापारियों की कथा (९८)।

कूटवाणिज-जातक : एक सद्गृहस्थ ने एक व्यापारी को अपने लोहे के हल सुरक्षित रखने के लिए दिये। वापिस माँगने पर उसका वह मित्र बोला, चूहे खा गये (२१८)।

कूटागार (नपुं.) : शिखर वाला भवन।

कूप (पु.) : कुआँ।

कूपक (पु.) : मस्तूल।

कूल (नपुं.) : किनारा।

केका (स्त्री.) : मोर की आवाज।

केणिपात (पु.) : नौका का चप्पु।

केतकी (स्त्री.) : पौधा-विशेष, जिसके पत्ते काँटेदार होते हैं।

केतु (पु.) : झंडा, पताका।

केतुकम्यता (स्त्री.) : प्रमुखता की कामना।

केतुमन्तु (वि.) : पताकाओं से सुसज्जित।

केतुं (अ.) : खरीदने के लिए।

केदार (पु., नपुं.) : खेत।

केदारपाळि (स्त्री.) : दो खेतों के बीच का बाँध।

केयूर (नपुं) : बाजूबंद।

केय्य (वि.) : खरीदने योग्य।

केराटिक (वि.) : ठग, ढोंगी।

केराटिय (नपुं.) : ठगी, ढोंग।

केलास (पु.) : कैलास पर्वत ।

केवट्ट (पु.) : मछुवा।

केवल (वि.) : पूर्ण, समस्त, शुद्ध।

केवलं (क्रि.वि.) : केवल।

केवलकप्प (वि.) : सम्पूर्ण।

केवली (वि.) : संपूर्णता प्राप्त, अर्हत।

केस (पु.) : सिर के बाल।

केसकम्बल (नपुं.) : बालों का बना कम्बल।

केसकलाप (पु.) : केश-गुच्छ।

केसकल्याण (नपुं.) : केशों का सौन्दर्य।

केसधातु (स्त्री.) : भगवान बुद्ध की पवित्र केश-धातु।

केसर (नपुं.) : रेणु, अयाल (पशुओं के कन्धे के बाल)।

केसरसीह (पु.) : केसरी (सिंह)।

केसव : (वि.) केशों वाला, केशव (वासुदेव कृष्ण)।

केसव-जातक : तपस्वी को राज-वैद्य अच्छा न कर सके। वह अपने शिष्यों के बीच पहुंच कर बिना दवाई के ही अच्छा हो गया (३४६)।

केसोरोपन (नपुं.) : बालों का काटना।

केसोहारक (पु.) : नाई।

केसोहारण (नपुं.) : बाल काटना।

केळि (स्त्री.) : क्रीड़ा, खेल।

केळिसील-जातक : हँसोड़ राजा को इन्द्र ने लोगों के परिहास का भाजन बनाया की जातक कथा (२०२)।

को (सर्व., पु.) : कौन।

कोक (पु.) : भेड़िया।

कोकनद (नपुं.) : लाल रंग का कमल।

कोकालिक-जातक : वाचाल नरेश को वाचालता के विरुद्ध दी गई शिक्षा की कथा (३३१)।

कोकिल (पु.) : कोयल।

कोचि (सर्व., पु.) : कोई।

कोच्छ (नपुं.) : १. झाडू, २. कुर्सी, बैठने का आसन।

कोज (पु.) : कवच।

कोजव (पु.) : गलीचा।

कोञ्च (पु.) : सारस, क्रौंच।

कोञ्चनाद (पु.) : हाथी की चिंघाड़।

कोट (नपुं.) : शिखर संबंधी।

कोटचिका (स्त्री.), चूत ।

कोटि (स्त्री.) : शिखर, करोड़ की संख्या।

कोटिप्पकोटि (स्त्री.), १,०००,०००,०००,०००,०००,०००,००० संख्या ।

कोटिप्पत्त (वि.) : सिरे तक पहुँच गया, भली प्रकार समझ गया।

कोटिल्ल (नपुं.) : कुटिलता, टेढ़ापन।

कोटिसिम्बलि-जातक : गरुड़ ने नाग को पकड़ा। नाग वट-वृक्ष के इर्द गिर्द लिपट गया। गरुड वट-वृक्ष को भी उखाड़ ले गया (४१२)।

कोटुम्बर (नपुं.) : वस्त्र-विशेष।

कोट्टन (नपुं.) : कूटना।

कोट्ठ (पु.) : कोठा।

कोट्ठक (पु., वि.) : १. द्वार, २. छिपने का स्थान ।

कोट्ठागार (नपुं.) : धान्यागार।

कोट्ठागारिक (पु.) : भांडागारिक।

कोट्ठास (पु.) : हिस्सा, भाग।

कोट्ठासय (वि.) : पेट में रहनेवाला।

कोण (पु.) : कोना, सिरा।

कोतूहल (नपुं) : उत्तेजना, जिज्ञासा।

कोत्थु / **कोत्थुक** (पु.) : गीदड़।

कोदण्ड (नपुं.) : धनुष।

कोध (पु.) : क्रोध, गुस्सा।

कोधन (वि.) : असंयत चित्त।

कोप / **कोपी** (पु.) : क्रोध, गुस्सा।

कोपनेय्य (वि.) : क्रोध उत्पन्न करने वाला।

कोपीन (नपुं.) : लँगोटी।

कोपेति (क्रि.) : क्रोध उत्पन्न करता है ।

कोमल (वि.) : नर्म, मुलायम।

कोमार (वि.) : कुमार-संबंधी।

कोमारभच्च (नपुं.) : बच्चों की चिकित्सा, (राज-) कुमार द्वारा पोषित।

कोमायपुत्त-जातक : कोमाय-पुत्त ने तपस्वियों का आश्रम हथिया लिया था (२९९)।

कोमुदी (स्त्री.) : चाँदनी।

कोरक (पु.) : कोंपल।

कोरब्य / कोरव्य (वि.) : कुरु-वंश का।

कोल (पु.) : एक फल, रसभरी।

कोलक (नपुं.) : मिर्च।

कोलञ्ञ (वि.) : कुलीन।

कोलम्ब (पु.) : बड़ा बर्तन।

कोलाप (पु.) : खोखला पेड़।

कोलाहल (नपुं.) : शोर-गुल।

कोलित : मोग्गल्लान स्थविर का गृहस्थ-नाम।

कोलिय : शाक्यों के समान ही एक दूसरी जाति।

कोलेय्यक (वि.) : अच्छी नस्ल का (विशेष रूप से कुत्तों की नस्ल)।

कोविद (वि.) : पंडित, विद्वान।

कोस (पु.) : कोश, भंडार, खजाना, म्यान।

कोसक (पु., नपुं.), पानी पीने का पात्र।

कोसज्ज (नपुं.) : आलस्य।

कोसम्बी : वत्स्य-देश की राजधानी।

कोसल (पु.) : कोसल जनपद।

कोसल्ल (नपुं.) : कुशलता।

कोसारक्ख (पु.), खजांची।

कोसिक (पु.) : कौशिक, उल्लू।

कोसिनारक (वि.) : कुसिनारा संबंधी।

कोसिय-जातक : एक ब्राह्मणी रोग का बहाना बना दिन-भर लेटी रहती और रात को मौज मनाती (१३०)।

कोसिय-जातक : कौओं द्वारा उल्लू के आक्रांत होने की कथा (२२६)।

कोसी (स्त्री.) : म्यान, कोश।

कोसोहित (वि.) : अण्डकोश से ढका हुआ।

कोहञ्ञ (नपुं.) : ढोंग।

क्व (अ.) : कहां।

क्वचि (अ.) : कहीं।

ख

ख : क-वर्ग का दूसरा अक्षर; (नपुं.) आकाश।

खग (पु.) : पक्षी, पंछी, चिड़िया।

खग्ग (पु.) : तलवार।

खग्गकोस (पु.) : तलवार की म्यान।

खग्गतल (नपुं.) : तलवार का फलक।

खग्गधर (व.) : तलवार-धारी।

खग्गविसाण (पु.) : गेंडा।

खचति (क्रि.) : जड़ता है (अंगूठी में नगीना जड़ता है)।

खज्ज : (वि.) खाद्य, चबाने योग्य पदार्थ; (नपुं.) खाजा।

खज्जकन्तर (नपुं.) : नानाविध मिठाइयां।

खज्जु (स्त्री.) : खाज।

खज्जूरी (स्त्री.) : खजूर।

खज्जोपनक (पु.) : जुगनू।

खञ्ज (वि.) : लंगड़ा।

खञ्जति (क्रि.) : लंगड़ाता है।

खञ्जन : (नपुं.) लंगड़ाना, (पु.), खंजन पक्षी।

खण (पु.) : क्षण, अवसर।

खणति (क्रि.) : खोदता है।

खणन (नपुं.) : खोदना।

खणातीत (वि.) : जो अवसर से चूक गया।

खणिक (वि.) : क्षणिक।

खणित्ती (स्त्री.) : खन्ति, कुदाल।

खण्ड (पु.) : हिस्सा, टुकड़ा।

खण्डदन्त (वि.) : टूटे दाँत वाला।

खण्डन (नपुं.) : टूटना, टूटा हुआ होना।

खण्डफुल्ल (नपुं.) : खंडहर।

खण्डहाल-जातक : रिश्वतखोर पुरोहित ने राजा की हत्या करानी चाही (५४२)।

खण्डाखण्ड (वि.) : टुकड़े-टुकड़े टूटा हुआ।

खण्डिका (स्त्री.) : टुकड़ा।

खण्डिच्च (नपुं.) : खंडित होना, खंडित होने की अवस्था।

खण्डेति (क्रि.) : टुकड़े-टुकड़े करता है।

खत (वि.) : खोदा हुआ, घायल, चोट लगा हुआ।

खत्त (नपुं.) : शासन, अधिकार।

खत्तधम्म (पु.) : क्षात्र-धर्म, राजनीति।

खत्तिय : (पु.) क्षत्रिय, (वि.) क्षत्रियों का।

खत्तियकञ्ञा (स्त्री.) : क्षत्रिय-कन्या।

खत्तियकुल (नपुं.) : क्षत्रिय - कुल।

खत्तियपरिसा (स्त्री.) : क्षत्रिय-परिषद।

खत्तियमहासाल (पु.) : धनी क्षत्रिय।

खत्तियसुखुमाल (वि.) : राजकुमार के समान कोमल शरीर वाला।

खत्तिया / खत्तियानी (स्त्री.) : क्षत्रियाणी।

खत्तु (पु.) : सारथी, राजा का सलाहकार।

खदिर (पु.) : बबूल।

खदिरङ्गार (पु.) : बबूल की लकड़ी के अंगारे।

खदिरङ्गार-जातक : सेठ ने जलते कोयलों के गड्ढे में गिर पड़ने का खतरा मोल लेकर भी दान देना चाहा (४०)।

खन्ति (स्त्री.) : सहनशीलता।

खन्तिक (वि.) : मत-विशेष का (अञ्ञखन्तिक - अन्य मत का)।

खन्तिबल (नपु.) : सहन-शक्ति।

खन्तिमन्तु (वि.) : सहनशील।

खन्तिवण्ण-जातक : एक राजदरबारी ने राजा के रनिवास में गड़बड़ी की और उसी राजदरबारी के नौकर ने अपने मालिक के घर में। राजा के सामने मामला पेश हुआ, तो राजा ने राजदरबारी को सहनशील बने रहने की सलाह दी (२२५)।

खन्तिवादी-जातक : कलावु नाम के राजा ने तपस्वी के अंग-अंग कटवा दिये । तपस्वी ने क्षमाशीलता को सीमा पर पहुंचा दिया (३१३)।

खन्तु (पु.) : क्षमाशील, दयाशील।

खन्ध (पु.) : स्कन्ध, पेड़ का तना, ढेर, परिच्छेद, रूप-वेदनादि पांच स्कन्ध।

खन्धक (पु.) : विभाग, परिच्छेद।

खन्धपञ्चक (नपुं.) : रूप, वेदना, संज्ञा, संस्कार और विज्ञान ये पांच स्कन्ध।

खन्धवत्त-जातक : नियमित मैत्री-भावना करने से सर्प-दंश से बचा रहा जा सकता है (२०३)।

खन्धावार (पु.) : छावनी।

खम (वि.) : क्षमाशील।

खमति (क्रि.) : क्षमा करता है।

खमन (नपुं.) : क्षमा।

खमनीय / खमितब्ब (वि.) : क्षमा देने योग्य।

खमापन (नपुं.), क्षमा याचना करना।

खमा (स्त्री.) : क्षमा, सहनशीलता, धैर्य।

खमापेति (क्रि.) : क्षमा याचना करता है।

खम्भकत (वि.) : हाथों को कमर पर रखकर खंभे की तरह खड़ा हुआ।

खय (पु.) : क्षय, नाश।

खयानुपस्सना (स्त्री.) : संसार के क्षयशील स्वभाव का ज्ञान।

खर (वि.) : कठोर, तेज, दुखद।

खरत्त (नपुं.) / **खरता** (स्त्री.) : कठोरता।

खरपुत्त-जातक : राजा ने गाँव के लड़कों से नाग की रक्षा की (३८६)।

खरादिय-जातक : भानजे मृग ने मामा से मृगों की प्राण-रक्षा की विधि नहीं सीखी (१५)।

खल (नपुं.) : खलिहान।

खलग्ग (नपुं.) : धान का भूसा निकालने का आरंभ।

खलति (क्रि.) : स्खलित होता है, लड़खड़ाता है।

खलित (नपुं.) : स्खलन, अपराध।

खलीन (पु.) : (घोड़े की), लगाम।

खलु (अ.) : वास्तव में।

खलुङ्क (पु.) : घटिया किस्म का घोड़ा।

खल्लाट (वि.) : खल्वाट, गंजा।

खलोपि (स्त्री.) : एक प्रकार का बर्तन।

खळ : (वि.) कठोर, (पु.) दुष्ट पुरुष।

खाणु (पु.) : पेड़ का ठूँठ।

खात (वि.) : खोदा हुआ।

खादक (वि.) : खानेवाला।

खादति (क्रि.) : खाता है।

खादन (नपुं.) : खाना।

खादनीय (वि.) : खाने योग्य, (नपुं.) मिठाई।

खादापन (नपुं.) : खिलाना।

खादापित (वि.) : खिलाया गया।

खादापेति (क्रि.) : खिलाता है।

खादित / **खायित** (वि.) : खाया गया।

खायति (क्रि.) : प्रतीत होता है।

खार (पु.) : क्षार, खार।

खारिविध (नपुं.) : झोली, झोला।

खारी (स्त्री.) : बहंगी से लटकी हुई टोकरी, खरिया।

खारीकाज (पु., नपुं.) : बहंगी की टोकरी तथा बहंगी।

खालेति / **खाळेति** (क्रि.) : धोता है, कुल्ला करता है।

खिड्डा (स्त्री.) : क्रीड़ा।

खिड्डापदोसिक (वि.) : खेल-कूद के कारण खराब हुआ।

खिड्डारति (स्त्री.) : क्रीड़ा में रत होना।

खित्त (वि.) : फेंका हुआ।

खित्तचित्त (वि.) : विक्षिप्त-चित्त।

खिप (पु.) : जाल, फैलाई गई वस्तु।

खिपति (क्रि.) : फैलाता है।

खिपन (नपुं.) : फेंकना, फैलाना।

खिपित (वि.) : फेंका गया।

खिप्प (क्रि.वि.) : शीघ्र, क्षिप्र।

खिल (नपुं.) : कठोरता।

खीण (वि.) : क्षीण, क्षय-प्राप्त।

खीणबीज (वि.) : जन्म के बीज से रहित।

खीणासव (वि.) : जिसके आस्रव अर्थात् चित्त-मैल क्षीण हो गये।

खीयति (क्रि.) : क्षय होता है, नष्ट होता है।

खीर (नपुं.) : क्षीर, दूध।

खीरण्णव (पु.) : श्वेत समुद्र, क्षीरसागर।

खीरपक (वि.) : दूध चूसता हुआ।

खीरोदन (नपुं.) : दूध-भात।

खील (पु.) : कील, खूँटा।

खुंसेति (क्रि.) : गाली देता है।

खुज्ज (वि.) : कुबड़ा।

खुदा (स्त्री.) : क्षुधा, भूख।

खुद्दक (वि.) : छोटा, तुच्छ।

खुद्दकनिकाय : तिपिटक के पांच निकायों में से एक।

खुद्दकपाठ : खुद्दकनिकाय की पहली किताब।

खुद्दा (स्त्री.) : शरद की छोटी मक्खी, क्षुद्रा।

खुद्दानुखुद्दक (वि.) : छोटे-मोटे (नियम)।

खुप्पिपासा (स्त्री.) : भूख और प्यास।

खुभति (क्रि.) : क्षुब्ध होता है।

खुर (नपुं.) : उस्तरा, पशु का खुर।

खुरग्ग (नपुं.) : मुण्डन-संस्कार का स्थान।

खुरकोस (पु.) : उस्तरे का खोल ।

खुरचक्क (नपुं.) : उस्तरे जैसा तेज चक्र।

खुरधारा (स्त्री.) : उस्तरे की धार।

खुरप्प (पु.) : एक प्रकार का तीर।

खुरभण्ड (नपुं.) : नाई का सामान।

खुरमुण्ड (नपुं.) : मुँडा हुआ सिर।

खुरप्प-जातक : जंगल में सार्थवाहों को रास्ता दिखाते समय डाकुओं ने आक्रमण किया (२६५)।

खेट / खेटक (नपुं.) : ढाल।

खेत्त (नपुं.) : खेत, क्षेत्र।

खेत्तकम्म (नपुं.) : खेत में काम।

खेत्तगोपक (पु.) : खेत का रखवाला।

खेत्तसामिक (पु.) : खेत का स्वामी।

खेत्ताजीव (पु.) : किसान।

खेत्तूपम (नपुं.) : खेत / क्षेत्र के समान।

खेद (पु.) : अफसोस।

खेप (पु.) : फेंक।

खेपन (नपुं.) : काल-क्षेप।

खेपेति (क्रि.) : काल-क्षेप करता है।

खेम (वि.) : क्षेम, शान्ति।

खेमट्ठान (नपुं.) : शान्ति-स्थान, आसरा।

खेमप्पत्त (वि.) : क्षेम-प्राप्त।

खेमभूमि (स्त्री.) : कल्याण-भूमि।

खेमी (पु.) : सुखपूर्वक रहने वाला।

खेळ (पु.) : थूक।

खेळमल्लक (पु.) : थूकदान, पीकदान।

खो (अ.) : वास्तव में।

खोभ (पु.) : क्षोभ, गुस्सा।

खोम (नपुं.) : सन का कपड़ा।

ग

गगन (नपुं.) : आकाश, आसमान।

गगनगामी (वि.) : नभ-चर, आकाश में विचरने वाला।

गग्ग-जातक : छींकने पर 'दीर्घायु हो' कहना अनिवार्य। न कह सकने पर यक्ष का आहार बनना पड़ता था (१५५)।

गग्गरा (स्त्री.) : एक झील का नाम ।

गग्गरायति (क्रि.) : गर्जता है।

गग्गरी (स्त्री.) : लोहार की धौंकनी।

गङ्गा (स्त्री.) : नदी, गंगा-नदी।

गङ्गातीर (नपुं) : गंगा-तट, नदी का तीर।

गङ्गाद्वार (नपुं.) : नदी के समुद्र में गिरने की जगह।

गङ्गाधार (पु.) : गंगा की धारा, नदी का क्षेत्र।

गङ्गापार (नपुं.) : नदी / गंगा का दूसरा तट।

गङ्गासोत (पु.) : नदी / गंगा का स्त्रोत।

गङ्गामाल-जातक : उपोसथ-व्रतधारी नौकर निराहार रहकर मर गया (४२१)।

गङ्गेय्य (वि.) : गंगा-संबंधी।

गच्छ (पु.) : पौधा (गाछ)।

गच्छति (क्रि.) : जाता है।

गज (पु.) : हाथी।

गजकुम्भ (पु.) : हाथी का सिर।

गजपोतक (पु.) : हाथी का बच्चा।

गज्जति (क्रि.) : गर्जना करता है।

गज्जना (स्त्री.) : गर्जना ।

गज्जित (वि.) : गर्जित।

गज्जितु (पु.) : गरजने वाला।

गण (पु.) : समूह, दल, (भिक्षु-)संघ।

गणक (पु.) : हिसाब-किताब रखने वाला, मुनीम।

गणनपथातीत (वि.) : गिनती से बाहर।

गणना (स्त्री.) : संख्या, गिनती।

गणपूरक (वि.) : जिसके गण-पूर्ति हो।

गणपूरण (नपुं.) : गण-पूर्ति।

गणबन्धन (नपुं.) : सहयोग।

गणसङ्गणिका (स्त्री.) : मंडली में रहने की इच्छा।

गणाचरिय (पु.) : अनेकों का शिक्षक, गणाचार्य।

गणारामता (स्त्री.) : मंडली-प्रेम।

गणिका (स्त्री.) : वेश्या, सुंदरी।

गणित (वि.) : गिना गया, गणितशास्त्र।

गणी (पु.) : जिसके अनुयायी हो।

गणेति (क्रि.) : गिनता है।

गण्ठि (स्त्री.) : ग्रंथि।

गण्ठिकासाव (नपुं.) : ग्रंथि-युक्त काषाय वस्त्र।

गण्ठिट्ठान (नपुं.) : कठिन स्थल।

गण्ठिपद (नपुं.) : ग्रंथि-पद, कठिनाई से समझ में आने वाला पद।

गण्ठिपास (पु.) : बेड़ी।

गण्ड (पु.) : फोड़ा।

गण्डक : (वि.) फोड़ेवाला, (पु.) गैंडा।

गण्डम्ब : श्रावस्ती के द्वार पर स्थित आम्र-वृक्ष, जिसके नीचे भगवान बुद्ध ने यमक-पाटिहारिय नाम का चमत्कार दिखाया था कहा जाता है।

गण्डिका (स्त्री.) : भीतर से खोखला लकड़ी का लट्ठा, जिससे घण्टे बजाने का काम लिया जाता है।

गण्डी (स्त्री.) : घंटा, जल्लाद का ब्लाक, फोड़ों वाला।

गण्डुप्पाद (पु.) : पृथ्वी का कीड़ा।

गण्डूस (पु.) : मुँह-भर, कौर।

गण्हाति (क्रि.) : ग्रहण करता है।

गण्हापेति (क्रि.) : ग्रहण कराता है।

गत (वि.) : गया हुआ।

गतक (पु.) : संदेशवाहक।

गतट्ठान (नपुं.) : जाने की जगह।

गतद्ध / गतद्धी (वि.), जिसने अपना रास्ता पूरा कर लिया।

गतयोब्बन (वि.), जिसका यौवन चला गया।

गति (स्त्री.) : जाना, अवस्था, स्थिती।

गतिमन्तु (वि.) : दक्ष, होशियार।

गत्त (नपुं.) : शरीर, गात्र।

गथित / गधित (वि.) : बंधा हुआ।

गद (पु.) : रोग, वाणी।

गदति (क्रि.) : बोलता है।

गदा (स्त्री.) : एक प्रकार का आयुध।

गद्दुल (पु.) : चमड़े का पट्टा।

गद्दूहन (नपुं.) : दुहना।

गद्रभ (पु.) : गधा।

गन्तब्ब (वि.) : जाने योग्य।

गन्तु (पु.) : जाने वाला।

गन्थ (पु.) : ग्रंथ, किताब।

गन्थकार (पु.) : ग्रंथकार।

गन्थधुर (नपुं.) : पठन-पाठन का कार्य।

गन्थप्पमोचन (नपुं.) : बन्धन-मोक्ष।

गन्थति (क्रि.) : गांठ बँधवाता है।

गन्ध (पु.) : (सु-)गंध।

गन्धकुटि (स्त्री.) : भगवान बुद्ध के रहने की झोपड़ी।

गन्धचुण्ण (नपुं.), सुगंधित चूर्ण।

गन्धजात (नपुं.), सुगंधियों के प्रकार।

गन्धतेल (नपुं.) : सुगंधित तेल।

गन्धपञ्चङ्गुलिक (नपुं.) : सुगंधित तेल से सना हुआ पांच अंगुलियों का निशान।

गन्धब्ब (पु.) : संगीतकार, जन्म ग्रहण करने वाला जीव, गंधर्व।

गन्धब्बाधिप (पु.) : गंधर्वों का प्रधान।

गन्धमादन (पु.) : हिमालय का एक पर्वत।

गन्धवंस : म्यांमार में लिखा गया एक पालि इतिहास ग्रंथ। यह नन्दपञ्ञ आरण्यक की रचना माना जाता है।

गन्धसार (पु.) चंदन, चंदन-वृक्ष।

गन्धापण (पु.) : सुगंधित तेल बेचने वाले की दुकान।

गन्धार : सोलह जनपदों में से एक। वर्तमान कन्धार, जिसकी राजधानी तक्षशिला थी।

गन्धारी (स्त्री.) : गंधार से संबंधित, जादू-टोना।

गन्धिक / गन्धी (वि.) : सुगंधि वाला।

गन्धोदक (नपुं.) : सुगंधित जल।

गब्बित (वि.) : गर्वित, अहंकारी।

गब्भ (पु.) : अंदरूनी भाग, गर्भ।

गब्भगत (वि.) : गर्भाधान हुआ।

गब्भपरिहरण (नपुं.) : गर्भ-संरक्षण।

गब्भपातन (नपुं.) : गर्भ-पात।

गब्भमल (नपुं.) : बच्चे के जन्म के समय उसके शरीर के साथ लगा हुआ घृणित अंश।

गब्भर (नपुं.) : गुफा।

गब्भवुट्ठान (नपुं.) : प्रसव।

गब्भासय (पु.) : गर्भाशय, बच्चादानी।

गब्भिनी (स्त्री.) : गर्भिणी स्त्री।

गमन (नपुं.) : जाना।

गमनकारण (नपुं.) : जाने का कारण।

गमनन्तराय (पु.) : गमन में बाधा।

गमनागमन (नपुं.) : जाना आना।

गमनीय (वि.) : जाने योग्य।

गमिक (वि.) : जानेवाला।

गमिकवत्त (नपुं.) : यात्रा की तैयारी।

गमेति (क्रि.) : भेजता है, समझता है।

गम्भीर (वि.) : गहरा।

गम्भीरावभास (वि.) : गंभीरता की प्रतीति।

गम्म (वि.) : गँवार, ग्राम्य।

गय्ह (वि.) : ग्रहण करने योग्य।

गय्हति (क्रि.) : ग्रहण करता है।

गया : बोधि-वृक्ष तथा बनारस के बीच की सड़क पर स्थित प्रसिद्ध नगर।

गयासीस : गया के पास का एक पर्वत।

गरहति (क्रि.) : दोष देता है, निंदा करता है।

गरहन (नपुं.) : दोषारोपण।

गरहित-जातक : एक बंदर कुछ समय तक आदमियों में रहा। उसने जंगल में वापिस पहुंच कर अपने साथियों के सामने आदमियों के गर्हित जीवन का वर्णन किया (२१९)।

गरही (पु.) : दोषारोपण करनेवाला।

गरु (वि.) : भारी, गंभीर, सन्मान्य।

गरुक (वि.) : भारी, गंभीर

गरुकत (वि.) : सन्मानित।

गरुकरोति (क्रि.) : आदर करता है, सम्मान करता है।

गरुकातब्ब (वि.) : सम्मान के योग्य।

गरुकार (पु.) : सम्मान।

गरुगब्भा (स्त्री.) : गर्भिणी।

गरुट्ठानीय (वि.) : आचार्य।

गरुत्त (नपुं.) : गुरुत्व।

गरुळ (पु.) : एक काल्पनिक पक्षी।

गल (पु.) : गला।

गलग्गाह (पु.) : गले से पकड़ना।

गलति (क्रि.) : बहता है।

गलनाळी (स्त्री.) : गले की नाली।

गलप्पमाण (वि.) : गले तक।

गलवाटक (पु.) : गले का घेरा।

गलित (वि.) : बहा हुआ।

गव (पु.) : वृषभ, बैल, सांड।

गवक्ख (पु.) : गवाक्ष, झरोखा।

गवज / **गवय** (पुं.) : नील गाय।

गवपान (नपुं.) : खीर (दूध-भात)।

गवाघातन (नपुं.) : गो-हत्या।

गवि (पु.) : हव्य-सामग्री, घी।

गवेसक (वि.) : खोजनेवाला।

गवेसति (क्रि.) : खोजता है।

गवेसन (नपुं.) : गवेषणा, खोजना।

गवेसी (पु.) : खोजने वाला।

गह : (पु.) जो ग्रहण करता है, ग्रह (मंगल-ग्रह आदि); (नपुं.) : घर।

गहकारक (पु.) : घर का निर्माता।

गहकूट (नपुं.) : घर का शिखर।

गहट्ठ (पु.) : गृहस्थ, सांसारिक व्यक्ति।

गहण (नपुं.) : ग्रहण करना।

गहणिक (वि.) : अच्छी पाचन-शक्ति वाला।

गहणी (स्त्री.) : पाचन-शक्ति।

गहन (वि.) : घना।

गहनट्ठान (नपुं.) : जंगल में ऐसा स्थान जहां घूमना दुष्कर हो।

गहपतानी (स्त्री.) : गृह-पत्नी।

गहपति (पु.) : गृहपति।

गहपति-जातक : एक गृहस्थ की पत्नी, गाँव के मुखिया से फँसी थी। गृहस्थ जान गया। उसने मुखिया को पीटा (१९९)।

गहपतिमहासाल (पु.) : धनी गृहपति।

गहित (वि., कृ.) : गृहीत।

गळगळायति (क्रि.) : गल-गल शब्द करते हुए बरसता है।

गळोचि (स्त्री.) : गड्डुच।

गाथा (स्त्री.) : दो पंक्तियों का छन्द-विशेष, तिपिटक के नौ अंगों में से एक।

गाध : (वि.) गहरा, (पु.) गहराई।

गाधति (क्रि.) : दृढ (खड़ा) रहता है।

गान (नपुं.) : गाना।

गाम (पु.) : गाँव, ग्राम।

गामक (पु.) : एक छोटा गाँव।

गामघात (पु.) : गाँव की लूट।

गामजन (पु.) : गाँव के लोग।

गामजेट्ठ / गामभोजक (पु.) : गाँव का मुखिया।

गामणी (पु.), गांव की मुखिया, ग्रामणी।

गामदारक (पु.) : गाँव का लड़का।

गामदारिका (स्त्री.) : गाँव की लड़की।

गामद्वार (नपुं.) : गाँव का दरवाजा।

गामधम्म (पु.) : ग्राम्य-धर्म, मैथुन-धर्म।

गामवासी (पु.) : ग्राम-वासी।

गामसीमा (स्त्री.) : गाँव की सीमा।

गामी (वि.) : जाने वाला।

गायक (पु.) : गाने वाला।

गायति (क्रि.) : गाता है।

गायन (नपुं.) : गाना।

गायिका (स्त्री.) : गाने वाली ।

गारय्ह (वि.) : निंदनीय।

गारव (पु.) : गौरव।

गावी (स्त्री.) : गौ, गाय।

गावुत (नपुं.) : गव्यूति, दूरी का माप।

गावो (पु, बहुवचन) : पशु, मवेशी।

गाह (पु.) : पकड़, दृष्टि, मत।

गाहक / गाही (वि.) : लेने वाला, ग्रहण करने वाला, ग्राहक।

गाहति (क्रि.) : भीतर जाता है, डुबकी लगाता है।

गाहन (नपुं.) : भीतर जाना, डुबकी लगाना।

गाहपच्च (पु.) : गार्हपत्य, गृहपतित्व।

गाहापक (वि.) : ग्रहण करने वाला।

गाहापेति / गाहेति (क्रि.) : ग्रहण करवाता है।

गाळ्ह (वि.) : मजबूत, कसा हुआ।

गिङ्गमक (नपुं.) : आभरण- विशेष।

गिज्झ (पु.) : गीध।

गिज्झकूट : राजगृह (राजगिर) के पास का गृध्र-कूट पर्वत।

गिज्झ-जातक : कृतज्ञ गीधों ने जहाँ-तहाँ से लोगों के आभूषण आदि उठा-उठा लाकर सेठ के मकान में गिराने आरंभ किये (१६४)।

गिज्झ-जातक : सुपत्त गीध ने अपने पिता का कहना न मान जान गँवाई (४२७)।

गिज्झति (क्रि.) : लोभ करता है।

गिञ्जका (स्त्री.) : ईंट।

गिञ्जकावसथ (पु.) : ईंटों का बना घर।

गिद्ध (वि.) : लुब्ध।

गिद्धि (स्त्री.) : लोभ, आसक्ति।

गिद्धी (वि.) : लोभी।

गिनि (पु.) : अग्नि, आग।

गिम्ह (पु.) : गरमी, गरमी का मोसम ।

गिम्हान (पु.) : गरमी का समय।

गिम्हिक (वि.) : ग्रीष्म ऋतु संबंधी।

गिरग्गसमज्जा (स्त्री.) : समय-समय पर मनाया जाने वाला पहाड़वाला उत्सव।

गिरा (स्त्री) : वाणी।

गिरि (पु.) : पर्वत।

गिरिगब्भर (नपुं.) / **गिरिगुहा** (स्त्री.) : पर्वत-गुफा।

गिरिदन्त-जातक : अपने शिक्षक को लंगड़ाता देख घोड़ा भी लंगड़ाने लगा (१८४)।

गिरिब्बज : मगधों की पूर्व राजधानी।

गिरिराज (पु.) : मेरू पर्वत।

गिरिसिखर (नपुं.) : गिरि-शिखर।

गिलति (क्रि.) : निगल जाता है।

गिलन (नपुं.) : निगलना।

गिलान (वि.) : रोगी, बीमार।

गिलानपच्चय (पु.) : रोगी का पथ्य।

गिलानभत्त (नपुं.) : रोगी का भोजन।

गिलानसाला (स्त्री.) : रोगी-शाला।

गिलानालय (पु.) : रोग का बहाना।

गिलानुपट्ठान (नपुं.) : रोगी की सेवा।

गिलायति (क्रि.) : रोगी होता है, दर्द करता है।

गिलित (वि.) : खाया हुआ, निगला गया।

गिही (पु.) : गृहस्थ।

गिहीबन्धन (नपुं.) : गृही-बंधन।

गिहीभोग (पु.) : गृहस्थ के भोग।

गिहीव्यञ्जन (नपुं.) : गृहस्थ की विशेषताएं।

गिहीसंसग्ग (पु.) : गृहस्थों के साथ संसर्ग।

गीत (नपुं.) : गाना।

गीतरव / गीतसद्द (पु.) : गीत की आवाज।

गीवा (स्त्री.) : गर्दन, ग्रीवा।

गीवेय्यक (नपुं.) : गर्दन का गहना।

गुग्गुलु (पु.) : गुग्गल, गुग्गुल का पेड़।

गुञ्ञा (स्त्री.) : रत्ती-भर (तौल)।

गुण (पु.) : सद्गुण या दुर्गुण, धागा। (संख्या के साथ : **दिगुण** - दोहरा, द्विगुण)।

गुणक (वि.) : जिसके सिरे पर गाँठ हो।

गुणकथा (स्त्री.) : प्रशंसा \।

गुणकित्तन (नपुं.) : आत्म-प्रशंसा।

गुणगण (पु.) : गुणों का समूह।

गुणवन्तु (वि.) : गुणवान।

गुणानुपेत (वि.) : गुणी।

गुणहीन (वि.) : गुण-रहित।

गुण-जातक : शेर को गीदड़ ने दलदल में से निकाला (१५७)।

गुण्ठिक (वि.) : ढका हुआ।

गुण्ठिका (स्त्री.) : धागे का गोला।

गुण्ठेति (क्रि.) : लपटेता है।

गुत्त (वि.) : संरक्षित।

गुत्तद्वार (वि.) : संयतेन्द्रिय।

गुत्ति (स्त्री.) : संरक्षक।

गुत्तिक (पु.) : चौकीदार।

गुत्तिल-जातक : आचार्य गुत्तिल तथा उसके शिष्य मूसिल का मुकाबला (२४३)।

गुद (नपुं.) : गुदा।

गुम्ब (पु.) : झाड़ी।

गुम्बिय-जातक : सार्थवाह ने अपने सार्थ को जंगल की कोई भी चीज बिना उससे पूछे खाने के लिए मना किया (३६६)।

गुय्ह (वि.) : रहस्य, छिपाने योग्य।

गुय्हभण्डक (नपुं.) : पुरुष-लिंग अथवा स्त्री-लिंग।

गुरु (पु.) : शिक्षक, अध्यापक, आचार्य।

गुरुदक्खिणा (स्त्री.) : गुरु की दक्षिणा।

गुहा (स्त्री.) : गुफा।

गुळ (नपुं.) : गुड़, गोली, गेंद।

गुळकीळा (स्त्री.) : गोलियों की क्रीड़ा।

गुळिका (स्त्री.) : गोली।

गूथ (नपुं.) : गोबर, गूँह।

गूथपाणक (पु.) : गूँह में रहनेवाला कीड़ा।

गूथभक्ख (वि.) : गूँह खाने वाला।

गूथभाणी (पु.) : बुरा बोलने वाला।

गूथपाण-जातक : गोबर के कीड़े ने शराब पी ली। उसे नशा चढ गया (२२७)।

गूहति (क्रि.) : छिपाता है।

गूहन (नपुं.) : छिपाव।

गूहित (वि.) : छिपा हुआ।

गूळ्ह (वि.) : छिपा हुआ, गूढ।

गेण्डुक (पु.) : गेंद।

गेध (पु.) : लोभ, स्वार्थ।

गेधित (कृ.) : लुब्ध।

गेय्य (वि.) : गाने योग्य, तिपिटक के नौ अंगों में से एक, गेय्य अंश।

गेरुक (नपुं.) : गेरू का रंग।

गेलञ्ञ (नपुं.) : रोग, बीमारी।

गेह (पु., नपुं.) : घर, मकान, निवास।

गेहङ्गन (नपुं.) : घर का आंगन।

गेहजन (पु.) : परिवार के सदस्य।

गेहट्ठान (नपुं.) : घर के लिए जगह।

गेहद्वार (नपुं.) : घर का दरवाजा।

गेहनिस्सित (वि.) : घर पर आश्रित।

गेहप्पवेसन (नपुं.) : गृह-प्रवेश का संस्कार।

गेहसित (वि.) : गृही-जीवन संबंधी।

गो (पु., स्त्री.) : गाय, बैल।

गोकण्टक (नपुं.) : पशुओं के खुर।

गोकण्ण (पु.) : मृगविशेष।

गोकुल (नपुं.) : गो-घर, गौ-शाला।

गोगण (पु.) : पशु-समूह, मवेशी।

गोघातक (पु.) : कसाई।

गोकुलिक : वज्जिपुत्तकों का एक उपभेद।

गोचर (पु.) : चरागाह, विचरण स्थान।

गोचरगाम (पु.) : भिक्षाटन क्षेत्र।

गोच्छक (पु.) : गुच्छा।

गोट्ठ (नपुं.) : गौओं का बाड़ा।

गोण (पु.) : बैल, वृषभ।

गोणक (पु.) : एक प्रकार का बैल, ऊन का गलीचा।

गोतम (वि.) : गोतम-गोत्र का, शाक्यों का गोत्र।

गोतमी (स्त्री.) : गोतम गोत्र की।

गोत्त (नपुं.) : गोत्र, कुल।

गोत्रभू / गोत्तभू (वि.) : एक पारिभाषिक शब्द। वह जो सांसारिक न रहा, बल्कि निर्वाण जिसका उद्देश्य हो गया हो।

गोध-जातक : तपस्वी ने गोह-मांस के लोभ से गोह की हत्या करनी चाही (१३८)।

गोध-जातक : गोह-बच्चे ने गिरगिट-बालिका से यारी की (१४१)।

गोध-जातक : गोह ने ढोंगी तपस्वी को आश्रम त्यागने पर मजबूर किया (३२५)।

गोध-जातक : राजकुमार तथा उसकी भार्या को शिकारियों ने गोह का मांस दिया (३३३)।

गोधा (स्त्री) : गोह ।

गोधुम (पु.) : गेहूँ।

गोनस (पु.) : विषैला सर्प ।

गोपक (पु.) : पहरेदार, चौकीदार।

गोपानसी (स्त्री.) : कड़ियाँ, शंखलियाँ।

गोपानसिवकं : शहतीर की तरह टेढ़ा।

गोपाल / गोपालक (पु.) : ग्वाला, चरवाहा।

गोपी (स्त्री.) : ग्वाले या चरवाहे की स्त्री।

गोपुर (नपुं.) : द्वार।

गोपेति (क्रि.) : रक्षा करता है।

गोपेतु (पु.) : रक्षक।

गोप्फक (नपुं.) : गुलेल, टखना।

गोमय (नपुं.) : गोबर।

गोमिक / गोमी (वि.) : पशुओं का मालिक।

गोमुत्त (नपुं.) : गोमूत्र।

गोयूथ (पु.) : गौओं का झुंड।

गोरक्खा (स्त्री.) : गौ-रक्षा, गौ-पालन।

गोलोमि (स्त्री.) : सफेद दूर्वा, सफेद घास।

गोळक (पु., नपुं.) : गेंद।

गोसीस (पु.) : पीला चंदन।

घ

घंसेति (क्रि.) : रगड़ता है।

घट (पु.) : घड़ा।

घटक (पु., नपुं.) : छोटा बर्तन।

घट-जातक : कोसल नरेश के मंत्री को लेकर सुनाई गई जातक कथा (३५५)।

घट-जातक : किस प्रकार घट पंडित ने अपने भाई वासुदेव का कष्ट दूर किया (४५४)।

घटति (क्रि.) : कोशिश करता है, प्रयास करता है।

घटना (स्त्री.) : मेल।

घटा (स्त्री.) : भीड़।

घटासन-जातक : वृक्ष पर रहनेवाले पक्षियों को मार डालने के लिए जलाशय में रहनेवाले नाग-देवता ने आग भड़काई (१३३)।

घटिका (स्त्री.) : सुराही।

घटी (स्त्री.) : जल-पात्र।

घटीकार (पु.) : कुम्हार।

घटीयति (क्रि.) : संबंधित होता है।

घटीयन्त (नपुं.) : घटी-यंत्र, रहट।

घटेति (क्रि.) : प्रयत्न करता है।

घट्टन (नपुं.) : संघर्ष।

घट्टेति (क्रि.) : चोट पहुंचाता है, रुष्ट करता है।

घण्टा (स्त्री.) : घंटा, घंटी।

घत (नपुं.) : घृत, घी।

घतसित्त (वि.) : जिस पर घी डाला गया हो।

घन (वि.) : मोटा, स्थूल।

घनतम (वि.) : बहुत मोटा, अत्यंत स्थूल।

घनपुप्फ (नपुं.) : फूलों वाला गलीचा।

घनसार (पु.) : कपूर।

घनोपल (नपुं.) : ओले।

घम्म (पु.) : ऊष्णता, गरमी।

घम्मजल (नपुं.) : पसीना।

घम्माभितत्त (वि.) : गरमी से हैरान।

घर (नपुं.) : गृह, घर, मकान।

घरगोळिका (स्त्री.) : छिपकली।

घरणी (स्त्री.) : गृहिणी।

घरबन्धन (नपुं.) : विवाह।

घरमानुस (पु.) : घर के लोग।

घरसप्प (वि.) : धामिन (सांप)।

घराजिर (नपुं.) : घर का आंगन।

घरावास (पु.) : गृहस्थ जीवन।

घस (वि.) : खाने वाला।

घसति (क्रि.) : खाता है ।

घाण (नपुं.) : नाक, नासिका।

घाणविञ्ञाण (नपुं) : घ्राणेन्द्रिय के माध्यम से उत्पन्न होनेवाला ज्ञान।

घात (पु.) / **घातन** (नपुं.) : हत्या, घात।

घातक / **घाती** (पु.) : हत्यारा, लुटेरा।

घातापेति (क्रि.) : हत्या करवाता है, लुटवाता है।

घातेति (क्रि.) : हत्या करता है, लूटता है।

घायति (क्रि.) : सूंघता है।

घायित (वि.) : सूंघा हुआ।

घास (पु.) : भोजन, घास, जानवरों का आहार।

घासच्छादन (नपुं.) : भोजन-वस्त्र।

घासहारक (वि.) : घास लाने वाला।

घुट्ठ (वि.) : घोषित ।

घोटक (पु.) : बिना सधा हुआ घोड़ा।

घोर (वि.) : भयानक।

घोरतर (वि.) : अधिक भयानक।

घोस (पु.) : घोषणा, शब्द।

घोसक (पु.) : घोषणा करने वाला।

घोसापेति (क्रि.) : घोषणा करवाता है।

घोसिताराम : कोसम्बी का प्रसिद्ध विहार।

घोसेति (क्रि.) : घोषणा करता है।

च

च (अ.) : और, तब, अब।

चकित (वि.) : हैरान, भयभीत।

चकोर (पु.) : चकोर, एक पक्षी।

चक्क (नपुं.) : चक्र, चक्का, पहिया।

चक्कङ्कित (वि.) : चक्रांकित, चक्र के निशान वाला।

चक्कपाणी (पु.) : चक्रपाणि, विष्णु, पौराणिक देवता का नाम।

चक्कयुग (नपुं.) : पहियों का जोड़ा।

चक्करतन (नपुं.) : चक्रवर्ती राजा का रत्न-चक्र।

चक्कवत्ती (पु.) : चक्रवर्ती राजा।

चक्कवाक (पु.) : चकवा, चक्रवाक, एक पक्षी।

चक्कवाक-जातक : संतोष सौंदर्य प्रदान करता है जैसे चकवा-चकवी का, और लोभ सौंदर्य नष्ट करता है जैसे कोवे का (४३४)।

चक्कवाक-जातक : ऊपरी जातक के समान (४५१)

चक्कवाळ (पु.) : घेरा, क्षेत्र।

चक्कसमारूळ्ह (वि.) : चक्रों (गाड़ियों), पर चढे हुए।

चक्खु (नपुं.) : आँख, नयन।

चक्खुक (वि.) : आँख वाला।

चक्खुद (वि.) : आँख देने वाला, दृष्टि / ज्ञान देने वाला।

चक्खुधातु (स्त्री.) : दृष्टि।

चक्खुपथ (पु.) : दृष्टिपथ।

चक्खुभूत (वि.) : सम्यक्-दृष्टि वाला।

चक्खुमन्तु (वि.) : आँख वाला।

चक्खुलोल (वि.) : आँख का लोभी, (अनेक चीजें) देखने का लोभी।

चक्खुविञ्ञाण (नपु.) : दृष्टि के द्वारा प्राप्त ज्ञान।

चक्खुसम्फस्स (पु.) : चक्षु-स्पर्श, दृष्टि में आना।

चक्खुस्स (वि.) : आँख को अच्छा लगने वाला या आँख के लिए अच्छा।

चङ्कम (पु.) : चंक्रमण-भूमि, चंक्रमण करना।

चङ्कमन (नपुं.) : चंक्रमण करना।

चङ्कमति (क्रि.) : चंक्रमण करता है।

चङ्गवार (पु.) : दूध छानने का कपड़ा या छलनी।

चङ्गोटक (पु.) : छोटी टोकरी।

चच्चर (नपुं.) : आँगन, चौरस्ता।

चजति (क्रि.) : त्यागता है।

चजन (नपुं.) : त्याग।

चञ्चल (वि.) : अस्थिर, चंचल।

चटक (पु.) : चिड़ियाँ।

चणक (पु.) : चना।

चण्ड (वि.) : भयानक, प्रचंड, भयंकर।

चण्डपज्जोत : बुद्ध का समकालीन अवन्ति-नरेश।

चण्डासोक : सम्राट अशोक को दिया गया एक नाम।

चण्डाल (पु.) : जाति-बहिष्कृत अथवा अस्पृश्य।

चण्डालकुल (नपुं.) : अछूत कुल।

चण्डाली (स्त्री.) : चंडाल स्त्री।

चण्डिक्क (नपुं.) : भयानकता, प्रचंड-भाव।

चतु (वि.) : चार (४)।

चतुक्क (नपुं.) : चार का समूह, चौराहा।

चतुक्कण्ण (वि.) : चतुष्कोण।

चतुक्खत्तुं (क्रि.वि.) : चार बार।

चतुग्गुण (वि.) : चौगुना।

चत्तालीसति (स्त्री.) : चवालीस (४४)।

चतुज्जातिगन्ध (पु.) : चार प्रकार की सुगंधि।

चतुत्तिंसति (स्त्री.) : चौतीस (३४)।

चतुत्थ (वि.) : चौथा।

चतुत्थी (स्त्री.) : पक्ष (पखवाड़े) का चौथा दिन।

चतुद्दस (वि.) : चौदह (१४)।

चतुद्दिसा (स्त्री.), चारों दिशाएँ ।

चतुद्वार (वि.) : चारों द्वार।

चतुद्वार-जातक : इसी कथा का दूसरा नाम महामित्तविन्दक जातक भी है (४३९)।

चतुधा (वि.) : चार तरह से।

चतुनवुति (स्त्री.) : चौरानबे (९४)।

चतुपच्चय (पु.) : भिक्षु की चीवर आदि चार आवश्यकताएं।

चतुपण्णास (स्त्री.) : चौवन (५४)।

चतुपरिसा (स्त्री.) : चार प्रकार की परिषद अर्थात् भिक्खु, भिक्खुणियां, उपासक तथा उपासिकाएं।

चतुप्पद (पु.) : चतुष्पाद, चार पैरों वाला जानवर, पशु।

चतुपोसथिक-जातक : ४४१ वीं जातक का शीर्षक। वहाँ लिखा है कि यह पुण्णक जातक के अंतर्गत है। इस नाम की कोई जातक कथा नहीं है।

चतुब्बण्ण (पु.) : चतुर्वर्ण, चार वर्ण / जाति।

चतुब्बिध / चतुब्भिध (वि.) : चार प्रकार से।

चतुभाणवार : पांच निकायों में से और विशेष रूप से खुद्दकपाठ में से सत्ताईस उद्धरणों का एक संग्रह।

चतुभूमक (वि.) : चार तल्लों का।

चतुमट्ठ-जातक : चित्रकूट पर्वत से आये हंसों की कथा (१८७)।

चतुमधुर (नपुं.) : चार प्रकार के घी, मधु आदि माधुर्य।

चतुर (वि.) : चतुर, होशियार, बुद्धिमान।

चतुरोपधि (पु.) : चार प्रकार के बंधन।

चतुरङ्गिक (वि.) : चार हिस्सों वाला।

चतुरङ्गिनी (स्त्री.) : चार अंगों वाली सेना।

चतुरङ्गुल (वि.) : चार अंगुल भर।

चतुरस्स (वि.) : चौकोर।

चतुरस्सक (पु.) : चार तल्ले का महल।

चतुरंस (वि.) : चतुष्कोण।

चतुरासीति (स्त्री.) : चौरासी (८४)।

चतुवीसति (स्त्री.) : चौबीस (२४)।

चतुसट्ठि (स्त्री.) : चौंसठ (६४)।

चतुसत्तति (स्त्री.) : चौहत्तर (७४) ।

चत्त (वि.) : त्यक्त, त्यागा हुआ, छोड दिया गया।

चन (अ.) : 'कभी कभी' के अर्थ के वाचक, 'कुदाचन' शब्द का एक अंश।

चनं : देखिये **चन** ।

चन्द (पु.) : चाँद, चंद्रमा।

चन्दग्गाह (पु.) : चाँद-ग्रहण।

चन्दमण्डल (नपुं.) : चाँद की तश्तरी।

चन्दकिन्नर-जातक : बनारस-नरेश ने चंदा-किन्नरी पर आसक्त हो चंदा के पति चंद-किन्नर को मार डाला। चंदा-किन्नरी की स्वामिभक्ति संबंधी कथा (४८५)।

चन्दन : (पु.) चंदन का वृक्ष; (नपुं.) चंदन की लकड़ी।

चन्दनसार (पु.) : चंदन का सार।

चन्दाभ-जातक : चंद्र तथा सूर्य पर चित्त एकाग्र करने वाले आभास्वर लोग में उत्पन्न होते है (१३५)।

चन्दनिका (स्त्री.) : नाबदान।

चन्दप्पभा (स्त्री.) : चाँदनी, चंद्रप्रभा।

चन्दभागा (स्त्री.) : चंद्रभागा नदी।

चन्दिका (स्त्री.) : चाँदनी।

चन्दिमा (पु.) : चाँद।

चपल (वि.) : चंचल, अस्थिर।

चपलता (स्त्री.) : चंचलता, अस्थिरता।

चपुचपुकारकं (क्रि.वि.) : चप-चप आवाज करते हुए (भोजन करना)।

चमर / चमरी (पु.) : हिमालय-प्रदेश की सुरागाय।

चमू (स्त्री.) : सेना।

चमूनाथ / चमूपति (पु.) : सेनापति।

चम्पक (पु.) : चंपा।

चम्पा (स्त्री.) : इसी नाम की नदी के किनारे का एक नगर। यह अंग की राजधानी था। वर्तमान भागलपुर।

चम्पेय्यक (वि.) : चंपा संबंधी।

चम्पेय्य-जातक : मगध-नरेश ने चंपा नदी में रहनेवाले नागराज की सहायता से अंग-नरेश को हराया (५०६)।

चम्म (नपुं.) : चर्म, खाल।

चम्मकार (पु.) : चमार, चमड़े का काम करने वाला।

चम्मखण्ड (पु.) : आसन की तरह उपयोग में आने वाला चर्म-खंड।

चम्मपसिब्बक (पु.) : चमड़े का थैला।

चय (पु.) : संग्रह, ढेर।

चर / चरक (पु.) : घूमने वाला, चर-पुरूष (गुप्तचर)।

चरण (नपुं.) : चलना-फिरना, पैर, पांव, आचरण, व्यवहार।

चरति (क्रि.) : चलता-फिरता है, आचरण करता है।

चरहि (अ.) : अभी।

चरापेति (क्रि.) : चलाता है, आचरण कराता है।

चरित : (वि.) चला गया, आचरण किया हुआ; (नपुं.) चरित्र, (जीवन-)चरित।

चरिम (वि.) : अंतिम।

चरिया (स्त्री.) : आचरण, चरित।

चरियापिटक : खुद्दक निकाय के पंद्रह ग्रंथों में से एक। यह खुद्दक निकाय का अंतिम ग्रंथ माना जाता है।

चरु (पु.) : यज्ञीय द्रव्य।

चल (वि.) : अस्थिर।

चलचित्त (वि.) : अस्थिर चित्त।

चलति (क्रि.) : चंचल होता है, कांपता है।

चलन (नपुं.) : हिलना-डोलना, कांपना।

चवति (क्रि.) : गिरता है, पतन होता है, मरता है।

चवन (नपुं.) : पतन, मृत्यु।

चाग (पु.) : भेंट, त्याग।

चागानुस्सति (स्त्री.) : अपनी उदारता का अनुस्मरण।

चागी (पु.) : त्यागी।

चाटि (स्त्री.) : एक बर्तन।

चाटुकम्यता (स्त्री.) : चाटुकारिता, खुशामद।

चातक (पु.) : चातक पक्षी।

चातुद्दसी (स्त्री.) : पक्ष की चतुर्दशी।

चातुद्दिस (वि.) : चारों दिशाओं से संबंधित।

चातुद्दीपक (वि.) : चार द्वीपों पर छाया हुआ।

चातुम्महापथ (पु.) : चारों सड़कों के मिलने की जगह, चौरस्ता।

चातुम्महाभूतिक (वि.) : पृथ्वी, आप, तेज, वायु नाम के चारों महाभूतों से संबंधित।

चातुम्महाराजिक (वि.) : निम्नतम देवलोक में रहने वाले चातुर्महाराजिक देवताओं से संबंधित।

चातुरिय (नपुं.) : चतुराई।

चाप (पु.) : धनुष।

चापल्ल (नपुं.) : चपलता।

चामर (नपुं.) : चँवरी।

चामिकर (नपुं.) : स्वर्ण।

चार (पु.) : चलन।

चारक : (वि.) चलानेवाला, चालक; (पु.) कैदखाना।

चारण (नपुं.) : चलाया जाना, व्यवस्था।

चारिका (स्त्री.) : यात्रा।

चारित्त (नपुं.) : आदत, आचरण, अभ्यास।

चारु (वि.) : सुंदर, आकर्षक।

चारुदस्सन (वि.) : सुंदर।

चारेति (क्रि.) : चलाता है (इन्द्रियों को) दौड़ाता है।

चाल (पु.) : आघात।

चालेति (क्रि.) : चलाता है, हिलाता है, अस्थिर करता है।

चावना (स्त्री.) : गिरावट, हटाना।

चावेति (क्रि.) : गिराता है, हटाता है।

चि (अ.) : **कोचि** - कोई।

चिक्खति (क्रि.) : कहता है, घोषणा करता है।

चिक्खल्ल (नपुं.) : कीचड़, दलदल।

चिकिच्छति / **तिकिच्छति** (क्रि.) : चिकित्सा करता है, चिंतन करता है।

चिङ्गुलायति (क्रि.) : अपने इर्द गिर्द घूमता है।

चिच्चिटायति / **चिटचिटायति** (क्रि.) : चिट-चिट करता है।

चिञ्चा (स्त्री.) : इमली वृक्ष।

चिण्ण (वि.) : अभ्यस्त।

चित (वि.) : एकत्रित।

चितक (पु.) : चिता।

चिति (स्त्री.) : ढेर।

चित्त : (नपुं.) - १. चित्त, मन, विचार; २. चित्र, तस्वीर; (पु.) - चैत्र मास; (वि.) - नानाविध, सुंदर।

चित्तक : (नपुं.) तिलक, (पु.) एक प्रकार का मृग।

चित्तकत (वि.) : सजा हुआ, चित्रकृत।

चित्तकथिक / **चित्तकथी** (वि.) : श्रेष्ठ वक्ता।

चित्तकम्म (नपुं.) : चित्रकला, सज़ावट।

चित्तकार (पु.) : चित्रकार।

चित्तक्खेप (पु.) : चित्त का विक्षेप।

चित्ततर (वि.) : विचित्र-तर।

चित्तता (स्त्री.) : विचित्रता, चित्त-भाव।

चित्तपस्सद्धि (स्त्री.) : चित्त की शांति।

चित्तमुदुता (स्त्री.) : चित्त की कोमलता।

चित्तविक्खेप (पु.) : पागलपन।

चित्तविसुद्धि (स्त्री.) : चित्त की विशुद्धि।

चित्तसन्ताप (पु.) : दुःख।

चित्तसमथ (पु.) : चित्त की एकाग्रता।

चित्तसम्भूत-जातक : चित्त तथा सम्भूत दोनों चंडाल-भाइयों के जाति-अभिमानियों द्वारा पीटे जाने की कथा (४९८)।

चित्तागार (नपुं.) : चित्रागार।

चित्तानुपस्सना (स्त्री.) : चित्तानुपश्यना, चित्त को जानना।

चित्ताभोग (पु.) : विचार।

चित्तीकार (पु.) : आदर, सत्कार।

चित्तुजुकता (स्त्री.) : चित्त का सीधापन।

चित्तुत्रास (पु.) : चित्त का त्रास, भय।

चित्तुप्पाद (पु.) : चित्त की उत्पत्ति।

चिनाति (क्रि.) : ढेर लगाता है, संग्रह करता है।

चिन्तक (वि.) : सोचने वाला, विचारक।

चिन्तन (नपुं.) : सोचना।

चिन्ता (स्त्री.) : चिंता, विचार।

चिन्तामणि (पु.) : इच्छापूर्ति करनेवाली मणि।

चिन्तामय (वि.) : विचारयुक्त।

चिन्तित (वि., कृ.) : विचार किया हुआ, आविष्कृत।

चिन्ती (वि.) : सोचता हुआ, सोचने वाला।

चिन्तेतब्ब / **चिन्तेय्य** (वि.) : विचारणीय।

चिन्तेति (क्रि.) : सोचता है।

चिमिलिका (स्त्री.) : तकिये का खोल।

चिर (वि.) : बहुत देर तक रहने वाला।

चिरकाल (पु.) : दीर्घकाल।

चिरट्ठितिक (वि.) : चिरस्थायी।

चिरतर (वि.) :और भी अधिक देर।

चिरनिवासी (वि.) : देर से रहनेवाला।

चिरपब्बजित (वि.) : देर से प्रव्रजित।

चिरप्पवासी (वि.) : चिरकाल से प्रवास पर गया हुआ।

चिरत्तं (वि.) : चिरकाल का भाव, बहुत देर से।

चिरं (क्रि.वि.) : चिरकाल तक।

चिरस्सं (क्रि.वि.) : अति विलंब, अंत में।

चिराय (क्रि.वि.) : चिरकाल के लिए।

चिरायति (क्रि.) : देर करता है।

चिरेन (क्रि.वि.) : बहुत समय बाद।

चीनपिट्ठ (नपुं.) : लाल सीसा।

चीनरट्ठ (नपुं.) : चीन राष्ट्र।

चीर / चीरक (नपुं.) : छाल, छाल का कपड़ा।

चीरी (स्त्री.) : झींगुर।

चीवर (नपुं.) : बौद्ध भिक्षु का काषाय-वस्त्र।

चीवरकण्ण (नपुं.) : चीवर का कोना।

चीवरकम्म (नपुं.) : चीवर का बनाना।

चीवरकार (पु.) : चीवर बनाने वाला।

चीवरदान (नपुं.) : चीवर अथवा चीवरों का देना।

चीवरदुस्स (नपुं.) : चीवर बनाने के लिए वस्त्र।

चीवररज्जु (स्त्री.) : चीवर टांगने की रस्सी।

चीवरवंस (पु.), चीवर टांगने के लिए बांस।

चुण्ण (नपुं.) : चूर्ण।

चुण्णक (नपुं.) : सुगंधित चूर्ण।

चुण्णकजात (वि.) : चूर्ण बनी हुई, चूर्णकृत।

चुण्णविचुण्ण (वि.) : चूर्ण-विचूर्ण, पीसा हुआ।

चुण्णित (वि.) : चूर्ण किया हुआ।

चुण्णेति (क्रि.) : चूर्ण कर डालता है, पीसता है।

चुत (वि.) : गिरा हुआ।

चुति (स्त्री.) : च्युत होना, अदृश्य हो जाना।

चुदित / **चुदितक** (वि.) : दोषारोपित।

चुद्दस (वि.) : चौदह।

चुन्द : इस नाम का सुनार या लोहार। पावा का निवासी। कुसीनारा के रास्ते में पावा पहुँचने पर भगवान बुद्ध चुन्द कम्मारपुत्त के ही आम्रवन में ठहरे थे। उसी के यहां का भोजन भगवान का अंतिम भोजन सिद्ध हुआ।

चुन्दकार (पु.) : खरादने वाला।

चुबुक (नपुं.) : ठोड़ी।

चुम्बट / **चुम्बटक** (नपुं.) : गेंडुरी।

चुम्बति (क्रि.) : चूमता है।

चुल्ल (वि.) : छोटा।

चुल्लन्तेवासिक (पु.) : छोटा शिष्य।

चुल्लपितु (पु.) : चाचा।

चुल्लुपट्ठाक (पु.) : लघु-सेवक।

चुल्लकसेट्ठि-जातक : मरी चुहिया से आरंभ करके व्योपार द्वारा धनी हो जाने की जातक कथा (४)।

चुल्लकालिङ्ग-जातक : दन्तपुर नरेश कालिङ्ग की युद्ध-लिप्सा की कथा (३०१)।

चुल्लकुणाल-जातक : देखो **कुणाल-जातक**।

चुल्लधनुग्गह-जातक : तक्षशिला के आचार्य ने अपने धनुर्धारी शिष्य से अपनी बिटिया की शादी की (३७४)।

चुल्लधम्मपाल-जातक : रानी राजा का सत्कार करने के निमित्त खड़ी न हो सकी। राजा ने पुत्र के हाथ-पाँव कटवा दिये (३५८)।

चुल्लनन्दिय-जातक : ब्राह्मण ने बूढी बंदरी की हत्या की (२२२)।

चुल्लनारद-जातक : तपस्वी-पुत्र तरूणी पर आसक्त हुआ (४७७)।

चुल्लपदुम-जातक : राजा ने अपने सभी बेटों को देश-निकाला दिया (१९३)।

चुल्लपलोभन-जातक : राजकुमार को स्त्रियों से घृणा थी। धीरे धीरे एक नर्तकी उसे लुभाने में समर्थ हुई (२६३)।

चुल्लबोधि-जातक : माता-पिता के निधन के बाद पति-पत्नी तपस्वी बन गये (४४३)।

चुल्लसुतसोम-जातक : सोम-रस पेय करनेवाले राजकुमार की सोलह हजार रानियों की कथा (५२५)।

चुल्लहंस-जातक : नब्बे हजार सुनहरी बत्तखों के राजा की कथा (५३३)।

चूचुक (नपुं.), स्तन का अगला भाग।

चूलजनक-जातक : देखो **महाजनक-जातक**।

चूलवग्ग : विनय-पिटक के दोनों खन्धकों में से एक।

चूळा (स्त्री.) : सिर के बाल, जूड़ा।

चूळामणि (पु.) : चूड़े या जूड़े में पहनी जानेवाली मणि ।

चूळिका (स्त्री.) : बालों का गुच्छ।

चे (अ.) : यदि।

चेट / **चेटक** (पु.) : सेवक।

चेटिका / **चेटी** (स्त्री.) : सेविका।

चेत / **चेतो** (पु., नपुं.) : चित्त।

चेतना (स्त्री.), इरादा, आशय, उद्देश्य।

चेतयति / **चेतेति** (क्रि.) : विचार करता है।

चेतस (वि.) : मन (**पापचेतस** = पापी मन)।

चेतसिक (वि.) : चैतसिक, चित्तसंबंधी।

चेतापेति (क्रि.) : अदली-बदली करता है।

चेतिय (नपुं.) : चैत्य, धातु-गर्भ।

चेतियगब्भ (पु.) : चैत्य का गर्भ।

चेतियङ्गण (नपुं.) : चैत्य का आंगन।

चेतियपब्बत (पु.) : चैत्य-पर्वत, श्रीलंका के एक पर्वत का नाम।

चेतिय-जातक : चेति-नरेश, अपचर, तथा विश्व के प्रथम मिथ्यावादी की कथा (४२२)।

चेतोखिल (नपुं.) : चित्त-हानि।

चेतोपणिधि (स्त्री.) : निश्चय।

चेतोपरियञाण (नपुं.) : दूसरों के विचारों को जान लेने का ज्ञान।

चेतोपसाद (पु.) : चित्त की प्रसन्नता।

चेतोविमुत्ति (स्त्री.) : चित्त की विमुक्ति।

चेतोसमथ (पु.) : चित्त की शांति।

चेल (नपुं.) : वस्त्र।

चेलवितान (नपुं.) : चंदवा, तंबू, शामियाना।

चेलुक्खेप (पु.) : वस्त्रों का उछालना।

चोच (नपुं.) : केला (फल)।

चोचपान (नपुं.) : केले का पेय।

चोदक (पु.) : दोषारोपक।

चोदना (स्त्री.) : दोषारोपण।

चोदित (वि.) : दोषारोपित।

चोदेति (क्रि.) : दोषारोपण करता है।

चोपन (नपुं.) : चलन।

चोर (पु.) : चोर, डाकू।

चोरघातक (पु.) : जल्लाद।

चोरिका (स्त्री.) : चोरी।

चोरी (स्त्री.) : चोरिणी, चोट्टी।

चोरुपद्दव (पु.) : डाकुओं के द्वारा किया जानेवाला आक्रमण।

चोरेति (क्रि.) : चोरता है।

चोल / चोळ (पु.) : वस्त्र, चीथड़ा।

चोळक (नपुं.) : चीथड़ा।

चोळरट्ठ (नपुं.) : चोळ राष्ट्र।

चोळिय (वि.) : चोळ देश का।

छ

छ (वि.) : छह।

छकन (नपुं.) : अश्वादि की लीद।

छकल (पु.) : बकरा।

छक्क (नपुं.) : छह (चीजों / बातों) का समूह।

छक्खत्तुं (वि.) : छह बार।

छचत्तालीसति (स्त्री.) : छियालीस (४६)।

छट्ठ (वि.) : छठा।

छट्ठी (स्त्री.) : षष्ठी, छटवी विभक्ति।

छड्डुक (वि.) : फेंकने वाला।

छड्डन (नपुं.) : फेंकना।

छड्डनीय (वि.) : फेंकने योग्य।

छड्डापेति (क्रि.) : फिंकवाता है।

छड्डित (वि.) : फिंकवाया गया, छोड़ा / त्यागा गया।

छड्डेति (क्रि.) : फेंकता है, छोड़ता है।

छण (पु.) : त्यौहार, उत्सव।

छत्त (नपुं.) : छाता, छत्र।

छत्तकार (पु.) : छाता बनाने वाला।

छत्तगाहक / **छत्तपाणि** (पु.) : छाता ले चलने वाला।

छत्तदण्ड (नपुं.) : छाते की डंडी।

छत्तनाळि (स्त्री.) : दाते का बेंत।

छत्तमङ्गल (नपुं.) : छत्र चढाने का उत्सव।

छत्तिंसति / छत्तिंसा (स्त्री.) : छत्तीस (३६)।

छत्तुस्सापन (नपुं.) : राजकीय छत्र का उठाना।

छद (पु.) : छदन, ढाँकने का वस्त्र।

छदन (नपुं.) : छत।

छद्दन्त (वि.) : छह दाँतों वाला ।

छद्दन्त-जातक : हस्ति-राज छद्दन्त की कथा (५१४)।

छद्दिका (स्त्री.) : वमन।

छद्धा / छधा (क्रि.वि.) : छह प्रकार से।

छद्वारिक (वि.) : छह इंद्रियों से ससंबंधित।

छनवुति (स्त्री.) : छियानबे (९६)।

छन्द (पु.) : इच्छा, कामना।

छन्दक (नपुं.) : मत, चंदा।

छन्दराग (पु.) : उत्तेजक कामना।

छन्दागति (स्त्री.) : पक्षपात, उत्तेजना के कारण किया हुआ अनुचित आचरण।

छन्न (वि.) : ढका गया; ठिक, योग्य।

छन्न : गौतम बुद्ध का सारथी (बाद में), साथी।

छपञ्ञासा (स्त्री.) : छप्पन (५६)।

छप्पद (पु.) : शहद की मक्खी।

छब्बग्गिय (वि.) : षड्वर्गीय भिक्षु।

छब्बण्ण (वि.) : छह वर्णों का।

छब्बसिक (वि.) : छह-वार्षिक।

छब्बिध (वि.) : छह प्रकार का।

छब्बीसति (स्त्री.) : छब्बीस (२६)।

छमा (स्त्री.) : क्षमा (पृथ्वी), जमीन।

छम्भति (क्रि.) : भय से जड़ीभूत हो जाता है, स्तब्ध हो जाता है।

छम्भितत्त (नपुं.) : स्तंभित होना, जड़ता, बधीरता।

छम्भी (वि.) : स्तंभित, डरा हुआ।

छरस (पु.) : तिखा, मधुर आदि छह रस।

छव (पु.) : शव, लाश, मरा शरीर।

छवकुटिका (स्त्री.) : श्मशान।

छवट्ठिक (नपुं.) : शव की हड्डी।

छवदाहक (पु.) : लाश जलाने वाला ।

छवालात (नपुं.) : चिता की आग, चिता की जलती हुई लकड़ी।

छवक-जातक : राजा ने अपने गले का हार चांडाल को पहनाया (३०९)।

छवि (स्त्री.) : चमड़ी।

छविकल्याण (नपुं.) : चमड़ी का सौन्दर्य।

छविवण्ण (पु.) : चमड़ी का रंग।

छसट्ठि (स्त्री.) : छियासठ (६६)।

छसत्तति (स्त्री.) : छिहत्तर (७६)।

छळङ्ग (वि.) : छह अंगों से युक्त।

छळभिञ्ञा : छह प्रकार के अनुपम ज्ञान (-अभिज्ञा)।

छळंस (वि.) : षट्कोण।

छात (वि.) : भूखा।

छातक (नपुं.) : भूख, अकाल।

छादन (नपुं.) / **छादना** (स्त्री.) : आवरण, आच्छादन, शरीर ढकने के वस्त्र।

छादनीय (वि.) : ढकने योग्य।

छादेति (क्रि.) : ढकता है।

छाप / **छापक** (पु.) : पशु-शावक, पशुओं का छौना, बछड़ा।

छाया (स्त्री.) : छाया, साया, छांव।

छारिका (स्त्री.) : राख।

छाह (नपुं.) : छह दिन।

छिग्गल / **छिग्गळ** (नपुं.) : छिद्र।

छिज्जति (क्रि.) : कटता है, काटा जाता है।

छिद (वि.) : तोड़ता हुआ (बन्धनों को छिन्न-भिन्न करनेवाला)।

छिद्द (नपुं.) : छिद्र, सूराख।

छिद्दक (वि.) : छिद्र वाला।

छिद्दगवेसी (वि.) : दूसरों के दोष खोजने वाला, छिद्रान्वेषी।

छिद्दावच्छिद्दक (वि.) : छिद्रों से भरा हुआ।

छिद्दित (वि., कृ.) : छेदा हुआ।

छिन्दति (क्रि.) : काटता है, छेदता हैं।

छिन्दिय (वि.) : जो काटा जा सके, जो टूट सके।

छिन्न (वि.) : टूटा हुआ, नष्ट हुआ।

छिन्नास (वि.) : निराश।

छिन्नभत्त (वि.) : जिसे आहार न मिलता हो।

छिन्निरियापथ (वि.) : जो चल-फिर न सकता हो।

छुद्ध (वि.) : प्रक्षिप्त, फेंका गया, तुच्छ।

छुपति (क्रि.) : स्पर्श करता है।

छुपन (नपुं.) : स्पर्श।

छुरिका / छूरिका (स्त्री.) : छुरी, चाकू।

छेक (वि.) : दक्ष, होशियार।

छेकता (स्त्री.) : दक्षता, होशियारी।

छेज्ज : (वि.) काट डालने योग्य, (नपुं.) अंग-छेद द्वारा दिया जानेवाला दंड।

छेतब्ब (वि., कृ.) : काट डालने योग्य।

छेत्तु (पु.) : काटने वाला।

छेत्वा / छेत्वान (पू.क्रि.) : काटकर।

छेद (पु.) / **छेदन** (नपुं.) : काट, काटना।

छेदक (पु.) : काटने वाला।

छेदापन (नपुं.) : कटवाना।

छेदापेति (क्रि.) : कटवाता है।

छेप्पा (स्त्री.) : पूँछ, दुम।

ज

जगती (स्त्री.) : (**जगति** - समास पदों में ही) पृथ्वी, दुनिया।

जगतिप्पदेस (पु.) : पृथ्वी-प्रदेश, पृथ्वी पर कोई एक प्रदेश।

जगतिरुह (पु.) : वृक्ष, पेड़।

जग्गति (क्रि.) : देख-भाल करता है, पोषण करता है, जागता रहता है।

जग्गन (नपुं.) / **जग्गना** (स्त्री.) : जागरण।

जग्घति (क्रि.) : मजाक बनाता है, हँसता है।

जग्घना (स्त्री.) : हँसी, मजाक।

जग्घित (नपुं.) : मजाक।

जङ्गम (वि.) : चल (संपत्ति)।

जङ्गल (नपुं.) : अरण्य, रेगिस्तान।

जङ्घपेसनिक : (नपुं.) संदेश-वाहन, (पु.) संदेश-वाहक।

जङ्घमग्ग (पु.) : पगडंडी।

जङ्घा (स्त्री.) : **जाँघ** ।

जङ्घाबल (नपुं.) : जाँघ की शक्ति।

जङ्घाविहार (पु.) : सैर, घूमना।

जङ्घेय्य (नपुं.) : जाँघ-भर ढकने का वस्त्र।

जच्च (वि.) : जन्म-संबंधी।

जच्चन्ध (वि.) : जन्म से अंधा।

जच्चा : जन्म से।

जज्जर / **जज्जरित** (वि.) : जरा से जर्जरित, दुर्बल।

जञ्ञ (वि.) : पवित्र, श्रेष्ठ, आकर्षक, कुलीन।

जट (नपुं.) : मूठ, मुठिया।

जटा (स्त्री.) : जटा (केश), पेड़ों की उलझी डालियाँ (आलंकारिक अर्थ में), कामनाओं का उलझाव।

जटाधर (पु.) : जटाधारी।

जटित (वि.) : उलझा हुआ।

जटी / जटिय / जटिल (पु.) : जटाधारी तपस्वी।

जठर (पु., नपुं.) : पेट।

जठरग्गि (पु.) : जठराग्नि, भूख।

जण्णु / जण्णुक (नपुं.) : घुटना।

जण्णुमत्त (पु.) : घुटने तक गहरा।

जतु (नपुं.) : लाख।

जतुका (स्त्री.) : चमगादड़।

जतुमट्ठक (नपुं.) : लाख-बंद।

जत्तु (नपुं.) : कंधा, कंधे की हड्डी।

जन (पु.) : आदमी, लोग।

जनकाय (पु.) : जनता।

जनक (पु.) : उत्पन्न करनेवाला, पिता।

जनन (नपुं.) : उत्पत्ति, जन्म।

जननी (स्त्री.) : माँ, जननी।

जनपद (पु.) : प्रांत, देश, देहात, काशी-कोसल आदि सोलह जनपद।

जनपदकल्याणी (स्त्री.) : देश की सुंदरतम स्त्री।

जनपदचारिका (स्त्री.) : देश-भ्रमण।

जनसम्मद्द (पु.) : लोगों की भीड़।

जनसन्ध-जातक : जनसंघ की दानशीलता की जातक कथा (४६८)।

जनाधिप (पु.) : राजा।

जनिका (स्त्री.) : माँ, जन्म देनेवाली।

जनित (वि.) : उत्पन्न हुआ।

जनिन्द (पु.) : राजा।

जनेति (क्रि.) : उत्पन्न करता है।

जनेतु (वि.) : उत्पन्न करने वाला।

जनेत्ती (स्त्री.) : माँ, जन्म देनेवाली।

जन्ताघर (नपुं.) : बाष्प-स्नान का घर।

जन्तु (पु.) : जीव।

जप (पु.) : जपना।

जपति (क्रि.) : जाप करता है।

जपन (नपुं.) : जाप करना, अस्पष्ट बोलना, फुसफुसाना।

जपित (वि.) : जप किया हुआ।

जपा (स्त्री.) : जवा, अड़हुल।

जप्पना / जप्पा (स्त्री.) : लोभ, जल्पना।

जम्बार / जम्बीर (पु.) : नींबू, नारंगी।

जम्बाली (स्त्री.) : गंदा तालाब।

जम्बु (स्त्री.) : जामुन।

जम्बुक (पु.) : गीदड़।

जम्बुक-जातक : गीदड़ ने हाथी पर आक्रमण किया। हाथी ने उसे पैरों तले कुचल दिया (५३५)।

जम्बुखादक-जातक : लोमड़ी की खुशामद के चक्कर में कौवे ने लोमड़ी के लिए फल गिराये (२९४)।

जम्बुदीप (पु.) : जामुन का देश, चारों महाद्वीपों में से एक, भारत का प्राचीन नाम।

जम्बुसण्ड (पु.) : जामुन का बगीचा।

जम्बोनद (नपुं.) : सोने (स्वर्ण) का प्रकार।

जम्भति (क्रि.) : अंगड़ाई लेता है, जंभाई लेता है।

जम्भना (स्त्री.) : जंभाई लेना।

जम्म (वि.) : निकृष्ट, तिरस्कृत।

जय (पु.) : विजय।

जयग्गाह (पु.) : विजय, पाँसे का अनुकूल पड़ना।

जयति (क्रि.) : जीतता है।

जयद्दिस-जातक : कम्पिल्ल-नरेश पञ्चाल के पुत्रों को एक चुड़ैल दो बार खा गई (५१३)।

जयपान (नपुं.) : विजय-पान।

जयम्पति (पु.) : पत्नी तथा पति।

जयसुमन (नपुं.) : विजय-सुमन।

जया (स्त्री.) : पत्नी।

जर : (पु.) ज्वर, (वि.) बूढ़ा।

जरग्गव (पु.) : बूढ़ा बैल।

जरता / जरा (स्त्री.) : बुढ़ापा।

जराजज्जर / जराजिण्ण (वि.) : बुढ़ापे से जर्जरित, विकल, दुर्बल।

जरादुक्ख (नपुं.) : बुढ़ापे का दुःख।

जराधम्म (वि.) : ह्रास-धर्म।

जराभय (नपं.) : बुढ़ापे का भय।

जरुदपान-जातक : धन के मोह में अधिक और अधिक खोदने वाले सार्थों ने प्राण गंवाये (२५६)।

जरूदपान (नपुं.) : पुराना कुंआ।

जल (नपुं.) : पानी।

जलगोचर / **जलचर** (पु.) : पानी में रहने वाला, मछली।

जलज (नपुं.) : कमल।

जलति (क्रि.) : चमकता है, जलता है।

जलद (पु.) : बादल।

जलधि / **जलनिधि** (पु.) : समुद्र।

जलन (नपुं.) : चमक, जलना, ज्वलन।

जलनिग्गम (पु.) : जल का बहाव, नाली।

जलाधार (पु.) : जल-संग्रह-स्थल ।

जलालय / **जलासय** (पु.) : झील, जलाशय।

जलाबु (पु.) : गर्भाशय।

जलाबुज (वि.) : गर्भ से उत्पन्न होने वाले।

जलूका (स्त्री.) : जोंक।

जल्ल (नपुं.) / **जल्लिका** (स्त्री.) : गंदगी, मैलापन।

जव (पु.) : गति, शक्ति।

जवति (क्रि.) : दौडता है।

जवन (नपुं.) : दौड।

जवनपञ्ञ (वि.) : क्षिप्र-प्रज्ञा।

जवनहंस-जातक : हंस-राज तथा बनारस-नरेश की मैत्री की कहानी (४७६)।

जवसकुण-जातक : कठफोडे ने शेर के मुंह में से फंसी हुई हड्डी निकाली (३०८)।

जवनिका (स्त्री.) : पर्दा।

जहति / जहाति (क्रि.) : त्यागता है, छोड़ता है।

जहित (वि.) : छोड़ा हुआ, त्यक्त।

जळ (वि.) : जड़, अचेतन।

जागर (वि.) : जागने वाला।

जागरण (नपुं.) : जागते रहना।

जागर-जातक : वृक्ष देवता ने तपस्वी से प्रश्न पूछा (४१४)।

जागरति (क्रि.) : जागता रहता है, पहरा देता है।

जागरिय (नपुं.) : जाग्रत।

जागरियानुयोग (पु.) : जागते रहना।

जाणु (पु.) : घुटना।

जाणुमण्डल (नपुं.) : टखना।

जाणुमत्त (वि.) : घुटने तक।

जात : (वि.) उत्पन्न, घटित; (नपुं.) संग्रह, प्रकार।

जातदिवस (पु.) : जन्म दिन।

जातरूप (नपुं) : सोना।

जातवेद (पु.) : अग्नि।

जातस्सर (पु., नपुं.) : एक प्राकृतिक झील।

जातक (नपुं.) : जन्मकथा, सुत्तपिटक के खुद्दक निकाय का दसवां ग्रंथ, जिसमें बुद्ध के पूर्व जन्मों की कथाओं का वर्णन है।

जातकट्ठकथा : जातक की अट्ठकथा। इसमें जातक के पद्य-भाग का संबंधित गद्य विस्तार है।

जातकभाणक (पु.) : जातक कथा सुनाने वाला।

जातत्त (नपुं.) : उत्पत्ति-भाव।

जाति (स्त्री.) : जन्म, पुनर्जन्म, जाति (वंश-परंपरा)।

जातिक (वि.) : जन्म से नियुक्त, जातिगत, जाति-संबंधी।

जातिकोस (पु.), जावित्री का छिलका।

जातिक्खय (पु.), पुनर्जन्म की संभावना का न रहना।

जातिक्खेत्त (नपुं.) : जन्म-स्थान।

जातित्थद्ध (वि.) : जन्माभिमानी।

जातिनिरोध (पु.) : पुनर्जन्म का निरोध।

जातिफल (नपुं.) : जावित्री।

जातिमन्तु (वि.) : अच्छी जाति का, गुणवान।

जातिवाद (पु.) : जाति (वंश परंपरा) के संबंध में विवाद।

जातिसम्पन्न (वि.) : अच्छी जाति का।

जातिसुमना (स्त्री.) : चमेली।

जातिस्सर (वि.) : पूर्व जन्मों की स्मृति।

जातिहिङ्गुलक (नपुं.) : सेंदूर।

जातु (अ.) : निश्चय से।

जानन (नपुं.) : ज्ञान, पहचान।

जाननक (वि.) : जानने वाला।

जाननीय (वि.) : जानने योग्य।

जानपद / जानपदिक : (वि.) जनपद संबंधी, (पु.) गँवार, देहाती।

जानाति (क्रि.) : जानता है।

जानापेति (क्रि.) : जनवाता है

जानि (स्त्री.) : हानि, पत्नी।

जानिपति (पु.) : पत्नी तथा पति।

जामातु (पु.) : जँवाई, दामाद।

जायति (क्रि.) : उत्पन्न होता है।

जायत्तन (नपुं.) : पत्नीत्व।

जायन (नपुं.) : जन्म, उत्पन्न होना।

जाया (स्त्री.) : पत्नी।

जायापति (पु.) : पत्नी तथा पति।

जार (पु.) : यार, उपपति।

जारत्तन (नपुं.) : यारी, उपपतित्व।

जारी (स्त्री.) : छिनाल, उपपत्नी।

जाल (नपुं.) : (मछली पकडने का आदि) जाल, उलझन।

जालक (पु.) : छोटा जाल, कोंपल।

जालक्खिक (नपुं.) : जालरंध्र।

जालपूव (पु.) : पुआ।

जाला (स्त्री.) : ज्वाला, अग्नि की लपटे।

जालाकुल (वि.) : ज्वालाओं से घिरा।

जालिक (पु.) : जाल का उपयोग करने वाला, मछुआ।

जालिका (स्त्री.) : लोह-कवच, जाली का बना कवच।

जालिनी (स्त्री.) : तृष्णा, आसक्ति, चाहत।

जालेति (क्रि.) : जलाता है।

जिगिंसक (वि.) : इच्छुक।

जिगिंसति (क्रि.) : इच्छा करता है।

जिगुच्छक (वि.) : जिगुप्सा करने वाला, घृणा करने वाला।

जिगुच्छति (क्रि.) : घृणा करता है।

जिगुच्छन (नपुं.) / **जिगुच्छा** (स्त्री.) / **जिगुच्छना** (स्त्री.) : घृणा, अरुचि।

जिघच्छति (क्रि.) : भूखा होता है, खाना चाहता है।

जिघच्छा (स्त्री.) : भूख।

जिञ्जुक (पु.) : जंगली गुंजा, घुंघची।

जिण्ण (वि.) : बूढा, जिर्ण, थका।

जिण्णवसन (नपुं.) : पुराना वस्त्र।

जित (वि.) : जीता हुआ, जीत लिया गया।

जितत्त : (नपुं.) जीत, (वि.) आत्मविजयी।

जिन (पु.) : विजेता, जीतने वाला, बुद्ध।

जिनचक्क (नपुं.) : बुद्ध मत।

जिनपुत्त (पु.) : बुद्ध-पुत्र।

जिनसासन (नपुं.) : बुद्ध की शिक्षा।

जिनाति (क्रि.) : जीतता है।

जिम्ह (वि.) : टेढ़ा, बेईमान।

जिया (स्त्री.) : धनुष की डोरी।

जिव्हा (स्त्री.) : जीभ।

जिव्हग्ग (नपुं.) : जीभ का सिरा।

जिव्हायतन (नपुं.) : रसेन्द्रिय, रसना।

जिव्हाविञ्ञाण (नपुं.) : जिव्हा के द्वारा प्राप्त ज्ञान।

जिव्हिन्द्रिय (नपुं.) : जिव्हा, चखने की क्षमता।

जीन (वि.) : हीन, पुराना।

जीमूत (पु.) : बादल।

जीयति (क्रि.), जरा को प्राप्त होता है, बूढा होता है, पुराना पडता है।

जीरक (नपुं.) : जीरा।

जीरति (क्रि.) : जरा को प्राप्त होता है, घटता है, पुराना पडता है।

जीरण (नपुं.) : जीर्णता।

जीरापेति (क्रि.) : जरा को प्राप्त होने का कारण होता है, हजम कराता है।

जीव (पु.) : जीवन, जीव, प्राणी।

जीवक (पु.) जीने वाला।

जीवक : बुद्ध का समकालीन प्रसिद्ध वैद्य, बुद्ध का अनुयायी भी।

जीवकम्बवन : राजगृह का वह आम्रवन, जो जीवक ने बुद्ध-प्रमुख भिक्षु संघ को दान कर दिया था।

जीवति (क्रि.) : जीता है।

जीवदन्त (पु.) : जीवित हाथी के दाँत।

जीवन (नपुं.) : जीना।

जीविका (स्त्री.) : जीवन-यात्रा का साधन।

जीवित (नपुं.) : जीवन, आयु।

जीवितक्खय (पु.) : जीवन की हानि।

जीवितदान (नपुं.), जीवन का दान।

जीवितपरियोसान (नपुं.) : जीवन का अंत।

जीवितमद (पु.) : जीवन मद।

जीवितवुत्ति (स्त्री.) : जीविका।

जीवितसङ्खय (पु.) : जीवन का अंत।

जीवितसंसय (पु.) : जीवन के लिए खतरा।

जीवितासा (स्त्री.) : जीवनाशा, जीने की आशा।

जीवितिन्द्रिय (नपुं.) : जान, जीवन।

जीवी (पु.) : जीने वाला।

जुण्ह (वि.) : चमकदार।

जुण्हपक्ख (पु.) : शुक्ल पक्ष।

जुण्ह-जातक : राजकुमार जुण्ह ने भिक्षा पात्र तोडने के बदले में राजा बनने पर ब्राह्मण को दान दिया (४५६)।

जुण्हा (स्त्री.) : चाँदनी, चाँदनी रात।

जुति (स्त्री.) : द्युति, चमक।

जुतिक (वि.) : चमकदार।

जुतिधर / **जुतिमन्तु** (वि.) : प्रकाशमान।

जुहति (क्रि.) : आहुति डालता है।

जुहन (नपुं.) : यज्ञ।

जूत (नपुं.) : द्यूत, जुआ।

जूतकार (पु.) : जुआरी।

जे : दासी अथवा नीच कुल की स्त्री को संबोधन करने के लिए अव्यय-पद।

जेगुच्छ (वि.) : घृणित।

जेगुच्छी (पु.) : घृणा करने वाला।

जेट्ठ (वि.) : ज्येष्ठ, बड़ा।

जेट्ठतर (वि.) : ज्येष्ठतर।

जेट्ठभगिनी (स्त्री.) : बड़ी बहन।

जेट्ठभातु (पु.) : बड़ा भाई।

जेट्ठमास : ज्येष्ठ महीना।

जेट्ठापचायन (नपुं.) : बड़ों का सम्मान।

जेट्ठापचायी (वि.) : बड़ों का सम्मान करने वाला।

जेतब्ब / जेय्य (वि., कृ.) : जीतने योग्य।

जेतवन : श्रावस्ती का वह प्रसिद्ध उद्यान, जिसमें अनाथपिण्डिक का जेतवनाराम बना था।

जेति (क्रि.) : जीतता है।

जोतक (वि.) : द्योतक, स्पष्ट करने वाला।

जोतति (क्रि.) : चमकता है।

जोतन (नपुं.) / **जोतना** (स्त्री.) : चमक, व्याख्या।

जोति : (स्त्री.) ज्योति, प्रकाश; (नपुं.) तारा, (पु.) आग।

जोतिपासाण (पु.) : चकमक पत्थर।

जोतिसत्थ (नपुं.) : ज्योतिष शास्त्र।

जोतेति (क्रि.) : प्रकाशित करता है।

झ

झत्वा (पू.क्रि.) : जलाकर।

झस (पु.) : मछली।

झान (नपुं.) : ध्यान।

झानङ्ग (नपुं.) : ध्यान का एक अंग।

झानरत (वि.) : ध्यान-रत।

झानविमोक्ख (पु.) : ध्यान द्वारा विमुक्ति।

झानसोधक-जातक : "न-संज्ञा, न-असंज्ञा" की व्याख्या के संबंध में कथा (१३४)।

झानिक (वि.) : जिसने ध्यान प्राप्त किया है, ध्यान संबंधी।

झापक (पु.) : आग लगाने वाला।

झापन (नपुं.) : आग लगाना।

झापित (वि.) : जलाया गया।

झापेति (क्रि.) : जलाता है।

झाम / झामक (वि.) : जला हुआ।

झायक / झायी (पु.) : ध्यानी, ध्यान लगाने वाला।

झायति (क्रि.) : ध्यान लगाता है, आग जलाता है।

झायन (नपुं.) : ध्यान लगाना, आग जलाना।

ञ

ञत्त (नपुं.) : ज्ञान।

ञत्ति (स्त्री.) : घोषणा।

ञत्वा (पू. क्रि.), जानकर ।

ञापित (वि.) : ज्ञपित, प्रकट, घोषित।

ञाण (नपुं.) : ज्ञान, बुद्धि।

ञाणकरण (वि.) : ज्ञान देने वाला।

ञाणचक्खु (नपुं.) : ज्ञान की आँख।

ञाणजाल (नपुं.) : ज्ञान-दर्शन, संपूर्ण ज्ञान, ज्ञान का विस्तार।

ञाणदस्सण (नपुं.) : ज्ञान-दर्शन, संपूर्ण ज्ञान।

ञाणविप्पयुत्त (वि.) : ज्ञान-शून्य।

ञाणसम्पयुत्त (वि.) : ज्ञान युक्त।

ञाणी (वि.) : ज्ञानी, बुद्धिमान।

ञात (वि.) : ज्ञात, प्रसिद्ध, साक्षात्कृत।

ञातक / ञाति (पु.) : रिश्तेदार।

ञातिकथा (स्त्री.) : रिश्तेदारों की चर्चा।

ञातिक्खय (पु.) : ज्ञतिक्षय, रिश्तेदारों का विनाश।

ञातिधम्म (पु.) : रिश्तेदारों का कर्तव्य।

ञातिपरिवट्ट (नपुं.) : रिश्तेदारों की मंडली।

ञातिपेत (पु.) : मृत रिश्तेदार।

ञातिव्यसन (नपुं.) : रिश्तेदारों का दुःख।

ञातिसङ्गह (पु.) : रिश्तेदारों के साथ सद्व्यवहार।

ञातिसालोहित (पु.) : संबंधी तथा रक्त-संबंधी।

ञातुं (अ.) : जानने के लिए।

ञापन (नपुं.) : घोषणा।

ञापेति (क्रि.) : प्रकट करता है, घोषित करता है।

ञाय (पु.) : व्यवस्था, पद्धति, उचित ढंग।

ञायपटिपन्न (वि.) : सुपथगामी।

ञेय्य (वि.) : ज्ञान का विषय।

ञेय्यधम्म (पु.) : जिसे सीखना या जानना योग्य हो।

ट

टण्क (पु.) : पत्थर काटने की छैनी।

टीका (स्त्री.) : व्याख्या, परिभाषा, अर्थ।

टीकाचरिय (पु.) : अनुटीकाकार, व्याख्याकार, भाष्यकार।

ठ

ठत्वा (पू.क्रि.) : खड़े होकर।

ठपन (नपुं.) / **ठपना** (स्त्री.) : स्थापित करना।

ठपापेति (क्रि.) : स्थापित कराता है।

ठपित (वि.) : स्थापित।

ठपेति (क्रि.) : रखता है, निश्चित करता है।

ठान (नपुं.) : स्थान, कारण, रुकना, खड़े रहना।

ठानसो (क्रि.वि.) : सकारण।

ठानीय (नपुं.) : स्थानीय, स्थान देने योग्य।

ठापक (वि.) : स्थापित करने वाला या रखने वाला।

ठायी (वि.) : स्थायी।

ठित (वि.) : स्थित।

ठितक (वि.) : खड़ा होने वाला।

ठितचित्त (वि.) : स्थित-चित्त ।

ठितट्ठान (नपुं.) : वह स्थान जहाँ कोई (खड़ा) था।

ठितत्त : (नपुं.) स्थितत्व, रुकने का / ठहरने का भाव; (वि.) संयत।

ठिति (स्त्री.) : स्थिति।

ठितिक (वि.) : निर्भर, स्थायी।

ठितिभागीय (वि.) : स्थायित्व से संबंधित।

ड

डंस (पु.) : डांस, एक प्रकार की मक्खी ।

डय्हति (क्रि.) : जलाया जाता है।

डसति (क्रि.) : डंक मारता है, डसता है, काटता है।

डहति (क्रि.) : जलाता है।

डाक (पु., नपुं.) : खाने योग्य पौधे।

डाह (पु.) : चमक, गरमी, जलन, द्वेष, नफरत।

डीयन (नपुं.) : उड़ना।

डेति (क्रि.) : उड़ता है।

त

त (सर्व.) : वह; इसके कुछ रूप है – **सो** (पु.), **सा** (स्त्री.), **तं** (नपुं.)।

तक्क (पु.) : विचार, तर्क।

तक्क (नपुं.) : तक्र, मट्ठा, छाछ, खट्टा।

तक्क-जातक : तपस्वी ने गंगानदी में से डूबती हुई सेठ-कन्या को उबारा (६३)।

तक्कन (नपुं.) : तर्क करना, विचार करना।

तक्कर : (वि.) कर्ता, करने वाला; (पु.) तस्कर, चोर।

तक्करू-जातक : देखे **कक्करू-जातक**।

तक्कळ-जातक / तक्कल-जातक : वसिट्ठक ने अपनी भार्या के कहने से अपने बूढे पिता को मारकर गाड देने की तैयारी की। वसिट्ठक के लड़के ने बाप की आँख खोली (४४६)।

तक्कसिला (स्त्री.) : गन्धार की राजधानी। यहीं प्रसिद्ध तक्षशिला विश्वविद्यालय था।

तक्कसिला-जातक : संभवतः **तेलपत्त-जातक** का ही एक और नाम।

तक्कारी (स्त्री.) : वैजयन्ती, वृक्ष-विशेष।

तक्काल (नपुं.) : उस समय।

तक्कारिय-जातक : ब्राह्मण ने अपनी चुप न रह सकने की सामर्थ्य के कारण अपनी जान को खतरे में डाला (४८१)।

तक्किक / तक्की (पु.) : तार्किक, तर्क करने वाला।

तक्केति (क्रि.) : सोचता है, तर्क करता है।

तक्कोल (नपुं.) : एक प्रकार की सुगंधि।

तगर (नपुं.) : सुगंधित वनस्पति।

तग्गरुक (वि.) : उधर झुका हुआ।

तग्घ (अ.) : निश्चित, यथार्थ रूप से।

तच (पु.) : चमड़ी, त्वचा।

तचगन्ध (पु.) : छाल की सुगंध।

तचपञ्चक (नपुं.) : शरीर के केश, लोम, नख, दन्त तथा त्वचा ये पाँच अवयव।

तचपरियोसान (वि.) : त्वचा तक / से सीमित।

तचसार-जातक : गांव के वैद्य ने लड़कों द्वारा सांप पकड़वाना चाहा। एक बुद्धिमान लड़के ने सांप को मार कर अपनी जान बचाई (३६८)।

तच्छ (वि., नपुं.) : सत्य, यथार्थ।

तच्छक (पु.) : बढई, लकड़ी छीलने वाला।

तच्छति / तच्छेति (क्रि.) : छीलता है।

तच्छन (नपुं.) : छीलना।

तच्छनी (स्त्री.) : वसूला।

तच्छसूकर-जातक : सूअर ने अपने साथियों को संगठित कर एक शेर को मार डाला (४९२)।

तच्छित (वि.) : छिला हुआ।

तज्ज (वि.) : उससे उत्पन्न।

तज्जना (स्त्री.) : तर्जना, भय का कारण, धमकी।

तज्जनीय (वि.) : तर्जना करने के योग्य, आक्षेप / निंदा करने योग्य।

तज्जनी (स्त्री.) : तर्जनी, उंगली।

तज्जारी (स्त्री.) : छत्तीस अणु, लंबाई का एक परिमाण।

तज्जेति (क्रि.) : तर्जना करता है, डराता है, धमकाता है।

तट : (नपुं.) (नदी का) तट, तीर; (पु.) पर्वत या चट्टान की खड़ी दीवार, कगार।

तटतटायति (क्रि.) : तट-तट शब्द करता है।

तट्टक (नपुं.) : थाली, तश्तरी।

तट्टिका (स्त्री.) : छोटी चटाई।

तण्डुल (नपुं.) : चावल के दाने।

तण्डुलनालि-जातक : राजा के मूल्य-निश्चय करने वाले ने पांच सौ घोड़ों की कीमत चावल की नली बताई (५)।

तण्डुलमुट्ठि (पु.) : चावल की मुट्ठी।

तण्हा (स्त्री.) : तृष्णा, प्यास, आसक्ति।

तण्हाक्खय (पु. : तृष्णा का क्षय।

तण्हाजाल (नपुं.) : तृष्णा का जाल।

तण्हादुतिय (वि.) : तृष्णा सहित।

तण्हापच्चय (वि.) : तृष्णा के कारण, तृष्णा से उत्पन्न।

तण्हाविचरित (कृ.) : तृष्णा का विचार।

तण्हासङ्खय (पु.) : तृष्णा का मूलोच्छेद।

तण्हासंयोजन (नपुं.) : तृष्णा का बंधन।

तण्हासल्ल (नपुं.) : तृष्णा-शल्य।

तण्हासोत (पु.) : तृष्णा-स्त्रोत, तृष्णा का प्रवाह।

तण्हीयति (क्रि.) : तृष्णा उत्पन्न करता है।

तत (वि.) : फैला हुआ।

ततिय (वि.) : तृतीय, तीसरा।

ततिया (स्त्री.) : तृतीया, तीसरी।

ततियं (क्रि.वि.) : तीसरी बार।

ततो (अ.) : वहाँ से, उससे, उस लिये।

ततो निदानं (क्रि.वि.) : उस कारण से।

ततोपट्ठाय (अ.) : उस समय से आरंभ करके।

ततोपरं (अ.) : उसके बाद।

तत्त : (नपुं.) तत्त्व, वास्तविकता; (वि.) तपा हुआ।

तत्तक (वि.) : उतने तक, उतने माप तक।

तत्ततो (अ.) : वास्तविक रूप से।

तत्थ / तत्र (क्रि.वि.) : वहाँ, उस स्थान पर।

तथ (वि., नपुं.) : तथ्य, सत्य।

तथता (स्त्री.) : सत्यता।

तथत्त (नपुं.) : सत्यता, उस प्रकार का (जैसा है वैसे) होना।

तथवचन (वि.) : सत्य वचन।

तथा (क्रि.वि.) : वैसे।

तथाकारी (वि.) : वैसा करने वाला।

तथागत (वि.) : भगवान बुद्ध का स्वयं अपने लिए व्यवहार में लाया गया वचन, संबुद्ध, जैसे आया अथवा जैसे गया।

तथागतबल (नपुं.) : तथागत की दस विशिष्ट शक्तियां।

तथाभाव (पु.) : वैसा-पन।

तथारूप (वि.) : इस प्रकार का, इस रूप का, उस प्रकार का।

तथेव (क्रि.वि.) : वैसे ही।

तदग्गे (क्रि.वि.) : इससे आगे।

तदङ्ग (वि.) : वह अंग, वह प्रकरण।

तदत्थं (अ.) : उस उद्देश्य के लिए।

तदनुरूप (वि.) : उसके अनुरूप।

तदह / तदहु (नपुं.) : उसी दिन।

तदहुपोसथे (सप्तमी विभक्ति) : उसी उपोसथ-व्रत के दिन।

तदा (अ.) : उस समय, तब।

तदुपिय (वि.) : उसके अनुरूप।

तदुपेत (वि.) : उसके साथ।

तनय / **तनुज** (पु.) : पुत्र, संतान।

तनया / **तनुया** / **तनुजा** (स्त्री.) : लड़की, कन्या।

तनु / **तनुक** (वि.) : पतला, दुबला।

तनुकत (वि.) : दुबलाया हुआ।

तनुकरण (नपुं.) : दुबलाना।

तनुतर (वि.) : दुर्बलतर।

तनुत्त (नपुं.) / **तनुता** (स्त्री.) / **तनुभाव** (पु.) : पतले होने का भाव।

तनुरूह (नपुं.) : शरीर पर उगे बाल।

तनोति (क्रि.) : फैलाता है।

तन्त (नपुं.) : धागा।

तन्तवाय (पु.) : जुलाहा।

तन्ताकुलकजात (वि.) : धागे की गेंद की तरह उलझा हुआ।

तन्ति (स्त्री.) : सितार की तार, पंक्ति, परंपरा, पवित्र ग्रंथ।

तन्तिधर (वि.) : परंपरा-संरक्षक।

तन्तिस्सर (पु.) : सितार का संगीत।

तन्तु (पु.) : धागा।

तन्दित (वि.) : थका हुआ, सुस्त, अक्रियाशील।

तन्दी (वि.) : आलसी, प्रमादी।

तप (पु., नपुं.) : तपस्या।

तपति (क्रि.) : चमकता है।

तपन (नपुं.) : चमक।

तपनीय : (वि.) अनुताप का कारण, (नपुं.) सोना।

तपस्सिनी (स्त्री.) : तपस्विनी।

तपस्सी (पु.) : तपस्वी, साधु।

तपस्सु / तपुस्स : उत्कल (उक्कल) का एक व्यापारी। वह तथा उसका साथी भल्लुक, ये दोनों ही केवल द्वि-शरणागमन से भगवान बुद्ध के उपासकत्व को प्राप्त हुए।

तपोकम्म (नपुं.) : तपस्या की क्रिया।

तपोदा : राजगृह के बाहर वैभार पर्वत के नीचे एक बड़ा जलाशय।

तपोवन (नपुं.) : तपस्या का स्थान।

तप्पण (नपुं.) : संतोष।

तप्पति (क्रि.) : जलता है, अनुतप्त होता है।

तप्पर (वि.) : तत्पर, समर्पित।

तप्पित (वि.) : संतर्पित, संतुष्ट।

तप्पिय (वि.) : संतुष्ट होने योग्य।

तप्पेति (क्रि.) : संतुष्ट करता है, तृप्त करता है।

तप्पेतु (पु.) : संतुष्ट करने वाला, तृप्त करने वाला, (सम्यक संबुद्ध)।

तब्बहुल (वि.) : अधिकतया वही।

तब्बिपक्ख (वि.) : उसके विपक्ष में।

तब्बिपरीत (वि.) : उसके विपरीत।

तब्बिसय (वि.) : वही विषय।

तब्भाव (पु.) : वही भाव।

तम (पु., नपुं.) : अंधकार, अज्ञान।

तमखन्ध / **तमोखन्ध** (पु.) : अंधकार-समूह।

तमनद्ध / **तमोनद्ध** (वि.) : अंधकाराच्छन्न, अंधकार से घिरा हुआ।

तमनुद / **तमोनुद** (वि.) : अंध कार को दूर करने वाला / नष्ट करने वाला।

तमपरायण / **तमोपरायण** (वि.) : अंधकार की ओर जानेवाला।

तमाल (पु.) : वृक्ष-विशेष।

तम्ब : (नपुं.) तांबा, (वि.) तांबे के वर्ण का।

तम्बकेस (वि.) : ताम्र-वर्ण केश वाला।

तम्बचूल (पु.) : मुर्गा।

तम्बनख (वि.) : ताम्र-वर्ण नाखून वाला।

तम्बनेत्त (वि.) : ताम्र-वर्ण आंखों वाला।

तम्बभाजन (नपुं.) : ताम्र-बर्तन।

तम्बपण्णि : सुप्पारक से विदा होकर विजय राजकुमार तथा उसके साथियों का लंका में प्रथम पदार्पण करने का स्थान।

तम्बूल (नपुं.) : पान का पत्ता।

तम्बूलपसिब्बक (पु.) : पान रखने की थैली।

तम्बूलपेळा (स्त्री.) : पान की पेटी।

तय (नपुं.) : तीन का समूह।

तयो (पु.) : तीन जने।

तयोधम्म-जातक : बंदर-पिता अपनी संतान की स्वयं हत्या कर डालता था (५८)।

तर (वि.) : तैरने वाला, पार करने वाला।

तरङ्ग (पु.) : लहर।

तरच्छ (पु.) : लकड़बग्घा।

तरण (नपुं.) : (तैरकर) पार जाना, उस ओर पहुंचना।

तरणी (स्त्री.) : नौका, नाव।

तरति (क्रि.) : तैरता है, पार करता है।

तरमानरूप (वि.) : जल्दी में होना।

तरल (नपुं.) : कांजी, यवागु।

तरितु (पु.) : पार जाने वाला।

तरु (पु.) : वृक्ष, पेड़।

तरुण (वि.) : नौजवान।

तरुसण्ड (पु.) : वृक्षों का समूह।

तल (नपुं.) : नीचे का स्तर, चौपट स्थान, चौपट छत, किसी हथियार का फल।

तलघातक (नपुं.) : हाथ की चपत, चांटा, थप्पड़।

तलसत्तिक (नपुं.) : (धमकाने के लिए) हाथ उठाना।

तस (वि.) : चञ्चल, अस्थिर, चल, जंगम।

तसति (क्रि.) : कांपता है, भयभीत होता है।

तसर (पु.) : फिरकी, जुलाहे की नाल।

तसिणा / तसिना (स्त्री.) : तृष्णा, प्यास।

तसित (वि.) : कांपता हुआ, भयभीत, प्यासा।

तस्मा (क्रि.वि.) : इसलिए, इस कारण।

तहं / तहिं (क्रि.वि.) : वहां, उस स्थान पर।

तळाक (पु.) : तालाब।

ताण (नपुं.) : त्राण, शरण।

तात (पु.) : पिता, पुत्र (स्नेह-पूर्ण आमंत्रण बडों तथा छोटों, दोनों के लिए)।

तादिस / तादिसक / तादी (वि.) : तादृश, वैसा।

तापन (नपुं.) : जलाना, आत्म-क्लेश।

तापस (पु.) : तपस्वी।

तापसी (स्त्री.) : तपस्विनी।

तापेति (क्रि.) : तपाता है, गरमी पहुँचाता है।

तामबूली (स्त्री.) : तमोली।

तामलित्ति : जिस पत्तन से अशोक ने बोधि वृक्ष की शाखा सिंहल भेजी थी वह स्थान।

तायति (क्रि.) : रक्षा करता है।

तायन (नपुं.) : संरक्षण।

तारका / तारा (स्त्री.) : (आकाश का) तारा।

तारकागण (पु.) : तारा-समूह।

तारकापति (पु.) : चांद।

तारकापथ (पु.) : आकाश।

तारेति (क्रि.) : पार कराता है, सहाय्य करत है, संरक्षण करता है।

तारेतु (पु.) : तरण-सहायक, संरक्षक।

ताल (पु.) : ताड़ का वृक्ष।

तालकन्द (पु.) : ताड़ की कोंपल।

तालक्खन्ध (पु.) : ताड़ वृक्ष का तना।

तालट्ठिक (नपुं.) : ताड़ के भीतर की गुठली।

तालपक्क (नपुं.) : ताड़ का फल।

तालपण्ण (नपुं.) : ताड़ का पत्ता।

तालवण्ट (नपुं.) : पंखा।

तालावत्थुकत (वि.) : जड़ से उखाड़ दिया गया।

तालु (पु.) : तालु।

तालुज (वि.) : तालव्य।

ताव (अ.) : तब तक।

तावकालिक (वि.) : अस्थायी।

तावतक (वि.) : इतना ही, इतनी देर तक ही।

तावता (क्रि.वि.) : तब तक, उस कारण से, उतने से।

तावतिंस : तैंतीस संख्या, केवल समासपदों में जहाँ ३३ देवताओं का जिक्र हो; तावतिंस-देवलोक (तैंतीस देवताओं का)।

तावतिंसभवन (नपुं.) : तैंतीस देवताओं का भवन।

तावदेव (अ.) : उस समय, तुरंत।

तास (पु.) : त्रास, भय, कंपन।

तासेति (क्रि.) : त्रास देता है, सताता है, परेशान करता है।

ताळ (पु.) : चाबी, गीत की ताल, एक वाद्य।

ताळच्छिग्गल / ताळच्छिद्द (नपुं.) : चाबी का छेद।

ताळावचर : (नपुं.) संगीत, (पु.) संगीतज्ञ, संगीत की धून में रहने वाला।

ताळन (नपुं.) : ताड़न, चोट पहुँचाना।

ताळी (स्त्री) : चोट, प्रहार।

ताळित (वि.) : ताड़ित, पीटा गया।

ताळेति (क्रि.) : ताड़ना देता है, पीटता है।

ति (वि.) तीन।

तिक (वि.) : तीन का समूह।

तिकटुक (नपुं.) : तीन मसाले (दवाइयाँ)।

तिकिच्छक (पु.) : चिकित्सक।

तिकिच्छति (क्रि.) : चिकित्सा करता है।

तिकिच्छा (स्त्री.) : चिकित्सा।

तिक्ख (वि.) : तीक्ष्ण, तेज।

तिक्खत्तुं (क्रि.वि.) : तीन बार।

तिक्खपञ्ञ (वि.) : तेज प्रज्ञा वाला।

तिखिण (वि.) : तीक्ष्ण, तेज।

तिगावुत (वि.) : तीन गव्यूति माप।

तिचीवर (नपुं.) : भिक्खु के तीन चीवर।

तिट्ठति (क्रि.) : ठहरता है, रुकता है, खड़ा रहता है।

तिण (नपुं.) : तृण, घास।

तिणगहन (नपुं.) : घास का जंगल, घनी घास।

तिणजाति (स्त्री.) : तृण-जाति, विविध प्रकार की घास।

तिणभक्ख (वि.) : तृण / घास खाकर रहने वाला।

तिणभिसि (स्त्री.) : तिनकों की चटाई, घास की चटाई।

तिणसन्थार (पु.) : तिनकों का बिछौना।

तिणहारक (पु.) : घास बेचने वाला, घसियारा।

तिणागार (नपुं.) : तिनकों की कुटिया, घास की कुटिया।

तिणाण्डूपक (नपुं.) : घास का गद्दा।

तिणुक्का (स्त्री.) : तिनकों की मशाल।

तिण्ण (वि.) : तीर्ण, जो पार उतर गया।

तिण्ह (वि.) : तीक्ष्ण, तेज।

तितिक्खति (क्रि.) : सहन करता है।

तितिक्खा (स्त्री.) : तितिक्षा, सहनशीलता।

तित्त : (वि.) तिखा, तीता, कड़ुवा; तृप्त, संतुष्ट।

तित्तक (वि.) : तिखा, तीता, कड़ुवा।

तित्ति (स्त्री) : तृप्ति।

तित्तिर (पु.) : तीतर।

तित्तिर-जातक : तीतर, बंदर और हाथी की कथा (३७)।

तित्तिर-जातक : बिना मतलब किसी को उपदेश देने के दंड संबंधी कथा (११७)।

तित्तिर-जातक : एक तीतर के आवाज करने पर, दूसरे तीतर भी आ इकट्ठे होते और शिकारी के हाथ से मारे जाते (३१९)।

तित्तिर-जातक : तीतर ने तीनों वेद कंठस्थ कर लिये (४३८)।

तित्थ (नपुं.) : तीर्थ, पत्तन, मान्यता।

तित्थकर (पु.) : संप्रदाय-विशेष का सिद्धान्तकार, तीर्थकर।

तित्थायतन (नपुं.) : संप्रदाय-विशेष के सिद्धांत।

तित्थ-जातक : राजकीय घोडे ने अपने स्नान करने की जगह पर दूसरा घोड़ा नहला दिये जाने के कारण वहां नहाने से इन्कार कर दिया (२५)।

तित्थिय (पु.) : दूसरे मत का संस्थापक।

तित्थियसावक (पु.) : दूसरे मत का शिष्य।

तित्थियाराम (पु.) : तपस्वियों का आश्रम।

तिथि (स्त्री.) : चान्द्र-मास की तिथि।

तिदण्ड (नपुं.) : तिपाई।

तिदस (पु.) : देवता।

तिदसपुर (नपुं.) : देव-नगर।

तिदसिन्द (पु.) : देवताओं का राजा।

तिदिव (पु.) : दिव्य-लोक।

तिधा (क्रि.वि.) : तीन तरह से।

तिन्त (वि.) : गीला, भीगा।

तिन्दुक (पु.) : वृक्ष-विशेष ।

तिन्दुकजातक / तिण्डुकजातक : तिन्दुक-फल खानेवाले बंदरों की कथा (१७७)।

तिपञ्ञास (स्त्री.) : तिरपन (५३)।

तिपल्लत्थमिग-जातक : मृग-पोतक ने झूठ-मूठ मरने का ढोंग रच जान बचाई (१६)।

तिपिटक (नपुं.) : पालि त्रिपिटक - १. सुत्त-पिटक २. विनय-पिटक ३. अभिधम्म-पिटक।

तिपु (नपुं.) : सीसा।

तिपुस (नपुं.) : कद्दू ।

तिपेटक / तिपेटकी (वि.) : त्रिपिटक का ज्ञाता।

तिप्प / तिब्ब (वि.), तीव्र ।

तिमि (पु.) : एक बड़ी मछली-विशेष।

तिमिङ्गल (पु.) : विशाल मछली, जो छोटी मछलियों को निगल जाती है।

तिमिर (नपुं) : अंधेरा।

तिमिरायितत्त (नपुं.) : अंधेरापन।

तिमिस (नपुं.) : अंधेरा।

तिमीसिका (स्त्री.) : अत्यंत अंधेरी रात।

तिम्बरू : देखे तिन्दुक।

तियामा (स्त्री.) : रात (तीन याम वाली)।

तियोजन (नपुं.) : तीन योजन की दूरी।

तिरच्छान (पु.) : पशु।

तिरच्छानकथा (स्त्री.) : बेकार बातचीत।

तिरच्छानगत (पु.) : पशु, जानवर।

तिरच्छानयोनि (स्त्री.) : पशु-योनि।

तिरियं (क्रि.वि.) : तिरछे।

तिरियं तरण (नपुं.) : पार उतरना।

तिरीटक (नपुं.) : छाल का बना आच्छादन।

तिरीटवच्छ-जातक : तिरीटवच्छ तपस्वी ने अपने आश्रम में राजा का स्वागत किया (२५९)।

तिरो (अ.) : पार, बाह्य।

तिरोकरणी (स्त्री.) : परदा।

तिरोकुट्ट (नपुं.) : दीवार के बाहर की ओर।

तिरोक्कार (पु.) : अपमान, तिरस्कार।

तिरोधान (नपुं.) : ढक्कन।

तिरोपाकार (पु.) प्राकार के आर पार।

तिरोभाव (पु.) : अदृश्य होना।

तिल (नपुं.) : तिल।

तिलकक्क (नपुं.) : तिल लेप।

तिलपिञ्ञाक / तिलपिट्ठ (नपुं.) : तिल की खली।

तिलमुट्ठि (पु.) : तिलों की मुट्ठी।

तिल-मुट्ठि जातक, बुढिया के फैलाये हुए तिलों

को मुठ्ठभर खानेवाले राजकुमार की जातक कथा

(252) 1

तिलवाह (पु.) : गाड़ी-भर तिल।

तिलसङ्गुलिका (स्त्री.) : तिल का लड्डू।

तिलिङ्गिक (वि.) : जिस शब्द की गिनती तीनों लिंगों के अंतर्गत हो।

तिलोक (पु.) : तीनों लोक।

तिवग्ग (वि.) : तीन वर्ग।

तिवङ्गिक (वि.) : जिसके तीन अंग हो।

तिवस्सिक (वि.) : तीन वर्ष का।

तिविज्जा (स्त्री.) : त्रिविद्या, तीन विद्या।

तिविध (वि.) : त्रिविध, तीन प्रकार से।

तिंसति / तिंसा (स्त्री.) : तीस (३०)।

तीर (नपुं.) : किनारा, तट।

तीरण (नपुं.) : निर्णय, निश्चय।

तीरदस्सी (पु.) : तीर-द्रष्टा, तीर देखने वाला।

तीरेति (क्रि.) : निश्चय करता है, निर्णय करता है।

तीरित (वि.) : निश्चय किया गया।

तीह (नपुं.) : तीन दिन का समय।

तु (अ.) : जैसे-तैसे, लेकिन, अभी, अब, तब।

तुङ्ग (वि.) : ऊंचा, प्रसिद्ध।

तुङ्गनासिक (वि.) : ऊंची नाक वाला।

तुच्छ (वि.) : खाली, व्यर्थ, त्यक्त।

तुट्ठ (वि.) : संतुष्ट।

तुट्ठि (स्त्री.) : प्रसन्नता, प्रीति।

तुण्ड (नपुं.) : चोंच।

तुण्डिलजातक : महातुण्डिल तथा चुल्लतुण्डिल, सूअर-पोतकों की जातक कथा (३८८)।

तुण्णकम्म (नपुं.) : सिलाई का काम।

तुण्णवाय (पु.) : दर्जी, सिलाई का काम करने वाला।

तुण्ही (अ.) : चुप, मौन होकर।

तुण्हीभाव (पु.) : मौन।

तुण्हीभूत (वि.) : चुप, मौन, शांत।

तुण्हीयति (क्रि.) : चुप रहता है।

तुत्त (नपुं.) : हाथी का अंकुश।

तुदति (क्रि.) : चुभोता है, तकलीफ देता है।

तुदन (नपुं.) : चुभोना।

तुदित (वि.) : चुभोया गया।

तुदम्पति (वि.) : पलि-पति दोनों जने, दम्पत्ति।

तुमुल (वि.) : बड़ा, विशाल।

तुम्ब (पु., नपुं.) : तुंबा।

तुम्बकटाह (पु.) : लौकी का बर्तन।

तुम्बी (स्त्री.) : लौकी, तुंबी।

तुम्ह (सर्व.) : (मध्यम पुरुष सर्वनाम) तुम।

तुरग / तुरङ्ग (पु.) : घोड़ा।

तुरति (क्रि.) : जल्दी करता है।

तुरित (वि.) : शीघ्र, तेज।

तुरितं (क्रि.वि.) : शीघ्रता से।

तुरिय / **तूरिय** (नपुं.) : तूर्य, वाद्य-विशेष।

तुरुक्ख (वि.) : तुर्कों से संबंधित।

तुलन (नपुं.) / **तुलना** (स्त्री.) : तोलना, विचार करना।

तुलसी (स्त्री.) : तुलसी का पौधा।

तुला (स्त्री.) : तराजू।

तुलाकूट (नपुं.) : खोटा तराजू।

तुलादण्ड (पु.) : तराजू की डंडी।

तुलिय : (पु.) चिमगादड़, (वि.) समान, जो तोला जा सके।

तुलेति (क्रि.) : तोलता है, तौलता है।

तुल्य / **तुल्ल** (वि.) : समान, जो तोला जा सके।

तुल्यता (स्त्री.) : समानता।

तुवं / **त्वं** (सर्व.) : तू।

तुवटं (वि.) : शीघ्रता से।

तुवट्टेति (क्रि.) : बांटता है।

तुस्सति (क्रि.) : संतुष्ट होता है।

तुस्सन (नपुं.) / **तुस्सना** (स्त्री.) : संतोष, समाधान।

तुसित : छह देव-लोकों में से चौथा देव-लोक।

तुहिन (नपुं.) : ओस।

तूण / **तूणीर** (पु.) : तरकश।

तूल (नपुं.) : कपास।

तूलपिचु (पु.) : कपास का फाहा।

तूलिका (स्त्री.) : चित्रकार की तूलिका, रूई का गद्दा।

तेअसीति (स्त्री.) : तिरासी (८३)।

तेकिच्छ (वि.) : चिकित्सा कर सकने योग्य।

तेचत्तालीसति (स्त्री.) : तितालीस (४३)।

तेचीवरिक (वि.) : तीन चीवर वाला।

तेज (पु., नपुं.) : उष्णता, प्रकाश।

तेजकसिण (नपुं.) : ध्यान लगाने के लिए अग्नि-प्रकाश।

तेजधातु / **तेजोधातु** (स्त्री.) : उष्णता।

तेजन (नपुं.) : तीर।

तेजवन्तु (वि.) : तेजयुक्त।

तेजित (वि.) : तेज किया हुआ।

तेजेति (क्रि.) : उष्णता उत्पन्न करता है, तेज़ करता है।

तेत्तिंसति / **तेत्तिंसा** (स्त्री.) : तैंतीस (३३)।

तेन (अ.) : इस कारण से।

तेनवुति (स्त्री.) : तिरानवे (९३)।

तेपञ्ञासति (स्त्री.) : तिरपन (५३)।

तेमन (नपुं.) : गीला होना, भीग जाना।

तेमियति (क्रि.) : भीगता है, गीला हो जाता है।

तेरस / **तेळस** (वि.) तेरह (१३)।

तेरोवस्सिक (वि.) : तीन वर्ष का।

तेल (नपुं.) : तेल, स्निग्ध पदार्थ।

तेलघट (पु.) : तेल का घड़ा।

तेलचाटी (स्त्री.) : तेल का बर्तन।

तेलधूपित (वि.) : तेल में छींका गया।

तेलपदीप (पु.) : तेल का दिपक।

तेलमक्खन (नपुं.) : तेल माखना, तेल लगाना।

तेलपत्त-जातक : राजकुमार इंद्रिय सुखों के फेर में न पड़कर तक्षशिला पहुँचा और राजा बना (९६)।

तेलिक (पु.) : तेली।

तेलोवाद-जातक : त्रिकोटि परिशुद्ध मांस-मछली का भोजन कर सकने के बारे में जातक कथा (२४६)

तेविज्ज (वि.) : त्रैविद्यक, तीन ज्ञानों / विद्याओं से युक्त।

तेसकुण-जातक : राजा ने अंडों में से निकले बच्चों को अपनी संतान की तरह पाला-पोसा (५२१)।

तेसट्ठि (स्त्री.) : तिरसठ (६३)।

तेसत्तति (स्त्री.) : तिहत्तर (७३)।

तोमर (पु., नपुं.) : बर्छी।

तोय (नपुं.) : जल।

तोरण (नपुं.) : तोरण-द्वार।

तोस (पु.) : प्रसन्नता, प्रीति।

तोसना (स्त्री.) : संतोष देना, खुश करना।

तोसापेति (क्रि.) : संतुष्ट करवाता है।

तोसेति (क्रि.) : संतोष देता है, संतुष्ट करता है।

थ

थकन (नपुं.) : बंद करना, ढक्कन।

थकित (वि.) : बंद किया हुआ।

थकेति (क्रि.) : बंद करता है।

थञ्ञ (नपुं.) : स्तन्य, माँ का दूध।

थण्डिल (नपुं.) : कड़ी जमीन।

थण्डिलसायिका / थण्डिलसेय्या (स्त्री.) : नंगी जमीन पर लेटना (एक प्रकार की तपस्या)।

थद्ध (वि.) : कठोर, कड़ा।

थद्धमच्छरी (पु.) : अत्यंत कंजूस।

थन (नपु.) : स्तन।

थनग्ग (नपुं.) : चूंची।

थनप (पु.) : स्तनपायी, शिशु।

थनयति / थनेति (क्रि.) : गर्जता है।

थनित (नपुं.) : गर्जन।

थपति (पु.) : बढई।

थबक (पु.) : गुच्छा।

थम्भ (पु.) : स्तंभ, खंभा।

थम्भक (पु.) : घास की मुट्ठी।

थरु (पु.) : तलवार (या अन्य किसी शस्त्र) की मूठ, तलवार।

थल (नपुं.) : भूमि, जमीन।

थलगोचर (वि.) : स्थल-निवास करने वाला।

थलज (वि.) : भूमि से उत्पन्न, जमीन से पैदा।

थलट्ठ (वि.) : भूमि पर स्थित।

थलपथ (पु.) : जमीन पर मार्ग।

थव (पु.) : प्रशंसा, स्तुति, स्तवन।

थवति (क्रि.) : प्रशंसा करता है।

थविका (स्त्री.) : थैली।

थाम (पु.) : सामर्थ्य, शक्ति।

थामवन्तु (वि.) : सामर्थ्यवान, शक्तिशाली।

थाल (पु., नपुं.) / **थाली** (स्त्री.) : थाली।

थालक (नपुं.) : छोटा भाजन।

थालिका (स्त्री.) : नोकदार पात्र।

थालीपाक (पु.) : दूध में पका भात या जौ।

थावर (वि.) : स्थिर, अचल, स्थावर।

थावरिय (नपुं.) : स्थिरपन, अचलपन।

थिनमिध्द / **थीनमिध्द** (नपुं.) : आलस, शरीर और मन का आलस।

थिर (वि.) : स्थिर, दृढ, अचल।

थिरतर (वि.) : स्थिरतर, दृढतर।

थी (स्त्री.) : स्त्री।

थीन (नपुं.) : जड़ता, आलस्य।

थीरज (पु., नपुं.) : स्त्रियों का मासिक धर्म, स्त्री-रज।

थुत (वि.) : प्रशंसा किया हुआ।

थुति (स्त्री.) : स्तुति, प्रशंसा।

थुतिपाठक (पु.) : भाट।

थुनाति (क्रि.) : कराहता है।

थुल्ल (वि.) : स्थूल, बड़ा, विशाल।

थुल्लच्चय (पु.) : बड़ा अपराध।

थुल्लकुमारी (स्त्री.) : मोटी लड़की, बड़ी उम्र की अविवाहिता।

थुल्लफुसितक (वि.) : बड़ी-बड़ी बूँदों वाली वर्षा।

थुल्लसरीर (वि.) : मांसल, मोटे शरीर वाला।

थुस (पु.) : भूसी।

थुसग्गि (पु.) : भूसी की आग ।

थुस-जातक : आचार्य ने बनारस राज्य के उत्तराधिकारी अपने शिष्य राजकुमार को चार गाथाएँ सिखा दी थीं। उन्होंने ही उसकी जान बचाई (३३८)।

थुसपच्छि (स्त्री.) : भूसी से ठूसी हुई, भूसी रखने की टोकरी।

थुससोडक (नपुं.) : सिरके का एक प्रकार।

थूण (पु.) / **थूणा** (स्त्री.) : खंभा, वध-स्थल, पशुओं की बलि देने का स्थान।

थूण : मज्झिम-देस की पश्चिम-सीमा पर एक गाँव। वर्तमान थानेश्वर।

थूप (पु.) : स्तूप।

थूपारह (वि.) : स्तूप निर्माण द्वारा पूज्य, स्तूप बनाने योग्य।

थूपवंस : वाचिस्सर रचित पालि वंस रचना। इस काव्य के एक अंश में अनुराधपुर के महास्तूप की रचना का वर्णन है।

थूपिका (स्त्री.) : शिखर।

थूपीकत (वि.) : स्तूप की तरह निर्मित।

थूल (वि.) : स्थूल, मोटा।

थूलता (स्त्री.) : स्थूलता, मोटापा।

थूलसाटक (पु.) : मोटा वस्त्र।

थेत (वि.) : विश्वसनीय, प्रामाणिक।

थेन / **थेनक** (पु.) : चोर।

थेनित (वि.) : चोरीकृत, चुराया हुआ।

थेनेति (क्रि.) : चोरी करता है।

थेय्य (नपुं.) : चोरी।

थेय्यचित्त (नपुं.) : चोरी का इरादा।

थेय्यसंवाहक (वि.) : झूठ-मूठ भिक्खुओं का वस्त्र धारण कर भिक्खुओं के साथ रहनेवाला।

थेर (पु.) : ज्येष्ठ भिक्षु, जो कम से कम दस वर्ष का उपसंपन्न भिक्षु हो।

थेरगाथा : खुद्दक निकाय का आठवां ग्रंथ। इसकी गाथाएँ बुद्ध के समकालीन भिक्षुओं की रचनाएं मानी जाती है ।

थेरवाद (पु.) : स्थविर-वाद, स्थविरों का सिद्धान्त ।

थेरी (स्त्री.) : ज्येष्ठ भिक्षुणी, बुढ़िया।

थेरीगाथा : खुद्दक निकाय की नौवी रचना। यह स्थविरियों की काव्यकृतियों का संग्रह माना जाता है।

थेव (पु.) : बूंद।

थोक (वि.) थोड़ा।

थोकं थोकं (क्रि.वि.) : थोड़ा-थोड़ा।

थोमन (नपुं.) / **थोमना** (स्त्री.) : स्तुति।

थोमेति (क्रि.) : स्तुति करता है।

द

दक (नपुं.) : जल, पानी।

दकरक्खस (पु.) : जल-राक्षस।

दकरक्खसजातक : देखो महाउम्मग्ग जातक (५४६)। **दकरक्खसजातक** (५१७) नाम की कोई कथा पृथक रूप से अस्तित्व में नहीं है।

दक्ख (वि.) : दक्ष, योग्य।

दक्खक (वि.) : देखने वाला।

दक्खता (स्त्री.) : दक्षता, क्षमता।

दक्खति (क्रि.) : देखता है।

दक्खिण (वि.) : दक्षिण, दायाँ, दायीं।

दक्खिणक्खक (नपुं.) : दाहिनी हँसली।

दक्खिणदिसा (स्त्री.), दक्षिण दिशा।

दक्खिणदेस (पु.), दक्षिण देश।

दक्खिणा (स्त्री.) : दक्षिण (दिशा), दान, दक्षिणा।

दक्खिणापथ (पु.) : भारत का दक्षिणी हिस्सा, वर्तमान दक्किन।

दक्खिणायन (नपुं.) : (सूर्य का) दक्षिणायन।

दक्खिणारह (वि.) : दक्षिणा के योग्य।

दक्खिणावत्त (वि.) : दाहिनी ओर मुड़ना।

दक्खिणाविसुद्धि (स्त्री.) : दक्षिणा की पवित्रता।

दक्खिणेय्य (वि.) : दक्षिणा देने के योग्य।

दक्खिणेय्यपुग्गल (पु.) : दक्षिणा का अधिकारी व्यक्ति।

दक्खणोदक (नपुं.) : दक्षिणा का जल।

दक्खी (पु.) : देखनेवाला, अनुभव करने वाला, दक्ष, सचेत।

दट्ठ (वि., कृ.) : डसा गया।

दट्ठट्ठान (नपुं.) : वह स्थान जहाँ डसा गया।

दट्ठब्ब (वि., कृ.) : देखना चाहिए, समझना चाहिए।

दड्ढ (वि., कृ.) : जला हुआ।

दड्ढगेह (वि.) : ऐसा आदमी जिसका घर जल गया हो।

दड्ढट्ठान (नपुं.) : वह स्थान जो जल गया।

दण्ड (पु.) : लकड़ी, सजा।

दण्डक (पु.) : लकड़ी, डंडा।

दण्डकमधु (नपुं.) : लकड़ी पर लटका हुआ मधु का छत्ता।

दण्डकम्म (नपुं.) : सजा।

दण्डकोटि (स्त्री.) : छड़ी का सिरा।

दण्डदीपिका (स्त्री.) : मशाल।

दण्डनीय (वि.) : दंड देने योग्य।

दण्डप्पत्त (वि.) : जिसे दंड दिया गया हो।

दण्डपरायण (वि.) : जिसे छड़ी का सहारा हो।

दण्डपाणि / **दण्डहत्थ** (वि.) : जिसके हाथ में छड़ी हो, दंड-धारी।

दण्डपाणी : अंजन तथा यशोधरा का पुत्र, कपिलवस्तु का शाक्य। शुद्धोदन की दोनों रानियाँ, महामाया तथा महाप्रजापति, इसकी बहनें थीं।

दण्डभय (नपुं.) : दंड का भय।

दत्त (वि.) : दिया गया।

दत्ति (स्त्री.) : भोजन रखने के लिए छोटा-सा बर्तन।

दत्तु (पु.) : मूर्ख आदमी।

दत्वा / ददित्वा (पू.क्रि.) : देकर।

दद (वि.) : देता हुआ।

ददाति (क्रि.) : देता है।

दद्दभ-जातक : बेल के पेड़ के नीचे पड़े खरगोश ने पेड़ से गिरते फल को देखकर सोचा कि प्रलय होने वाला है। वह भागा (३२२)।

दद्दर-जातक : जब गीदड़ भी शेर की तरह गर्जने लगे, तो शेर संकोच के मारे चुप हो गये (१७२)।

दद्दर-जातक : महादद्दर तथा चूळदद्दर नागों की कथा (३०४)।

दद्दरी (पु.) : वाद्य-विशेष।

दद्दु (स्त्री.) : दाद।

दद्दुर (पु.) : मेंढक।

दद्दुल (नपुं.) : स्पंज की तरह नर्म ढाँचा, एक प्रकार का चावल ।

दधि (नपुं.) : दही।

दधिघट (पु.) : दही का घड़ा।

दधिमण्ड (नपुं.) : मठा, छाछ।

दधिवाहन-जातक : दधिवाहन राजा ने अपने शत्रुओं को दही के समुद्र में डुबोकर मार डाला था (१८६)।

दन्त : (नपुं.) दाँत, (वि., कृ.) संयत।

दन्तकट्ठ (नपुं.) : दातून।

दन्तकार (पु.) : हाथी- दाँत का काम करने वाला।

दन्तपन्ती / दन्तपाळी (स्त्री.) : दातों की पाँत।

दन्तपोण (पु.) : दाँत की सफाई करनेवाली वस्तु।

दन्तवलय (नपुं.) : हाथी- दाँत की चूड़ी।

दन्तविदंसक (वि.) : दाँत दिखाने वाला।

दन्तावरण (नपुं.) : दाँत का ढक्कन, होंठ।

दन्तपुर : कलिंग राज्य की राजधानी।

दन्तसठ (पु.) : नींबू का पेड़, नींबू।

दन्ध (वि.) : ढीला, मूर्ख।

दन्धता (स्त्री.) : ढिलाई, आलस्य, मूर्खता।

दप्प (पु.) : दर्प, अभिमान।

दप्पण (नपुं.), दर्पण।

दप्पित (वि.) : अहंकारी, अभिमानी।

दब्ब : (वि.) बुद्धिमान, योग्य; (नपुं.) लकड़ी, धन, पदार्थ।

दब्बजातिक (वि.) : समझदार।

दब्बतिण (नपुं.) : दूब, एक प्रकार का घास।

दब्बपुप्फ-जातक : रोहित मछली को लेकर दो ऊद-बिलाव आपस में झगड़ रहे थे। मायावी गीदड़ ने उनका फैसला करने जाकर, मछली का सिर एक को दे दिया, पूँछ दूसरे को दे दी, शेष सारी मछली खुद खा गया (४००)।

दब्बसम्भार (पु.) : मकान बनाने का सामान।

दब्बी (स्त्री.) : कड़छी।

दब्भ (पु.) : कुश घास।

दम (पु.) / **दमथ** (पु.) / **दमन** (नपुं.) : संयमन, दमन, वशीकरण।

दमक (वि.) : संयत करने वाला।

दमित (वि., कृ.) : दमन किया गया।

दमिळ : दक्षिण भारत की तमिल जाति।

दमेति (क्रि.) : संयत बनाता है।

दमेतु (पु.) : दमन करने वाला।

दम्पति (पु.) : पत्नी और पति।

दम्म (वि.) : जिसे दमित अथवा शिक्षित करना हो।

दया (स्त्री.) : दया, करुणा।

दयालु (वि.) : दया करने वाला।

दयित (वि.) : दयापात्र।

दर / दरथ (पु.) : दुःख, कष्ट, चिंता।

दरी (स्त्री.) : खाई, खोह।

दरीमुख-जातक : मगध नरेश के पुत्र ब्रह्मदत्त तथा उसके सहपाठी दरीमुख की कथा (३७८)।

दल (नपुं.) : फलक, पत्ता।

दलिद्द / दळिद्द (वि.) : दरिद्र, गरीब।

दव (पु.) : क्रीड़ा, आग, गरमी।

दवकम्यता (स्त्री.) : हँसी-मजाक करने की रुचि।

दवडाह (पु.) : जंगली आग, जंगल की आग।

दस (वि.) : दस (१०)।

दसक (नपुं.) : दशाब्द, दशक, दस का समूह।

दसक्खत्तुं (क्रि.वि.) : दस बार।

दसण्ण : मध्य भारत का भूमि भाग, दशार्णव, एक भूमि प्रदेश।

दसण्णक-जातक : राजा ने पुरोहित-पुत्र को अपनी रानी सप्ताह भर के लिए ही दी थी। वह उसे लेकर भाग गया (४०१)।

दसधा (क्रि.वि.) : दस प्रकार से।

दसन (नपुं.) : दाँत।

दसनच्छद (पु.) : होंठ।

दसबल (वि.) : दस शक्तियों वाला, भगवान बुद्ध के लिए प्रयुक्त एक विशेषण-पद।

दसब्राह्मण-जातक : इन्द्रप्रस्थ नरेश के दान की सीमा न थी। किन्तु उसका सारा दान दुष्ट आदमियों के पल्ले पड़ता था (४९५)।

दसरथ-जातक : वनवास के समय राम, लक्ष्मण तथा सीता को राजा दशरथ की मृत्यु का समाचार मिला। राम-पण्डित ने असाधारण सहनशीलता का परिचय दिया (४६१)।

दसविध (वि.) : दस प्रकार का।

दससत (नपुं.) : सहस्र, हजार।

दससतनयन (वि.) : सहस्त्र आँखों वाला (शक्र)।

दससहस्स (नपुं.) : दस हजार ।

दसा (स्त्री.) : किनारी, दशा।

दसिकसुत्त (नपुं.) : किनारी का धागा।

दस्सक (वि.) : दिखाने वाला।

दस्सति (क्रि.) : (वह) देगा, दिखाई पड़ता है।

दस्सन (नपुं.) : दर्शन, दृष्टि, अंतःप्रेरणा।

दस्सनीय / **दस्सनेय्य** (वि.) : दर्शनीय, देखने योग्य।

दस्सावी / **दस्सी** (पु.) : देखने वाला (**भयदस्सावी** – भयभीत, भय देखने वाला)।

दस्सित (वि.) : दर्शित, दिखाया गया।

दस्सु (पु.) : दस्यु, डाकू।

दस्सेति (क्रि.) : दिखता है।

दस्सेतु (पु.) : दिखने वाला।

दह (पु.) : झील, जलाशय।

दहति (क्रि.) : जलता है, स्वीकार करता है।

दहन : (नपुं.) जलन, (पु.) आग।

दहर (वि.) : तरुण, लड़का ।

दळ्ह (वि.) : दृढ, मजबूत।

दळ्हधम्मजातक : दळ्हधम्म नामक बनारस-नरेश के मंत्री की कथा (४०९)।

दळ्हपरक्कम (वि.) : दृढ पराक्रमी, उत्साही।

दळ्हं (क्रि.वि.) : दृढतापूर्वक।

दळ्हीकम्म / **दळ्हीकरण** (नपुं.) : दृढ बनाना।

दाठा (स्त्री.) : दाढ, दांत।

दाठाधातु (स्त्री.) : (बुद्ध के), दन्त-अवशेष।

दाठाबली (वि.), दांतों का बलवान।

दाठावुध (वि.) : दांतों को शस्त्र की तरह उपयोग करने वाला।

दाडिम (नपुं.) : अनार, एक प्रकार का फल।

दातब्ब (वि.) : देने योग्य।

दातु (पु.) : देने वाला।

दातुं (अ.) : देने के लिए।

दात्त : (नपुं.) दांति, दरांती; (वि.) काटा गया।

दान (नपुं.) : दान।

दानकथा (स्त्री.) : दान-संबंधी उपदेश।

दानग्ग (नपुं.) : दान देने का स्थान।

दानपति (पु.) : दान-शूर, दानी।

दानफल (नपुं.) : दान का फल।

दानव (पु.) : राक्षस।

दानवट्ट (नपुं.) : सतत दान।

दानवत्थु (नपुं.) : दान देने की चीज।

दानवेय्यावटिक (वि.) : दान बांटने वाला।

दानसाला (स्त्री.) : दानशाला।

दानसील (वि.) : दानशील।

दानसोण्ड (वि.) : दान- प्रिय।

दानारह (वि.) : दान देने योग्य।

दानि (अ.) : अभी, इस वक्त।

दापन (नपुं.) : दिलाना।

दापेति (क्रि.) : दिलाता है।

दापेतु (पु.) : दिलाने वाला।

दाब्बि (स्त्री.) : सूखी हल्दी।

दाम (पु.) : माला, रस्सी, जंजीर।

दाय (पु.) : जंगल, भेंट।

दायक (पु.) : दाता, सहायक, देने वाला।

दायज्ज : (नपुं.) उत्तराधिकार, (वि.) उत्तराधिकारी।

दायति (क्रि.) : काटता है।

दायन (नपुं.) : काटना।

दायपाल (पु.) : माली।

दायाद (पु.) : उत्तराधिकार।

दायादक (वि.) : उत्तराधिकारी।

दायिका (स्त्री.) : देने वाली।

दायी (वि.) : देने वाला।

दार (पु.) / **दारा** (स्त्री.) : स्त्री, पत्नी।

दारभरण (नपुं.) : स्त्री का पालन-पोषण।

दारक (पु.) : लड़का, बच्चा, बेटा।

दारिका (स्त्री.) : लड़की, बच्ची।

दारित (वि.) : चीरा गया, फाड़ा गया।

दारु (नपुं.) : लकड़ी।

दारुक्खन्ध (पु.) : लकड़ी का लट्ठा।

दारुखण्ड (नपुं.) : लकड़ी का टुकड़ा।

दारुण (वि.) : कठोर।

दारुभण्ड (नपुं.) : लकड़ी का सामान।

दारुमय (वि.) : लकड़ी का बना।

दारुसङ्घात (पु.) : लकड़ी की नाव।

दारेति / **दालेति** (क्रि.) : फाड़ता है।

दारेत्वा / दालेत्वा (पू.क्रि.) : फाड़कर, चीरकर।

दालन (नपुं.) : चीरना - फाड़ना ।

दावग्गि (पु.) : जंगल की आग।

दास (पु.) : गुलाम।

दासगण (पु.) : गुलामों का समूह।

दासत्त (नपुं.) : दास-भाव, दासत्व।

दासव्य (नपुं.) : गुलामी, दास्य।

दासित्त (नपुं.) : दासी-भाव, दासीत्व।

दासी (स्त्री.) : दासी।

दाह (पु.) : जलन, गर्मी।

दिक्खति (क्रि.) : देखता है, दीक्षा ग्रहण करता है।

दिक्खित (वि.) : दीक्षित।

दिगम्बर (पु.) : नग्न साधु।

दिगुण (वि.) : द्विगुण, दुगना।

दिग्घिका (स्त्री.) : खाई।

दिज (पु.) : ब्राह्मण, पक्षी।

दिजगण (पु.) : ब्राह्मणों या पक्षियों का समूह, द्वीज-समूह।

दिट्ठ : (वि.) देखा गया, (नपुं.) दृश्य।

दिट्ठधम्म : (पु.) यही संसार, (वि.) सत्य का साक्षात्कृत।

दिट्ठधम्मिक (वि.) : इसी लोक से संबंधित।

दिट्ठमङ्गलिक (वि.) : दिखने वाली चीजों के विषय में शकुन-अपशकुन का विचार करने वाला।

दिट्ठसंसन्दन (नपुं.) : दृष्ट अथवा ज्ञात बातों के बारे में तुलनात्मक विवेचन।

दिट्ठानुगति (स्त्री.) : दृष्ट का अनुकरण।

दिट्ठि (स्त्री.) : सिद्धांत, मत, विश्वास, मान्यता।

दिट्ठिक (वि.) : मत-विशेष को मानने वाला, दृष्टीवादी।

दिट्ठिकन्तार (पु.) : मतों का जंगल।

दिट्ठिगत (नपुं.) : मत, मिथ्या-मत।

दिट्ठिगहन (नपुं.) : मतों का जमघट।

दिट्ठिजाल (नपुं.) : मतों का जाल।

दिट्ठिविपत्ति (स्त्री.) : मत असफलता।

दिट्ठिविपल्लास (पु.) : मतों की विकृति।

दिट्ठिविसुद्धि (स्त्री.) : स्पष्ट दृष्टि, स्पष्ट मत, विशुद्ध दृष्टी।

दिट्ठिसम्पन्न (वि.) : सम्यक् दृष्टि से युक्त।

दिट्ठिसंयोजन (नपुं.) : व्यर्थ के मतों का बंधन।

दित्त (वि.) : दीप्त, जलता हुआ, अहंकारी।

दित्ति (स्त्री.) : प्रकाश, दीप्ति।

दिद्ध (वि.) : दिग्ध, लिपटा हुआ, विष दिया हुआ।

दिन (नपुं.) : दिन।

दिनकर / **दिनपति** (पु.) : सूर्य।

दिनच्चय (पु.), दिन का अंत, संध्या।

दिनादायी / **दिन्नादायी** (वि.) : जो दिया गया हो उसी को ग्रहण करने वाला।

दिन्दिभ (पु.) : टिटिहिरी।

दिन्न (वि., कृ.) : दिया गया।

दिन्नक (पु.) : दत्तक (पुत्र), दी गई वस्तु।

दिपच्चि / **दीपच्चि** (स्त्री.) : दीपक की ज्वाला, लौ।

दिपद (पु.) : द्विपद, दो पैरों वाला, मनुष्य।

दिपदिन्द (पु.) : मनुष्येंद्र, तथागत बुद्ध।

दिपदुत्तम (पु.) : मनुष्यों में श्रेष्ठ, तथागत बुद्ध।

दिप्पति (क्रि.) : चमकता है।

दिप्पन (नपुं.) : चमकना।

दिब्ब (वि.) : दिव्य, असामान्य, असाधारण।

दिब्बचक्खु (नपुं.) : दिव्य-चक्षु।

दिब्बचक्खुक (वि.) : दिव्य-चक्षु से युक्त।

दिब्बति (क्रि.) : मनोविनोद करता है।

दिब्बविहार (पु.) : दिव्य-विहार; करुणा, मुदिता आदि भावनाओं में चित्त का लगाना।

दिब्बसम्पत्ति (स्त्री.) : दिव्य संपत्ति।

दियड्ढ (पु.) : डेढ।

दियति (क्रि.) : देता है, दिया जाता है।

दिव (पु.) : दिव्यलोक, स्वर्ग।

दिवस (पु.) : दिन।

दिवसकर / **दिवाकर** (पु.) : सूर्य।

दिवसभाग (पु.) : दिन का समय।

दिवा (अ.) : दिन, दिन में।

दिवाठान (नपुं.) : दिन का समय गुजारने की जगह।

दिवाविहार (पु.) : दिन में विश्राम करना, दिन का समय बिताना।

दिवासेय्या (स्त्री.) : दिन में लेटना।

दिस (पु.) : शत्रु।

दिसम्पति (पु.) : नरेश, राजा।

दिसा (स्त्री.) : दिशा।

दिसाकाक (पु.) : स्थल-भूमि की खोज करने के लिए नौका पर रखा हुआ कौआ।

दिसाकुसल (वि.) : दिशा-ज्ञान में कुशल।

दिसापामोक्ख (वि.) : लोक-प्रसिद्ध।

दिसाभाग (पु.) : दिशा।

दिसामूळ्ह (वि.) : जिसे दिशाओं का ज्ञान नहीं।

दिसावासिक / दिसावासी (वि.) : देश के विभिन्न भागों में अथवा विदेश में रहनेवाला।

दिस्वा / दिस्वान (पू.क्रि.) : देखकर।

दिस्सति (क्रि.) : दिखाई देता है, प्रतीत होता है।

दीघ (वि.) : लंबा, दीर्घ।

दीघङ्गुलि (वि.) : लंबी अंगुलियों वाला, दीर्घ-अंगुली।

दीघजातिक (पु.) : सर्प की जाति का जीव।

दीघत्त (नपुं.) / **दीघता** (स्त्री.), लंबाई, दीर्घता।

दीघदस्सी (वि.) : दीर्घ-दर्शी, दूर की बात सोचने वाला।

दीघनिकाय : सुत्तपिटक का पहला ग्रंथ, जिसमें लंबे आकार के ३४ सुत्त है।

दीघभाणक (पु.) : दीघनिकाय का पाठ करने वाला।

दीघरत्तं (क्रि.वि.) : दीर्घ काल तक, लंबे समय तक।

दीघलोमक (वि.) : लंबे बाल वाला।

दीघसोत्थिय (नपुं.) : संपन्नता।

दीघहत्थ (पु.) : लंबे हाथ वाला।

दीधिति (स्त्री.) : प्रकाश, चमक, दीप्ति।

दीन (वि.) : गरीब, दीनावस्था को प्राप्त।

दीनता (स्त्री.) : दीनत्व, गरीबी।

दीप (पु.) : दीपक, द्वीप।

दीपक : (नपुं.) छोटा दीपक या द्वीप; (वि.) प्रकट करने वाला।

दीपङ्कर : (वि.) दीपक जलाने वाला, (पु.) चोबीस बुद्धों में से सर्वप्रथम।

दीपरुक्ख (पु.) : दीप-स्तंभ, दीपक का खंभा।

दीपसिखा (स्त्री.) : दीपक की लौ।

दीपालोक (पु.) : दीपक का प्रकाश।

दीपन (नपुं.) : व्याख्या करना, समझाना।

दीपना (स्त्री.) : व्याख्या।

दीपनी (स्त्री.) : व्याख्यात्मक टिप्पणी।

दीपवंस : सिंहल का प्राचीनतम ऐतिहासिक काव्य।

दीपि / दीपिक (पु.) : चीता।

(पु.), चीता ।

दीपि-जातक : बकरी ने मीठे शब्दों से चीते को बहलाना चाहा, किन्तु वह उसे खा ही गया (४२६)।

दीपिका (स्त्री.) : मशाल, व्याख्या।

दीपित (वि.) : व्याख्यात, जिसकी व्याख्या की गई हो।

दीपिनी (स्त्री.) : चीती।

दीपेति (क्रि.) : प्रकाशित करता है, स्पष्ट करता है।

दुक (नपुं.) : जोड़ा, जोड़ी।

दुकूल (नपुं.) : अच्छी किस्म का कपड़ा।

दुक्कट : (वि.) दुष्कृत, (नपु.) अकुशल कर्म।

दुक्कर (वि.) : दुष्कर, कठिन।

दुक्करभाव (पु.) : दुष्करता, कठिनता।

दुक्ख : (नपुं.) कष्ट, दुःख; (वि.) अप्रिय, कष्टदायी।

दुक्खं (क्रि.वि.) : कठिनाई से।

दुक्खक्खय (पु.) : दुःख का क्षय।

दुक्खक्खन्ध (पु.) : दुःख का समूह।

दुक्खनिदान (नपुं.) : दुःख का मूल।

दुक्खनिरोध (पु.) : दुःख का नाश।

दुक्खनिरोधगामिनीपटिपदा (स्त्री.) : दुःख-निरोध की ओर ले जानेवाला मार्ग।

दुक्खन्तगू (वि.) : जो दुःख का अंत कर चुका।

दुक्खपटिकूल (वि.) : दुःख के प्रतिकूल, दुःख के विरुद्ध।

दुक्खपरेत (वि.) : दुःख से दुखित।

दुक्खप्पत्त (वि.) : दुःख-प्राप्त।

दुक्खप्पहाण (नपुं.) : दुःख का दूर करना।

दुक्खविपाक (वि.) : जिसका फल दुःख हो।

दुक्खसच्च (नपुं.) : दुःख के संबंध में सत्य।

दुक्खसमुदय (पु.) : दुःख की उत्पत्ति।

दुक्खसम्फस्स (वि.) : दुःख का स्पर्श।

दुक्खसेय्या (स्त्री.) : बे-आराम की नींद।

दुक्खानुभवन (नपुं.) : दण्ड भोगना।

दुक्खापगम (पु.) : दुक्ख का हटाना।

दुक्खापन (नपुं.) : कष्ट-प्रद।

दुक्खापेति (क्रि.) : कष्ट देता है, दुखी करता है।

दुक्खित / दुक्खी (वि.) : अप्रसन्न।

दुक्खीयति (क्रि.) : दुखी होता है।

दुक्खुद्रय (वि.) : दुक्खद।

दुक्खूपसम (पु.) : दुःख का उपशमन।

दुग्ग (नपुं.) : दुर्ग, किला।

दुग्गत (वि.) : दरिद्र, दुर्गति-प्राप्त।

दुग्गति (स्त्री.) : दुर्गति, बुरी अवस्था।

दुग्गन्ध : (पु.) बदबू, दुर्गंध; (वि.) : बदबूदार।

दुग्गम (वि.) : दुर्गम, ऐसी जगह जहाँ जाना कठिन हो।

दुग्गहीत (वि.) : जिसे ठीक से नहीं समझा, मिथ्या-मत।

दुच्चज (वि.) : जिसे त्यागना कठिन हो।

दुच्चरित (नपुं.) : दुराचरण।

दुजिव्ह (पु.) : सांप।

दुज्जह (वि.) : जिसे छोड़ना कठिन हो।

दुज्जान (वि.) : जिसे जानना कठिन हो।

दुज्जीवित (नपुं.) : मिथ्या जीविका।

दुट्ठ (वि.) : दुष्ट, द्वेष-युक्त।

दुट्ठचित्त (नपुं.) : दुष्ट चित्त वाला ।

दुट्ठु (क्रि.वि.) : बुरी तरह से।

दुट्ठुल्ल : (नपु.) फूहड बातचीत, (वि.) घटिया।

दुतप्पय (वि.) : जिसे आसानी से संतुष्ट न किया जा सके।

दुतिय (वि.) : द्वितीय, दूसरा।

दुतियक (वि.) : साथी।

दुतियं (क्रि.वि.) : दूसरी बार।

दुतियपलायी- जातक : गांधार नरेश के पलायन की कथा (२३०)।

दुतिया (स्त्री.) : पत्नी, द्वितीया विभक्ति, कर्मकारक।

दुतियिका (स्त्री) : पत्नी।

दुती (स्त्री.) : संदेशवाहक।

दुत्तर (वि.) : जो कठिनाई से पार किया जा सके।

दुद्दद-जातक : तक्षशिला-शिक्षित तपस्वी और उनके साथियों के बनारस आने पर वाराणसी के लोगों ने अन्न-पान से संतर्पित किया (१८०)।

दुद्दम (वि.) : जिसका कठिनाई से दमन किया जा सके।

दुद्दस (वि.) : जो कठिनाई से दिखाई दे या समझ में आये।

दुद्दसतर (वि.) : जो और भी अधिक कठिनाई से दिखाई दे या समझ में आये।

दुद्दसा (स्त्री.) : दुर्दशा, बुरी हालत।

दुद्दसापन्न (वि.) : दुर्दशा-ग्रस्त।

दुद्दसिक (वि.) : बदशक्ल।

दुद्दिन (नपुं.) : दुर्दिन, बारिश का दिन या खराब दिन।

दुद्ध : (नपुं.) दुग्ध, दूध; (वि., कृ.) दुहा हुआ।

दुन्दुभि (स्त्री.) : ढोल, एक प्रकार का बाजा।

दुन्नामक (नपुं.) : बवासीर।

दुन्निक्खित्त (वि.) : अयोग्य ढंग से रखा गया।

दुन्निग्गह (वि.) : जिसे काबू में रखना कठिन हो।

दुन्निमित्त (नपुं.) : अपशकुन।

दुन्नीत (वि.) : अनुचित ढंग से ले जाया गया।

दुपट्ट (वि.) : दो तहों वाला।

दुप्पञ्ञ (पु.) : दुष्प्रज्ञ, मूर्ख (आदमी)।

दुप्पटिनिस्सग्गिय (वि.) : जिसे छोड़ना कठिन हो।

दुप्पटिविज्झ (वि.) : जिसे समझना कठिन हो।

दुप्पमुञ्च (वि.) : जिसे छोड़ना दूभर हो।

दुप्परिहारिय (वि.) : जिसकी व्यवस्था करना कठिन हो।

दुफस्स (पु.) : अप्रिय स्पर्श।

दुब्बच (वि.) : जो बात न मानता हो, अनाज्ञाकारी।

दुब्बच्च-जातक : आचार्य ने बोधिसत्त्व का कहना नहीं माना (११६)।

दुब्बण्ण (वि.) : दुर्वर्ण, कुरूप।

दुब्बल (वि.) : दुर्बल, कमजोर।

दुब्बलकट्ठ-जातक : जंजीर तोड़कर भागे हुए हाथी की कथा (१०५)।

दुब्बलत्त (नपुं.) / **दुब्बलता** (स्त्री.) / **दुब्बलभाव** (पु.) / **दुब्बल्य** (नपुं.) : कमजोरी।

दुब्बा (स्त्री.) : दूर्वा-तृण, दूब घास।

दुब्बिजान (वि.) : कठिनाई से समझ में आने योग्य।

दुब्बिनीत (वि.) : दुर्विनीत।

दुब्बुट्ठिक : (वि.) दुर्वृष्टिक, जहां बारिश कम हो; (नपुं.) अकाल।

दुब्भक (वि.) : विश्वासघाती।

दुब्भति (क्रि.) : विश्वासघात करता है, षड्यंत्र करता है।

दुब्भन (नपुं.) : द्रोहीपन, विश्वासघात।

दुब्भर (वि.) : दूभर, जिसका पालन-पोषण कठिन हो।

दुब्भासित (नपुं.) : अपमानसूचक शब्द, अपशब्द।

दुब्भिक्ख (नपुं.) : अकाल, दुर्भिक्ष, आहार की कमी।

दुब्भी (वि.) : विश्वासघात करने वाला।

दुम (पु.) : द्रुम, पेड़।

दुमग्ग (नपुं.) : पेड़ का शिखर।

दुमन्तर (नपुं.) : नाना प्रकार के पेड़।

दुमिन्द / दुमुत्तम (पु.) : वृक्षराज, बोधि-वृक्ष।

दुमुप्पल (पु.) : पीले फूलों वाला वृक्ष-विशेष।

दुम्मङ्कु (वि.) : जिसे कठिनाई से चुप कराया जा सके।

दुम्मती (पु.) : बुद्धि-भ्रष्ट आदमी, दुर्मती।

दुम्मन (वि.) : अप्रसन्न, दुखी।

दुम्मुख (वि.) : अप्रसन्न मुख ।

दुम्मेध (वि.) : कुबुद्धि, दुर्बुद्धि।

दुम्मेध-जातक : राजा ने दुष्कर्म करने वालों की बलि देने की घोषणा की (५०)।

दुम्मेध-जातक : राजा ने ईर्षावश अपने हस्तिराज को ही मरवा डालना चाहा (१२२)।

दुय्हति (क्रि.) : दुहा जाता है।

दुरक्ख (वि.) : जिसका संरक्षण कठिन हो।

दुरक्खात (वि.) : जो ठीक से नहीं समझाया गया हो।

दुरच्चय (वि.) : जिसे लांघना कठिन हो।

दुरत्तिक्कम (वि.) : जिसे पार कर जाना कठिन हो, अपराजित।

दुरभिसम्भव (वि.) : दुष्कर, भयंकर कठिन।

दुरनुबोध / दुराजान (वि.) : जिसे जानना या समझना कठिन हो।

दुराजान-जातक : आचार्य ने अपने शिष्य को सलाह दी कि वह अपनी स्त्री की करतूतों को उपेक्षा की दृष्टि से देखे (६४)।

दुरासाद (वि.) : जिसके पास पहुंचना कठिन हो।

दुरित (नपुं.) : पाप, अकुशल कर्म।

दुरुत्त : (वि.) बुरी तरह से कहा गया, (नपुं.) बुरी बात, बुरी वाणी।

दुल्लद्ध (वि.) : कठिनाई से प्राप्त।

दुल्लद्धि (स्त्री.) : मिथ्या-दृष्टि।

दुल्लभ (वि.) : जिसे कठिनाई से प्राप्त किया जा सके।

दुवङ्गिक (वि.) : दो अंगों से युक्त।

दुविध (वि.) : दो प्रकार का।

दुवे (संख्या) : दो (२)।

दुस्स (नपुं.) : कपड़ा।

दुस्सकरण्डक (पु.) : कपड़ों की पेटी।

दुस्सकोट्ठागार (नपुं.) : कपड़ों का भंडार।

दुस्सति (क्रि.) : द्वेष करता है, क्रोधित होता है।

दुस्सन (नपुं.) : द्वेष, विकृति, क्रोध।

दुस्सयुग (नपुं.) : कपड़ों का जोड़ा।

दुस्सवट्टि (स्त्री.) : कपड़ों का थान, कपड़े की किनारी।

दुस्सह (वि.) : जिसका सहन करना कठिन हो।

दुस्सील (वि.) : दुराचारी।

दुहति (क्रि.) : (दूध), दुहता है।

दुहन (नपुं.) : दुहा जाना।

दुहितु (स्त्री.) : बेटी, दुहिता, पतोहू।

दूत (पु.) : संदेश-वाहक।

दूती (स्त्री.) : दूतिका।

दूतेय्य (नपुं.) : संदेश, संदेश-वाहन।

दूत-जातक : एक लोभी आदमी अपने को 'दूत-दूत' कहता हुआ, राजा के खाने की मेज तक पहुंच गया। राजा ने पूछा – "तू किसका दूत है?" आदमी का उत्तर था, "मैं पेट का दूत हूँ। " (२६०)।

दूत-जातक : गुरु-दक्षिणा देने के लिए इकट्ठी की गई राशि गंगा नदी में गिर पड़ी (४७८)।

दूभक (वि.) : विश्वासघाती।

दूर (नपुं., वि.) : दूर, दूरस्थ।

दूरङ्गम (वि.) : दूर तक जाने वाला।

दूरतो (अ.) : दूर से।

दूरत्त (नपुं.) : दूरत्व, दूर होने का भाव ।

दूसक (वि.) : दूषित करने वाला, विकृत करने वाला, गंदा करने वाला।

दूसन (नपुं.) : दूषण, विकृति, गंदगी।

दूसित (वि., कृ.) : दूषित।

दूसेति (क्रि.) : दूषित करता है, खराब करता है, बदनाम करता है, बुरा व्यवहार करता है।

दूहन (नपुं.) : डाका डालना, बदनामी करना, दूध दुहना।

देड्डुभ (पु.) : जल-सर्प।

देण्डिम (पु.) : डौंडी।

देति (क्रि.) : देता है।

देव (पु.) : देवता, आकाश, बादल, राजा।

देवकञ्ञा (स्त्री.) : देव-कन्या।

देवकाय / देवगण (पु.) : देव-गण, देव-समूह।

देवकुमार (पु.) : दिव्य राजकुमार।

देवकुसुम (नपु.) : देवलोक के फूल।

देवचारिका (स्त्री.) : देवलोक में भ्रमण।

देवच्छरा (स्त्री.) : देवप्सरा।

देवञ्ञतर (वि.) : लघु-देवता।

देवट्ठान (नपुं.) : देवस्थान।

देवत्त (नपुं) / **देवत्तभाव** (पु.) : देवत्व, दैवी शरीर, श्रेष्ठत्व।

देवता (स्त्री.) देव, देवी।

देवदत्तिक (वि.) : देवता द्वारा दिया गया।

देवदारु (पु.) : देवदार-वृक्ष।

देवदुन्दुभि (स्त्री.) : गर्जन, गड़गड़ाहट।

देवदूत (पु.) : देवताओं का दूत।

देवदेव (पु.) : देवताओं का देवता।

देवधम्म (पु.) : दिव्यगुण, पापभीरूता।

देवधम्मिक (वि.) श्रद्धावान, शीलसम्पन्न व्यक्ति।

देवधीतु (स्त्री.) : अप्सरा।

देवनगर / **देवपुर** (नपुं.) : देवताओं का नगर।

देवनिकाय (वि.) : देवताओं का समूह।

देवपरिसा (स्त्री.) : देव-परिषद।

देवपुत्त (पु.) : देवता का पुत्र।

देवभवन / **देवविमान** (नपुं.) : देवताओं का निवासगृह।

देवयान (नपुं.) : स्वर्ग-मार्ग, हवाई जहाज।

देवराजा (पु.) : देवताओं का राजा शक्र।

देवरुक्ख (पु.) : देवताओं का वृक्ष, पारिजात।

देवरूप (नपुं.) : देवता की मूर्ति।

देवलोक (पु.) : स्वर्ग-लोक।

देवदत्त : शाक्य मुनि गौतम बुद्ध के मामा सुप्रबुद्ध शाक्य का पुत्र, जो जन्मभर बुद्ध-द्वेषी बना रहा।

देवदह : शाक्यों का एक निगम, कस्बा। भगवान बुद्ध ने अनेक बार यहां चारिका की थी।

देवधम्म-जातक : देव-धम्म अर्थात् पाप से विरति का उपयोग संबंधी जातक कथा (६)।

देवर (पु.) : देवर, पति का छोटा भाई।

देवसिक (वि.) : दैनिक, रोज का।

देवातिदेव (पु.) : देवताओं का देवता।

देवानुभाव (पु.) : देव-प्रताप।

देवानम्पियतिस्स : धम्मासोक का समकालीन तथा मित्र सिंहल राजा ।

देविद्धि (स्त्री.) : दैवी शक्ति।

देविसि (पु.) : दिव्य ऋषि।

देवी (स्त्री.) : देवी, रानी, महोदया; महेन्द्र स्थविर तथा संघमित्रा की माता,अशोक की पत्नी का नाम।

देवुपपत्ति (स्त्री.) : देवताओं में उत्पत्ति ।

देस (पु.) : देश, प्रदेश।

देसक / देसेतु (पु.) : देशना करने वाला, उपदेशक।

देसना (स्त्री.) : उपदेश।

देसनाविलास (पु.) : देशना का सौंदर्य।

देसिक (वि.) : प्रदेश-विशेष से संबंधित।

देसित (वि.) : उपदिष्ट, उपदेशित।

देसेति (क्रि.) : उपदेश देता है।

देस्स / देस्सिय (वि.) : प्रतिकूल।

देह (पु., नपुं.) : शरीर।

देहनिक्खेप (नपुं.) : शरीर त्याग, मृत्यु।

देहनिस्सित (वि.) : शरीर संबंधी।

देही (पु.) : देहधारी।

दोण (पु., नपुं.) : माप-विशेष, (पु.) भगवान बुद्ध का शरीरान्त होने पर उनकी अस्थियों का बँटवारा करनेवाला दोण ब्राह्मण।

दोणि / दोणिका (स्त्री.) : द्रोणि, नौका।

दोमनस्स (नपुं.) : असंतोष, चैतसिक दुःख।

दोला (स्त्री.) : झूला।

दोलायति (क्रि.) : झुलाता है।

दोवचस्स (नपुं) : दुर्वचन।

दोवारिक (पु.) : द्वारपाल।

दोस (पु.) : द्वेष, क्रोध, दोष।

दोसक्खान (नपुं.) : दोषारोपण।

दोसग्गि (पु.) : द्वेषाग्नि, जलन।

दोसापगत (वि.) : दोष-रहित।

दोसिना (स्त्री.) : चांदनी।

दोह (पु., नपुं.) : द्रोह, दूध दुहना।

दोहक (पु., नपुं.) : दूध दुहनेवाला, दूध रखने का पात्र।

दोहळ (पु.) : गर्भिणी की बलवती इच्छा, दोहद।

दोहळिनी (स्त्री.) : दोहद की इच्छा वाली।

दोही (वि.) : दूध दुहनेवाला; द्रोही, अकृतज्ञ।

द्रव (पु.) : रस, तरल पदार्थ।

द्वङ्गुल (वि.) : दो अंगुलभर।

द्वत्तिक्खतुं (क्रि.वि.) : दो-तीन बार।

द्वत्तिपत्त (नपुं.) : दो-तीन पात्र।

द्वित्तिंसति (स्त्री.) : बत्तीस (३२)।

द्वन्द (नपुं.) : जोड़ा, द्वंद्व (समास)।

द्वय (नपुं.) : दो।

द्वाचत्तालीसति / द्विचत्तालीसति (स्त्री.) : बयालीस (४२)।

द्वादस (वि.) : बारह (१२)।

द्वानवुत्ति (स्त्री.) : बानबे (९२)।

द्वार (नपुं.) : दरवाजा।

द्वारकवाट (नपुं.) : दरवाजे के किवाड़।

द्वारकोट्ठक (नपुं.) : दरवाजे के ऊपर का कमरा।

द्वारगाम (पु.) : नगर-द्वार के बाहर का गांव।

द्वारपाल (पु.) : चौकीदार, पहरेदार।

द्वारबाहा (स्त्री.) : दरवाजे का खंबा।

द्वारसाला (स्त्री.) : दरवाजे के समीप की शाला।

द्वारिक : (वि.) द्वार से सम्बन्धित, (पु.) पहरेदार, द्वारपाल।

द्वावीसति / द्वाबीसति (स्त्री.) : बाईस (२२)।

द्वासट्ठि / द्विसट्ठि (स्त्री.) : बासठ (६२)।

द्वासत्तति / द्विसत्तति (स्त्री.) : बहत्तर (७२)।

द्वासीति (स्त्री.) : बयासी (८२)।

द्वि / द्वे (संख्या, वि.) : दो (२)।

द्विक (नपुं.) : दो की जोड़ी।

द्विक्खुत्तुं (क्रि.वि.) : दो बार।

द्विगुण (वि.) : दुगुना।

द्विज (पु.) : ब्राह्मण, पक्षी।

द्विजिव्ह (वि.) : दो जीभों वाला (सर्प)।

द्विधा / द्वेधा (क्रि.वि.) : दो तरह से।

द्विधापथ / द्वेधापथ (पु.) : सड़क का दो ओर बँट जाना।

द्विप (पु.) : हाथी।

द्विपञ्ञासति (स्त्री.) : बावन (५२)।

द्विमासिक (वि.) : दो महीने का।

द्विसत (नपुं.) : दो सौ (२००)।

द्विसहस्स (नपुं.) : दो हजार (२०००)।

द्वीतीह (क्रि.वि.) : दो या तीन दिन।

द्वीह (नपुं.), दो दिन ।

द्वेज्झ (नपुं.) : संदेह, विरोध ।

द्वेवाचिक (वि.) : दो शब्द ही दोहराने वाला।

द्वेळ्हक (नपुं.) : शक, संदेह।

ध

धङ्क (पु.) : कौवा।

धंसित (वि.) : ध्वस्त।

धंसेति (क्रि.) : नष्ट करता है, ध्वस्त करता है।

धज (पु.) : ध्वज।

धजग्ग (पु.) : ध्वजा का सिरा।

धजालु (वि.) : ध्वजाओं से सुसज्जित।

धजाहट (वि.) : युद्ध में जीतकर लाया हुआ।

धजविहेठ-जातक : दिन में तपस्वी, रात में बनारस के राजा की रानी के पास जानेवाले जादूगर की कथा (३९१)।

धजिनी (स्त्री.) : सेना।

धञ्ञ : (नपु.) धान्य, (वि.) सौभाग्य-संपन्न।

धञ्ञपिटक (नपुं.) : धान्य की टोकरी।

धञ्ञरासि (पु.) : धान्य का ढेर।

धञ्ञवन्तु (वि.) : सौभाग्य-संपन्न।

धञ्ञागार (नपुं.) : अनाज का गोदाम ।

धत (वि.) : धृत, धारण किया हुआ, स्मरण रखा हुआ।

धन (नपुं.) : धन, दौलत।

धनक्कीत (वि.) : धन से खरीदा गया।

धनक्खय (पु.) : धन का क्षय।

धनत्थद्ध (वि.) : धन का अभिमानी।

धनत्थिक (वि.) : धनार्थी, धन की इच्छा रखने वाला।

धनलोल (वि.) : धन का लोभी।

धनवन्तु (वि.) : धनवान।

धनहेतु (क्रि.वि.) : धन के लिए।

धनायति (क्रि.) : धन समझता है।

धनासा (स्त्री.) : धन की आशा।

धनञ्जय-जातक / धूमकारी-जातक : इन्द्रप्रस्थ का राजा पुराने योद्धाओं की ओर ध्यान न दे नये योद्धाओं का सम्मान करता था (४१३)।

धनिक (पु.) : ऋणदाता।

धनित : (नपुं.) आवाज, (वि.) ध्वनित, आवाज किया गया।

धनी : (वि.) धनवान, (पु.) धनी आदमी।

धनु (नपुं.) : धनुष।

धनुक (नपुं.) : छोटा धनुष।

धनुकार (पु.) : धनुष बनाने वाला ।

धनुकेतकी (पु.) : केतकी, पेंच बनाने वाला।

धनुग्गह (पु) : धनुर्धारी।

धनुसिप्प (नपुं.) : तीरंदाजी।

धन्त (वि.) : फूँका हुआ।

धम / धमक (वि.) : बजाने वाला।

धमकरक (पु.) : पानी छानने का साधन।

धमति (क्रि.) : बजाता है।

धमनि (स्त्री.) : नस, रग।

धमनिसंथतगत्त (वि.) : जिसके सारे शरीर पर नसें ही नसें दिखाई दें।

धमापेति (क्रि.) : बजवाता है।

धमेति (क्रि.) : बजाता है।

धम्म (पु.) : धर्म, सिद्धांत, स्वभाव, सत्य, सदाचार।

धम्मकथा (स्त्री.) : धार्मिक कथा, धम्म / सत्य / सदाचार संबंधी बातचीत।

धम्मकथिक (पु.) : उपदेष्टा।

धम्मकम्म (नपुं.) : कानुनी कार्रवाई, विनय के अनुकूल कार्रवाई।

धम्मकाम (वि.) : धर्म-प्रिय, धर्म चाहने वाला।

धम्मकाय (वि.) : धर्म-काया।

धम्मक्खन्ध (पु.) : धर्म-स्कन्ध।

धम्मक्खान (नपुं.) : धर्म की व्याख्या, धर्म सिखाना।

धम्मगण्ठिका / धम्मगण्डिका (स्त्री) : बलि-वेदी।

धम्मगरु (वि.) : धर्म का गौरव।

धम्मगुत्त (वि.) : धर्म द्वारा सुरक्षित।

धम्मघोसक (पु.) : धर्म की घोषणा करने वाला।

धम्मचक्क (नपुं.) : धर्म-चक्र।

धम्मचक्कपवत्तन (नपुं.) : धर्म-चक्र प्रवर्तन, धर्म देशना।

धम्मचक्कपवत्तनसुत्त : आषाढ-पूर्णिमा के दिन इसिपतन के मिगदाय में पञ्चवर्गीय भिक्षुओं को भगवान बुद्ध द्वारा दिया गया सर्वप्रथम उपदेश।

धम्मचक्खु (नपुं.) : धर्म-चक्षु।

धम्मचरिया (स्त्री.) : धर्माचरण।

धम्मचारी (पु.) : धर्मानुसार आचरण करने वाला।

धम्मचेतिय (नपुं.) : पवित्र धर्म-ग्रंथालय, धम्मचैत्य।

धम्मजातक : धर्म तथा अधर्म का शास्त्रार्थ संबंधी जातक कथा (४५७)।

धम्मजीवी (वि.) : धर्मानुसार जीवन वाला।

धम्मञ्ञू (वि.) : धर्मज्ञ, धर्म का जानकार।

धम्मट्ठ (वि.) : धर्म-स्थित।

धम्मट्ठिति (स्त्री.) : धर्म-स्थिति।

धम्मतक्क (पु.) : धर्म-तर्क, सही तर्क करना।

धम्मता (स्त्री.) : स्वाभाविक नियम।

धम्मदान (नपुं.) : धर्म-दान।

धम्मदायाद (वि.) : धर्म का उत्तराधिकारी।

धम्मदीप (वि.) : धर्म-द्वीप।

धम्मदेसना (स्त्री.) : धर्म-देशना, धर्म का उपदेश।

धम्मदेस्सी (पु.) : धर्म-द्वेषी।

धम्मधज (वि.) : जो धर्म को ही ध्वजा समझे।

धम्मद्धज-जातक : बनारस के राजा के रिश्वतखोर काळक पुरोहित तथा धर्मध्वज नामक धार्मिक पुरोहित का संघर्ष की जातक कथा (२२०)।

धम्मद्धज-जातक : धर्मध्वजी कौवे ने दूसरे पक्षियों को धोखा देकर उन सबके अंडे-बच्चे खा डाले (३८४)।

धम्मधर (वि.) : धर्म-धर।

धम्मनि / धम्मनी (पु.) : गृह-सर्प।

धम्मनियाम (पु.) : प्राकृतिक नियम, स्वाभाविक नियम।

धम्मपण्णाकार (पु.) : धर्म-भेंट।

धम्मपद (नपुं.) धर्म के पद्य, खुद्दक-निकाय का दूसरा ग्रंथ। संभवतः यह थेरगाथा व थेरीगाथा के बाद का गाथा-संकलन है।

धम्मपदट्ठकथा : धम्मपद की वैसी ही अर्थ-कथा, जैसी जातक अर्थ-कथा (जातकट्ठकथा)।

धम्मप्पमाण (वि.) : धर्म-माप।

धम्मभण्डागारिक (पु.) : धर्म का खजांची, भगवान बुद्ध के निकटतम भिक्षु आनंद के लिए प्रयुक्त।

धम्मभेरि (स्त्री.) : धर्म का नगाडा, तुरही।

धम्मरक्खित (वि.) : धर्मरक्षित, धम्म द्वारा रक्षित।

धम्मरत (वि.) : धर्मरत, धर्मप्रिय।

धम्मरति (स्त्री.) : धर्म-प्रीति।

धम्मरस (पु.) : धर्म-रस।

धम्मराजा (पु.) : धर्म-राजा, भगवान बुद्ध के लिए प्रयुक्त।

धम्मलद्ध (वि.) : धर्म से प्राप्त।

धम्मवर (पु.) : धर्मश्रेष्ठ, श्रेष्ठ धर्म।

धम्मवादी (वि.) : धर्मानुसार बोलने वाला।

धम्मविचय (पु.) : धर्म का चयन, धर्म-मीमांसा।

धम्मविदू (वि.) : धर्म का जानकार।

धम्मविनिच्छय (पु.) : धार्मिक निश्चय।

धम्मविहारी (वि.) : धर्म के अनुसार जीने वाला, धर्म में विहार करने वाला।

धम्मसङ्गणि / धम्मसङ्गणी : अभिधम्म-पिटक के सात ग्रंथों में से पहला ग्रंथ।

धम्मसंविभाग (पु.) : धर्मानुसार बँटवारा।

धम्मसङ्गाहक (पु.) : धर्म का संग्रह करनेवाला।

धम्मसङ्गीति (स्त्री.) : धर्म-संगायन।

धम्मसमादन (नपुं.) : धर्म का ग्रहण।

धम्मसवण (नपुं.) : धर्म का श्रवण।

धम्मसाकच्छा (स्त्री.) : धर्म संबंधी चर्चा।

धम्मसेनापति (पु.) : धर्म-सेनापति, भगवान बुद्ध के अग्रश्रावक सारिपुत्र के लिए प्रयुक्त।

धम्मसोण्ड (वि.) : धर्म-प्रेमी।

धम्मादास (पु.) : धर्म-दर्पण।

धम्माधार (वि.) : धर्म का सहारा।

धम्माधिपति (वि.) : धर्म को स्वामी मानने वाला, धर्म का स्वामी।

धम्मानुधम्म (पु.) : धर्मानुसार।

धम्मानुवत्ती (वि.) : धमानुयायी।

धम्माभिसमय (पु.) : धर्म की समझ।

धम्मामत (नपुं.) : धर्म-रूपी अमृत।

धम्मासन (नपुं.) : धर्मासन।

धम्मिक (वि.) : धार्मिक, धर्मानुकूल।

धम्मिल्ल (पु.) : बालों की गाँठ।

धम्मीकथा (स्त्री.) : धार्मिक कथा, धर्म संबंधी बातचीत।

धर (वि.) : धारण करने वाला।

धरण : (नपुं.) भार-विशेष, (वि.) धारण करने वाला।

धरणी (स्त्री.) : पृथ्वी, धरती।

धरति (क्रि.) : धारण करता है, जारी रहता है।

धरा (स्त्री.) : भूमि, धरती।

धव (पु.) : पति, बबूल का पेड़।

धवल : (वि.) श्वेत, स्वच्छ; (पु.) श्वेत रंग।

धात (वि.) : भरा-पेट, संतुष्ट ।

धाती (स्त्री.) : दाई।

धातु (स्त्री.) : स्वाभाविक अवस्था, पवित्र (अस्थि-) धातु, शब्द का मूलस्वरूप, शारीरिक धातु, इंद्रिय।

धातुक (वि.) : धातु की प्रकृति लिये।

धातुकथा (स्त्री.) : धातुओं की व्याख्या, अभिधम्मपिटक का तीसरा ग्रंथ।

धातुघर (नपुं.) : पवित्र धातु-गृह।

धातुनानत्त (नपुं.) : धातुओं के नाना प्रकार।

धातुविभाग (पु.) : धातुओं का पृथक्-पृथक् विश्लेषण।

धारक (वि.) : धारण करने वाला, पालन पोषण करने वाला, याद रखने वाला।

धारण (नपुं.) : धारण करना, ग्रहण करना।

धारा (स्त्री.) : (जल) धारा।

धारित (वि.) : धारण किया हुआ।

धारी (वि.) : धारण करने वाला।

धारेति (क्रि.) : धारण करता है।

धारेतु (पु.) : धारण करने वाला।

धावति (क्रि.) : दौड़ता है।

धावित (वि.) : दौड़ा हुआ।

धावित्वा / **धाविय** (पू.क्रि.) : दौड़कर।

धावन (नपुं.) : दौड़।

धावी (वि.) : दौड़ने वाला।

धि (अ.) : धिक्कार।

धिक्कत (वि.) : घृणित।

धिति (स्त्री.) : धैर्य, सहन-शक्ति।

धितिमन्तु (वि.) : धैर्यवान।

धीतलिका (स्त्री.) : गुड़िया।

धीतु (स्त्री.) : बेटी।

धीतुपति (पु.) : जामाता, जँवाई।

धीयति (क्रि.) : धारण करता है, मानता है।

धीयमान (वि.) : धारण करने वाला, मानने वाला।

धीर (वि.) : बुद्धिमान।

धीरत्त (नपुं.) : धीरज, धीरता, धैर्यभाव।

धीवर (पु.) : मछुआ, ढीवर।

धुत / धूत (वि.) : धुना गया, हटाया गया।

धुतङ्ग (नपु.) : तपस्वियों के व्रतविशेष, कठोर साधना की विधि।

धुतधर (वि.) : धुतंगधारी।

धुतवादी (पु.) : धुतंग-अभ्यासी।

धुत्त / धुत्तक (पु.) : धूर्त, चालाक, दगाबाज।

धुत्तिका / धुत्ती (स्त्री.) : धूर्त, चालाक, दगाबाज स्त्री।

धुनन (नपुं.) : हटाना, दूर करना, झाड़ फेंकना।

धुनाति (क्रि.) : हिलाता है, दूर करता है।

धुर (नपं.) : उत्तरदायित्व, भार, धुरा, जुआ, गाडी के बैलों के कंधों पर रखी जाती है।

धुरगाम (पु.) : पड़ोसी ग्राम।

धुरनिक्खेप (पु.) : पद-परित्याग, भार को नीचे रखना।

धुरन्धर (वि.) : पदाधिकारी।

धुरभत्त (नपुं.) : नियमित भोजन।

धुरवहन (नपुं.) : पद-धारण, भार को ढोना।

धुरवाही (पु.) : भारवाहक पशु।

धुरविहार (पु.) : पड़ोसी विहार।

धुव (वि.) : ध्रुव, स्थायी।

धुवं (क्रि.वि.) : लगातार, सिलसिलेवार।

धूप (पु.) : धूप (बत्ती)।

धूपन (नपुं.) : धूप जलाना, छौंकना।

धूपायति (क्रि.) : धुआँ देता है।

धूपायित (वि.) : धुआँ दिया हुआ।

धूपेति (क्रि.) : छौंकता है।

धूपित (वि.) : छौंका हुआ ।

धूम (पु.) : धुआँ।

धूमकेतु (पु.) : धूमकेतु तारा।

धूमजाल (नपुं.) : धुएँ का जाल।

धूमनेत्त (नपुं.) : धुआँ निकलने का रास्ता, धुआं निकलने की नाली।

धूमसिख (पु.) : धूम्र-शिखा, आग।

धूमायति (क्रि.) : धुआँ करता है, सुलगता है।

धूमायितत्त (नपुं.) : धुंधला करना, अस्पष्ट करना।

धूलि (स्त्री.) : धूल।

धूसर (वि.) : मटमैला।

धेनु (स्त्री.) : गौ, गाय।

धेनुप (पु.) : दूध पीता बछड़ा।

धोत (वि.) : धोया हुआ।

धोन (वि.) : बुद्धिमान।

धोरय्ह (वि.) : भार वहन करने में समर्थ।

धोवति (क्रि.) : धोता है।

धोवन (नपुं.) : धोना।

न

न (अ.) : नहीं।

नकुल (पु.) : नेवला।

नकुल-जातक : सांप तथा नेवले में भी मैत्री संबंध स्थापित होने की कथा (१६५)।

नक्क (पु.) : कछुआ।

नक्खत्त (नपु.) : नक्षत्र।

नक्खत्तकीळा (स्त्री.) : नक्षत्र-क्रीडा, एक त्यौहार।

नक्खत्तपाठक (पु.) : ज्योतिषी।

नक्खत्तयोग (पु.) : नक्षत्रों का योग, जन्म-पत्री।

नक्खत्तराज (पु.) : चन्द्रमा।

नक्खत्त-जातक : नक्षत्र के अनुसार शादी करने जाकर वर-पक्ष वालों ने अपना काम बिगाडा (४९)।

नख (पु., नपुं.) : नाखून।

नखपञ्जर (पु.) : पंजा।

नखी (वि.) : पंजों वाला, नाखून वाला।

नग (पु.) : पर्वत, पहाड़।

नगर (नपुं.) : शहर, छोटा शहर, नगर।

नगरगुत्तिक (पु.) : नगराधिपति, नगर-प्रमुख।

नगरवर (नपुं.) : श्रेष्ठ नगर।

नगरवासी (पु.) : नागरिक।

नगरसोधक (पु.) : नगर-शोधक, शहर की सफाई करने वाला।

नगरसोभिनी (स्त्री.) : नगर-वधू, नगर-सुंदरी।

नग्ग (वि.) : नग्न, नंगा।

नग्गचरिया (वि.) : नग्न रहना।

नग्गसमण (वि.) : नग्न-श्रमण, आजीवक।

नग्गिय (नपुं.) : नग्नता, नंगापन।

नङ्गल (नपुं) : हल।

नङ्गलफाल (पु.) : हल की फाल।

नङ्गलीसा (स्त्री.) : हल का डंडा, हलस।

नङ्गलीसजातक : मूर्ख विद्यार्थी हर चीज की उपमा हलस से ही देता था (१२३)।

नङ्गुट्ठ (नपुं.) : पूंछ, दुम।

नंगुट्ठ-जातक : सन्यासी ने अग्नि देवता को गाय की पूंछ ही अर्पित की (१४४)।

नचिर (वि.) : थोड़ा समय, अचिर काल।

नचिरस्सं (क्रि.वि.) : अचिर काल में, थोड़े समय में।

नच्च (नपुं) : नृत्य, नाटक, नाच।

नच्चक (पु.) : नाचने वाला, नाटक का पात्र।

नच्चट्ठान (नपुं,) : नृत्य-स्थान, नाटक-गृह।

नच्च-जातक : हंस-राज ने निर्लज्ज मोर को अपनी कन्या नहीं दी (३२)।

नच्चति (क्रि.) : नाचता है।

नच्चन (नपुं.) : नाचना, नाच, नर्तन।

नट / **नटक** / **नट्टक** / **नत्तक** (पु.) : नृत्यकार, नाचने वाला, नाटक का पात्र।

नट्ट / **नत्त** (नपुं.) : नृत्य, नाट्य, नाटक।

नट्ठ (वि.) : नष्ट हुआ, समाप्त हुआ।

नत (वि.) : झुका हुआ।

नति (स्त्री.), नम्रता, झुकाव ।

नत्तन (नपुं.) : नृत्य, नर्तन, नाटक।

नत्तकी (स्त्री.) : नर्तकी ।

नत्तमाल (पु.) : वृक्ष-विशेष।

नत्तु (पु.) : नाती।

नत्थि (क्रि.) : नहीं है।

नत्थिकदिट्ठि (नपुं.) : नास्तिक मत, नास्ति-दृष्टि।

नत्थिकवादी (पु.) : नास्तिक, नास्तिवादी।

नत्थिता (स्त्री.) / **नत्थिभाव** (पु.) : न होने का भाव।

नत्थु (स्त्री.) : नाक।

नत्थुकम्म (नपुं) : नाक की चिकित्सा।

नदति (क्रि.) : गर्जता है।

नदन (नपुं.) : गर्जन।

नदित (वि.) : गर्जा हुआ।

नदी (स्त्री.) : नदी।

नदीकूल (नपुं.) : नदी-तट।

नदीदुग्ग (नपुं.) : जहां पहुंचने में नदी बाधक हो।

नदीमुख (नपुं.) : नदी का मुहाना।

नद्ध (वि.) : बंधा हुआ।

नद्धि (स्त्री.) : चमड़े की रस्सी।

ननन्दा (स्त्री.) : ननद।

ननु (अ.) : निश्चय से।

नन्द (वि.) : खुश, प्रसन्न।

नन्द : नव-नन्द नाम से प्रसिद्ध नौ राजागण।

नन्द-थेर : शुद्धोदन तथा महाप्रजापति गौतमी की संतान। सिध्दार्थ गौतम का सौतेला / मौसेरा भाई।

नन्द-जातक : पिता ने अपने दास नन्द को अपने गाड़े धन की जगह बता दी थी और कह दिया था कि पुत्र के बड़े होने पर वह उसे बता दे (३९)।

नन्दक (वि.) : खुशी देने वाला, आनन्द दायक।

नन्दति (क्रि.) : प्रसन्न होता है।

नन्दन (नपुं.) : प्रसन्नता, इन्द्र-नगर का उद्यान।

नन्दना (स्त्री.) : प्रसन्नता।

नन्दि (स्त्री.) : मनोविनोद, तृष्णा, प्यास, आसक्ति।

नन्दिक्खय (पु.) : तृष्णा का क्षय।

नन्दित (वि.) : प्रसन्नचित्त।

नन्दिराग (पु.) : अनुराग, तृष्णा की आसक्ति।

नन्दिसंयोजन (नपुं.) : तृष्णा का बंधन।

नन्दियमिग-जातक : नन्दिय मृग की सच्चरित्रता ने उसकी तथा उसके माता-पिता की रक्षा की (३८५)।

नन्दिविसाल-जातक : नन्दिविसाल वृषभ ने शर्त जीतकर अपने मालिक को धनी बनाया (२८)।

नन्धति (क्रि.) : बांधता है।

नपुंसक (पु.) : नपुंसक, पुरूषत्व-हीन।

नभ (पु., नपुं.) : आकाश।

नमक्कार (पु.) : नमस्कार।

नमति (क्रि.) : झुकता है।

नमस्सति (क्रि.) : नमस्कार करता है।

नमस्सन (नपुं.) / **नमस्सना** (स्त्री.) : नमस्कार।

नमुचि (पु.) : नष्ट करनेवाला, मृत्यु, 'मार' का नाम।

नमो (अ.) : नमस्कार है।

नम्मदा (स्त्री.) : नर्मदा नदी।

नय (पु.) : क्रम, पद्धति, ढंग, ठीक परिणाम।

नयति / **नेति** (क्रि.) : ले जाता है, मार्गदर्शन करता है।

नयन (नपुं.) : आँख, ले जाना ।

नयनावुध (पु.) : जिसके नयन ही उसके शस्त्र हो - यमराज।

नय्हति (क्रि.) : बांधता है।

नय्हन (नपुं.) : बंधन, बांधना।

नर (पु.) : आदमी।

नरक (नपुं.) नरक, जहन्नुम।

नरदेव (पु.) : राजा।

नरवीर (पु.) : नरों में वीर, भगवान बुद्ध के लिए प्रयुक्त।

नरसीह (पु.) : नरों में सिंह, भगवान बुद्ध के लिए प्रयुक्त।

नराधम (पु.) : अधम आदमी, नीच पुरुष।

नरासभ (पु.) : आदमियों का स्वामी, भगवान बुद्ध के लिए प्रयुक्त।

नरुत्तम (पु.) : आदमियों में श्रेष्ठ, भगवान बुद्ध के लिए प्रयुक्त।

नल / **नळ** (पु.) : सरकंडा, नली।

नलाट (नपुं.) : ललाट, मस्तक, माथा।

नलिनिका-जातक : राजकुमारी नलिनिका को ऋषि श्रृंग का तप भ्रष्ट करने के लिए भेजा गया (५२६)।

नलिनी (स्त्री.) : जलाशय, कमल-जलाशय।

नव (वि.) : नया, नौ (९)।

नवक : (पु.) नवागन्तुक, तरुण, जो नया नया संघ में प्रविष्ट हुआ हो; (नपुं.) नौ जनों का समूह।

नवकतर (वि.) : तरुण से भी तरुण।

नवकम्म (नपुं.) : नया काम, मरम्मत।

नवकम्मिक (वि.) : नया काम (भवन-निर्माण) करानेवाला।

नवङ्ग (वि.) : जिसके नौ हिस्से हो।

नवनवुति (स्त्री.) : निन्यानवे (९९)।

नवनीत (नपुं.) : मक्खन।

नवम (वि.) : नौवां।

नवमी (स्त्री.) : चान्द्र मास की नवमी।

नवुति (स्त्री.) : नब्बे (९०)।

नस्सति (क्रि.) : नष्ट होता है, लुप्त होता है।

नस्सन (नपुं.) : नाश।

नहात / न्हात (वि.), स्नान किया हुआ।

नहान / न्हान (नपुं.) : स्नान।

नहानिय (नपुं.) : स्नान-सामग्री, नहाने की चीजें।

नहापक (पु.) : नहलाने वाला।

नहापन (नपुं.) : स्नान कराना, धोना।

नहापित : (पु.) नाई, (वि.) नहलाया हुआ।

नहापेति (क्रि.) : नहलाता है।

नहायति (क्रि.) : नहाता है, स्नान करता है।

नहायन (नपुं.) : स्नान।

नहारु / न्हारु (पु.) : नस।

नहुत (नपुं.) : दस हजार, एक बहुत बड़ी संख्या।

नळकलाप (पु.) : सरकंडों का ढेर।

नळकार (पु.) : टोकरी बनाने वाला।

नळमीन (पु.) : समुद्री केकड़ा।

नळवन (नपुं.) : सरकंडे का जंगल।

नळागार (नपुं.) : सरकंडों की झोपड़ी।

नळपान-जातक : बंदरों ने सरकंडे के माध्यम से जलाशय का पानी पिया (२०)।

नाक (पु.) : स्वर्ग, उत्तम अवस्था।

नाग (पु.) : सर्प, हाथी, वृक्ष-विशेष, श्रेष्ठ पुरुष।

नागदन्त (नपु.) : हाथी दाँत की कील या खूँटी।

नागदीप : सिंहलद्वीप का उत्तरी भाग, वर्तमान जाफना।

नागबल (वि.) : हाथी के बल जैसे बल वाला।

नागबला (स्त्री.) : गंगेरन (लता-विशेष), एक प्रकार की बेल।

नागभवन (नपुं.) : नागों का निवास स्थल।

नागमाणवक (पु.) : नाग-तरुण।

नागमाणविका (स्त्री.) : नाग-तरुणी, नाग-कुमारी।

नागर (वि.) : नगरवाला, शहरी।

नागराज (पु.) : नागों का राजा।

नागरिक (वि.) : नगर से संबंधित।

नागरुक्ख (पु.) : नाग-वृक्ष।

नागलता (स्त्री.) : पान की बेल।

नागलोक (पु.) : नाग-संसार।

नागवन (नपुं.) : नागों का वन।

नागसेन थेर : मिलिन्द राजा से शास्त्रार्थ करने वाले प्रसिद्ध नागसेन स्थविर।

नाटक / **नाटिक** (नपुं.) : नाटक।

नाटकित्थी (स्त्री.) : नृत्य-कुमारी।

नाथ (पु.) : संरक्षण, संरक्षक।

नाद (पु.) : आवाज।

नानच्छन्द-जातक : पुरोहित ने घर के लोगों से परामर्श किया कि वह राजा से क्या चीज मांगे। किसी ने किसी चीज का नाम लिया, किसी ने दूसरी चीज का । इस प्रकार नाना मांगे सामने आई (२८९)।

नानता (स्त्री.) / **नानत्त** (नपुं.) : नानत्व, विविधता।

नानत्तकाय (वि.) : नाना प्रकार के शरीरों वाला।

नानप्पकार (वि.) : अनेक प्रकार का।

नाना (अ.) : अनेक, भिन्न-भिन्न।

नानाकरण (नपुं.) : भेद, भिन्नता।

नानागोत्त (वि.) : अनेक गोत्रों का।

नानाजच्च (वि.) : अनेक जातियों का।

नानाजन (पु.) : अनेक प्रकार की जनता।

नानातित्थिय (वि.) : विविध संप्रदायों के लोग।

नानापकार (वि.) : विविध, विभिन्न।

नानाभाव (पु.) वियोग।

नानारत्त (वि.) : विविध रंगों का।

नानावाद (पु.) : नानावाद, विभिन्न वाद, भिन्न-भिन्न मत।

नानाविध / **नानाविहित** (वि.) : नाना प्रकार का।

नानासंवासक (वि.) : जो अलग-अलग रहते हो, विभिन्न जगह रहते हो।

नाभि / **नाभी** (स्त्री.) : नाभी, पेट का मध्य-बिन्दु, चक्र का मध्य-भाग।

नाम : (नपुं.) नाम, व्यक्तित्व का चैतसिक-भाग; (वि.) नाम वाला।

नामक (वि.) : नाम से, नाम का।

नामकरण (नपुं.) : नाम रखना।

नामगहण (नपुं.) : नाम ग्रहण करना।

नामधेय / **नामधेय्य** : (नपुं.) नाम, (वि.) नाम वाला।

नामपद (नपुं.) : नाम, संज्ञा।

नामसिद्धि-जातक : शिष्य अच्छा-सा नाम खोजने जाकर अपने पहले वाले नाम 'पापक' से ही संतुष्ट होकर लौट आया (९७)।

नामित (वि.) : झुकाया गया।

नामेति (क्रि.) : झुकाता है।

नायक (पु.) : नेता, मार्गदर्शक।

नायिका (स्त्री.) : मार्गदर्शिका।

नारङ्ग (पु.) : नारंगी का पेड़।

नाराच (पु.) : लोहे की छड़, एक प्रकार का तीर।

नारी (स्त्री.) : औरत।

नालं (अ.) : अपर्याप्त, प्रतिकूल।

नाल / **नाळ** (पु.) : नालिका, नाली।

नावा (स्त्री.) : जहाज, नाव, नौका।

नावातित्थ (नपुं.) : नौका का पत्तन, नाव ठहरने का स्थान।

नावासञ्चार (पु.) : नौकाओं का आना-जाना।

नाविक (पु.) : मल्लाह, मांझी।

नाविकी (स्त्री.) : मल्लाहिन, मांझी की स्त्री।

नावुतिक (वि.) : नब्बे वर्ष का।

नास (पु.) : नाश, मृत्यु।

नासन (नपुं.) : नाश करना, त्याग देना, निकाल बाहर कर देना।

नासा / **नासिका** (स्त्री.) : नाक।

नासारज्जु (स्त्री.) : नकेल।

नासित (वि.) : नष्ट किया हुआ।

नासेति (क्रि.) : नष्ट करता है, खराब कर देता है, मार डालता है।

नाळन्दा : नालंदा, राजगृह के पास का प्रसिद्ध स्थान, जहां भगवान बुद्ध कई बार ठहरे थे और जहां बाद की सदियों में बौद्ध विश्वविद्यालय बना।

नाळागिरि : राजकीय हस्तिशाला का हाथी, जिसे देवदत्त की प्रेरणा से गौतम बुद्ध को शारीरिक हानि पहुंचाने के लिए उन पर छोड़ा गया था।

नाळि (स्त्री.) : माप-विशेष।

नाळिका (स्त्री.) : नाली।

नाळिकायन्त (नपुं.) : घड़ी।

नाळिकेर (पु.) : नारियल।

नाळिपेट्ट (पु.) : टोपी।

नाळिमत्त (वि.) : नालिमात्र, सिर्फ एक नालि।

निकट : (नपुं.) पड़ोस, (वि.) पास।

निकट्ठ (वि.) : निकृष्ट, गिरा हुआ।

निकटि (स्त्री.), ठगी।

निकत (वि.) : कपटी, ठगा हुआ।

निकति (स्त्री.) : ठगी, धोखाधडी।

निकन्त / **निकन्तित** (वि.) : कटा हुआ।

निकन्तति (क्रि.) : काटता है।

निकर (पु.) : समूह।

निकस (पु.), कसौटी ।

निकामना (स्त्री.) : इच्छा।

निकामलाभी (वि.) : बिना कठिनाई से प्राप्त करने वाला।

निकामेति (क्रि.) : इच्छा करता है, चाहता है।

निकामित (वि.) : इच्छा किया गया।

निकाय (पु.) : समूह, संप्रदाय, संग्रह।

निकास (पु.) : पड़ोस।

निकिट्ठ (वि.) : निकृष्ट।

निकुञ्ज (पु., नपुं.) : वृक्षों तथा झाड़ियों से ढका घना स्थान।

निकूजति (क्रि.) : कूजता है, आवाज करता है।

निकूजित (वि.) : शब्द किया हुआ।

निकूजमान (वि., कृ.) : शब्द करता हुआ।

निकेतन (नपुं.) : निवासस्थान, घर।

निक्कङ्ख (वि.) : असंदिग्ध, संदेह-रहित।

निक्कड्ढति (क्रि.) : बाहर खींचता है।

निक्कड्डन (नपुं.) : बाहर खींच लाना।

निक्कण्टक (वि.) : निष्कंटक, कांटों या शत्रुओं से रहित।

निक्कद्दम (वि.) : कर्दम-रहित, कीचड़-रहित।

निक्कम (पु.) : प्रयत्न।

निक्करुण (वि.) : करुणा-विहीन।

निक्कसाव (वि.) : अपवित्रता से मुक्त।

निक्काम (वि.) : कामना-रहित।

निक्कारण (वि.) : निष्कारण, बिना कारण के।

निक्किलेस (वि.) : विकार-रहित।

निक्कुज्ज (वि.) : फेंका गया।

निक्कुजित (वि.) : उलट दिया गया, उल्टा।

निक्कुज्जेति (क्रि.) : उलट देता है।

निक्कुह (वि.) : बिना ढोंग के।

निक्कोध (वि.) : क्रोध-रहित।

निक्ख (पु.) : निष्क, स्वर्ण-मुद्रा।

निक्खन्त (वि., कृ.) : (घर से) बाहर निकला हुआ।

निक्खम (पु.) / **निक्खमन** (नपुं.) : निष्क्रमण, चले जाना।

निक्खमति (क्रि.) : (घर से) बाहर जाता है, निकलता है।

निक्खम्म (पू.क्रि.) : निष्क्रमण करके।

निक्खमनीय (पु.) : निष्क्रमणीय, सावन का महीना। इस महीने में बच्चे को बाहर निकालकर सूर्य का दर्शन कराया जाता है।

निक्खामेति (क्रि.) : निकाल बाहर करता है।

निक्खामित (वि.) : निकाला हुआ।

निक्खित्त (वि.) : रखा गया।

निक्खिपति (क्रि.) : रख देता है।

निक्खेप (पु.) / निक्खेपन (नपुं.) : निक्षेप, रख देना, त्यागना।

निखणति / **निखनति** (क्रि.) : खोदता है।

निखात (वि.) : खोदा हुआ, गाड़ा हुआ।

निखादन (नपुं.) : छेनी।

निखिल (वि.) : समस्त, संपूर्ण।

निगच्छति (क्रि.) : अनुभव करता है, सहन करता है।

निगण्ठ : निर्ग्रंथ, जैन संप्रदाय का सन्यासी।

निगण्ठनाटपुत्त / **निगण्ठनाथपुत्त** : बुद्ध के समकालीन छह प्रसिद्ध आचार्यों में से एक। जैनों के अन्तिम तीर्थकर वर्धमान महावीर।

निगति (स्त्री.) : भाग्य, अवस्था, आचरण।

निगम (पु.) : कस्बा।

निगमन (नपुं.) : व्याख्या, उद्धरण, दृष्टान्त।

निगल / **निगळ** (पु.) : हाथी के पैर की जंजीर।

निगूहति (क्रि.) : ढकता है, छिपाता है।

निगूहित / **निगूळ्ह** (वि.) : छिपाया हुआ।

निगूहन (नपुं.) : छिपाना।

निग्गच्छति (क्रि.) : बाहर जाता है।

निग्गण्ठि (वि.) : ग्रन्थि-रहित।

निग्गण्हन (नपुं.) : दोषारोपण।

निग्गण्हाति (क्रि.) : दोषारोपण करता है, डाँटता-डपटता है।

निग्गत (वि.) : बाहर गया हुआ।

निग्गम (पु.) / **निग्गमन** (नपुं.) : बाहर जाना, बाहर निकलना, विदा होना।

निग्गय्ह (पू.क्रि.) : निग्रह करके, दोषारोपण करके।

निग्गय्हवादी (पु.) : निंदा करने वाला, दोषारोपण करने वाला।

निग्गह (पु.) : निंदा, दोषारोपण।

निग्गहित (वि.) : निंदित।

निग्गाहक (पु.) : निग्रह करने वाला, दोषारोपण करने वाला।

निग्गिलति (क्रि.) : निगलता है।

निग्गुण्डि / **निग्गुण्डी** (स्त्री.) : बूटी विशेष।

निग्गुम्ब (वि.) : जहां झाड-झंखाड़ न हो।

निग्घातन (नपुं.) : हत्या, विनाश।

निग्घोस (पु.) : चिल्लाना।

निग्रोध (पु.) : वट वृक्ष, बरगद का पेड़ ।

निग्रोधपक्क (नपुं.) : वट का पका फल।

निग्रोधपरिमण्डल (वि.) : वट के पेड़ का घेरा।

निग्रोधमिग-जातक : निग्रोध मृग ने अपनी जान देकर भी अपने पक्ष की मृगी और उसके बच्चे की प्राण-रक्षा करनी चाही। वह सभी के प्राण बचाने में सफल हुआ (१२)।

निघंस (पु.) / **निघंसन** (नपुं.) : रगड़ना।

निघंसति (क्रि.) : रगड़ता है।

निघंसित (वि.) : रगड़ा हुआ।

निघण्डु (पु.) : निघंटु, पर्याय वचनों का कोश।

निघात (पु.) : मारना, नष्ट करना।

निचय (पु.) : संचय, संग्रह।

निचित (वि.) : संग्रहित।

निचुल (नपुं.) : एक प्रकार का पौधा, मुचलिंदो।

निच्च (वि.) : नित्य, ध्रुव, शाश्वत।

निच्चं (क्रि.वि.) : नित्य, सदैव, लगातार।

निच्चकालं (क्रि.वि.) : सदैव।

निच्चता (स्त्री.) : नित्यता।

निच्चदान (नपुं.) : स्थायी दान।

निच्चभत्त (नपुं.) : सतत भोजन-दान।

निच्चम्म (वि.) : चर्म-रहित।

निच्चल (वि.) : निश्चल, स्थिर।

निच्चसील (नपुं.) : सतत शील-पालन, पंचशील।

निच्चोल (वि.) : निर्वस्त्र, नंगा।

निच्छय (पु.) : निश्चय ।

निच्छरण (नपुं.) : बाहर भेजना, बाहर निकलना।

निच्छरति (क्रि.) : बाहर जाता है, बाहर निकलता है।

निच्छरित (वि.) : बाहर निकला हुआ।

निच्छात (वि.) : बिना भूख के, संतुष्ट।

निच्छारित (वि.) : प्रकट किया हुआ, निकाला हुआ।

निच्छारेति (क्रि.) : प्रकट करता है, बोलता है।

निच्छित (वि.), निश्चित, विचारित, मीमांसित।

निच्छिनाति (क्रि.) : विचार करता है, विमर्षण करता है।

निज (वि.) : स्वकीय, अपना।

निजदेस (पु.) : अपना देश।

निज्जट (वि.) : सुलझा हुआ।

निज्जर (वि.) : जरा-रहित, ह्रास-रहित।

निज्जरेति (क्रि.) : नष्ट करता है, विनाश करता है।

निज्जिण्ण (वि.) : जरा-प्राप्त, ह्रास-प्राप्त।

निज्जिव्ह : (वि.) जिव्हा-विहीन, बिना जीभ के; (पु.) जंगली मुर्गा।

निज्जीव (वि.) : निर्जीव, मरा हुआ।

निज्झान (नपुं.) : अंतर्दृष्टि, ज्ञान।

निज्झापेति (क्रि.) : (किसी को) जीत लेता है, अपनी ओर कर लेता है।

निज्झायति (क्रि.) : ध्यान लगाता है।

निट्ठा (स्त्री.) : अंत, सारांश, निष्ठा।

निट्ठाति (क्रि.) : समाप्त होता है।

निट्ठान (नपुं.) : समाप्ति।

निट्ठापित (वि.) : पूरा कराया हुआ।

निट्ठापेति (क्रि.) : पूरा कराता है, समाप्त कराता है।

निट्ठासि (भू. क्रि.) : समाप्त हुआ।

निट्ठित (वि.) : समाप्त, संपूर्ण।

निट्ठुभति (क्रि.) : थूकता है।

निट्ठुभन (नपुं.) : थूकना, थूक।

निट्ठुभित (वि.) : थूका हुआ।

निट्ठुर (वि.) : निष्ठुर, कठोर, निर्दयी।

निट्ठुरिय (नपुं.) : निष्ठुरता, निर्दयता।

निड्ड / निड्ढ (नपुं.) : नीड़, घोंसला, विश्रामस्थल।

निड्डेति / निड्डायति (क्रि.) : घास-पात हटाता है।

निण्णय (पु.) : निर्णय।

नितम्ब (पु.) : चूतड़, पर्वत का किनारा।

नित्तण्ह (वि.) : तृष्णा-रहित।

नित्तिण्ण (वि.) : पार हुआ, तीर्ण हुआ।

नित्तुदन (नपुं.) : घोंपना, चुभाना।

नित्तेज (वि.) : तेज-रहित।

नित्थरण (नपुं.) : पार हो जाना, तर जाना, समाप्ति।

नित्थरति (क्रि.) : पार होता है।

नित्थुनन (नपुं.) : कराहना।

नित्थुनाति (क्रि.) : कराहता है।

निदस्सन (नपुं.) : उदाहरण, साक्षी, तुलना।

निदस्सित (वि.) : निदर्शित, दर्शाया हुआ।

निदस्सिय (पू.क्रि.) : दर्शाकर।

निदस्सेति (क्रि.) : दर्शाता है।

निदहति (क्रि.) : रखता है, खजाना गाड़ता है।

निदहित (वि.) : निहित, गाड़ा हुआ।

निदाघ (पु.) : सूखा, ग्रीष्म-काल, गरमी।

निदान (नपुं.) : मूल, कारण, उत्पत्ति।

निदानकथा : जातकट्ठकथा का आरंभिक अंश (भूमिका)।

निद्दय (वि.) : निर्दय।

निद्दर (वि.) : दुःख-रहित, भयरहित, निडर।

निद्दा (स्त्री.) : निद्रा, नींद।

निद्दायति (क्रि.) : सोता है।

निद्दायन (नपुं.) : सोना, नींद लेना।

निद्दारामता (स्त्री.) : निद्रा-प्रियता।

निद्दालु / निद्दासीली (वि.) : निद्रालु।

निद्दिट्ठ (वि.) : निर्दिष्ट, निर्देश किया हुआ।

निद्दिसति (क्रि.) : निर्देश करता है।

निद्दुक्ख (वि.) : दुःख-रहित, दुःखमुक्त।

निद्देस (पु.) : विश्लेषणात्मक व्याख्या, खुद्दक निकाय के अंतर्गत गिना जानेवाला एक टीका-ग्रंथ।

निद्दोस (वि.) : निर्दोष, निर्मल।

निद्धन (वि.) : निर्धन, गरीब।

निद्धन्त (वि.) : फूंक मारते हुए, बाहर निकालता हुआ।

निद्धमति (क्रि.) : फूंक मारता है, बाहर निकालता है।

निद्धमन (नपुं.) : नाली, नहर, निगमन।

निद्धमनद्वार (नपुं.) : तालाब के पानी का निकास।

निद्धारण (नपुं.) : निश्चित करना, निर्धारण।

निद्धारित (वि.) : निर्धारित, निश्चित किया हुआ।

निद्धारेति (क्रि.) : निश्चित करता है।

निद्धुनन (नपुं.) : धुनना, पिटना।

निद्धुनाति (क्रि.) : धुनता है, पिटता है।

निद्धुत (वि.) : धुना गया।

निद्धोत (वि.) : धोया हुआ, साफ किया हुआ, तेज किया हुआ।

निद्धोवति (क्रि.) : धोता है, साफ करता है।

निधान (नपुं.) : भंडार, छिपा खजाना।

निधापित (वि.) : रखवाया हुआ।

निधापेति (क्रि.) : रखवाता है, गड़वाता है।

निधाय (पू.क्रि.) : रखकर, गाड़कर।

निधि (पु.) : छिपा खजाना।

निधिकुम्भि (स्त्री.) : खजाने का घड़ा।

निधीयति (क्रि.) : रखा जाता है, गाड़ा जाता है।

निधेति (क्रि.) : रखता है, गाड़ता है, छुपाता है।

निन्दति (क्रि.) : निंदा करता है।

निन्दन (नपुं.) / **निन्दना** (स्त्री.) : अपमान, अगौरव।

निन्दिय (वि.) : निन्दनीय, दोषी।

निन्न : (वि.) निम्न, (नपुं.) निम्न भूमि।

निन्नता (स्त्री.) : निम्नता, झुकाव।

निन्नहुत (नपुं.) : संख्या-विशेष।

निन्नाद (पु.) : स्वर-माधुर्य, लय, ध्वनि।

निन्नादी (वि.) : ऊंची आवाज वाला।

निन्नामित (वि.) : झुका हुआ।

निन्नामेति (क्रि.) : झुकता है।

निन्नेतु (पु.) : निर्णय करनेवाला, निर्णायक।

निपक (वि.) : दक्ष, बुद्धिमान।

निपच्च (पू.क्रि.) : गिरकर।

निपच्चाकार (पु.) : नम्रता।

निपज्ज (पू.क्रि.) : लेटकर ।

निपज्जति (क्रि.) : लेटता है।

निपज्जन (नपुं.) : लेटना।

निपतति (क्रि.) : गिरता है।

निपतित (वि.) : गिरा हुआ।

निपन्न (वि.) : लेटा हुआ।

निपात (पु.) : गिरना, उतरना, अव्यय।

निपातन (नपुं.) : गिराना, नीचे फेंकना।

निपातित (वि.) : गिराया हुआ।

निपाती (वि.) : गिराने वाला, सोने वाला ।

निपातेति (क्रि.) गिरने देता है, गिराता है।

निपान (नपुं.) : पशुओं की जल पीने की जगह।

निपुण (वि.) : दक्ष, होशियार।

निप्पक्क (वि.) : उबला हुआ।

निप्पज्जति / निप्फज्जति (क्रि.) : पूरा होता है, उभरता है, परिणाम लाता है।

निप्पदेस (वि.) : सर्व-व्यापक।

निप्पपञ्च (वि.) : प्रपंच-रहित, निष्प्रपंच, विकारों से मुक्त।

निप्पभ (वि.) : निष्प्रभ।

निप्परियाय (वि.) : बिना किसी भेद के।

निप्पलाप (वि.) : प्रलाप रहित, बकबक न करने वाला।

निप्पाप (वि.) : निष्पाप।

निप्पितिक (वि.) : पिता- विहीन।

निप्पीळन (नपुं.) : पीड़ना, दबाना, निचोड़ना।

निप्पीळेति (क्रि.) : निचोड़ता है।

निप्पुरिस (वि.) : पुरुष-विहीन।

निप्पोथन (नपुं.) : पीटना, मारना ।

निप्फज्जति (क्रि.) : निष्पादन करता है, देखो निप्पज्जति।

निप्फज्जन (नपुं.) : परिणाम, प्रभाव, प्राप्ति।

निप्फत्ति (स्त्री.) : निष्पत्ति, प्राप्ति।

निप्फन्न (वि.) : निष्पन्न, परिणाम।

निप्फल (वि.), निष्फल, परिणामहीन।

निप्फादक (वि.) : निष्पादक, उत्पन्न करने वाला।

निप्फादन (नपुं.) : उत्पत्ति, निर्मिती।

निप्फादेति (क्रि.) : उत्पन्न करता है, पूरा करता है।

निप्फादेतु (पु.) : उत्पन्न करने वाला, उत्पादक।

निप्फोटन (नपुं.) : पीटना।

निप्फोटित (वि.) : पीटा गया, कुचला गया।

निप्फोटेति (क्रि.) : पीटता है ।

निबद्ध (वि.) : बांधा हुआ, निश्चित।

निबद्धं (क्रि.वि.) : नियमित, लगातार।

निबन्ध (पु.) / **निबन्धन** (नपुं.) : बंधन।

निबन्धति (क्रि.) : बांधता है, प्रेरित करता है।

निब्बट्ट (वि.) : बिना बीज के।

निब्बत्त (वि.) : जन्मा हुआ, जिसका पुनर्जन्म हुआ हो, उत्पन्न।

निब्बत्तक / निब्बत्तनक (वि.) : उत्पन्न करने वाला, उत्पादक।

निब्बत्तति (क्रि.) : उत्पन्न होता है, परिणत होता है, जन्म ग्रहण करता है।

निब्बत्तन (नपुं.) : उत्पत्ति, निर्मिती।

निब्बत्तापन (नपुं.) : पुनर्जन्म, जन्म, पुनरुत्पादन, प्रजनन।

निब्बत्ति (स्त्री) : जन्म-ग्रहण करना, प्रकट होना।

निब्बन (वि.) : तृष्णा-रहित, वन-रहित।

निब्बनथ (वि.) : तृष्णा-मुक्त ।

निब्बसन (वि.) : निर्वसन, उतारा हुआ / फेंका हुआ वस्त्र।

निब्बाति (क्रि.) : बुझ जाता है, शांत होता है, तृष्णा-मुक्त होता है।

निब्बान (नपुं.) : निर्वाण, (अग्नि का) बुझ जाना, संपूर्ण मुक्ति।

निब्बानगमन (वि.) : निर्वाण-गामी।

निब्बानधातु (स्त्री.) : निर्वाण-क्षेत्र।

निब्बानपत्ति (स्त्री.) : निर्वाण-प्राप्ति।

निब्बानसच्छिकिरिया (स्त्री.) : निर्वाण का अनुभव करना।

निब्बानसम्पत्ति (स्त्री.) : निर्वाण की प्राप्ति, निर्वाण का सुख।

निब्बानाभिरत (वि.) : निर्वाण-प्राप्ति में अनुरक्त।

निब्बापन (नपुं.) : शांत होना, बुझना।

निब्बापित (वि.) : बुझाया गया।

निब्बापेति (क्रि.) : बुझा देता है।

निब्बायति (क्रि.) : बुझता है, शांत होता है, निर्वाण को प्राप्त होता है।

निब्बाहति (क्रि.) : बाहर करता है।

निब्बाहन (नपुं.) : हटाना, बाहर करना।

निब्बिकार (वि.) : निर्विकार, अपरिवर्तनशील।

निब्बिचिकिच्छ (वि.) : संदेह-रहित, शंका-मुक्त।

निब्बिज्ज (पू.क्रि.) : निर्वेद प्राप्त करके, विरक्त होकर।

निब्बिज्जति (क्रि.) : निर्वेद प्राप्त करता है।

निब्बिज्झति (क्रि.) : बींधता है।

निब्बिदा (स्त्री.) : निर्वेद, अनुत्साह / विरक्ति।

निब्बिन्दति (क्रि.) : निर्वेद-प्राप्त होता है, अनुत्साह / विरक्ति जागती है।

निब्बिन्न (वि.) : अनुत्साहित, विरक्त।

निब्बिस : (नपुं.) मजदूरी, (वि.) निर्विष।

निब्बिसति : (क्रि.) : खोजता है।

निब्बिसेस (वि.) : समान, एक जैसा।

निब्बुति (स्त्री.) : शांति, सुख, विमुक्ति।

निब्बुय्हति (क्रि.) : तैरता है।

निब्बेठन (नपुं.) : उधेड़ना, व्याख्या।

निब्बेठेति (क्रि.) : उधेड़ता है।

निब्बेध (पु.) : घुसेड़ना, बींधना।

निब्बेधिक (वि.) : बींधने वाली।

निब्बेमतिक (वि.) : एकमत।

निब्भय (वि.) : निर्भय, भयरहित।

निब्भोग (वि.) : व्यर्थ, बेकार।

निभ (वि.) : समान।

निभा (स्त्री.) : प्रकाश, चमक-दमक।

निभाति (क्रि.) : चमकता है।

निमन्तक (वि.) : निमंत्रण देने वाला।

निमन्तन (नपुं.) : निमंत्रण।

निमन्तित (वि.) : निमंत्रित।

निमन्तेति (क्रि.) : निमंत्रण देता है।

निमि-जातक : सिर का सफेद बाल दिखाई देने पर अपने अनेक पूर्वजों की तरह निमि राजा ने भी सिंहासन का त्याग कर दिया (५४१)।

निमित्त (नपुं.) : चिन्ह, शकुन, कारण।

निमित्तगाही (वि.) : ऊपरी चिन्हों से आकर्षित।

निमित्तपाठक (पु.) : शकुनों की व्याख्या करने वाला, भविष्यवक्ता।

निमिनाति (क्रि.) : आदान-प्रदान करता है।

निमिस / **निमेस** (पु.) : आँख का झपकना।

निमिसति (क्रि.) : आँख झपकता है, आँख मारता है।

निमीलन (नपुं.) : आँख झपकाना, आँख मारना, बंद करना।

निमीलित (वि.) : बंद, ढका हुआ।

निमीलेति (क्रि.) : आंख झपकता है, आंख बंद करता है ।

निमुग्ग (वि.) : डूबा हुआ, गोता लगाया हुआ।

निमुज्जन (नपुं.) / **निमुज्जा** (स्त्री.) : डुबकी।

निमुज्जति (क्रि.) : डुबकी लगाता है।

निम्ब (पु.) : नीम का पेड़।

निम्मक्खिक (वि.) : मक्खी-रहित।

निम्मज्जन (नपुं.) : निचोड़ना।

निम्मथन (नपुं.) : पीसना।

निम्मथति (क्रि.) : पीस डालता है।

निम्मद्दन (नपुं.) : मर्दित करना, दबा देना।

निम्मल (वि.) : निर्मल।

निम्मंस (वि.) : मांस-रहित।

निम्माण (नपुं.) : रचना, कृति, निर्माण।

निम्मातापितिक (वि.) : अनाथ, माता-पिता रहित।

निम्मातिक (वि.) : माता-विहीन।

निम्मातु (पु.) : निर्माण करने वाला, रचयिता।

निम्मान : (नपुं.) रचना, कृति, निर्माण; (वि.) मान-रहित।

निम्माय (पू.क्रि.) : निर्माण करके।

निम्मिणाति / **निम्मिनाति** (क्रि.) : उत्पन्न करता है, निर्माण करता है, रचता है।

निम्मित (वि.) : निर्मित।

निम्मूल (वि.) : निर्मूल, मूलरहित।

निम्मोक (पु.) : सांप की केंचुल।

निय / **नियक** (वि.) : स्वकीय, अपना।

नियत (वि.) : निश्चित, स्थिर।

नियति (स्त्री.) : भाग्य, किस्मत, आवश्यकता।

नियम (पु.) : मर्यादा निश्चित होना, स्थिर होना।

नियमन (नपुं.) : स्थिरता, नियमाधीन होना।

नियमेति (क्रि.) : नियमित करता है।

नियाम (पु.) : नियम होना, तरीका।

नियामक (पु.) : जहाज का कप्तान, सेनापति, नियम में चलानेवाला ।

नियामता (स्त्री.) : नियमित होना।

नियुञ्जति (क्रि.) : नियुक्त होता है, कार्यरत होता है।

नियुत्त (वि.) : नियुक्त।

नियोग (पु.) : आज्ञा, हुक्म, आवश्यकता।

नियोजन (नपुं.) : नियुक्त करना, आज्ञा देना।

नियोजित (वि.) : प्रतिनिधि।

नियोजेति (क्रि.) : नियुक्त करता है, प्रेरित करता है।

निय्यति / **नीयति** (क्रि.) : ले जाया जाता है।

निय्यातन (नपुं.) : समर्पण, सौंपना।

निय्याति (क्रि.) : बाहर जाता है।

निय्यातु (पु.) : नेता, मार्गदर्शक, बाहर जाने वाला।

निय्यातित (वि.) : समर्पित, सौंपा गया।

निय्यातेति / **निय्यादेति** / **नीयादेति** (क्रि.) : सौंपता है, समर्पित करता है।

निय्यान (नपुं.) : बहिर्गमन, विदाई, मुक्ति ।

निय्यानिक (वि.) : मुक्ति की ओर अग्रसर करने वाला।

निय्यास (पु.) : पेड़ों से निकलने वाला रस, गोंद आदि।

निय्यूह (पु.) : शिखर, द्वार।

निरग्गल (वि.) : बाधा-रहित, मुक्त।

निरङ्करोति / **निराकरोति** (क्रि.) : तिरस्कार करता है, उपेक्षा करता है।

निरत (वि.) : लगा हुआ।

निरत्थ / **निरत्थक** (वि.) : निरर्थक, अर्थहीन।

निरन्तर (वि.) : लगातार।

निरन्तरं (क्रि.वि.) : लगातार।

निरपराध (वि.) : निर्दोष।

निरपेक्ख (वि.) : अपेक्षा-रहित, जिनको परवाह न हो।

निरब्बुद (वि.) : बाधारहित, दुःख-रहित, एक विशाल संख्या, निरय-विशेष।

निरय (पु.) : नरक।

निरयगामी (वि.) : नरक-गामी।

निरयदुक्ख (नपुं.) : नरक का दुःख।

निरयपाल (पु.) : नरक का अधिपति।

निरयभय (नपुं.) : नरक का भय।

निरयसंवत्तनिक (वि.) : नरक की ओर ले जाने वाला।

निरवसेस (वि.) : अवशेष-रहित, संपूर्ण।

निरसन (वि.) : निराहार।

निरस्साद (वि.) : बे-स्वाद।

निराकुल (वि.) : उलझन-रहित, बाधा-रहित।

निरातङ्क / **निरामय** (वि.) : रोग-रहित, निरोग, स्वस्थ।

निरामिस (वि.) : मांस-रहित, अभौतिक।

निरारम्भ (वि.) : बिना पशुओं की हत्या किए।

निरालम्ब (वि.) : निराधार, बेसहारा।

निरालय (वि.) : आसक्ति-रहित, गृह-रहित, बेघर।

निरास (वि.) : आशा-रहित, इच्छा-रहित।

निरासङ्क (/ **निरासंस** वि.), शंका-रहित ।

निरासव (वि.) : आसव-रहित, चित्तमल-रहित।

निराहार (वि.) : आहार-रहित, व्रती।

निरिन्धन (वि.) : ईंधन-रहित।

निरुज्झति (क्रि.) : निरोध को प्राप्त होता है, नष्ट होता है।

निरुज्झन (नपुं.) : निरोध।

निरुत्तर (वि.) : उत्तर-विहीन, सर्वोत्तम।

निरुत्ति (स्त्री.) : निरुक्त-शास्त्र, बोली, व्याकरण संबंधी विश्लेषण।

निरुत्तिपटिसम्भिदा (स्त्री.) : निरुक्त का ज्ञान।

निरुदक (वि.) : जल-रहित।

निरुद्ध (वि.) : निरोध को प्राप्त हुआ।

निरुपद्दव (वि.) : उपद्रव-रहित।

निरुपधि (वि.) : राग-रहित, आसक्ति-रहित।

निरुपम (वि.) : उपमा-रहित, अतुलनीय।

निरुस्सास (वि.) आश्वास-प्रश्वास रहित।

निरुस्सुक (वि.) : औत्सुक्य-रहित, उपेक्षा-युक्त।

निरोग (वि.) : स्वस्थ, रोग-रहित।

निरोज (वि.) : स्वाद-रहित, बे-मजा।

निरोध (पु.) : समाप्त होना, नष्ट होना, पुनरुत्पत्ति का रूक जाना।

निरोधधम्म (वि.) : निरोध-स्वभाव, नष्ट / समाप्त होने का स्वभाव।

निरोधसमापत्ति (स्त्री.) : विज्ञान के निरुद्ध होने की स्थिति (ध्यान की अवस्था)।

निरोधेति (क्रि.) : निरोध को प्राप्त करता है, नष्ट होता है।

निलय (पु.) : घर, निवास-स्थान।

निलीन (वि.) : छिपा हुआ।

निलीयति (क्रि.) : छिपता है।

निल्लज्ज (वि.) : निर्लज्ज, बेशरम।

निल्लेहक (वि.) : चाटने वाला।

निल्लोकेति (क्रि.) : देखता है, निरीक्षण करता है।

निल्लोप (पु.) : लुटना, डाका डालना।

निल्लोलुप (वि.) : लोभ-रहित।

निवत्त (वि.) : रुका हुआ, वापस लौटा हुआ।

निवत्तति (क्रि.) : रूक जाता है, लौट पड़ता है, थम जाता है।

निवत्तन (नपुं.) / **निवत्ति** (स्त्री.) : रुकना, वापिस होना।

निवत्तेति (क्रि.) : रोकता है, लौटाता है।

निवत्थ (वि.) : वस्त्र पहने हुए।

निवसति (क्रि.) : रहता है, वास करता है।

निवह (पु.) : ढेर, संग्रह।

निवातक (नपुं.) : सुरक्षित स्थान।

निवातवुत्ती (वि.) : विनम्र।

निवाप (पु.) : पशुओं का आहार, श्राद्ध।

निवारण (नपुं.) : रोकना।

निवारिय (वि.) : रोकने योग्य।

निवारेति (क्रि.) : रोकता है।

निवारेतु (पु.) : रोकने वाला।

निवास (पु.) : रहना, रहने की जगह।

निवासन (नपुं.) : अन्तर्वसन, अन्दर पहनने का कपड़ा।

निवासभूमि (स्त्री.) : रहने की जगह।

निवासिक / निवासी (पु.) : रहने वाला।

निवासेति (क्रि.) : वस्त्र पहनता है।

निविट्ठ (वि.) : स्थिर हुआ।

निविसति (क्रि.) : स्थिर होता है, घुसता है, रुकता है।

निवुत (वि.) : घिरा हुआ।

निवुत्थ (वि.) : रहा हुआ।

निवेदक (वि.) : निवेदन करने वाला ।

निवेदेति (क्रि.) : निवेदन करता है।

निवेस (पु.) / **निवेसन** (नपुं.): निवास-स्थान, घुसना, रुकना।

निवेसेति (क्रि.) : स्थापित करता है, घुसाता है, निर्धारित करता है ।

निसग्ग (पु.) : देना, प्रकृति, निसर्ग।

निसज्ज (पू.क्रि.) : बैठकर।

निसज्जा (स्त्री.) : बैठना, बैठने का अवसर, बैठने की जगह।

निसद (पु.) : चक्की (विशेष तौर पर चक्की का निचला पाट)।

निसदपोत (पु.) : चक्की का ऊपर का पाट।

निसभ (पु.) : वृषभ, बैल।

निसम्म (पू.क्रि., क्रि.वि.) : विचार करके।

निसम्मकारी (वि.) : सोच-विचारकर करने वाला।

निसा (स्त्री.) : निशा, रात्रि, रात।

निसाकर / निसानाथ (पु.) : चन्द्रमा, चांद।

निसाण (पु.) : सान चढाने का पत्थर, धार लगाने का पत्थर, सिल्ली।

निसामक (वि.) : द्रष्टा, दर्शक, ध्यान लगाकर सुनने वाला।

निसामेति (क्रि.) : सुनता है।

निसित (वि.) : तेज, तीक्ष्ण।

निसिन्न (वि.) : बैठा हुआ।

निसिन्नक (वि.) : बैठने वाला।

निसीथ (पु.) : मध्य-रात्रि।

निसीदति (क्रि.) : बैठता है।

निसीदन (नपुं.) : बैठना, बैठने की चटाई वगैरह।

निसीदापन (नपुं.) : बैठाना।

निसीदापेति (क्रि.) : बैठाता है।

निसूदन (नपुं.) : हत्या करना, वध करना।

निसेध (पु.) : रोक थाम, निषेध।

निसेधक (वि.) : निषेध करने वाला।

निसेधेति (क्रि.) : निषेध करता है।

निसेवति (क्रि.) : संगति करता है।

निसेवन (नपुं.) : संगति करना, उपयोग करना, अभ्यास करना।

निस्सग्ग (पु.) : परित्याग।

निस्सग्गिय (वि.) : परित्याग करने योग्य।

निस्सङ्ग (वि.) : संग-रहित, निर्लोभी।

निस्सज्जति (क्रि.) : त्याग देता है, छोड़ देता है।

निस्सट (वि.) : निकला हुआ, छूटा हुआ, विदा हुआ।

निस्सट्ठ (वि.) : बाहर हुआ, परित्यक्त।

निस्सत्त (वि.) : सत्त्व(प्राणी)-विहीन।

निस्सद्द (वि.) : निशब्द, शांत।

निस्सन्द (पु.) : परिणाम, रिसना।

निस्सय (पु.) : आश्रय, संरक्षण।

निस्सयति (क्रि.), आश्रय ग्रहण करता है, सहारा लेता है।

निस्सरण (नपुं.) : बाहर जाना, बिदाई, मुक्त होना।

निस्सरति (क्रि.) : विदा होता है।

निस्साय (अ.) : उसके द्वारा, उससे, उसके सहारे।

निस्सार (वि.) : सार-रहित।

निस्सारज्ज (वि.) : आश्वस्त, संदेह-रहित, आत्म-विश्वासी।

निस्सारण (नपुं) : बाहर निकालना।

निस्साव (पु.) : चावल का माँड।

निस्सित (वि.) : आश्रित।

निस्सितक (वि.) : अनुयायी, समर्थक, शीशी, आश्रय ग्रहण करने वाला।

निस्सिरीक (वि.) : अभागा, दुःखी, वैभव-हीन ।

निस्सेणि / **निस्सेणी** (स्त्री) : सीढी।

निस्सेस (वि.) : संपूर्ण।

निस्सेसं (क्रि.वि.) : संपूर्ण रूप से।

निस्सोक (वि.) : शोक-रहित।

निहत (वि.) : जिसकी मान-मर्यादा कुचल दी गई हो, नष्ट किया गया।

निहतमान (वि.) : विनम्र, मान-रहित।

निहनति (क्रि.) : मार डालता है, अपमानित करता है।

निहित (वि.) : रखा हुआ, व्यवस्थित, छुपाया हुआ (धन)।

निहीन (वि) : नीच, तुच्छ, थोडा, महत्त्वहीन।

निहीनकम्म (नपुं) : नीच-कर्म, पाप-कर्म।

निहीनपञ्ञ (वि.) : दुर्बुद्धि।

निहीनसेवी (वि.) : कुसंगति में रहने वाला।

निहीयति (क्रि.) : नाश को प्राप्त होता है, नष्ट होता है।

नीघ (पु.) : दुःख, अव्यवस्था।

नीच (वि.) : निकृष्ट, नीच, हीन।

नीचकुल (नपुं.) : नीच जाति।

नीचकुलीनता (स्त्री.) : नीच कुल में जन्म ग्रहण करने का भाव।

नीचासन (नपुं.) : नीचा आसन।

नीत (वि.) : ले जाया गया।

नीतत्थ (पु.) : अनुमानित अर्थ।

नीति (स्त्री.) : कानून, मार्गदर्शन।

नीतीगन्थ (पु.) : नीति-ग्रंथ।

नीतिसत्थ (नपुं.) : नीति-शास्त्र।

नीप (पु.) : कदंब वृक्ष।

नीयति (क्रि.) : ले जाया जाता है।

नीयाति (क्रि.) : बाहर जाता है, बाहर निकलता है।

नीर (नपुं.) : जल, पानी।

नील : (पु.) नीला रंग, (वि.) नीला, नीले रंग का।

नीलकसिण (नपुं.) : ध्यान लगाने के लिए नील-वर्ण गोलाकार।

नीलगीव (नपुं.) : नील-ग्रीवा, मोर।

नीलमणि (पु.) : नीलम।

नीलवण्ण (वि.) : नीलवर्ण, नीले रंग का।

नीलवल्ली (स्त्री.) : नील-वर्ण लता।

नीलसप्प (पु.) : नीला सांप।

नीलिनी / नीली (स्त्री) : नील का पौधा।

नीलुप्पल (नपुं) : नील-कमल।

नीवरण (नपुं.) : बाधा।

नीवरणिय (वि.) : बाधा डालने वाला, बाधक।

नीवार (पु.) : धान्य-विशेष।

नीहट (वि.) : बाहर निकला हुआ।

नीहरण (नपुं) : बाहर निकालना।

नीहरति (क्रि.) : बाहर ले जाता है, बाहर निकालता है, भगा देता है।

नीहार (पु.) : बाहर निकालना, पथ, ढंग।

नीळ (नपुं.) : नीड, घोंसला।

नीळज (पु.) : पक्षी।

नु (अ.) : अधिकतर प्रश्नवाचक सर्वनामों के साथ प्रयोग होता है।

नुद / नुदक (वि.) : निकाल बाहर करने वाला, दूर करने वाला।

नुदति (क्रि.) : दूर हांक देता है, हकेलता है, भगा देता है।

नुन्न (वि.) : हांका गया, भगाया गया।

नूतन (वि.) : नया।

नून (अ.) : निश्चय से।

नूपुर (नपुं.) : पैंजनी, पैर में पहनने का स्त्रियों का गहना।

नेक (वि.) : अनेक।

नेकतिक (पु., वि.) : ठग।

नेकायिक (वि.) : सुत्तपिटक के पांचों निकायों का जानकार, स्मृतिकार।

नेक्ख (नपुं.) : निष्क, स्वर्ण-मुद्रा।

नेक्खम्म (नपुं.) : सांसारिक जीवन का त्याग, सन्यास।

नेक्खम्मवितक्क (नपुं.) : अभिनिष्क्रमण / सन्यास संबंधी विचार, त्याग-संबंधी विचार।

नेक्खम्मसङ्कप्प (पु.) : गृहत्याग संबंधी संकल्प, निवृत्ति / त्याग-संबंधी संकल्प।

नेक्खम्मसुख (नपुं.) : अभिनिष्क्रमण / गृहत्याग का सुख, त्यागने का सुख।

नेगम (वि.) : निगम संबंधी।

नेति (क्रि.) : ले जाता है।

नेतु (पु.) : नेता।

नेत्त : (पु.) पथ-दर्शक, (नपुं.) नेत्र, आंख।

नेत्ततारा (स्त्री.) : आंख का तारा।

नेत्ति (स्त्री.) : तृष्णा, नाली।

नेत्तिक (पु.) : खेत सींचने के लिए नाली बनाने वाला।

नेत्तिंस (पु.) : तलवार।

नेपक्क (नपुं.) : बुद्धिमानी, सूझ-बूझ।

नेपुञ्ञ (नपुं.) : निपुणता, दक्षता।

नेमि (स्त्री.) : पहिये की हाल।

नेमित्तिक (पु.) : ज्योतिषी, भविष्य बताने वाला।

नेमिन्धर (पु.) : पर्वत का नाम।

नेय्य (वि.) : ले जाने योग्य, समझने योग्य।

नेरञ्जरा : एक नदी, बुद्धत्व प्राप्ति के बाद बुद्ध इसी नदी के तट पर थे।

नेयरिक (वि.) : निरय / नरक में उत्पन्न।

नेरु (पु.) : सबसे ऊंचे पर्वत का नाम, मेरु पर्वत।

नेरु-जातक : स्वर्ण-वर्ण नेरु (मेरु) पर्वत की चमक-दमक के कारण किसी ने भी स्वर्ण-वर्ण राजहंस की ओर ध्यान नहीं दिया (३७९)।

नेवासिक (पु.) : रहने वाला।

नेसज्जिक (वि.) : बैठा रहने वाला।

नेसाद (पु.) : निषाद, शिकारी।

नो (अ.) : नहीं।

नोनीत (नपुं.) : मक्खन, नवनीत।

न्यास (पु.) : धरोहर।

न्हात / नहात (वि.) : नहाया हुआ।

न्हान / नहान (नपुं.) : नहाना।

न्हारु / नहारु (पु.) : नस।

प

पकट्ठ (वि.) : अति श्रेष्ठ, महान।

पकत (वि.) : कृत, निर्मित।

पकतञ्ञू (वि.) : प्रकृति का स्वभाव जानने वाला।

पकतत्त (वि.) : सदाचारी।

पकति (स्त्री.) : प्रकृति, प्राकृतिक या मूल रूप, स्वाभाविक या मूल स्थिति।

पकतिक (वि.) : प्राकृतिक।

पकतिगमन (नपुं.) : स्वाभाविक चाल।

पकतिचित्त : (नपुं.) स्वाभाविक चित्त, (वि.) स्वाभाविक चित्त वाला।

पकतिज (पु., नपुं.) : प्रकृति से उत्पन्न।

पकतिसील (नपुं.) : स्वाभाविक शील।

पकप्पना (स्त्री.) : तर्क, योजना, व्यवस्था।

पकप्पेति (क्रि.) : विचार करता है, योजना बनाता है, व्यवस्था करता है।

पकम्पति (क्रि.) : कांपता है।

पकरण (नपुं.) : अवसर, साहित्यिक कृति या व्याख्या।

पकार (पु.) : ढंग, पद्धति, प्रकार।

पकास (पु.), चमक, कथन, व्याख्या, प्रकाश।

पकासक (पु.) : प्रकाशक, घोषणा करने वाला, व्याख्या करने वाला।

पकासति (क्रि.) : प्रकट होता है, प्रकाशित होता है।

पकासन (नपुं.) : प्रकाशन, घोषणा।

पकासित (वि.) : प्रकाशित।

पकासेति (क्रि.) : प्रकट करता है, प्रकाशित करता है।

पकिण्ण (वि.) : बिखरा हुआ, फेंका गया।

पकिण्णक (वि.) : प्रकीर्ण, बिखरा हुआ।

पकित्तित (वि.) : प्रशंसित।

पकित्तेति (क्रि.) : प्रशंसा करता है, व्याख्या करता है।

पकिरति (क्रि.) : बिखेरता है, गिरने देता है।

पकुधकच्चायन : बुद्ध के समकालीन छह तैथिक संप्रदायों में से एक का मुखिया।

पकुप्पति (क्रि.), क्रोधित होता है।

पकुब्बति (क्रि.) : करता है।

पकोटि (स्त्री.) : संख्या-विशेष ।

पकोप (पु.) : क्रोध, विद्वेष।

पकोपन (नपुं.) : क्रोधित करना।

पक्क (वि.) : पका हुआ, उबाला हुआ, पकाया हुआ।

पक्कट्ठित (वि.) : बहुत उबला हुआ।

पक्कम (पु.) / **पक्कमन** (नपुं.) : चले जाना, विदाई ।

पक्कमति (क्रि.) : विदा होता है।

पक्कोसति (क्रि.) : बुलाता है।

पक्कोसन (नपुं.) / **पक्कोसना** (स्त्री.) : बुलावना।

पक्ख (पु., वि) : पक्ष, पहलु, पखवाड़ा (शुक्ल या कृष्ण), जो साफ दिखाई दे, संबंधित, लंगड़ा आदमी।

पक्खन्दति (क्रि.) : कूदता है, छलांग लगाता है।

पक्खन्दन (नपुं.) : कूदना, छलांग मारना, पीछा करना।

पक्खन्दिका (स्त्री.) : अतिसार, दस्त लग जाना, आंव पड़ना।

पक्खन्दी (पु.) : कूदने वाला, छलांग मारने वाला।

पक्खबिलाल (पु.) : चमगादड़।

पक्खलति (क्रि.) : लड़खड़ाता है।

पक्खलन (नपुं.) : लड़खड़ाहट।

पक्खालेति (क्रि.) : धोता है, साफ करता है।

पक्खिक / **पक्खिय** (वि.) : पाक्षिक, पक्ष-संबंधी।

पक्खिकभत्त (नपुं.) : एक पखवाड़े में एक बार दिया जाने वाला भोजन।

पक्खित्त (वि.) : प्रक्षिप्त, फेंका गया, रखा गया।

पक्खिपति (क्रि.) : फेंकता है, रखता है।

पक्खिपन (नपुं.) / **पक्खेप** (पु.) : प्रक्षेपण, फेंकना, रखना।

पक्खी (पु.) : पक्षी।

पखुम (नपुं.) : बरौनी, पलक।

पगब्भ (वि.) : प्रगल्भ, साहसी, दुस्साहसी।

पगाळ्ह (वि.) : डूबा हुआ।

पगाहति (क्रि.) : डुबकी लगाता है, डूबता है।

पगिद्ध (वि.) : अत्यंत लोभी।

पगुण (वि.) : अभ्यस्त, ज्ञान से परिपूर्ण, कंठस्थ किया हुआ।

पगुणता (स्त्री.) : दक्षता, निपुणता।

पगुम्ब (पु.) : झाड़ी।

पगेव (अ.) : समय से अति पूर्व, कहना ही क्या।

पग्गण्हाति (क्रि.) : ग्रहण करता है, धारणकरता है, अनुबल देता है।

पग्गह (पु.) / **पग्गाह** (पु.) / **पग्गहन** (नपुं.) : प्रयत्न, सामर्थ्य, उठाना, धारण करना, पकड़ना, अनुबल देना।

पग्गहित (वि.) : गृहीत, धरा हुआ, पकड़ा हुआ।

पग्घरण (नपुं.) : चूना, रिसना।

पग्घरणक (वि.) : चूता हुआ, रिसता हुआ।

पग्घरति (क्रि.) : चूता है, बूंद-बूंद गिरता है, रिसता है।

पघण (पु.) : घर के सामने का छज्जा।

पङ्क (पु.) : कीचड, गारा, मैला।

पङ्कज / **पङ्केरुह** (नपुं.) : कमल।

पङ्गु / **पङ्गुल** (वि.) : लंगड़ा।

पचति (क्रि.) : पकाता है।

पचन (नपुं.) : पकाना।

पचरति (क्रि.) : अभ्यास करता है, देखता है, चलता है ।

पचलायति (क्रि.) : ऊंघता है।

पचलायिका (स्त्री.) : ऊंघना।

पचापेति (क्रि.) : पकवाता है।

पचारक (पु.) : प्रचारक, विज्ञापक।

पचारेति (क्रि.) : प्रचार करता है।

पचालक (वि.) : झूलता हुआ।

पचिनाति (क्रि.) : चुगता है, (फूल) तोड़ता है, संग्रह करता है।

पचुर (वि.) : प्रचुर बहुत, नाना प्रकार का।

पच्चक्कोसति (क्रि.) : डांट के बदले में डांटता है, निंदा के बदले में निंदा करता है।

पच्चक्ख (वि.) : प्रत्यक्ष।

पच्चक्खकम्म (नपुं.) : प्रत्यक्ष करना, अनुभव।

पच्चक्खाति (क्रि.) : प्रत्याख्यान करता है, निषेध करता है।

पच्चक्खान (नपुं.), प्रत्याख्यान, निषेध, इन्कार।

पच्चग्घ (वि.) : नया, सुन्दर, मूल्यवान, महंगा।

पच्चङ्ग (नपुं.) : प्रत्यंग।

पच्चति (क्रि.) : पकाया जाता है, कष्ट पाता है।

पच्चत्त (वि.) : पृथक्, व्यक्तिगत।

पच्चत्तं (क्रि.वि.) : पृथक्-पृथक्, व्यक्तिगत तौर पर।

पच्चत्थरण (नपुं.) : आस्तरण, अस्तर, बिछाने की चादर।

पच्चत्थिक (पु.) : शत्रु, विरोधी।

पच्चन (नपुं.) : उबलना, कष्ट पाना।

पच्चनिक (पु., वि.) : उल्टा, निषेधात्मक, विरोधी, शत्रु।

पच्चनुभवति / पच्चनुभोति (क्रि.) : अनुभव करता है।

पच्चन्त (पु.) : प्रत्यन्त-देश, सीमा-प्रदेश।

पच्चन्तजनपद : मज्झिम-देश की सीमा से बाहर का प्रदेश।

पच्चन्तवासी (पु.) : प्रत्यन्त देश का वासी, देहाती।

पच्चन्तविसय (पु.) : प्रत्यन्त देश, सरहद के पास वाला प्रदेश।

पच्चन्तिम (वि.) : बहुत दूर स्थित।

पच्चय (पु.) : हेतु, कारण, उद्देश्य, आवश्यकता, साधन, आश्रय।

पच्चयता (स्त्री.) : हेतुत्व।

पच्चयाकार (पु.) : कारणों का प्रकार, कारणों की प्रणाली।

पच्चयिक (वि.) : विश्वसनीय, इमानदार।

पच्चयुप्पन्न (वि.) : कारण से उत्पन्न।

पच्चरी / महापच्चरी : अविद्यमान सिंहली अट्ठकथा।

पच्चवेक्खति (क्रि.) : विचार करता है, विवेचन करता है।

पच्चवेक्खना (स्त्री.) : विचार, विवेचन।

पच्चस्सोसि (भूत क्रि.) : प्रतिश्रुति दी, वचन दिया, स्वीकार किया।

पच्चाकत (वि.) : परित्यक्त, पराजित।

पच्चाकोटित (वि.) : चिकना किया हुआ, इस्त्री किया हुआ।

पच्चागच्छति (क्रि.) : वापिस आता है, पीछे हटता है।

पच्चागमन (नपुं.) : वापसी, लौटना।

पच्चाजायति (क्रि.) : पुनर्जन्म ग्रहण करता है।

पच्चादेस (पु.) : प्रतिक्षेप करना, अस्वीकृति।

पच्चामित्त (पु.) : शत्रु, विरोधी।

पच्चासारेति (क्रि.) : घूमाता है।

पच्चासिंसति (क्रि.) : आशा करता है, इच्छा करता है, इन्तजार करता है।

पच्चाहरति (क्रि.) : वापिस लाता है।

पच्चाहार (पु.) : बहाना, क्षमा याचना।

पच्चुग्गच्छति (क्रि.) : स्वागत करने जाता है।

पच्चुग्गमन (नपुं.) : स्वागत करना।

पच्चुट्ठाति (क्रि.) : सम्मान प्रदर्शित करने के लिए खड़ा होता है।

पच्चुट्ठान (नपुं.) : आदर।

पच्चुदावत्तति (क्रि.) : फिर वापिस लौटता है।

पच्चुपकार (पु.) : प्रत्युपकार, उपकार का बदला।

पच्चुपट्ठाति (क्रि.) : उपस्थित रहता है, सेवा में रहता है।

पच्चुपट्ठान (नपुं.) : सेवा में उपस्थित रहना।

पच्चुपट्ठापेति (क्रि.) : सम्मुख उपस्थित करता है।

पच्चुप्पन्न (वि.) : वर्तमान, मौजूदा।

पच्चूस (पु.) : प्रत्यूष, बहुत सुबह।

पच्चूसकाल (पु.) : सुबह का समय, भोर।

पच्चूह (पु.) : बाधा, रुकावट।

पच्चेक (वि.) : प्रत्येक, पृथक-पृथक।

पच्चेकबुद्ध (पु.) : जिसने बोधि तो प्राप्त की हो लेकिन दूसरों को उस बोधि का उपदेश न दे।

पच्चेति (क्रि.) : परिणाम पर पहुंचता है।

पच्चोरूळ्ह (वि.) : नीचे उतरा हुआ।

पच्चोरोहति (क्रि.) : नीचे उतरता है।

पच्चोसक्कति (क्रि.) : वापिस लौटता है।

पच्चोसक्कना (स्त्री.) : वापिस लौटना।

पच्छतो (अ.) : पीछे से।

पच्छन्न (वि.) : ढका हुआ।

पच्छा (अ.) : बाद में, पीछे।

पच्छाजात (वि.) : बाद में पैदा हुआ।

पच्छाताप / पच्छानुताप (पु.) : पश्चाताप।

पच्छाद (पु.) : रथ का झोल।

पच्छानिपाती (पु.) : बाद में सोने वाला।

पच्छानुतप्पति (क्रि.) : पश्चाताप करता है।

पच्छाबन्ध (पु.) : नाव का डांडा।

पच्छाबाहं (क्रि.वि.) : पीछे हाथ बंधा।

पच्छाभत्तं : (क्रि.वि.) अपराह्न, (नपुं) अपराह्न- भोजन, भोजन के बाद।

पच्छाभाग (पु.) : पिछला भाग।

पच्छाभाव (पु.) : पश्चात-भाव।

पच्छासमण (पु.) : अनुगामी श्रमण।

पच्छाया (स्त्री.) : सायादार हिस्सा।

पच्छि (स्त्री.) : हाथ की टोकरी।

पच्छिज्जति (क्रि.) : छीजता है, बाधित होता है।

पच्छिज्जन (नपुं) : बाधा, रूकावट।

पच्छिन्दति (क्रि.) : छांटता है, काट डालता है।

पच्छिन्न (वि.) : कांटा हुआ, टूटा हुआ।

पच्छिम (वि.) : अंतिम, सबसे पीछे का।

पच्छिमक (वि.) : अंतिम, सबसे निम्न स्तर का।

पच्छेदन (नपुं.) : काटना, तोड़ना।

पजग्घति (क्रि.) : जोर से हंसता है।

पजप्पति (क्रि.) : बक-बक करता है, उत्कट इच्छा करता है।

पजहति (क्रि.) : छोड़ देता है, त्याग देता है।

पजा (स्त्री.) : संतान, प्राणी, मनुष्य, प्रजा।

पजानना (स्त्री.) : ज्ञान, समझ।

पजानाति (क्रि.) : स्पष्ट रूप से जानता है।

पजापति : (पु.) सृष्टि का मालिक, (स्त्री.) जिसके संतान हो।

पजायति (क्रि.) : उत्पन्न होता है।

पजायन (नपुं.) : जन्म, उत्पन्न होना।

पज्ज (नपुं.) : पद्य, काव्य।

पज्जबद्ध (पु.) : काव्य।

पज्जलति (क्रि.) : जलता है।

पज्जलन (नपुं.) : जलना।

पज्जुन्न (पु.) : वर्षा का बादल, इंद्र।

पज्जोत (पु.) : प्रदीप, प्रकाश, चमक-दमक ।

पज्झायति (क्रि.) : जलता है, क्षीण होता हैं, शोकाकुल होता है।

पञ्च (वि.) : पांच।

पञ्चक (नपुं.) : पांच का समूह।

पञ्चकल्याण (नपुं.) : सौंदर्य के पांच चिन्ह।

पञ्चकामगुण (पु.) : पांच इंद्रियों के भोग।

पञ्चक्खत्तुं (क्रि.वि.) : पांच बार।

पञ्चक्खन्ध (पु.) : पांच स्कंध।

पञ्चगरु-जातक : प्रत्येक बुद्ध का उपदेश माननेवाला राजकुमार राजा बना (१३२)।

पञ्चगोरस (पु.) : दूध, दही आदि पांच गोरस पदार्थ।

पञ्चङ्ग / पञ्चङ्गिक (वि.) : पांच अंगों (हिस्सों) से युक्त।

पञ्चङ्गलिक (वि.) : पांच अंगुलियाँ का निशान।

पञ्चचक्खु (वि.) : पांच चक्षुओं वाला।

पञ्चचत्तालीसति (स्त्री.) : पैतालीस (४५)।

पञ्चचूळक (वि.) : सिर में बालों के पांच जूड़ों वाला।

पञ्चतिंसति (स्त्री.) : पैंतीस (३५)।

पञ्चदस (वि.) ; पन्द्रह (१५)।

पञ्चदसी (स्त्री.) : पूर्णिमा।

पञ्चधरण (नपुं.) : तोल-विशेष।

पञ्चधा (अ.) : पांच तरह से।

पञ्चनवुति (स्त्री.) : पंचानबे (९५)।

पञ्चनीवरण : पांच बंधन।

पञ्चपञ्ञासति (स्त्री.) : पचपन (५५)।

पञ्चपण्डित-जातक : यह जातक महाउम्मग्ग जातक के एक अंश के रूप में दिया गया है (५०८)।

पञ्चपतिट्ठित (नपुं.) : पांच अंगों से प्रणाम।

पञ्चप्पकरण : धम्मसङ्गणी व विभङ्ग को छोड़कर अभिधम्मपिटक की शेष पांच पुस्तकों का सामूहिक नाम।

पञ्चबन्धन (नपुं.) : पांच प्रकार का बंधन।

पञ्चबल (नपुं.) : पांच बल।

पञ्चमहापरिच्चाग (पु.) : पांच प्रकार के त्याग।

पञ्चमहानदी (स्त्री.) : गंगा, अचिरवती, यमुना आदि पांच महानदियाँ।

पञ्चमहाविलोकन (नपुं.) : पांच प्रकार का अन्वेषण।

पञ्चवग्गिय : पंचवर्गीय भिक्षु, बुद्ध के प्रथम पांच शिष्यों का सामूहिक नाम। वे पांच शिष्य थे - कोण्डञ्ञ, भद्दिय, वप्प, महानाम, अस्सजि।

पञ्चवण्ण (वि.) : पांच वर्ण।

पञ्चविध (वि.) : पांच गुना, पाच प्रकार के।

पञ्चवीसति (स्त्री.) : पच्चीस (२५)।

पञ्चसट्ठि (स्त्री.) : पैंसठ (६५)।

पञ्चसत (नपुं.) : पांच सौ (५००)।

पञ्चसिख (पु.) : देव-गन्धर्व।

पञ्चसील (नपुं.) : पांच शील, पंचशील।

पञ्चसो (अ.) : पांच तरह से।

पञ्चहत्थ (पु.) : पांच हाथ लंबा।

पञ्चानन्तरिय (नपुं.) : जो पांच दुष्कर्म तुरन्त फल देते हैं – १. मातृ-हत्या, २. पितृ-हत्या, ३. अर्हत्-हत्या, ४. बुद्ध के शरीर को जख्मी करना तथा, ५. संघ की एकता नष्ट करना।

पञ्चाभिञ्ञा (स्त्री.) : पांच असामान्य शक्तियां – १. प्रातिहार्य या करिश्मे रखने की शक्ति, २. दिव्य चक्षु, ३. दिव्य श्रोत्र, ४. दूसरों के विचार जान लेने की शक्ति, तथा ५. पूर्व जन्मों की अनुस्मृति।

पञ्चाल : सोलह महाजनपदों में से एक। उत्तर-पंचाल तथा दक्षिण-पंचाल नामक दो हिस्सों में विभक्त था।

पञ्चालिका (स्त्री.) : गुड़िया, पुतली।

पञ्चावुध (नपुं.) : तलवार, बछ, कुल्हाड़ा आदि पांच शस्त्र।

पञ्चावुध-जातक : पांच हथियारों से युक्त राजकुमार का सिलेसलोम यक्ष से भयानक संघर्ष हुआ। अन्त में यक्ष ने कुमार को विजयी स्वीकार किया (५५)।

पञ्चासीति (स्त्री.) : पचासी (८५)।

पञ्चाह (नपुं.) : पांच दिन।

पञ्चुपोसथ-जातक : कबूतर, सांप, गीदड़ और भालू के परस्पर मैत्रीपूर्ण ढंग से रहने की कथा (४९०)।

पञ्जर (पु., नपुं.) : पिंजरा।

पञ्जलिक (वि.) : नमस्कार करने के लिए हाथ जोडे हुए।

पञ्ञ (वि.) : (समास में) प्रज्ञावान।

पञ्ञता (स्त्री.) : (समास में), प्रज्ञावान होना।

पञ्ञपेति (क्रि.) : घोषित करता है।

पञ्ञत्त (वि.) : बनाया गया नियम, की गई घोषणा।

पञ्ञत्ति / पण्णत्ति (स्त्री.) : संज्ञा, नियम, घोषणा।

पञ्ञवन्तु (वि.) : बुद्धिमान आदमी।

पञ्ञा (स्त्री.) : प्रज्ञा, ज्ञान, अंतर्दृष्टि।

पञ्ञाक्खन्ध (पु.) : प्रज्ञा-स्कन्ध।

पञ्ञाचक्खु (नपुं) : प्रज्ञा-चक्षु।

पञ्ञाण (नपुं.) : चिह्न, निशान।

पञ्ञात (वि.) : प्रकट हुआ।

पञ्ञाधन (नपुं.) : प्रज्ञा-धन।

पञ्ञापक (वि.) : नियुक्त करने वाला।

पञ्ञापन (नपुं.) : घोषणा, (बैठने के लिए आसनों की) व्यवस्था ।

पञ्ञापेति (क्रि.) : नियम बनाता है, व्यवस्था करता है, घोषणा करता है।

पञ्ञापेतु (पु.) : नियम-बद्ध करने वाला, घोषणा करने वाला।

पञ्ञाबल (नपुं.) : प्रज्ञा-बल।

पञ्ञाभेद (पु.) : प्रज्ञा के प्रकार।

पञ्ञायति (क्रि.) : प्रकट होता है, स्पष्ट होता है।

पञ्ञाविमुत्ति (स्त्री.) : प्रज्ञा से विमुक्ति।

पञ्ञासम्पदा (स्त्री.) : प्रज्ञा ही संपत्ति।

पञ्ह (स्त्री.) : प्रश्न, जिज्ञासा।

पञ्हविस्सज्जन (नपुं.) : प्रश्नों का उत्तर देना।

पञ्हव्याकरण (नपुं.) : प्रश्नों का समाधान करना।

पट (पु., नपुं.) : वस्त्र, पहनावा।

पटग्गि (पु.) : प्रति-अग्नि, आग के जवाब में आग।

पटङ्ग / **पतङ्ग** (पु.) : पक्षी, कीट, पतंग, झींगुर।

पटल (नपुं.) : आवरण।

पटलिका (स्त्री.) : ऊनी कढी हुई चादर, दुशाला।

पटह (पु.) : नगाडा।

पटाका (स्त्री.) : पताका, झंडा।

पटि / **पति** : एक उपसर्ग (विरूद्ध, अनुकूल)।

पटिकङ्खति (क्रि.) : इच्छा करता है।

पटिकण्टक (वि., पु) : विरोधी, शत्रु।

पटिकत (वि.) : प्रायश्चित किया गया।

पटिकम्म (नपुं.) : प्रति-कर्म, प्रायश्चित।

पटिकर (वि.) : प्रतिकार।

पटिकरोति (क्रि.) : प्रतिकार करता है, मार्जन करता है।

पटिकस्सति (क्रि.) : पीछे हटता है, पीछे खींचता है।

पटिकार (पु.) : प्रतिकार, इलाज।

पटिकुज्जति (क्रि.) : झुकता है।

पटिकुज्झति (क्रि.) : बदले में क्रोधित होता है।

पटिकुट्ठ (वि.) : घृणित, सदोष, डांट खाया हुआ।

पटिकच्च / **पटिगच्च** (अ.) : पहले से।

पटिक्कन्त (वि.) वापिस लौटा हुआ।

पटिक्कम (पु.) : एक ओर हट जाना, पीछे लौटना।

पटिक्कमति (क्रि.) : पीछे हटता है।

पटिक्कमनसाला (स्त्री.) : विश्राम-शाला।

पटिक्कूल (वि.) : प्रतिकूल।

पटिक्कूलता (स्त्री.) : प्रतिकूलता।

पटिक्कूलसञ्ञा (स्त्री.) : शरीर की गंदगी से संबंधित चेतना, प्रतिकूल संज्ञा।

पटिक्कोसना (स्त्री.) : विरोध-प्रदर्शन।

पटिक्कोसति (क्रि.) : बुरा-भला कहता है, दोषारोपण करता है।

पटिक्खिपति (क्रि.) : प्रतिक्षेप करता है।

पटिक्खेप (पु.) : प्रतिक्षेप, निषेध।

पटिगिज्झति (क्रि.) : इच्छा करता है, लोभ करता है।

पटिगूहति (क्रि.) : छिपाता है, पीछे रखता है।

पटिग्गण्हन / पटिग्गहण (नपुं.) : प्रतिग्रहण, स्वागत।

पटिग्गण्हनक (वि.) : स्वागत करने वाला, प्रतिग्रहण करने में समर्थ।

पटिग्गण्हाति (क्रि.) : लेता है, प्राप्त करता है, स्वीकार करता है।

पटिग्गह (पु.) : जो ग्रहण करे, पात्र (पानी वगैरह का) पीकदान।

पटिग्गहेतु (पु.) : स्वीकार करने वाला, स्वागत करने वाला।

पटिग्गाहक (पु.) : प्रतिग्राहक।

पटिघ (पु.) : क्रोध, विरोध, द्वेष।

पटिघात (पु.) : प्रतिघात, टक्कर।

पटिघोस (पु.) : गूंज।

पटिचरति (क्रि.) : प्रश्नों का जवाब देने से कतराता है, घूमता है।

पटिचोदेति (क्रि.) : बदले में इल्जाम लगाता है।

पटिच्च (पू.क्रि.) : हेतु से।

पटिच्चसमुप्पन्न (वि.) : हेतु से उत्पन्न।

पटिच्चसमुप्पाद (पु.) : प्रतीत्यसमुत्पाद, हेतु से उत्पत्ति का नियम।

पटिच्छति (क्रि.) : स्वीकार करता है, ग्रहण करता है।

पटिच्छन्न (वि.) : ढका हुआ, सुरक्षित।

पटिच्छादक (वि.) : छिपाने वाला।

पटिच्छादन (नपुं.) : छिपाना, आच्छादन।

पटिच्छादनिय (नपुं.) : मांस का सूप।

पटिच्छादेति (क्रि.) : ढकता है, छिपाता है।

पटिजग्गक (पु.) / **पटिजग्गनक** (वि.), देख-भाल रखनेवाला, पालन-पोषण करने वाला।

पटिजग्गति (क्रि.) : पालन-पोषण करता है।

पटिजग्गन (नपुं.) : पालन-पोषण करना।

पटिजग्गिय (वि.) : पालन-पोषण करने योग्य, मरम्मत करने योग्य ।

पटिजानाति (क्रि.) : स्वीकार करता है, वचन देता है, सहमत होता है।

पटिञ्ञ (वि.) : विश्वास दिलाने वाला (जैसे **समणपटिञ्ञ** = झूठ मूठ श्रमण होने की बात करने वाला)।

पटिञ्ञा (स्त्री.) : प्रतिज्ञा, सहमति, अनुमति।

पटिञ्ञात (वि.) : प्रतिज्ञात, सहमत हुआ, मान्यता-प्राप्त, स्वीकृत।

पटिदण्ड (पु.) : प्रतिकार।

पटिददाति (क्रि.) : वापस देता है।

पटिदस्सेति (क्रि.) : अपने आपको प्रकट करता है।

पटिदान (नपुं.) : पुरस्कार।

पटिदिन्न (नपुं.) : वापस दिया हुआ, लौटाया हुआ।

पटिदिस्सति (क्रि.) : दिखाई देता है।

पटिदेसेति (क्रि.) : स्वीकार करता है, मान लेता है, कबूल कर लेता है।

पटिधावति (क्रि.) : पीछे की ओर दौडता है, समीप दौड़ता है।

पटिनन्दति (क्रि.) : प्रसन्न होता है।

पटिनन्दना (स्त्री.) : आनंदित होना।

पटिनासिका (स्त्री.) : बनवाटी नाक।

पटिनिवत्त (वि.) : लौटा हुआ, वापिस आया हुआ।

पटिनिवत्तति (क्रि.) : वापस लौटता है।

पटिनिस्सग्ग (पु.) : परित्याग, छोड़ देना।

पटिनिस्सज्जति (क्रि.) : त्याग देता है, छोड़ देता है।

पटिनिस्सट्ठ (वि.) : त्यागा हुआ, छोड़ दिया गया।

पटिनीत (वि.) : वापस लाया गया।

पटिनेति (क्रि.) : वापस ले जाता है।

पटिपक्ख (वि., पु.) : विरोधी, शत्रु, प्रतिपक्ष।

पटिपक्खिक (वि.) : विरोधी पक्ष का।

पटिपज्जति (क्रि.) : मार्गारूढ होता है, आचरण करता है, व्यवहार करता है।

पटिपज्जन (नपुं.) : पद्धति, अभ्यास, आचरण।

पटिपण्ण (नपुं.) : पत्र का उत्तर।

पटिपत्ति (स्त्री.) : आचरण, अभ्यास, धार्मिक क्रिया-कलाप।

पटिपथ (पु.) : उल्टा रास्ता, सामने का रास्ता।

पटिपदा (स्त्री.) : आचरण, जीवन-मार्ग।

पटिपन्न (वि.) : मार्गारूढ।

पटिपहट (वि.) : उल्टा (बदले में) प्रहार किया गया।

पटिपहरति (क्रि.) : उल्टा प्रहार करता है।

पटिपहिणाति (क्रि.) : वापस भेजता है।

पटिपाटि (स्त्री.) : क्रम।

पटिपादक (पु.) व्यवस्थापक।

पटिपादेति (क्रि.) : व्यवस्था करता है, सामग्री पहुंचाता है।

पटिपादन (नपुं.) : प्रतिपादन, शिक्षण देना।

पटिपीळन (नपुं.) : त्रास देना, पीड़ा देना।

पटिपीळेति (क्रि.) : त्रास देता है, पीड़ा देता है, दमन करता है।

पटिपुग्गल (पु.) : प्रतिस्पर्धी, विरोधी।

पटिपुच्छति (क्रि.) : बदले में प्रश्न पूछता है, सवाल करता है।

पटिपुच्छा (स्त्री.) : बदले में पूछा गया प्रश्न, प्रश्न के उत्तर में पूछा गया प्रश्न ।

पटिपूजना (स्त्री.) : आदर प्रदर्शित करना, गौरव करना।

पटिपूजेति (क्रि.) : आदर करता है, गौरव करता है।

पटिपेसेति (क्रि.) : वापस भेजता है।

पटिपस्सद्ध (वि.) : शांत हुआ।

पटिपस्सद्धि / पटिपस्सम्भना (स्त्री.) : शांति।

पटिपस्सम्भति (क्रि.) : शांत होता है।

पटिबद्ध (वि.) : बंधा हुआ, आकर्षित।

पटिबद्धचित्त (वि.) : अनुरक्त।

पटिबल (वि.) : योग्य, सामर्थ्यवान।

पटिबाहक (वि.) : विरोध करने वाला, रुकावट डालने वाला, हटाने वाला।

पटिबाहति (क्रि.) : दूर करता है, हटाता है, बचाता है।

पटिबिम्ब (नपुं.) : प्रतिबिंब, छाया।

पटिबिम्बित (वि.) : प्रतिबिंबित, जिसकी छाया पड़ी हो।

पटिबुज्झति (क्रि.) : समझता है, जागता है।

पटिबुद्ध (वि.) : ज्ञानी, जागा हुआ।

पटिभय (नपुं.) : डर, भय।

पटिभाग : (वि.) समान, एक जैसा; (पु.), समानता, एकरूपता, मुकाबले का भाग।

पटिभाण / पटिभान (नपुं.) : प्रतिभान, प्रत्युत्पन्न-मति, हाजिरजवाबी।

पटिभाणवन्तु (वि.) : प्रत्युत्पन्न-मति (वाला), क्षिप्र-प्रज्ञ।

पटिभाति (क्रि.) : सूझता है, स्पष्ट होता है।

पटिभासति (क्रि.) : उत्तर देता है, जवाब देता है।

पटिमग्ग (पु.) : विरुद्ध मार्ग।

पटिमण्डित (वि.) : सजा हुआ।

पटिमल्ल (पु.) : मुकाबले का पहलवान।

पटिमा (स्त्री.) : प्रतिमा, मूर्ति।

पटिमानेति (क्रि.) : गौरव करता है, प्रतीक्षा करता है।

पटिमुक्क (वि.), वस्त्र पहने, बँधा हुआ, कपड़े पहने।

पटिमुञ्चति (क्रि.) : वस्त्र धारण करता है, बांधता है।

पटियत्त (वि.) : तैयार किया हुआ, पहुंचाया गया।

पटियादेति (क्रि.) : तैयार करता है, व्यवस्था करता है, सामग्री पहुंचाता है।

पटियोध (पु.) : मुकाबले का योधा, जवाबी युद्ध।

पटिरव (पु.) : प्रतिरव, गूँज।

पटिराज (पु.) : मुकाबले का राजा।

पटिरूप / **पतिरूप** (वि.) : योग्य, ठीक, अनुकूल।

पटिरूपक / **पतिरूपक** (वि.) : मिलती जुलती शक्ल का।

पटिरूपता / **पटिरूपता** (स्त्री.) : स्वरूप की साम्यता।

पटिरोदति (क्रि.) : जवाब में चिल्लाता है, चिल्लाकर जवाब देता है।

पटिरोदन (नपुं.) : जवाब में चिल्लाना, चिल्लाकर जवाब देना।

पटिरोदेति (क्रि.) : जवाब में डांटता है।

पटिरोसति (क्रि.) : जवाब में चिढ़ाता है।

पटिलद्ध (वि.) : प्राप्त।

पटिलभति (क्रि.) : प्राप्त करता है।

पटिलाभ (पु.) : प्राप्ति।

पटिलीन (वि.) : पीछे हटा हुआ, दूर किया गया।

पटिलीयति (क्रि.) : पीछे हटता है, दूर रहता है।

पटिलीयन (नपुं.) : दूर रहना, पीछे हटना।

पटिलोम (वि.) : विरुद्ध।

पटिलोमपक्ख (पु.) : विरोधी-पक्ष।

पटिवचन (नपुं.) : उत्तर, जवाब।

पटिवट्टति / **पटिवत्तति** (क्रि.) : वापस लौटता है।

पटिवत्तन (नपुं.) : पीछे की ओर मुड़ना, वापस लौटना।

पटिवत्तिय (वि.) : पीछे लौटने योग्य।

पटिवत्तु (पु.) : विरुद्ध भाषण करने वाला, खंडन करने वाला।

पटिवत्तेति (क्रि.) : लपेटता है, पीछे हटता है।

पटिवदति (क्रि.) : उत्तर देता है, विरुद्ध बोलता है।

पटिवसति (क्रि.) : रहता है, निवास करता है।

पटिवातं (क्रि.वि.) : हवा के विरुद्ध।

पटिवाद (पु.) : प्रतिवाद, आरोपित दोष का खंडन।

पटिविंस (पु.) : हिस्सा, भाग।

पटिविजानाति (क्रि.) : पहचानता है, जानता है।

पटिविज्झति (क्रि.) : बींधता है, समझता है।

पटिविदित (वि) : ज्ञात, सुनिश्चित।

पटिविद्ध (वि.) बींधा हुआ, समझ लिया गया।

पटिविनेति (क्रि.) : दूर करता है, वश करता है, झुकाता है।

पटिविनोदन (नपुं.) : हटाना, निकाल बाहर करना।

पटिविनोदेति (क्रि.) : हटाता है, निकाल बाहर करता है।

पटिविभजति (क्रि.) : बाँटता है।

पटिविरत (वि.) : विरक्त, अलग, अलिप्त।

पटिविरमति (क्रि.) : विरत रहता है, अलिप्त रहता है।

पटिविरुज्झति (क्रि.) : विरुद्ध होता है, झगड़ा करता है।

पटिविरुद्ध (वि.) : विरुद्ध।

पटिविरूहति (क्रि.), फिर से उगता है।

पटिविरूळ्ह (वि.) : फिरसे उगा हुआ, फिरसे बढ़ा हुआ।

पटिविरोध (पु.) : विरोध-भाव, दुश्मनी, शत्रुता।

पटिविस्सक (पु.) : पड़ोसी।

पटिवेदेति (क्रि.) : जनाता है, ज्ञात कराता है।

पटिवेध (पु.) : बींधना, भीतर घुसना, समझना, (ज्ञान-)प्राप्ति।

पटिसङ्कत (वि.) : चुकता कर दिया गया।

पटिसंयुत्त (वि.) : संबंधित।

पटिसंवेदेति (क्रि.) : सहन करता है, अनुभव करता है।

पटिसंहरण (नपुं.) : सिकोड़ना, त्याग देना, हटा लेना।

पटिसंहरति (क्रि.) : सिकोड़ता है, त्याग देता है, हटा लेता है।

पटिसंहार (पु.) : सिकोड़ना, त्याग देना, हटा देना।

पटिसङ्करण / **पटिसङ्खरण** / **पटिसङ्खार** (नपुं.) : प्रतिसंस्करण, मरम्मत।

पटिसङ्करोति / **पटिसङ्खरोति** (क्रि.) : प्रतिसंस्कार करता है, मरम्मत करता है।

पटिसङ्खा (स्त्री.) : विचार, फैसला।

पटिसङ्खान (नपुं.) : विचार करना, मीमांसा करना।

पटिसञ्चिक्खति (क्रि.) : विचार करता है, मीमांसा करता है।

पटिसन्थार (पु.) : मैत्रीपूर्ण स्वागत।

पटिसन्दहति (क्रि.) : पुनर्मिलन होता है।

पटिसन्धातु (पु.) : मेल कराने वाला, शांति-संस्थापक।

पटिसन्धान (नपुं.) : पुनर्मिलन।

पटिसन्धि (स्त्री.) : पुनर्जन्म ग्रहण करना, गर्भधारणा।

पटिसम्भिदा (स्त्री.) : मीमांसापूर्ण ज्ञान।

पटिसम्भिदामग्ग : खुद्दक निकाय का बारहवां ग्रंथ। वास्तव में इसकी गणना अभिधम्म ग्रंथों में की जानी चाहिए।

पटिसम्मोदति (क्रि.) : मैत्रीपूर्ण बातचीत करता है।

पटिसरण (नपुं.) : शरण-स्थान, सहायता, संरक्षण।

पटिसल्लान (नपुं.) : एकांत जीवन।

पटिसल्लानसारूप्प (वि.) : एकांत जीवन या ध्यान के लिए अनुकूल ।

पटिसल्लीयति (क्रि.) : एकांत जीवन व्यतीत करता है, ध्यानाभ्यास करता है।

पटिसमेति (क्रि.) : व्यवस्थित करता है, दूर रहता है।

पटिसासन (नपुं.) : प्रत्युत्तर।

पटिसेध (पु.) / **पटिसेधन** (नपुं.) : प्रतिषेध करना, इन्कार करना, नकार देना।

पटिसेधक (वि.) : प्रतिषेध करने वाला।

पटिसेधेति (क्रि.) : दूर रखता है, दूर हटाता है, मना करता है।

पटिसेवति (क्रि.) : अनुकरण करता है, सेवन करता है, उपयोग में लाता है।

पटिसेवन (नपुं.) : अभ्यास करना, अनुकरण करना, उपयोग में लाना।

पटिसोतं (क्रि.वि.) : स्त्रोत (बहाव) के विरुद्ध।

पटिस्सत / **पतिस्सत** (वि.) : विचारवान।

पटिस्सव (पु.) : वचन, स्वीकृति।

पटिस्सुणाति (क्रि.) : वचन देता है, सहमत होता है।

पटिस्सुत (वि.) : स्वीकृत।

पटिहञ्ञति (क्रि.) : चोट खाता है।

पटिहत (वि.) : चोट खाया हुआ।

पटिहनन (नपुं.) : विरोध, संघर्ष।

पटिहनति (क्रि.) : रगड़ खाता है।

पटिहार (पुं.) : द्वार, दरवाजा।

पटु (वि.) : होशियार, कुशल (आदमी)।

पटुता (स्त्री.) / **पटुत्त** (नपुं.) : दक्षता, कुशलता।

पटोल (पु.) : परवल, चिचिंडा।

पट्ट / **पट्टक** (नपुं.) : तख्ता, वस्त्र, रेशमी वस्त्र, पट्टी।

पट्टन / **पत्तन** (नपुं.) : नदी तट के पास का नगर।

पट्टिका (स्त्री.) : पट्टी।

पट्ठपेति (क्रि.) : स्थापित करता है।

पट्ठान (नपुं.) : प्रस्थान।

पट्ठानप्पकरण : अभिधम्म पिटक का अंतिम ग्रंथ। इसमें भौतिक तथा अभौतिक चीजों के २४ प्रकार के पच्चयों अथवा हेतुओं का विस्तृत विवेचन है।

पट्ठाय (अ.) : आरम्भ करके, तब से, उस समय से।

पठति (क्रि.) : पढ़ता है।

पठन (नपुं.) : पढ़ना।

पठम (वि.) : पहला।

पठमं (क्रि.वि.) : पहली बार।

पठमज्झान (नपुं.) : प्रथम ध्यान।

पठमतरं (क्रि.वि.) : सबसे पहले, यथासम्भव जल्दी।

पठवी / **पथवी** (स्त्री.) : भूमि, पृथ्वी।

पठवीकम्प / **पठवीकम्पन** (नपुं.) : भूकंप।

पठवीकसिण (नपुं.) : ध्यानाभ्यास करने के लिए मिट्टी का बना गोलाकार।

पठवीचलन (नपुं.) / **पठवीचाल** (पु.) : भूकंप।

पठवीधातु (स्त्री.) : पृथ्वी-धातु।

पठवीसम (वि.) : पृथ्वी-समान।

पण (पु.), शर्त, दुकान।

पणक (पु.) : शैवाल-विशेष, सिवाल।

पणमति (क्रि.) : प्रणाम करता है, झुकता है, पूजा करता है।

पणय (पु.) : विश्वास, याचना, प्रणय।

पणव (पु.) : ढोल।

पणाम (पु.) : प्रणाम, नमस्कार।

पणामेति (क्रि.) : चलता करता है, भगा देता है, फैला देता है, झुकाता है।

पणिदहति (क्रि.) : इच्छा करता है, आकांक्षा करता है।

पणिधान (नपुं.) / **पणिधि** (स्त्री.) : आकांक्षा, दृढ संकल्प।

पणिधाय (पू.क्रि.) : संकल्प करके।

पणिपात (पु.) : दंडवत लेट जाना, पूजा।

पणिय (नपुं.) / **पण्य** (पु.) : पण्य, बेचने की चीज, व्यापारी।

पणिहित (वि.) : संकल्प-युक्त, कांक्षित।

पणीत (वि.) : श्रेष्ठ, बढ़िया, प्रणीत ।

पणीततर (वि.) : श्रेष्ठतर, और भी बढ़िया।

पणेति (क्रि.) : दंडित करता है, निकालता है, रास्ते पर ले जाता है।

पण्डक (पु.) : हिजड़ा, नपुंसक।

पण्डर (वि.) : श्वेत, सफेद, फीका, हल्का पीला।

पण्डर-जातक : सांपों की गरूडों से अपने-आपको बचाये रखने की युक्ति (५१८)।

पण्डव (पु.) : पर्वत-विशेष।

पण्डिच्च (नपुं.) : पांडित्य।

पण्डित (वि.) : विद्वान, बुद्धिमान।

पण्डितक (पु.) : बनावटी पंडित, पांडित्य-दंभ वाला।

पण्डु (वि.) : पीला, पीलापन लिये हुए।

पण्डुकम्बल (नपुं.) : पाण्डु रंग का कम्बल।

पण्डुपलास (पु.) : सूखा पत्ता।

पण्डुरोग (पु.) : पाण्डु-रोग, पीलिया।

पण्डुरोगी (पु.) : पाण्डु-रोग वाला, पीलिया का रोगी।

पण्डुकम्बलसिलासन : देवेन्द्र शक्र के बैठने का आसन, सफेद आसन।

पण्डू : दक्षिण भारत की एक जाति - पाण्ड्य।

पण्ण / **पण्णक** (नपुं.) : पत्ता, पत्र, चिट्ठी।

पण्णकुटि (स्त्री.) : पर्ण-कुटी, पेड़ों के पत्तों से बनी कुटी।

पण्णछत्त (नपुं.) : पत्तों का छाता, पत्तों का पंखा, पत्तों की छत।

पण्णरस (वि.) : पंद्रह।

पण्णसन्थर (पु.) : पत्तों का बिछौना।

पण्णसाला (स्त्री.) : आश्रम, कुटिया, पत्तों की झोपड़ी।

पण्णाकार (पु.) : भेंट।

पण्णासा (स्त्री.) : पचास।

पण्णिक (पु.) : पत्ते बेचनेवाला, सब्जी बेचने वाला।

पण्णिक-जातक : पिता ने लड़की के सतीत्व की परीक्षा ली (१०२)।

पण्हि (पु., स्त्री.) : एड़ी।

पतति (क्रि.) : गिरता है, फिसलता है।

पतन (नपुं.) : गिरना, गिरावट।

पतनु (वि.) : अत्यंत दुबला-पतला।

पतरति (क्रि.) : आगे बढ़ता है, पार करता है।

पताका (स्त्री.) : झंडा।

पताप (पु.) : प्रताप, तेजस्विता।

पतापवन्तु (वि.) : प्रतापी, तेजस्वी।

पतापेति (क्रि.) : तपाता है।

पतारेति (क्रि.) : आगे बढ़ाता है, पार ले जाता है।

पति (पु.) : पति, स्वामी।

पतिकुल (नपुं.) : पति का खानदान।

पतिट्ठहति / पतिट्ठाति (क्रि.) : प्रतिष्ठित होता है, स्थापित होता है।

पतिट्ठा (स्त्री.) : प्रतिष्ठा, सहायता, आश्रय-स्थान।

पतिट्ठातब्ब / पतिट्ठितब्ब (वि., कृ.) : प्रतिष्ठा के योग्य, स्थापित करने योग्य।

पतिट्ठान (नपुं.) : प्रतिष्ठान, स्थापना।

पतिट्ठापित (वि.) : प्रतिष्ठापित, स्थापित किया हुआ।

पतिट्ठापेति (क्रि.) : प्रतिष्ठित कराता है।

पतिट्ठापेतु (पु.) : स्थापित करने वाला।

पतिट्ठित (वि.) : प्रतिष्ठित, स्थापित।

पतित (वि.) : गिरा हुआ।

पतितिट्ठति (क्रि.) : खड़ा होता है, दुबारा खड़ा होता है।

पतिदान (नपुं.) : प्रतिदान, दान का बदला दान।

पतिबोध (पु.) : जागरण, ज्ञान।

पतिब्बता (स्त्री.) : प्रतिव्रता।

पतीचि (स्त्री.) : पश्चिम दिशा।

पतीर (नपुं.) : किनारा।

पतोद (पु.) : बैलों को हांकने की लकडी, पैणी, लाठी।

पतोदक : (नपुं.) प्रेरणा, (वि.) प्रेरक।

पतोदकलट्ठि (स्त्री.) : बैलों को हांकने की लाठी।

पत्त : (वि.) प्राप्त हुआ, (पु.) पात्र, भिक्षा-पात्र; (नपुं) पत्ता, पंख।

पत्तक्खन्ध (वि.) : गिरे हुए कन्धों वाला, निराश, बुझा-बुझा सा।

पत्तगत (वि.) : पात्र-गत, पात्र में पडा हुआ।

पत्तगन्ध (पु.) : पत्तों की गंध।

पत्तगाहक (पु.) : (दूसरे का), भिक्षा पात्र लेकर चलने वाला।

पत्तथविका (स्त्री.) : भिक्षा-पात्र लटकाने की झोली।

पत्तपाणी (वि.) : जिसके हाथ में भिक्षा-पात्र हो।

पत्तपिण्डिक (वि.) : एक ही पात्र में से खाने वाला।

पत्तब्ब (वि.) : प्राप्त करणीय।

पत्ताधारक (पु.) : पात्र का आधार।

पत्तानीक (नपुं.) : चार-चार जनों की पैदल सेना।

पत्तानुमोदना (स्त्री.) : प्राप्त पुण्य का अनुमोदन (=देवताओं तथा स्वर्गस्थ संबंधियों को दान) ।

पत्ति : (पु.) पैदल सैनिक, (स्त्री.), प्राप्ति, पत्ती, पेड़ का पत्तों वाला भाग।

पत्तिक (वि.) : हिस्सेदार, पैदल चलने वाला, पैदल सैनिक, पात्रवाला।

पत्तिदान (नपुं.) : पुण्य अथवा हिस्से का प्रदान।

पत्तुं (अ.) : प्राप्त करने के लिए।

पत्थ (पु.) : प्रस्थ, धान्य अथवा किसी तरल पदार्थ का माप, एकांत स्थान।

पत्थट (वि.) : ज्ञात, विख्यात, फैलाया हुआ।

पत्थद्ध (वि.) : कठोर, चट्टान की तरह सीधा।

पत्थना (स्त्री.) : प्रार्थना, कामना, इच्छा।

पत्थयति / पत्थेति (क्रि.) : इच्छा करता है, कामना करता है, प्रार्थना करता है।

पत्थयान (वि.) : इच्छा करते हुए, कामना करते हुए।

पत्थर (पु.) : पत्थर, शिला, पत्थर का सामान।

पत्थरति (क्रि.) : फैलाता है।

पत्थिव (पु.) : पार्थिव, राजा।

पथ (पु.) : मार्ग, रास्ता, श्रेणी, क्षेत्र (गणनपथ = गिनती)।

पथावी (पु.) : पथिक, पैदल यात्री।

पथिक (पु.) : राही, यात्री।

पद (नपुं.) : कदम, वचन, पदवी, स्थान, हेतु, कविता का अनुच्छेद।

पदकुसलमाणव-जातक : बारह साल के गुजर जाने के बाद भी पद-चिन्हों का पता लगा सकने की कथा (४३२)।

पदक्खिणा (स्त्री.) : प्रदक्षिणा।

पदग (पु.) : पैदल सैनिक।

पदचेतिय (नपुं.) : पवित्र पद-चिन्ह।

पदजात (नपुं.) : नाना प्रकार के पद चिन्ह।

पदट्ठान (नपुं.) : निकट कारण।

पदत्त (कृ.) : दिया गया, बांटा गया।

पदपूरण (नपुं.) : जिससे पद-पूर्ति हो।

पदभाजन (नपुं.) : शब्दों का विभाग।

पदभाणक (वि.) : धर्मग्रंथ के पदों का पाठ करने वाला।

पदर (नपुं.) : दरार, फटाव, छेद।

पदवण्णना (स्त्री.) : पदों की व्याख्या।

पदवलञ्ज (नपुं.) : पद-चिन्ह, पद चिन्हों वाला रास्ता।

पदविभाग (पु.) : शब्दों का विभाग।

पदवीतिहार (पु.) : कदमों का परिवर्तन।

पदसद्द (पु.) : पैरों की आहट।

पदहति (क्रि.) : प्रयत्न करता है, किसी के खिलाफ लड़ता है।

पदहन (नपुं.) : साधना के लिए तैयार किया गया स्थान।

पदातवे (अ.) : देने के लिए।

पदाति (क्रि.) : देता है, लेता है, पाता है।

पदातु (पु.), दाता, देने वाला।

पदान (नपुं) : प्रदान, देना।

पदालन / **पदाळन** (नपुं.), चीरना, फाडना, चिपटना।

पदालेति / **पदाळेति** (क्रि.) : चिपटता है, चीरता है, फाडता है।

पदालेतु / **पदाळेतु** (पु.), चीरने वाला, तोडने वाला।

पदिक (वि.) : काव्य पंक्तियों से युक्त, पैदल यात्री।

पदिट्ठ (वि.) : देखा गया।

पदित्त (वि.) : प्रदीप्त, जलता हुआ।

पदिन्न (वि.) : दिया हुआ।

पदिप्पति (क्रि.) : जलता है।

पदिस्सति (क्रि.) : दिखाई देता है।

पदीप (पु.) : प्रदीप, दिया, चिराग, प्रकाश।

पदीपकाल (पु.) : जलाने का समय।

पदीपिय (नपुं.) : प्रदीप-सामग्री।

पदीपेति (क्रि.) : प्रदीप जलाता है, समझाता है, तेज करता है, दिया जलाता है।

पदीयति (क्रि.) : दिया जाता है, प्रदान किया जाता है।

पदुट्ठ (वि.) : प्रदुष्ट, विकृत, खराब ।

पदुब्भति (क्रि.) : षड़यंत्र करता है, साजिश करता है।

पदुम (नपुं.) : कमल, नरक-विशेष, एक बहुत बडी संख्या ।

पदुमकण्णिका (स्त्री.) : कमल का बीजकोष।

पदुमकलाप (पु.) : कमल-समूह।

पदुमगब्भ (पु.) : कमल का भीतरी भाग।

पदुमपत्त (नपुं.) : कमल का पत्ता।

पदुमराग (पु.) : लाल रंग की मणि।

पदुमसर (पु., नपुं.) : कमल का तालाब।

पदुम-जातक : बोधिसत्त्व को तालाब से कमल-गुच्छ लाने में सफलता मिली (२६१)।

पदुमिनी (स्त्री.) : कमल का पौधा, कमल का तालाब ।

पदुमिनीपत्त (नपुं) : कमल के पौधे का पत्ता।

पदुमी (वि.) : कमल वाला, पदुमी (हाथी)।

पदुस्सति (क्रि.) : दुष्कृत करता है, भ्रष्ट करता है।

पदुस्सन (नपुं.) : विरोधी कार्य, षड़यंत्र, साजिश।

पदूसेति / पदोसेति (क्रि.) : भ्रष्ट करता है, दुष्कृत करता है, प्रदूषित करता है।

पदेस (पु.) : प्रदेश, स्थान।

पदेसआण (नपुं.) : सीमित ज्ञान।

पदेसरज्ज (नपुं.) : प्रदेश-राज्य।

पदेसराजा (पु.) : अनु-राजा।

पदेसन (नपुं.) : भेंट या परित्याग।

पदेसिक (वि.) : प्रादेशिक, प्रदेश-संबंधी।

पदोस (पु.) : प्रदोष (रात्रि), क्रोध, दोष।

पधंस (पु.) : प्रध्वंस, विनाश।

पधंसन (नपुं.) : लूट-मार।

पधंसित (वि.) : लूट-पाट किया गया।

पधंसिय (वि.) : लूट-पाट किये जाने की संभावना वाला।

पधंसेति (क्रि.) : लूट-पाट करता है, आक्रमण करता है।

पधान (वि.) : प्रधान, कठोर, मुख्य, अभ्यास।

पधानघर (नपुं.) : ध्यानायोगाभ्यास के लिए स्थान।

पधावति (क्रि.) : दौड़ता है।

पधावन (नपुं.) : दौड़।

पधूपेति (क्रि.) : धुआँ देता है, धुआँ फेंकता है।

पधोत (वि.) : अच्छी तरह धोया गया या तेज किया गया।

पन (अ.) : और, अभी, लेकिन, इसके विरुद्ध, अब, इसके अतिरिक्त।

पनस : (पु.) कटहल का पेड़, (नपुं.) कटहल का फल।

पनस्सति (क्रि.) : विनाश को प्राप्त होता है, गायब हो जाता है।

पनाळिका (स्त्री.) : नाली, पाइप, नली।

पनुदति (क्रि.) : दूर करता है, हटा देता है।

पनुदन / पनूदन (नपुं.) : हटाना, दूर करना, अस्वीकृत कर देना।

पन्त (वि.) : दूर, एकान्त।

पन्तसेनासन (नपुं.) : रहने के लिए एकान्त स्थान।

पन्ति (स्त्री.) : पंक्ति, कतार।

पन्थ (पु.) : मार्ग, सड़क।

पन्थक / पन्थिक (पु.) : यात्री, राही।

पन्थघात (पु.) : बटमारी।

पन्थघातक (पु.) : रास्ता चलते डाका डालने वाला।

पन्थदूहन (नपुं.) : रास्ता चलते डाका डालना, रास्ते में लूट करना।

पन्न (वि.) : गिरा हुआ, पतित।

पन्नग (पु.) : सांप।

पन्नभार (वि.) : जिसने अपना भार नीचे उतारकर रख दिया।

पन्नलोम (वि.) : जिसके बाल गिर पड़े, पराजित।

पप (नपुं.) : जल, पानी।

पपञ्च (पु.) : प्रपंच, रुकावट, झगड़ा, झंझट, विलंब, भ्रम, वहम।

पपञ्चेति (क्रि.) : व्याख्या करता है, विलंब करता है।

पपटिका (स्त्री.) : पेड़ की छाल, पपड़ी।

पपतति (क्रि.) : गिर जाता है।

पपतन (नपुं.) : गिरना, गिरावट।

पपद (पु.) : पाँव का पंजा।

पपा (स्त्री.) : प्याऊ, कुआँ।

पपात (पु.) : गिरना, प्रपात।

पपितामह (पु.) : दादा के पिता।

पपुत्त (पु.) : पौत्र, पोता।

पप्पटक (पुं.) : कुकुरमुत्ता।

पप्पोठेति (क्रि.) : पीटता है।

पप्पोति (क्रि.) : प्राप्त होता है, पहुंचता है।

पप्फास (नपुं.) : फेफड़ा।

पबन्ध : (पु.) साहित्यिक रचना, (वि.) सिलसिलेवार।

पबल (वि.) : प्रबल।

पबुज्झति (क्रि.) : जागता है, समझता है।

पबुद्ध (वि.) : प्रबुद्ध, जाग्रत।

पबोधन (नपुं) : जागरण।

पबोधेति (क्रि.) : जगाता है, प्रबुद्ध करता है।

पब्ब (नपुं) : गाँठ, उँगली का पोर, विभाग, हिस्सा।

पब्बजति (क्रि.) : प्रव्रजित होता है, निकल पडता है, संन्यास के लिए घर छोड़ता है।

पब्बजन (नपुं.) : प्रव्रज्या, गृहस्थ जीवन का त्याग।

पब्बजित (वि.) : प्रव्रजित हुआ, साधु, भिक्षु।

पब्बज्जा (स्त्री.) : प्रव्रज्या।

पब्बत (पु.) : पहाड़।

पब्बतकूट (नपुं.) : पर्वत शिखर, पहाड़ की चोटी।

पब्बतगहन (नपुं.) : पर्वतभरा प्रदेश।

पब्बतट्ठ (वि.) : पर्वतस्थित।

पब्बतपाद (पु.) : पर्वत की तराई।

पब्बतशिखर (नपुं.) : पर्वत की चोटी।

पब्बतूपत्थर-जातक : एक राजदरबारी ने राजा के रनिवास को दूषित किया। राजा ने उसकी उपेक्षा की (१९५)।

पब्बतेय्य (वि.) : पर्वत पर रहने वाला।

पब्बाजन (नपुं.) : प्रव्रजित करना, देश-निकाला देना।

पब्बाजनिय (वि.) : निकाल बाहर करने योग्य।

पब्बाजेति (क्रि.) : निकाल बाहर करता है, प्रव्रजित करता है।

पब्भार (पु.) : पर्वत की ढलान।

पभग्ग (वि.) : नष्ट हुआ, टूटा हुआ।

पभङ्कर (पु.) : प्रभाकर, सूर्य।

पभङ्गु / पभङ्गुर (वि.) : अनित्य, नाशवान।

पभव (पु.) : उत्पत्ति, मूल स्रोत।

पभवति (क्रि.) : उत्पन्न होता है।

पभस्सर (वि.) : प्रभास्वर, अत्यंत चमकदार।

पभा (स्त्री.) : प्रभा, प्रकाश।

पभात : (वि.), स्पष्ट हुआ, चमकता हुआ; (नपुं.) प्रभात, सवेरा।

पभाव (पु.) : प्रभाव, सामर्थ्य, तेजस्विता।

पभावित (वि.) : प्रभावित।

पभावेति (क्रि.) : प्रभावित करता है।

पभास (पु.) : चमक, प्रकाश।

पभासति (क्रि.) : चमकता है।

पभिज्जति (क्रि.) : टूटता है, टुकडे-टुकडे हो जाता है।

पभिज्जन (नपुं.) : पृथक-पृथक होना, टूटना, अलग-अलग होना, बिखरना।

पभिन्न (वि.) : टूटा हुआ, भिन्न हुआ, टुकडे-टुकडे हुआ।

पभु / पभू (पु.) : स्वामी, प्रभु, मालिक, मुखिया।

पभुति (अ.) : प्रभृति, इत्यादि।

पभुत्त (नपुं.) : प्रभुत्व।

पभेद (पु.) : प्रभेद, प्रकार।

पभेदन (नपुं.) बँटवारा, विनाश।

पमज्जति (क्रि.) : लापरवाही करता है, प्रमाद करता है, नशे में होता है।

पमज्जना (स्त्री.) : प्रमाद, विलंब।

पमत्त (वि.) : प्रमादी, आलसी, भूल करने वाला।

पमत्तबन्धु (पु.) : प्रमादियों का मित्र, अर्थात मार।

पमथति (क्रि.) : अधीन करता है।

पमदा (स्त्री.) : औरत, प्रमदा।

पमदावन (नपुं.) : महल के समीप का उद्यान।

पमद्दति (क्रि.) : मर्दन करता है, नष्ट करता है, पराजित करता है।

पमद्दन (नपुं.) : मर्दन, जीत लेना।

पमद्दी (पु.) : मर्दन करने वाला, विजयी होने वाला।

पमाण (नपुं.) : माप।

पमाणक (वि.) : मापने वाला।

पमाणिक (वि.) : माप के अनुसार।

पमाद (पु.) : प्रमाद, लापरवाही।

पमादपाठ (नपुं.) : पुस्तक का सदोष पाठ।

पमिणाति (क्रि.) : मापता है, अंदाजा लगाता है।

पमुख : (वि.) प्रमुख, (नपुं.) (घर के) आगे का भाग।

पमुच्चति (क्रि.) : मुक्त होता है, स्वतंत्र होता है।

पमुच्छति (क्रि.) : मूर्छित होता है।

पमुञ्चति (क्रि.) : छोडता है, मुक्त करता है।

पमुट्ठ (वि.) : भूला हुआ।

पमुत्त (वि.) : मुक्त, स्वतंत्र।

पमुत्ति (स्त्री.) : मोक्ष, मुक्ति।

पमुदित (वि.) : प्रमुदित, अति-प्रसन्न।

पमुय्हति (क्रि.) : मोह को प्राप्त होता है, चकित होता है।

पमुस्सति (क्रि.) : भूल जाता है।

पमूळ्ह (वि.) : मोह को प्राप्त हुआ, चकित।

पमेय्य (वि.) : जो मापा जा सके, सीमित किया जा सके।

पमोक्ख (पु.) : मोक्ष, मुक्ति।

पमोचन (नपुं.) : मुक्त करना।

पमोचेति (क्रि.) : मुक्त करता है।

पमोद (पु.) / **पमोदना** (स्त्री.) : आनंद, प्रीति, खुशी।

पमोदति (क्रि.) : आनंदित होता है, खुश होता है।

पमोहन (नपुं.) : धोखा।

पमोहेति (क्रि.) : धोखा देता है।

पम्पक (पु.) : छिपकली जैसा प्राणी।

पम्ह (नपुं.) : बरौनी।

पय (पु., नपुं.) : दूध, पानी।

पयत (वि.) : संयत, संयमित।

पयतन (नपुं.) : प्रयत्न, कोशिश, प्रयास।

पयाग : गंगा जमुना के संगम पर आधुनिक इलाहाबाद।

पयाति (क्रि.) : आगे बढता है।

पयिरुपासति (क्रि.) : संगति करना है, सेवा में रहता है।

पयिरुपासना (स्त्री.) : सेवा में रहना, संगति करना।

पयुञ्जति (क्रि.) : नियुक्त करता है, लगाता है।

पयुत्त (वि.) : नियुक्त।

पयुत्तक (वि.) : नियुक्त किया गया, चर-पुरुष।

पयोग (पु.) : प्रयोग, साधन, क्रिया।

पयोगकरण (नपुं.) : प्रयास, प्रयत्न, क्रिया।

पयोगविपत्ति (स्त्री.) : असफलता।

पयोगसम्पत्ति (स्त्री.) : सफलता।

पयोजक / पयोजेतु (पु.) : व्यवस्थापक, निर्देशक।

पयोजन (नपुं.) : प्रयोजन, कार्य।

पयोजेति (क्रि.) : कार्य में लगाता है।

पयोधर (पु.) : बादल, स्तन।

पय्यक (पु.) : प्रपितामह।

पर (वि.) : दूसरा, पुरस्कृत, दूसरे का किया हुआ।

परं (क्रि.वि.) : परे, बाद में।

परकार / परङ्कार (पु.) : दूसरापन (अहंकार का उलटा), दूसरे ने किया हुआ।

परक्कम (पु.) : पराक्रम, प्रयत्न।

परक्कमन (नपु.) : प्रयास।

परक्कमति (क्रि.) : पराक्रम करता है, साहस दिखाता है।

परक्खति (क्रि.) : रक्षा करता है।

परजन (पु.) : अपरिचित जन, बाहर का आदमी।

परत्थ : (पु.) परोपकार, (अ.) अन्यत्र।

परदत्तूपजीवी (वि.) : दूसरों के दान पर जीने वाला।

परदार (पु.) : किसी दूसरे की स्त्री।

परदारकम्म (नपुं.) : पर-स्त्री-गमन।

परदारिक (पु.) : पर-स्त्री-गमन करने वाला।

परनेय्य (वि.) : दूसरे द्वारा ले जाया जाने वाला।

पर-जातक / परन्तप-जातक : रानी ने राजा तथा पुरोहित की अनुपस्थिति में परन्तप नाम के नौकर से सहवास किया (४१६)।

परपच्चय / परपत्तिय (वि.) : दूसरे पर निर्भर, दूसरे पर आश्रित।

परपुट्ठ (वि.) : दूसरे द्वारा पोषित।

परपेस्स (वि.) : दूसरों की सेवा करने वाला।

परभाग (पु.) : पीछे का हिस्सा, बाहर का हिस्सा।

परम (वि.) : श्रेष्ठतम।

परमता (स्त्री.) : श्रेष्ठत्व, परकाष्ठा का भाव।

परमत्थ (पु.) : परमार्थ, उच्चतम आदर्श।

परमत्थजोतिका : खुद्दक-पाठ, धम्मपद, सुत्तनिपात तथा जातक पर बुद्धघोष की अट्ठकथा।

परमत्थदीपनी : उदान, इतिवृत्तक, विमानवत्थु, पेतवत्थु, थेरगाथा तथा थेरीगाथा पर धम्मपाल की अट्ठकथा।

परमाणु (पु.) : अणु (कण) का छत्तीसवां हिस्सा।

परमायु (नपुं.) : आयु की सीमा।

परम्परा (स्त्री.) : वंश-परंपरा, सिलसिला।

परम्मुख (वि.) : मुँह दूसरी ओर।

परम्मुखा (वि.) : बाद में, मरणान्तर।

परम्मरणा (वि.) : मरने के बाद।

परलोक (पु.) : मरणान्तर लोक।

परवम्भन (नपुं.) : दूसरों को नीची नजर से देखना।

परवाद (पु.) : विरोधी मत।

परवादी (पु.) : विरोधी मत रखने वाला।

परविसय (पु.) : विदेश, दूसरे का राज्य।

परसेना (स्त्री.) : विरोधी सेना।

परहत्थगत (वि.) : शत्रु-गृहीत, दूसरे द्वारा हस्तगत।

परहित (पु.) : दूसरों का उपकार।

परहेतु (क्रि.वि.) : दूसरों के लिए।

पराजय (पु.) : हार, असफलता।

पराजियति (क्रि.) : पराजित होता है, हारता है।

पराजेति (क्रि.) : हराता है, पराजित करता है।

पराधीन (वि.) : दूसरे के अधीन।

पराभव (पु.) : अवनति, अपमान।

पराभवति (क्रि.) : अवनत होता है, पतित होता है।

पराभूत (वि.) : अवनत, पतित।

परामट्ठ (वि.) : छुआ हुआ।

परामसति (क्रि.) : स्पर्श करता है, पकड़े रहता है।

परामास (पु.) / **परामसन** (नपुं.) : स्पर्श, स्पर्श करना, हाथ में लेना।

परायण / **परायन** (नपुं.) : आधार, सहारा; (वि.) (किसी ओर) जाने वाला।

परायत्त (वि.) : दूसरों का।

परि (उप.) : चारों ओर से, संपूर्ण रूप से।

परिकड्ढति (क्रि.) : खींचता है।

परिकड्ढन (नपुं.) : खींचना।

परिकथा (स्त्री.) : व्याख्या, भूमिका।

परिकन्तति (क्रि.) : काट डालता है।

परिकप्प (पु.) : इरादा।

परिकप्पेति (क्रि.) : इरादा करता है, सार निकालता है, कल्पना करता है।

परिकम्म (नपुं.) : व्यवस्था, तैयारी।

परिकम्मकत (वि.) : लेप किया गया।

परिकम्मकारक (पु.) : मरम्मत करने वाला, तैयारी करने वाला।

परिकस्सति (क्रि.) : खींचता है।

परिकिण्ण (वि.) : बिखरा हुआ।

परिकित्तेति (क्रि.) : व्याख्या करता है।

परिकिरति (क्रि.) : बिखेरता है, घेरता है।

परिकिलन्त (वि.) : थका हुआ।

परिकिलमति (क्रि.) : थकता है।

परिकिलिट्ठ / **परिक्किलिठ्ठ** (वि.) : धब्बा लगा हुआ, दाग लगा हुआ।

परिकिलिन्न (वि.) : दागदार, मैला।

परिकिलिस्सति (क्रि.) : धब्बा लगता है, मैला हो जाता है।

परिकिलिस्सन (नपुं.) : गंदगी।

परिकुप्पति (क्रि.) : उत्तेजित होता है।

परिकोपेति (क्रि.) : कुपित करता है।

परिक्कमन (नपुं.) : परिक्रमा।

परिक्खक (पु.) : परीक्षक, परीक्षा लेने वाला, खोज करने वाला।

परिक्खण (नपुं.) / **परिक्खा** (स्त्री.) : परीक्षण।

परिक्खत (वि.) : खोदा हुआ, जख्मी, तैयार किया हुआ।

परिक्खति (क्रि.) : परीक्षा लेता है, देखभाल करता है।

परिक्खय (पु.) : क्षय, हानि, ऱ्हास।

परिक्खार (नपुं.) : परिष्कार, आवश्यकताएँ, वस्तुएँ।

परिक्खित्त (वि.) : घेरा हुआ।

परिक्खिपति (क्रि.) : घेरता है।

परिक्खिपापेति (क्रि.) : घिरवाता है।

परिक्खीण (वि.) : क्षीण हुआ, नष्ट हुआ, समाप्त हुआ।

परिक्खेप (पु.) : घेरा, परिधि।

परिखणति / **पलिखणति** (क्रि.) : चारों ओर खोदता है।

परिखा (स्त्री.) : खाई।

परिगण्हन (नपुं.) : खोजबीन करना, ग्रहण करना।

परिगण्हाति (क्रि.) : खोजबीन करता है, परीक्षा करता है, ग्रहण करता है।

परिगलति (क्रि.) : निगलता है।

परिगूहति (क्रि.) : छिपाता है।

परिगूहना (स्त्री.) : छिपाना।

परिग्गह (पु.) : परिग्रहण, हड़पना, संपत्ति।

परिग्गहित (वि.) : परिगृहीत।

परिचय (पु.) : अभ्यास, पहचान।

परिचरण (नपुं.) : देखभाल करना, भोग भोगना।

परिचरति (क्रि.) : घूमताफिरता है, देखभाल करता है, भोग भोगता है।

परिचारक : (वि.) परिचर्या करने वाला, सेवा करने वाला; (पु.) नौकर, सेवक।

परिचारिका (स्त्री.) : सेविका, पत्नी।

परिचारेति (क्रि.) : सेवा कराता है, लगा रहता है, जुड़ा रहता है।

परिचिण्ण / **परिचित** (वि.) : अभ्यस्त, संगृहीत, पहचाना हुआ।

परिचुम्बति (क्रि.) : चूमता है, चुंबन लेता है।

परिच्च (पू.क्रि.) : समझकर।

परिच्चजति (क्रि.) : परित्याग करता है।

परिच्चजन (नपुं.) : परित्याग, त्याग।

परिच्चाग (पु.) : परित्याग।

परिच्छन्न (वि.) : छिपा हुआ।

परिच्छादना (स्त्री.) : ओढना।

परिच्छिन्दति (क्रि.) : सीमित करता है, (परिच्छेदों में) विभक्त करता है।

परिच्छिन्दन (नपुं.) : सीमा, निशान, विश्लेषण।

परिच्छेद (पु.) : माप, सीमा, सर्ग, प्रकरण।

परिजन (पु.) : अनुयायी-गण।

परिजानन (नपुं.) : ज्ञान, परिचय।

परिजानाति (क्रि.) : निश्चयात्मक रूप से जानता है।

परिजिण्ण (वि.) : ऱ्हास को प्राप्त हुआ, जीर्ण हो गया।

परिजेगुच्छा (वि.) : घृणा, नफरत।

परिञ्ञा (स्त्री.) : स्थिर ज्ञान।

परिञ्ञात (वि.) : पूर्ण रूप से जाना हुआ।

परिञ्ञाय (पू.क्रि.) : पूर्ण रूप से जानकर।

परिञ्ञेय्य (वि.) : ठीक से जानने योग्य।

परिडय्हति (क्रि.) : जलता है।

परिडय्हन (नपुं.) : जलना।

परिणत (वि.) : परिवर्तित।

परिणमति (क्रि.) : पकता है, परिवर्तित होता है।

परिणय (पु.) : शादी, विवाह।

परिणाम (पु.) : पकना, परिवर्तन, विकास।

परिणामन (नपुं.) : किसी के उपयोग में आना।

परिणामेति (क्रि.) : परिवर्तित करता है।

परिणायक / **परिनायक** (पु.) : मार्गदर्शक, परामर्श-दाता।

परिणायिका (स्त्री.) : अन्तर्दृष्टि।

परिणाह (पु.) : परिधि, लम्बाई-चौड़ाई।

परितप्पति (क्रि.) : अनुतप्त होता है, चिन्ता करता है।

परितस्सति (क्रि.) : उत्तेजित होता है, चिंतित होता है, कामना करता है।

परिसस्सना (स्त्री.) : चिंतित होना, उत्तेजना, कामना।

परिताप (पु.) / **परितापन** (नपुं.) : अनुताप, पश्चाताप।

परितापेति (क्रि.) : त्रास देता है।

परितुलेति (क्रि.) : तोलता है, विचार करता है।

परितो (अ.) : चारों ओर से।

परितोसेति (क्रि.) : प्रसन्न करता है, संतोष देता है।

परित्त : (वि.) थोड़ा, अल्पमात्र, तुच्छ; (नपुं.) ताबीज।

परित्त / परित्ता : परित्राण। खुद्दक पाठ, अंगुत्तर निकाय, मज्झिम निकाय, सुत्तनिपात के कुछ सूत्रों का संग्रह, जिनका विशेष अवसरों पर पाठ किया जाता है। पाठ का उद्देश्य रोग आदि से संरक्षण माना जाता है।

परित्तक (वि.) : थोड़ा, अल्पमात्र, तुच्छ।

परित्तसुत्त (नपुं.) : अभिमंत्रित धागा।

परित्ताण (नपुं.) : संरक्षण, शरण, सुरक्षा।

परित्तायक (वि.) : संरक्षक।

परिदहति (क्रि.) : परिधान करता है, धारण करता है, वस्त्र पहनता है।

परिदहन (नपुं.) : वस्त्र धारण करना।

परिदीपक (वि.) : व्याख्यात्मक, प्रकाश डालने वाला।

परिदीपन (नपुं.) / **परिदीपना** (स्त्री.) : व्याख्या, उदाहरण।

परिदीपेति (क्रि.) : स्पष्ट करता है, व्याख्या करता है, प्रकाशित करता है।

परिदूसेति (क्रि.) : दूषित करता है।

परिदेव (पु.) / **परिदेवना** (स्त्री.) : रोना-पीटना।

परिदेवति (क्रि.) : रोता-पीटता है।

परिधंसक (वि.) : ध्वंसक, नष्ट करने वाला।

परिधावति (क्रि.) : इधर-उधर दौडता है।

परिधोत (वि.) : धोया हुआ।

परिधोवति (क्रि.) : संपूर्ण रूप से धोता है, अच्छी तरह साफ करता है।

परिनायकरतन (पु.) : सेना का प्रमुख, चक्रवर्ती सम्राट।

परिनिट्ठान (नपुं.) : अंतिम सिरा, परिसमाप्ति।

परिनिब्बाति (क्रि.) : परिनिर्वाण को प्राप्त होता है।

परिनिब्बान (नपुं.) : परिनिर्वाण, जन्म-मरण के बंधन से मुक्ति, अर्हत की अंतिम मृत्यु।

परिनिब्बापन (नपुं.) : राग-द्वेषाग्नि का संपूर्ण रूप से बुझ जाना।

परिपक्क (वि.) : अच्छी तरह पका हुआ, प्रौढ।

परिपतति (क्रि.) : गिर पडता है, विनाश को प्राप्त होता है।

परिपन्थ (पुं.) : खतरा, बाधा।

परिपन्थिक (वि.) : बाधक।

परिपाक (पु.) : पका होना, प्रौढ होना, हाजमा।

परिपाचन (नपुं.) : पकना, प्रौढ होना, विकसित होना।

परिपाचेति (क्रि.) : पकाता है, विकसित करता है।

परिपातेति (क्रि.) : आक्रमण करता है, गिराता है, मार डालता है, नाश कर डालता है।

परिपालेति (क्रि.) : पालन करता है, देता है, संरक्षण करता है।

परिपीळेति (क्रि.) : पीडित करता है।

परिपुच्छक (वि.) : प्रश्न पूछने वाला।

परिपुच्छति (क्रि.) : प्रश्न करता है, पूछताछ करता है।

परिपुच्छा (स्त्री.) : पूछताछ, प्रश्न।

परिपुण्ण (वि.) : संपूर्ण, परिपूर्ण।

परिपुण्णता (स्त्री.) : संपूर्णता, परिपूर्णता।

परिपूर (वि.) : संपूर्ण।

परिपूरक (वि.) : पूर्ति करने वाला।

परिपूरकारिता (स्त्री.) : पूर्ति का भाव।

परिपूरकारी (पु.) : पूरा करने वाला।

परिपूरण (नपुं.) : पूर्ति।

परिपूरति (क्रि.) : पूरा होता है, भर जाता है।

परिपूरेति (क्रि.) : पूरा करता है, भर देता है।

परिप्फरति (क्रि.) : चारों ओर व्याप्त करता है।

परिप्फुट (वि.) : भरा हुआ, व्याप्त।

परिप्लव (वि.) : चंचल, अस्थिर।

परिप्लवति (क्रि.) : कांपता है, इधर-उधर घूमता है।

परिफन्दति (क्रि.) : कांपता है, धडकता है।

परिबाहिर (वि.) : बाह्य, बाहरी।

परिब्बजति (क्रि.) : घूमता है।

परिब्बय (पु.) : खर्च, परिव्यय।

परिब्बाजक (पु.) : परिव्राजक, घूमने-फिरने वाला, साधु।

परिब्बाजिका (स्त्री.) : परिव्राजिका, घूमने-फिरने वाली, साध्वी।

परिब्बूळ्ह (वि.) : घिरा हुआ।

परिब्भमति (क्रि.) : इधर-उधर भटकता है, भ्रमण करता है।

परिब्भमन (नपुं.) : परिभ्रमण, घूमना।

परिब्रूहति (क्रि.) : बढ़ाता है।

परिभट्ठ (वि.) : परिभ्रष्ट, पतित।

परिभण्ड (पु.) : लीपना, घेरना, कमरबंद।

परिभण्डकत (वि.) : लीपा हुआ।

परिभव (पु.) : घृणा, अपशब्द।

परिभवन (नपुं.) : घृणा करना, निंदा करना।

परिभवति (क्रि.) : घृणा करता है, अपशब्द कहता है, निंदा करता है।

परिभास (पु.) / **परिभासन** (नपुं.) : दोषारोपण, निंदा, उपहास।

परिभासक (वि.) : निंदा करने वाला, अपशब्द कहने वाला।

परिभासति (क्रि.) : निंदा करता है, अपशब्द कहता है।

परिभिन्न (वि.) : टूटा हुआ, गिरा हुआ, विरुद्ध हुआ।

परिभुञ्जति (क्रि.) : खाता है, उपयोग में लाता है, भोग भोगता है।

परिभुत्त (वि.) : खाया हुआ, भोगा हुआ।

परिभूत (वि.) : निंदा किया हुआ।

परिभोग (पु.) : उपयोग, भोग, भोगसामग्री।

परिभोगचेतिय (नपुं.) : तथागत द्वारा उपयोग में लायी गयी और इस कारण से पवित्र मानी जाने वाली वस्तु।

परिभोजनीय (वि.) : उपयोग में लाने योग्य।

परिमज्जक (पु.) : रगड़ने वाला या थपथपाने वाला।

परिमज्जति (क्रि.) : रगड़ता है, थपथपाता है, पोंछता है।

परिमज्जन (नपुं.) : रगड़ना, पोंछनो, मालिश करना।

परिमण्डल (वि.) : गोलाकार।

परिमण्डलं (क्रि.वि.) : चारों ओर से ढक कर।

परिमद्दति (क्रि.) : रगड़ता है, मर्दन करता है, मालिश करता है।

परिमाण (नपुं.) : माप, सीमा।

परिमित (वि.) : मापा गया, सीमित किया गया।

परिमुखं (क्रि.वि.) : सामने।

परिमुच्चति (क्रि.) : मुक्त होता है, बच निकलता है।

परिमुच्चन (नपुं.) : मुक्ति, बच निकलना।

परिमुत्त (वि.) : मुक्त, बच निकला हुआ।

परिमुत्ति (स्त्री.) : मुक्ति, बचाव, मोक्ष।

परिमोचेति (क्रि.) : मुक्त करता है।

परिय (नपुं.) : खोज, परिच्छेद।

परियत्ति (स्त्री.) : धार्मिक ग्रंथों को याद करना, धर्म-ग्रंथों के अध्ययन में उपलब्धि।

परियत्तिधम्म (पु.) : तिपिटक, तिपिटक-धर्म।

परियत्तिधर (वि.) : तिपिटक को कंठस्थ करने वाला।

परियत्तिसासन (नपुं.) : तिपिटक (और उसकी अट्ठकथाएं)।

परियन्त (पु.) : आखरी सिरा, सीमा।

परियन्तकत (वि.) : सीमित, बाधित।

परियन्तिक (वि.) : समाप्त, सीमाबद्ध।

परियाति (क्रि.) : चारों ओर घूमता है।

परियादाति (क्रि.) : अधिक मात्रा में ग्रहण करता है, खाली कर देता है, समाप्त करता है।

परियादाय (पू.क्रि.) : दबोचकर, काबू में कर के।

परियादिन्न (नपुं.) : प्रभावित।

परियादियति (क्रि.) : काबू कराता है, खाली करा देता है।

परियापन्न (वि.) : सम्मिलित, संबंधित।

परियापुणन (नपुं.) : अध्ययन करना, भली भांति सीखता है।

परियापुणाति (क्रि.) : भली भांति अध्ययन करता है।

परियापुत (वि.) : कंठस्थ किया हुआ, जाना हुआ।

परियाय (पु.) : क्रम, गुण, आदत, कारण।

परियायकथा (स्त्री.) : गोल-मोल बातचीत।

परियाहत (वि.) : चोट खाया हुआ।

परियाहनति (क्रि.) : चोट करता है, खटखटाता है।

परियुट्ठाति (क्रि.) : उठता है, सब जगह फैल जाता है।

परियुट्ठान (नपुं.) : उदान, पूर्व-संकल्प।

परियेट्ठि (स्त्री) : खोज।

परियेसति (क्रि.) : खोजता है।

परियेसना (स्त्री.) : खोज।

परियोग (पु.) : भाजन, देग, हंडा।

परियोगाळ्ह (वि.) : कसा हुआ, गहरे गया हुआ।

परियोगाहति (क्रि.) : डुबकी मारता है, पानी की गहराई तक जाता है।

परियोगाहन (नपुं.) : डुबकी मारना, भीतर जाना।

परियोदपन (नपुं.) / **परियोदपना** (स्त्री.) : शुद्धि, साफ करना।

परियोदपेति (क्रि.) : शुद्ध करता है, साफ करता है।

परियोदात (वि.) : शुद्ध, परिशुद्ध।

परियोनद्ध (वि.) : बंधा हुआ, ढका हुआ।

परियोनन्धति (क्रि.) : बांधता है, ढकता है।

परियोनन्धन (नपुं.) / **परियोनाह** (पु.) : ढकना ।

परियोसान (नपुं.) : समाप्ति, सारांश, पूर्ति।

परियोसापेति (क्रि.), समाप्त करता है।

परियोसित (वि.) : समाप्त, संतुष्ट।

परिरक्खण / परिरक्खन (नपुं.) : रक्षा करना, संरक्षण।

परिरक्खति (क्रि.) : रक्षा करता है, संरक्षण करता है।

परिवच्छ (नपुं.) : तैयारी।

परिवज्जन (नपुं.) : बचाव।

परिवज्जेति (क्रि.) : दूर-दूर रखता है, बचता है।

परिवट्ट (नपुं.) : घेरा।

परिवत्त (वि.) : लोटा-पोटा गया।

परिवत्तक (वि.) : लोटता-पोटता हुआ, अनुवादक।

परिवत्तति (क्रि.) : लोटता-पोटता है।

परिवत्तन (नपुं.) : परिवर्तन, उलटना-पलटना, अनुवाद।

परिवत्तेति (क्रि.) : उलटता है।

परिवसति (क्रि.) : शागिर्द बनकर रहता है।

परिवार (पु.) : अनुयायी, अनुगामी, नौकर-चाकर।

परिवार-पालि : विनय पिटक का एक ग्रंथ।

परिवारक (वि.) : अनुचर, साथी।

परिवारण (नपुं.) : घेर लेना।

परिवारेति (क्रि.) : घेर लेता है।

परिवासित (वि.) : सुगंधित।

परिवितक्क (पु.) : विचार-विमर्श।

परिवितक्केति (क्रि.) : विचार करता है, मनन करता है।

परिविसति (क्रि.) : भोजन कराता है, सेवा में रहता है।

परिवीमंसति (क्रि.) : विचार करता है, मनन करता है।

परिवुत (वि.) : घिरा हुआ।

परिवेण (नपुं.) : भिक्षुओं का निवासस्थान, भिक्षुओं का विद्यालय।

परिवेसक (वि.) : भोजन परोसने वाला।

परिवेसना (स्त्री.) : भोजन परोसना।

परिव्यत्त (वि.) : स्पष्ट, साफ दिखने वाला।

परिसक्कति (क्रि.) : सहन करता है, कोशिश करता है।

परिसगत (वि.) : परिषद में सम्मिलित, मंडली के अंतर्गत।

परिसङ्कति (क्रि.) : संदेह करता है।

परिसङ्का (स्त्री.) : संदेह।

परिसञ्ञू (पु.) : परिषद का जानकार।

परिसदूसक (पु.) : परिषद को दूषित करने वाला।

परिसन्देति (क्रि.) : भिगोता है।

परिसन्न (वि.) : भीगा हुआ, गीला, पानी से घिरा हुआ।

परिसप्पति (क्रि.) : रेंगता है।

परिसप्पना (स्त्री.) : रेंगना, कांपना, संदेह, हिचकिचाहट।

परिसमन्ततो (क्रि.वि.) : चारों ओर से।

परिसहति (क्रि.) : जीत लेता है।

परिसा (स्त्री.) : परिषद।

परिसावचर (वि.) : सभा-समिति में विचरने वाला।

परिसिञ्चति (क्रि.) : सर्वत्र छिड़कता है।

परिसित्त (वि.) : सींचा गया।

परिसुज्झति (क्रि.) : परिशुद्ध होता है, साफ करता है।

परिसुद्ध (वि.) : साफ, पवित्र।

परिसुद्धि (स्त्री.) : शुद्धि, सफाई, पवित्रता।

परिसुस्सति (क्रि.) : सूख जाता है, व्यर्थ जाता है।

परिसुस्सन (नपुं.) : पूर्ण रूप से सूख जाना।

परिसेदित (वि.) : वाष्प से उबाला गया, सेंका गया।

परिसेदेति (क्रि.), बाष्प-स्नान करता है, सेंकता है, (अंडे) सेता है।

परिसोधन (नपुं.) : शुद्धि, सफाई।

परिसोधेति (क्रि.) : शुद्ध करता है, साफ करता है।

परिसोसेति (क्रि.) : सुखाता है।

परिस्सजति (क्रि.) : गले मिलता है।

परिस्सजन (नपुं.) : गले मिलना।

परिस्सन्त (वि.) : परिश्रान्त, थका हुआ।

परिस्सम (पु.) : परिश्रम, मेहनत।

परिस्सय (पु.) : खतरा, परेशानी।

परिस्सावन (नपुं.) : (पानी) छानने का साधन, छानना।

परिस्सावेति (क्रि.) : (पानी) छानता है।

परिहरण (नपुं.) / **परिहरणा** (स्त्री.) : रखना, ले जाना, संरक्षण।

परिहरति (क्रि.) : संभालता है, रक्षा करता है, ले जाता है।

परिहसति (क्रि.) : हँसता है।

परिहानि (स्त्री.) : हानि।

परिहानिय (वि.) : हानिकर।

परिहापेति (क्रि.) : कम करता है, नुकसान करता है, लापरवाही करता है।

परिहायति (क्रि.) : अवनत होता है, दुर्बल होता है, नुकसान उठाता है।

परिहार (पु.) : संरक्षण, बचाव।

परिहारक (वि.) : संरक्षक, पहरेदार।

परिहारपथ (पु.) : चक्करदार रास्ता।

परिहारिक (वि.) : (जीवित / सुरक्षित) रखने वाला।

परिहास (पु.) : हँसी-मजाक।

परिहीन (वि.) : हानिग्रस्त, अनाथ।

परूपक्कम (पु.) : शत्रु का आक्रमण।

परूपघात (पु.) : दूसरों का घात, दूसरों ओ हानि पहुंचाना।

परूपवाद (पु.) : दूसरों द्वारा किया गया दोषारोपण, दूसरों की निंदा करना।

परूळ्ह (वि.) : उगा हुआ, बढ़ा हुआ।

परूळ्हकेस (वि.) : लंबे बालों वाला।

परेत (वि.) : युक्त, संयुक्त, ग्रस्त, पीड़ित।

परो (अ.) : मरणान्तर, आगे, ऊपर।

परोक्ख (वि.) : परोक्ष, आँख से ओझल।

परोक्खे (सत्तमी विभक्ति) : परोक्ष में, अनुपस्थिति में।

परोदति (क्रि.) : रोता है।

परोवर (वि.) : ऊँच-नीच।

परोवरिय (वि.) : ऊँचे-नीचे।

परोसत (वि.) : सौ से अधिक।

परोसहस्स (वि.) : हजार से अधिक।

परोसहस्स-जातक : तपस्वी के हजार शिष्य, 'आकिञ्चञ्ञायतन' का यथार्थ भावार्थ नहीं समझ सके (९९)।

पल (नपुं.) : तोल का माप-विशेष।

पलगण्ड (पु.) : मकान बनाने वाला।

पलण्डु / **पलण्डुक** (पु.) : प्याज।

पलपति (क्रि.) : बकवास करता है।

पलपन (नपुं.) / **पलपित** (वि.): व्यर्थ की बातचीत।

पलात (वि.) : भागा हुआ।

पलाप (पु.) : (धान की), भूसी, व्यर्थ का बकवास।

पलापी (पु.) : बकवास करने वाला।

पलापेति (क्रि.) : भगा देता है।

पलायति (क्रि.) : भागता है, बच निकलता है।

पलायन (नपुं.) : भाग जाना, पलायन करना।

पलायनक (वि.) : भागता हुआ।

पलायी (पु.) : भागा हुआ।

पलायी-जातक : बनारस-नरेश तक्षशिला पर आक्रमण करने गया, किंतु नगर की अँटारियों के शिखरों को देखकर ही वापिस भाग आया (२२९)।

पलाल (नपुं.) : पुआल, (धान का) भूसा, पौधों का डंठल।

पलालपुञ्ज (पु.) : पुआल का ढेर।

पलास / **पळास** (पु., नपुं.) : पत्ता; ईर्षा, द्वेष, तिरस्कार।

पलास-जातक : ब्राह्मण को पलास-वृक्ष के नीचे गड़ा धन मिला (३०७)।

पलास-जातक : पलास-वृक्ष में वटवृक्ष उग आया, जिसने धीरे-धीरे पलास वृक्ष को ही नष्ट कर दिया (३७०)।

पलासाद (पु.) : गेंडा।

पलासी (वि.) : ईर्षालु।

पलिघ / पळिघ (पु.) : अर्गला, बाधा, रुकावट।

पलित (वि.) : प्रौढ, सफेद बाल वाला; (नपुं.) सफेद बाल।

पलिप (पु.) : दलदल।

पलिपथ (पु.) : खतरनाक रास्ता, खतरा, बाधा।

पलिपन्न (वि) : गिरा या डूबा हुआ।

पलिबुद्धति / पलिबुज्झति / पळिबुज्झति (क्रि.) : प्रमाद करता है, मैला होता है, बाधित होता है, बाधा डालता है।

पलिबोध / पळिबोध (पु.) : बाधा, दोष।

पलिबुज्झन / पळिबुज्झन (नपुं.) : मैला होना, बाधा।

पलिवेठन / पळिवेठन (नपुं.) : लपेटना, घेर लेना।

पलिवेठेति / पळिवेठेति (क्रि.) : लपेटता है, घेर लेता है।

पलुग्ग (वि.) : नीचे गिरा हुआ, टूटा हुआ।

पलुज्जति (क्रि.) : नीचे गिरता है, टूट जाता है।

पलुज्जन (नपुं.) : लड़खड़ाना।

पलुद्ध (वि.) : अत्यंत आसक्त।

पलेति (क्रि.) : चला जाता है, भाग जाता है, बच निकलता है।

पलोभन (नपुं.) : प्रलोभन, लालच।

पलोभेति (क्रि.) : लालच देता है।

पल्लङ्क (पु.) : पलंग, दीवान, पालथी मार कर बैठना।

पल्लत्थिका (स्त्री.) : पालकी।

पल्लल (नपुं.) : छोटा तालाब या झील, दलदल जमीन।

पल्लव (पु.) : कोंपल।

पवक्खति (भविष्यतकाल) : कहेगा, बता देगा।

पवड्ढ / पवद्ध (वि.) : वर्धित, शक्तिशाली।

पवड्ढति (क्रि.) : बढता है।

पवड्ढन (नपुं.) : वृद्धि।

पवत्त (वि.) : घटने वाला, चलते रहने वाला, भवचक्र।

पवत्तति (क्रि.) : चालू रहता है, विद्यमान रहता है।

पवत्तन (नपुं.) : अस्तित्व, चालू रखना, आगे बढ़ाना।

पवत्तापन (नपुं.) : लगातार चालू रखना।

पवत्ति (स्त्री.) : प्रवृत्ति, घटना।

पवत्तित (वि.) : चालू किया हुआ, जारी रखा हुआ।

पवत्तेति (क्रि.) : आरंभ करता है, चालू करता है।

पवत्तेतु (पु.) : चालू करने वाला।

पवन (नपुं.) : हवा, अनाज पछोरना; पहाड़ का किनारा, जंगल।

पवर (वि.) : श्रेष्ठ।

पवसति (क्रि.) : रहता है, वास करता है।

पवस्सति (क्रि.) : बरसता है।

पवस्सन (नपुं.) : वर्षा, बारिश।

पवात (नपुं.) : ऐसी जगह जहां हवा चलती हो, ठंडी हवा ।

पवाति (क्रि.) : सुगंधि फैलाता है, हवा चलता है।

पवायति (क्रि.) : (हवा) चलती है, बहती है, सुगंधि फैलाता है।

पवारणा (स्त्री.) : निमंत्रण, वर्षावास के बाद किया जानेवाला एक धार्मिक संस्कार।

पवारित (वि.) : निमंत्रित, जिसने पवारणा मनाई।

पवारेति (क्रि.) : निमंत्रण देता है, सौंपता है, 'पवारणा' करता है।

पवाल / पवाळ (पु.) : प्रवाल, मूँगा, कोंपल।

पवास (पु.) : प्रवास, घर से दूर रहना।

पवासी (पु.) : प्रवासी।

पवाह (पु.) : प्रवाह, बहाव ।

पवाहक (वि.) : ले जाने वाला।

पवाहेति (क्रि.) : प्रवाहित करता है, बहा देता है।

पवाळ्ह (वि) : रद्द कर दिया गया।

पविज्झति (क्रि.) : बींधता है।

पविट्ठ (वि.) : प्रविष्ट।

पविद्ध (वि.) : बींधा गया।

पविवित्त (वि.) : पृथक, एकांत, एकांत-वास।

पविवेक (पु.) : एकांत।

पविसति (क्रि.) : प्रवेश करता है।

पवीण (वि.) : प्रवीण, होशियार।

पवुच्चति (क्रि.) : कहलाता है, कहा जाता है।

पवुत्त (वि.) : कहलाया गया।

पवुत्थ (वि.) : रहा, वास किया।

पवेणी (स्त्री.) : परंपरा, उत्तराधिकार, (सिर के बालों की) वेणी।

पवेदन (नपुं.) : घोषणा।

पवेदेति (क्रि.) : घोषणा करता है, विज्ञापित करता है, प्रगट करता है।

पवेधति (क्रि.) : कांपता है, डरता है।

पवेस (पु.) : प्रवेश।

पवेसक (वि.) : प्रवेश करने वाला या कराने वाला।

पवेसन (नपुं.) : प्रवेश करना।

पवेसेति (क्रि.) : प्रवेश कराता है, परिचय कराता है।

पवेसेतु (पु.) : प्रवेश कराने वाला।

पसंसक (पु.) : प्रशंसा करने वाला।

पसंसति (क्रि.) : प्रशंसा करता है।

पसंसन (नपुं.) / **पसंसा** (स्त्री.) : प्रशंसा, स्तुति।

पसङ्ग (पु.) : प्रसंग, अवस्था, आसक्ति।

पसट (वि.) : प्रशस्त, फैला हुआ।

पसट्ठ / **पसत्थ** (वि.) : प्रशंसित, जिसकी प्रशंसा की गई।

पसत (पु.) : प्रसर, गहरी की हुई अंजली।

पसद (पु.) : मृग-विशेष।

पसन्न (वि.) : प्रसन्न, स्पष्ट, तेजयुक्त, श्रद्धा-युक्त।

पसन्नचित्त (वि.) : प्रसन्न-चित्त।

पसन्नमानस (वि.) : प्रसन्न-मन।

पसय्ह (पू.क्रि.) : जबरदस्ती करके।

पसव (पु.) : संतान, पैदा करना, प्रसव।

पसवति (क्रि.) : उत्पन्न करता है, जन्म देता है।

पसहति (क्रि.) : दबाता है, जीत लेता है, मर्दन करता है ।

पसहन (नपुं.) : अधिकार करना, स्वामित्व दिखाना, अधीन करना।

पसाख (नपुं.) : शाखाएँ फूट निकलने का स्थान।

पसाखा (स्त्री.) : छोटी-छोटी शाखाएँ।

पसाद (पु.) : प्रसन्नता, श्रद्धा, स्पष्टता।

पसादनिय (वि.) : विश्वासोत्पादक।

पसादेति (क्रि.) : प्रसन्न करता है, पवित्र करता है, श्रद्धावान बना लेता है।

पसाधन (नपुं.) : गहना, सजावट।

पसाधेति (क्रि.) : गहना पहनता है, सजता है, सजाता है।

पसारण (नपुं.) : प्रसारण।

पसारित (वि.) : प्रसारित, फैलाया गया।

पसारेति (क्रि.) : फैलाता है।

पसासति (क्रि.) : अनुशासन करता है, शिक्षा देता है, राज्य करता है।

पसिब्बक (पु.) : रूपयों की बाँसनी, थैली।

पसीदति (क्रि.) : प्रसन्न होता है, श्रद्धावान होता है।

पसीदन (नपुं.) / **पसीदना** (स्त्री.) श्रद्धा, प्रसन्नता, संतोष।

पसु (पु.) : पशु, चौपाया।

पसुत (वि.) : लगा हुआ, आसक्त।

पसूत (वि.) : प्रसूत, उत्पन्न हुआ, पैदा हुआ।

पसूति (स्त्री.) : प्रसूति, जन्म।

पसूतिका (स्त्री.) : प्रसूतिका, वह स्त्री जिसने किसी बच्चे को जन्म दिया हो।

पसूतिघर (नपुं.) : प्रसूति-गृह।

पसेनदि : बुद्ध का समकालीन कोसल-नरेश।

पस्स (पु.) : पार्श्व, पासा, एक तरफ।

पस्सति (क्रि.) : देखता है, पता लगता है, समझता है।

पस्सद्ध (वि.) : शांत।

पस्सद्धि (स्त्री.) : शांति, गांभीर्य।

पस्सम्भति (क्रि.) : शांत होता है।

पस्ससति (क्रि.) : प्रश्वास लेता है, साँस बाहर छोड़ता है।

पस्साव (पु.) : पेशाब।

पस्सास (पु.) : प्रश्वास, साँस निकालना।

पस्सासी (पु.) : साँस निकालने वाला ।

पहट (वि.) : प्रहार- प्राप्त, चोट खाया हुआ।

पहट्ठ (वि.) : प्रसन्न-चित्त।

पहरण (नपुं.) : पीटना, प्रहार करना, प्रहार करने के लिए शस्त्र।

पहरणक (वि.) : पिटाई करने वाला।

पहरति (क्रि.) : पीटता है।

पहान (नपुं.) : हटाना, छोड़ना, त्यागना ।

पहाय (पू.क्रि.) : छोड़कर।

पहायी (पु.) : छोड़ने वाला।

पहार (पु.) : प्रहार।

पहारदान (नपुं.) : चोट पहुंचाना।

पहास (पु.) : अत्यंत प्रीति, बहुत आनंद।

पहासेति (क्रि.) : हंसाता है, आनंदित करता है।

पहिणन (नपुं.) : भेजना।

पहिणाति (क्रि.) : भेजता है।

पहित (वि.) : प्रेषित, भेजा गया।

पहितत्त (वि.) : आत्मनिग्रही।

पहीन (वि.) : प्रहीण, रहित, त्यक्त, नष्ट।

पहीयति (क्रि.) : प्रहीण होता है, नहीं रहता है, त्यागा जाता है।

पहू (वि.) : योग्य, समर्थ।

पहूत (वि.) : बहुत अधिक।

पहूतजिव्ह (वि.) : बड़ी जीभ वाला।

पहूतभक्ख (वि.) : प्रचूर खाद्य पदार्थ वाला या प्रचूर खाने वाला।

पहेणक (नपुं.) : किसी को भेजने योग्य भेंट।

पहोति (क्रि.) : समर्थ होता है, पर्याप्त होता है।

पहोनक (वि.) : पर्याप्त।

पळास (स्त्री.) : ईर्षा।

पळासी (स्त्री.) : ईर्षालु।

पळिगुण्ठेति (क्रि.) : उलझता है, ढकता है, लपेटता है, वेष्टित करता है।

पंसु (पु.) : धूल।

पंसुकूल (नपुं.) : धूल का ढेर।

पंसुकूलचीवर (नपुं.) : कूड़े-करकट के ढेर पर से इकट्ठे किये हुए चीथड़ों का चीवर।

पंसुकूलिक (वि.) : चीथड़ों का चीवर पहनने वाला।

पाक (पु.) : पकाना, पकाया हुआ।

पाकट (वि.) : प्रकट, प्रसिद्ध, विख्यात।

पाकट्ठान (नपुं.) : रसोईघर।

पाकतिक (वि.) : प्राकृतिक, कुदरती, नैसर्गिक, स्वाभाविक।

पाकवट्ट (नपुं.) : भोजन-सामग्री की लगातार प्राप्ति।

पाकार (पु.) : प्राकार, चारदीवारी।

पाकारपरिक्खित्त (वि.) : दीवार से घिरा।

पागब्भिय (नपुं.) : प्रगल्भता, वाचालता।

पागुञ्ञता (स्त्री.) : प्रगुणता, कौशल्य।

पाचक (वि.) : पकाने वाला।

पाचन (नपुं.) : पकाना; पशु हाँकने की छड़ी।

पाचरिय (नपुं.) : प्राचार्य।

पाचापेति / **पाचेति** (क्रि.) : पकवाता है।

पाचिका (स्त्री.) : पकाने वाली।

पाचित्तिय (पु.) : विनयपिटक का एक ग्रंथ, भिक्षु-विनय के अनुसार एक तरह का नियम-भंग।

पाचीन (वि.) : पूर्वीय, पूर्व दिशा का, पूर्व दिशा संबंधी।

पाचीनदिसा (स्त्री.) : पूर्व दिशा।

पाचीनमुख (वि.) : पूर्व दिशाभिमुख।

पाजन (नपुं.) : हाँकना।

पाजेति (क्रि.) : हाँकता है।

पाटल (वि.) : गुलाब, गुलाबी।

पाटलिपुत्त : मगध की प्राचीन राजधानी (पटना)।

पाटली (पु.) : वृक्ष-विशेष।

पाटव (पु.) : पटुता, दक्षता।

पाटिकङ्ख (वि.) : आशान्वित, अपेक्षित।

पाटिकङ्खी (वि.) : आशा करने वाला।

पाटिकम्म (नपुं.) : प्रतिकर्म, मरम्मत।

पाटिका (स्त्री.) : अर्धगोलाकार चान्द्रप्रस्तर।

पाटिकूल्य (नपुं.) : प्रतिकूलता।

पाटिपद (पु.) : प्रतिपद, चान्द्र मास के शुक्ल-पक्ष का प्रथम दिन।

पाटिभोग (पु.) : जिम्मेदार, जमानतदार।

पाटिमोक्ख / पातिमोक्ख (पु.) : भिक्षु-विनय के दो सौ सत्ताईस नियमों का संग्रह।

पाटियेक्क (वि.) : प्रत्येक, पृथक-पृथक।

पाटिहार (नपुं.) : करिश्मा, चमत्कार।

पाटिहारियपक्ख (पु.) : अतिरिक्त छुट्टी।

पाठ (पु.) : ग्रन्थ-विशेष का अनुच्छेद, पाठ।

पाठक (वि.) : पाठ करने वाला।

पाठीन (पु.) : मछली का एक प्रकार।

पाण (पु.) : जीवन, साँस, प्राणी।

पाणक (पु.) : एक कीड़ा।

पाणघात / पाणवध (पु.) : प्राणि-हत्या, जीव-हत्या।

पाणघाती (पु.) : जीव हत्या करने वाला।

पाणद (वि.) : प्राण-रक्षक।

पाणभूत (पु.) : जीवित प्राणी।

पाणसम (वि.) : प्राण के समान (प्रिय)।

पाणहर (वि.) : प्राण हरण करने वाला।

पाणि (पु.) : हाथ, हथेली।

पाणिका (स्त्री.) : हाथ जैसी वस्तु, करणी, कन्नी।

पाणिग्गह (पु.) : पाणि-ग्रहण, विवाह।

पाणितल (नपुं.) : हाथ की हथेली।

पाणी (पु.) : प्राणी, जीव, सत्त्व।

पात (पु.) / **पातन** (नपुं.) : गिरना, फेंकना।

पातब्ब (वि.) : पीने योग्य।

पातरास (पु.) : सुबह का नाश्ता, सुबह का भोजन।

पाताल (पु.) : पाताल (लोक), पृथ्वी के नीचे का भाग।

पाति (स्त्री.) : पात्र, थाली।

पाति (क्रि.), रक्षा करता है।

पातिक (नपुं.) : तश्तरी।

पाती (वि.) : फेंकने वाला, छोड़ने वाला।

पातु (अ.) : सामने, दिखाई देनेवाला, प्रकट।

पातुकम्म / **पातुकरण** (नपुं.) : प्रकट होना, प्रकट करना।

पातुकम्यता (वि.) : पीने की इच्छा।

पातुकरोति (क्रि.) : प्रकट करता है।

पातुकाम (वि.) : पीने की इच्छा वाला।

पातुभवति (क्रि.) : प्रादुर्भूत होता है, प्रकट होता है।

पातुभाव (पु.) : प्रादुर्भाव, प्रकट होना।

पातुभूत (वि.) : प्रकट हुआ।

पातुरहोसि (भू.क्रि.) : प्रादुर्भूत हुआ, प्रकट हुआ।

पातेति (क्रि.) : गिराता है, फेंकता है, हत्या करता है।

पातो (अ.) : सुबह, सवेरे।

पाथेय्य (नपुं.) : रास्ते के लिए खुराकी।

पाद (पु., नपुं.) : पाँव, टाँग, किसी लम्बाई का चौथा हिस्सा, किसी छन्द की चार पंक्तियों में से एक ।

पादक (वि.) : आधार-सहित, नींव वाला।

पादकज्झान (नपुं.) : साधार ध्यानभावना।

पादकठलिका (स्त्री.) : पाँव रगड़ने के लिए लकड़ी का टुकड़ा ।

पादङ्गुठ्ठ (नपुं.) : पैर का अंगूठा।

पादङ्गुलि (स्त्री.) : पैर की उँगली।

पादञ्जलि-जातक : राजा का पादञ्जलि नामक आवारागर्द पुत्र राजा नहीं बन सका (२४७)।

पादट्ठिक (नपुं.) : टाँग की हड्डी।

पादतल (पु.) : पाँव का तल्ला।

पादपीठ (नपुं.) : पाँव रखने की चौकी।

पादपुञ्छन (नपुं.) : पाँव पोंछने का कपड़ा।

पादमूलिक (पु.) : नौकर।

पादलोल (वि.) : घूमने-फिरने का इच्छुक।

पादसम्बाहन (नपुं.) : पैरों का दबाना, पैरों की मालिश।

पादुका (स्त्री.) : खड़ाऊँ।

पादोदक (पु.) : पाँव धोने का पानी।

पान / पानक (नपुं.) : पीना, पेय पदार्थ।

पानमण्डल / पानागार (नपुं.) : सुरापान करने का स्थान, शराबखाना।

पानीय (नपुं.) : पानी, पेय पदार्थ।

पानीयघट (पु.) : पानी का घड़ा।

पानीयचाटी (स्त्री.) : पानी की पात्र।

पानीयथालिका (स्त्री.) : पीने का प्याला।

पानीयभाजन (नपुं.) : पीने का बर्तन।

पानीयमालक (नपुं.) / **पानीयसाला** (स्त्री.) : प्याऊ।

पानीय-जातक : अपना पानी बचाकर दूसरे का पानी पीने की कथा (४५९)।

पाप : (नपुं.) अकुशल-कर्म, (वि.) बुरा।

पापक / **पापकम्मन्त** (वि.) : पापी।

पापकम्म (नपुं.) : अपराध, पाप-कर्म।

पापकर / **पापकारी** (वि.) : पापी।

पापकरण (नपुं.) : दुष्कर्म करना।

पापणिक (पु.) : दुकानदार।

पापधम्म (वि.) : पापी, अकुशल कर्मों वाला।

पापमित्त (पु.) : बुरा दोस्त।

पापमित्तता (स्त्री.) : कुसंगति।

पापसङ्कप्प (पु.) : बुरा विचार।

पापसुपिन (नपुं.) : बुरा सपना।

पापिका (स्त्री.) : पापिन।

पापिमन्तु (वि.) : पाप करनेवाला।

पापिय (वि.) : पापकारी, अकुशल।

पापुणन (नपुं.) : प्राप्ति, पहुंच।

पापुणाति (क्रि.) : पहुंचता है।

पापुरण (नपुं.) : ओढना, कंबल।

पापुरति (क्रि.) : लपेटता है, ओढता है।

पापेति (क्रि.) : पहुंचाता है, प्राप्त कराता है।

पाभत (नपुं.) : भेंट।

पामङ्ग (नपुं.) : छाती पर बाँधने की पट्टी, कमरबंद।

पामुज्ज / **पामोज्ज** (नपुं.) : प्रसन्नता, आनंद।

पामेति (क्रि.) : तुलना करता है।

पामोक्ख : (वि.) प्रमुख; (पु.) नेता, नायक।

पाय (वि.) : (समास में) भरा हुआ, हमेशा।

पायक (वि.) : चूसने वाला या पीने वाला।

पायाति (क्रि.) : चल देता है।

पायास (पु.) : दूध की खीर।

पायित (वि.) : पिया गया।

पायी (वि.) : पीने वाला।

पायेति (क्रि.) : चुसवाता है, पिलाता है।

पायेन (क्रि.वि.) : हमेशा, ज्यादातर।

पार (नपुं.) : पार, दूसरा तट।

पारं (क्रि.वि.) : पार, उस पार, आगे।

पारगत / **पारङ्गत** / **पारगू** (वि.) : उस पार पहुंचा हुआ।

पारगवेसी (वि.) : उस पार जाने का इच्छुक।

पारगामी (पु.) : उस पार जाने वाला।

पारत्थिक (वि.) : पार होने की इच्छा करने वाला।

पारद (पु.) : पारा।

पारदारिक (पु.) : पराई स्त्री के पास जाने वाला।

पारमिता / पारमी (स्त्री.) : संपूर्णता, गुणों की पराकाष्ठा।

पारम्परिय (नपुं) : परंपरा।

पारलोकिक (वि.) : परलोक सम्बन्धी।

पाराजिक (वि.) : भिक्षुओं द्वारा किये जा सकनेवाले चार प्रधान दोषों में से किसी एक का दोषी; विनय-पिटक के सुत्तविभंग के दो भागों में से पहला भाग।

पारापत / पारावत / पारेवत (पु.) : कबूतर।

पारायण / पारायन (नपुं.) : अंतिम उद्देश्य, प्रधान उद्देश्य।

पारिचरिया (स्त्री.) : सेवा-सुश्रूषा।

पारिच्छत्तक / पारिजात : त्रयोत्रिंश देव-लोक के नन्दनवन में उगा हुआ वृक्ष, पारिजात वृक्ष।

पारिपन्थिक (वि.) : खतरनाक, बटमार।

पारिपूरि (स्त्री.) : पूर्ति, संपूर्णता।

पारिम (वि.) : उधर, दूसरा तट।

पारिभोगिक (वि.) : उपयोग में लाने योग्य, उपयोग में लाया हुआ।

पारिलेय्य / पारिलेय्यक : कोसम्बी के समीप का वन या कोई छोटा नगर।

पारिसज्ज (वि.) : परिषद का सदस्य।

पारिसुद्धि (स्त्री.) : पवित्रता, परिशुद्धि,विशुद्धता।

पारिसुद्धिसील (नपुं.) : जीविका के साधनों की शुद्धि।

पारुत (वि.) : ओढा हुआ।

पारुपति (क्रि.) : ओढता है, पहनता है।

पारुपन (नपुं.) : वस्त्र, चीवर।

पारोह (पु.) : नई शाखा, कोंपल, वट-वृक्ष की लटकने वाली शाखा / जड़।

पाल / पालक (पु.) : पालक, संरक्षक, पालने वाला।

पालन (नपुं.) / **पालना** (स्त्री.) : संरक्षण, सुरक्षा।

पालि / **पाळि** (स्त्री.) : पंक्ति, तिपिटक की भाषा।

पालिच्च (नपुं.) : सिर के बालों की सफेदी।

पालेति (क्रि.) : पालन करता है।

पालेतु (पु.) : पालने वाला, संरक्षक।

पावक (पु.) : अग्नि, आग।

पावचन (नपुं.) : प्रवचन, बुद्धोपदेश।

पावळ (पु.) : नितंब, चूतड़।

पावस्सि (पू.) : बरसा।

पावा : मल्लों का एक नगर, जहां भगवान बुद्ध अपने जीवन के अंतिम दिनों में गये थे।

पावार (पु.) : चोगा।

पावारिक (वि.) : चोगा बेचने वाला।

पावुस (पु.) : वर्षा ऋतु, मछली-विशेष।

पावुस्सक (वि.) : वर्षा ऋतु संबंधी।

पास / **पासक** (पु.) : पाश, जाल, बटन का छेद।

पासण्ड (नपुं.) : मिथ्या-दृष्टि, गलत धारणा।

पासण्डिक (पु.) : मिथ्या-दृष्टि वाला, पाखंडी।

पासंस (वि.) : प्रशंसनीय।

पासाण (पु.) : पत्थर, चट्टान ।

पासाणगुळ (पु.) : पत्थर की गोली।

पासाणचेतिय (नपुं.) : पत्थर का पूजालय या चैत्य।

पासाणफलक (पु.) : पाषाण-फलक, पत्थर की पटिया / सिल्ली।

पासाणलेखा (स्त्री.) : चट्टान पर उत्कीर्ण लेख, शिलालेख।

पासाद (पु.) : प्रासाद, महल।

पासादतल (नपुं.) : महल का ऊपरी तल्ला।

पासादिक (वि.) : प्रियकर, अच्छा लगने वाला।

पाहुण : (पु.) अतिथि; (नपुं.) अतिथि के लिए भोजन या भेंट।

पाहुणेय्य (वि.) : आतिथ्य करने के योग्य।

पाहेति (क्रि.) : भिजवाता है।

पि (अ.) : अपि, भी।

पिक (पु.) : कोयल।

पिङ्गल (वि.) : ताम्र-वर्ण।

पिङ्गलनेत्त (वि.) : पिंगल-वर्ण नेत्रों वाला।

पिङ्गलमक्खिका (स्त्री.) : गोमक्खी।

पिचु (नपुं.) : कपास, फाहा।

पिचुपटल (नपुं.) : कपास की तह।

पिच्छ / **पिञ्छ** / **पिञ्ज** (नपुं.) : पक्षी का (पूंछ की तरह) पिछला पर /पंख।

पिच्छिल (वि.) : फिसलाऊ।

पिञ्जर (वि.) : रक्त वर्ण, लाल रंग।

पिञ्ञाक (नपुं.) : खली।

पिटक (नपुं.) : पिटारी, पालि तिपिटक का कोई एक पिटक। तिपिटक में तीन पिटक हैं - विनयपिटक, सुत्तपिटक, अभिधम्मपिटक।

पिटकधर (वि.) : जिसे समस्त पिटक कंठस्थ हो, पिटक-धारी।

पिट्ठ (नपुं.) : पीठ, पीछे का हिस्सा, आटा।

पिट्ठखादनिय (नपुं.) : आटे की मिठाई।

पिट्ठधीतलिका (स्त्री.) : आटे की गुड़िया।

पिट्ठपिण्डी (स्त्री.) : आटे का पिंड।

पिट्ठि (स्त्री.) : पीठ।

पिट्ठिकण्टक (नपुं.) : रीढ की हड्डी।

पिट्ठिगत (वि.) : किसी पशु या अन्य किसी की पीठ पर चढना।

पिट्ठिपस्स (नपुं.) : पिछला हिस्सा।

पिट्ठिपासाण (पु.) : चौड़ी चट्टान।

पिट्ठिमंसिक (वि.) : चुगली खाने वाला।

पिट्ठिवंस (नपुं.) : पीठ की हड्डी, इमारत की कोई शहतीर।

पिठर (पु.) : मिट्टी का बड़ा मटका।

पिण्ड / **पिण्डक** (पु.) आहार-पिंड, भोजन।

पिण्डचारिक (वि.), भिक्षाटन करने वाला।

पिण्डदायक (पु.) : भिक्षा देने वाला।

पिण्डपात (पु.) : भिक्षाटन।

पिण्डपातिक (वि.) : भिक्षाटन करने वाला या मात्र भिक्षाटन से प्राप्त भोजन ग्रहण करने वाला।

पिण्डाचार (पु.) : भिक्षाटन।

पिण्डि (स्त्री.) : गुच्छा।

पिण्डियालोपभोजन (नपुं.) : भिक्षाटन से प्राप्त भोजन।

पिण्डेति (क्रि.) : पिंड बनाता है।

पिण्डोल-भारद्वाज : कोसम्बी के राजा उदेन के पुरोहित का पुत्र।

पिण्डोल्य (नपुं.) : भिक्षाटन।

पितामह (पु.) : दादा।

पितिक (वि.) : जिसका पिता हो, पिता का।

पितिपक्ख (पु.) : पिता की ओर से।

पितु (पु.) : पिता।

पितुकिच्च (नपुं.) : पिता का कर्तव्य।

पितुघात (पु.) : पितृ-हत्या।

पितुसन्तक (वि.) : पिता की संपत्ति।

पितुच्छा (स्त्री.) : पिता की बहन, बुआ, फूफी।

पितुच्छापुत्त (पु.) : फूफी का लड़का।

पित्त (नपुं.) : पित्त (वात, पित्त, कफ में से)।

पित्ताधिक (वि.) : जिसमें पित्त का आधिक्य हो।

पिथीयति (क्रि.) : बंद किया जाता है, छिपा दिया जाता है।

पिदहति (क्रि.) : बंद करता है, ढकता है।

पिदहन (नपुं.) : बंद करना, ढकना।

पिधान (नपुं.) : ढक्कन।

पिनास (पु.) : जुकाम।

पिपासा (स्त्री.) : प्यास।

पिपासित (वि.) : प्यासा।

पिपिल्लिका / पिपीलिका (स्त्री.) : चींटी।

पिप्फलक (नपुं.) : कैंची।

पिप्फली (स्त्री.) : पिप्पली।

पिबति / पिवति (क्रि.) : पीता है।

पिय : (वि.) प्रिय, प्यारा; (पु.) पति, (नपुं.) प्यारी वस्तु।

पियकम्यता (स्त्री.) : प्रिय वस्तुओं की या स्वयं प्रिय बनने की इच्छा।

पियङ्गु (पु.) : दवाई में काम आने वाला पौधा-विशेष।

पियतर (वि.) : प्रियतर, अधिक प्रिय।

पियतम (वि.) : प्रियतम, सर्वाधिक प्रिय।

पियत्त (नपुं.) / **पियता** (स्त्री.) : प्रिय भाव।

पियदस्सन (वि.) : प्रिय-दर्शन, देखने में प्यारा।

पियरूप (नपुं.) : प्रिय रूप, आकर्षक रूप।

पियवचन : (नपुं.) प्रिय वचन, मीठी बोली; (वि.) मीठी बोली बोलने वाला।

पियभाणी (वि.) : मधुर वचन भाषी।

पियवादी (वि.) : मीठा बोलने वाला।

पियविप्पयोग (पु.) : प्रिय से विप्रयोग या विछोह, या बिछड़ना।

पिया (स्त्री.) : पत्नी, औरत, भार्या।

पियापाय (वि.) : प्रिय-विप्रयोग, प्रिय से बिछड़ना।

पियायति (क्रि.) : प्रेम करता है।

पियायना (स्त्री.) : प्रेम करना।

पिलक्ख (पु.) : अंजीर का पेड़।

पिलन्धति (क्रि.) : सजता है, सजाता है।

पिलन्धन (नपुं.) : गहना।

पिलवति / **प्लवति** (क्रि.) : तैरता है।

पिलोतिका (स्त्री.) : चीथड़ा, फटा पुराना कपड़ा।

पिल्लक (पु.) : (किसी जानवर का) पिल्ला, बछड़ा।

पिवति (क्रि.) : पीता है।

पिवन (नपुं.) : पीना।

पिसति / **पिंसति** (क्रि.) : पीसता है।

पिसन / **पिंसन** (नपुं.) : पीसना।

पिसाच / **पिसाचक** (पु.) : (भूत) पिशाच।

पिसित (नपुं.) : मांस।

पिसुण : (नपुं.) चुगली; (वि.) चुगली खाने वाला।

पिसुणावाचा (स्त्री.) : चुगलखोरी करना।

पिहक (नपुं.) : प्लीहा।

पिहयति (क्रि.) : स्पृहा करता है, इच्छा करता है, प्रयत्न करता है।

पिहायना (स्त्री.) : प्रिय करना।

पिहालु (वि.) : ईर्षालु।

पिहित (कृदन्त) : ढका हुआ।

पीठ (नपुं.) : आसन।

पीठक (नपुं.) / **पीठिका** (स्त्री.) : बैठने का पीढा या आसन।

पीठ-जातक : एक तपस्वी एक दानी व्यापारी के घर भिक्षार्थ गया। कोई घर पर नहीं था, उसे खाली हाथ लौट आना पड़ा (३३७)।

पीठसप्पी (पु.) : लूला-लंगड़ा।

पीण (वि.), मोटा, फूला हुआ।

पीणन (नपुं.) : संतोष।

पीणेति (क्रि.) : प्रसन्न करता है, संतुष्ट करता है।

पीत : (वि.) पिया हुआ; (वि.) पीतवर्ण, पीला रंग ।

पीतक (वि.) : पीत-वर्ण, पीला रंग।

पीतन (नपुं.) : पीला रंग।

पीति (स्त्री.) : प्रसन्नता, आनंद, प्रीति।

पीतिपामोज्ज (नपुं.) : प्रसन्नता तथा आनंद।

पीतिभक्ख (वि.) : प्रीति ही आहार हो जिसका।

पीतिमन (वि.) : प्रसन्न-चित्त।

पीतिरस (वि.) : प्रीति रस।

पीतिसम्बोज्झङ्ग (पु.) : संबोधि का 'प्रीति' अंग।

पीतिसहगत (वि.) : प्रीति-सहित, प्रीतियुक्त।

पीळक : (वि.) पीड़ा देनेवाला; (नपुं.) फोड़ा-फुंसी, फफोला।

पीळन (नपुं.) : पीड़ित करना।

पीळा (स्त्री.) : पीड़ा, कष्ट, दुक्ख।

पीळेति (क्रि.) : पीड़ित करता है।

पुक्कस / पुक्कुस (पु.) : एक जाति, जिसके बारे में कहा गया है कि वे कूड़ा या मैला साफ करने का काम करते थे।

पुग्गल (पु.) : पुद्गल, व्यक्ति।

पुग्गलपञ्ञत्ति (स्त्री.) : पुद्गलों का वर्गीकरण, अभिधम्मपिटक के सात प्रकरणों में से चौथा प्रकरण।

पुग्गलिक (वि.) : व्यक्तिगत।

पुङ्ख / पोङ्ख (नपुं.) : तीर का पंख वाला हिस्सा।

पुङ्गव (पु.) : वृषभ, श्रेष्ठ पुरुष।

पुचिमन्द (पु.) : नीम का पेड़।

पुचिमन्द-जातक : नीम के पेड़ पर रहने वाले देवता ने लूट का माल लाये चोरों को भगा दिया (३११)।

पुच्चण्ड (नपुं.) : सड़ा हुआ अंडा।

पुच्छ (नपुं.) : पूँछ, दूम।

पुच्छक (पु.) : प्रश्न पूछने वाला।

पुच्छति (क्रि.) : प्रश्न पूछता है।

पुच्छन (नपुं.) : पूछना।

पुच्छा (स्त्री.) : प्रश्न।

पुज्ज (वि.) : पूज्य, गौरवार्ह।

पुञ्छति (क्रि.) : पोंछता है, साफ कर देता है।

पुञ्छन (नपुं.) / **पुञ्छनी** (स्त्री.) : पोंछने का वस्त्र, तौलिया।

पुञ्ज (पु.) : ढेर।

पुञ्जकत (वि.) : ढेर लगा हुआ।

पुञ्ञ (नपुं.) : पुण्य।

पुञ्ञकम्म (नपुं.) : पुण्य-कर्म।

पुञ्ञकाम (वि.) : पुण्य चाहने वाला।

पुञ्ञकिरिया (स्त्री.) : पुण्य क्रिया।

पुञ्ञक्खन्ध (पु.) : पुण्य-स्कन्ध, पुण्य का ढेर।

पुञ्ञक्खय (पु.) : पुण्य का क्षय।

पुञ्ञत्थिक (वि.) : पुण्य की इच्छा करने वाला।

पुञ्ञपेक्ख (वि.) : पुण्य की अपेक्षा रखने वाला।

पुञ्ञफल (नपुं.) : पुण्य का फल।

पुञ्ञभाग (पु.) : पुण्य का हिस्सा।

पुञ्ञभागी (वि.) : पुण्य का हिस्सेदार।

पुञ्ञवन्तु (पु.) : पुण्यवान।

पुञ्ञानुभाव (वि.) : पुण्य का प्रताप।

पुञ्ञाभिसन्द (पु.) : पुण्यों का राशीकरण, पुण्य का संचय।

पुट (पु., नपुं.) / **पुटक** (नपुं.) : (पत्तों का) दोना।

पुटबद्ध (वि.) : (पत्तों के) दोनो में बंधा हुआ।

पुटभत्त (नपुं.) : भात का दोना, रास्ते के लिए खाने का पैकेट।

पुटभेदन (नपुं.) : (पत्तों के) दोनों का खोलना।

पुटदूसक-जातक : पत्तों के दोनों को नष्ट करने वाले बंदर की कथा (२८०)।

पुटभत्त-जातक : राजकुमार ने भात के दोनों में से अपनी भार्या को भात नहीं दिया (२२३)।

पुट्ठ (वि.) : पुष्ट, पूछा गया।

पुणाति / **पुणेति** (क्रि.) : शुद्ध करता है, साफ करता है।

पुण्डरीक (नपुं.) : श्वेत कमल।

पुण्ण (वि.) : संपूर्ण, पूर्ण।

पुण्णघट (पु.) : पूर्ण-घट।

पुण्णचन्द (पु.) : पूर्ण-चंद्र।

पुण्णता (स्त्री.) : पूर्णता।

पुण्णपत्त (नपुं.) : पूर्ण-पात्र (भेंट)।

पुण्णमासी / **पुण्णमी** (स्त्री.) : पूर्णिमा।

पुण्णनदी-जातक : राजा ने पुरोहित को पत्ते पर पत्र लिखकर वापिस बुला भेजा (२१४)।

पुण्णपाति-जातक : शराब के घड़ों के भरे रहने की कथा (५३)।

पुत्त (पु.) : पुत्र, बेटा, लड़का।

पुत्तक (पु.) : छोटा बेटा।

पुत्तदार (पु.) : पुत्र तथा पत्नी।

पुत्तधीतु (स्त्री.) : बेटा-बेटी।

पुत्तिम / **पुत्तिय** (वि.) : पुत्रवाला।

पुथु (अ.) : पृथक-पृथक, व्यक्तिगत, दूर-दूर।

पुथुक (नपुं.) : चिड्डा, जानवर का बच्चा।

पुथुज्जन (पु.) : सामान्य अशिक्षित आदमी, अनाडी, अज्ञानी।

पुथुभूत (वि.) : सर्वत्र फैला हुआ।

पुथुल (वि.) : पृथुल, चौड़ा, विशाल ।

पुथुलोम (पु.) : मछली-विशेष।

पुथुवी (स्त्री.) : पृथ्वी।

पुथुसो (क्रि.वि.) : उल्टी तरह से, अलग-अलग।

पुन (अ.) : फिर, पुनः, परंतु।

पुनदिवस (पु.) : अगले दिन।

पुनप्पुनं (अ.) : बार-बार।

पुनब्भव (पु.) : पुनर्जन्म।

पुनरुत्ति (स्त्री.) / **पुनवचन** (नपुं.) : दोहराना, पुनरुक्ति।

पुनागमन (नपुं.) : फिर आना।

पुनेति (क्रि.) : फिर से आता है।

पुन्नाग (पु.) : जायफल का पेड़।

पुप्फ (नपुं.) : पुष्प, मासिक धर्म।

पुप्फगच्छ (पु.) : फूलनेवाला पौधा।

पुप्फगन्ध (पु.) : फूलों की सुगंधि।

पुप्फचुम्बटक (नपुं.) : फूलों का गुच्छा।

पुप्फछड्डुक (पु.) : कुम्हलाये फूलों को फेंकने वाला; पाखाना साफ करने वाला।

पुप्फति (क्रि.) : पुष्पित होता है, फूलता है, फूल धारण करता है।

पुप्फदाम (पु.) : फूलों की माला।

पुप्फधर (वि.) : फूलदार, फूल धरण किया हुआ।

पुप्फपट (पु., नपुं.) : बेल-बूटेदार कपड़ा।

पुप्फभासी (वि.) : प्रिय बोलने वाला।

पुप्फमुट्ठि (पु.) : फूलों की मूठी।

पुप्फरासि (पु.) : फूलों का ढेर।

पुप्फवती (स्त्री.) : पुष्पवती, मासिक धर्म वाली स्त्री।

पुप्फरत्त-जातक : स्वामी ने स्त्री की इच्छा पूरी करने के लिए राजा के केसर-बाग में से केसर चुराने का प्रयत्न किया। वह पकड़ा गया (१४७)।

पुब्ब : (पु.) पीप (जख्म में पड़नेवाली); (वि.) पहला, पूर्व दिशा का ।

पुब्बकम्म (नपुं.) : पूर्व-जन्म का कर्म।

पुब्बकिच्च (नपुं.) : पूर्व-कृत्य।

पुब्बङ्ग (पु.) : पहला हिस्सा।

पुब्बङ्गम (वि.) : पूर्व-गामी, आगे चलने वाला।

पुब्बचरित (नपुं.) : पूर्व-चरित (जीवन)।

पुब्बण्ह (पु.) : पूर्वान्ह, दोपहर से पहले।

पुब्बदेव (पु.) : प्राचीन देवता-गण।

पुब्बनिमित्त (नपुं.) : पूर्व लक्षण।

पुब्बन्त (पु.) : अतीत-काल, पूर्व का सिरा।

पुब्बन्न (नपुं.) : चावल, गेहूँ आदि सात प्रकार के धान।

पुब्बपुरिस (पु.) : पूर्व-पुरुष।

पुब्बपेत (पु.) : पूर्व-प्रेत।

पुब्बयोग (पु.) : पूर्व-संबंध।

पुब्बविदेह (पु.) : पूर्वीय महाद्वीप का नाम।

पुब्बा (स्त्री.) : पूर्व दिशा।

पुब्बाचरिय (पु.) : पूर्वाचार्य।

पुब्बापर (वि.) : पहले का और बाद का।

पुब्बाराम : श्रावस्ती के पूर्व की ओर स्थित उद्यान। अनाथपिण्डिक के घर पर भोजन कर चुकने के अनन्तर भगवान बुद्ध इसी उद्यान में विश्राम करते थे।

पुब्बुट्ठायी (वि.) : किसी दूसरे से पहले उठने वाला।

पुब्बे (सप्तमी विभक्ति) : पहले, पूर्व-काल में।

पुब्बेकत (वि.) : पूर्व-कृत, पहले किये (कर्म)।

पुब्बेनिवास (पु.) : पूर्व-जन्म।

पुब्बेनिवासञाण (नपुं.) : पूर्व-जन्म का ज्ञान।

पुब्बेनिवासानुस्सति (स्त्री.) : पूर्व-जन्म की स्मृति।

पुम (पु.) : पुरुष।

पुर (नपुं.) : नगर या शहर।

पुरक्खत (वि.) : पुरस्कृत, सम्मानित।

पुरक्खरोति (क्रि.) : पुरस्कृत करता है, सम्मानित करता है।

पुरतो (अ.) : सामने।

पुरत्था (अ.) : पूर्व-दिशा।

पुरत्थाभिमुख (वि.) : पूर्वाभिमुख।

पुरत्थिम (वि.) : पूर्व (दिशा) का।

पुरा (अ.) : पूर्व-काल में, पहले।

पुराण / पुरातन (वि.) : प्राचीन, पहले का।

पुराणदुतियिका (स्त्री.) : जो पहले पत्नी रही हो (खास कर किसी भिक्षु की)।

पुराणसालोहित (वि.) : पूर्व का रक्त-संबंधी।

पुरिन्दद (पु.) : इन्द्र।

पुरिम (वि.) : पूर्व का, पहला।

पुरिमजाति (स्त्री.) : पूर्व-जन्म, पहले का जीवन।

पुरिमत्तभाव (पु.) : पूर्व-जन्म, पहले होने का भाव।

पुरिमतर (वि.) : पूर्वतर।

पुरिस (पु.) : पुरुष, आदमी।

पुरिसकार (पु.) : पुरुषत्व।

पुरिसथाम (पु.) : पुरुष-सामर्थ्य।

पुरिसदम्म (पु.) : शैक्ष मनुष्य।

पुरिसदम्मसारथी (पु.) : शैक्ष मनुष्यों का सारथी, बुद्ध।

पुरिसपरक्कम (पु.) : पुरुष का पराक्रम।

पुरिसमेध (पु.) : मनुष्य की बलि।

पुरिसलिङ्ग / पुरिसव्यञ्जन (नपुं.) : पुरुष का लिंग /व्यंजन।

पुरिसाजञ्ञ (पु.) : श्रेष्ठ आदमी।

पुरिसादक (पु.) : आदमखोर।

पुरिसाधम (पु.) : अधम पुरुष, नीच आदमी।

पुरिसिन्द्रिय (नपुं.) : पुरुष-भाव।

पुरिसुत्तम (पु.) : श्रेष्ठतम मनुष्य।

पुरे (क्रि.वि.) : पूर्व, पूर्वतर।

पुरेक्खार (पु.) : पुरस्कार (आगे बढाना), आदर करना, भक्ति करना।

पुरेचारिक (वि.) : आगे-आगे चलने वाला।

पुरेजव (वि.) : आगे-आगे दौड़ने वाला।

पुरेजात (वि.) : पूर्वोत्पन्न।

पुरेतरं (क्रि.वि.) : अन्य सबसे आगे या पहले।

पुरेभत्त (नपुं.) : सवेरे का नाश्ता, कलेवा।

पुरोगामी (पु.) : आगे चलने वाला।

पुरोहित (पु.) : पुरोहित।

पुलव / **पुलवक** / **पुळवक** (पु.) : कीड़ा।

पुलिन (नपुं.) : बालू, बालू-सहित किनारा ।

पूग : (पु.) (पेशों की) परिषद; (नपुं.) ढेर।

पूगरुक्ख (पु.) : सुपारी का पेड़।

पूजना / **पूजा** (स्त्री.) : पूजा, भक्ति-पूर्ण भेंट।

पूजनेय्य / **पूजारह** (वि.) : पूजा के योग्य, पूजनीय।

पूजित (वि.) : गौरवान्वित।

पूजिय (वि.) : पूजनीय, पूज्य।

पूजियमान (कृदन्त), पूजा किया जाता हुआ।

पूजेति (क्रि.) : पूजा करता है, सम्मान करता है, गौरव करता है।

पूति / **पूतिक** (वि.) : सड़ा हुआ, दुर्गंध-युक्त।

पूतिकाय (पु.) : शरीर, जो की गंदगी से भरा होता है।

पूतिगन्ध (पु.) : बदबू।

पूतिमच्छ (पु.) : सड़ी मछली।

पूतिमुख (वि.) : दुर्गंधयुक्त मुँह वाला।

पूतिमुत्त (नपुं.) : गो-मूत्र।

पूतिलता (स्त्री.) : लता-विशेष।

पूतिमंस-जातक : पूतिमंस सिगाल ने बकरियों को मार खाने की साजिश की (४३७)।

पूप / पूव (पु., नपुं.) : पूआ।

पूपिय / पूविक (पु.) : पूए बेचने वाला।

पूय (पु.) : पीप।

पूर (वि.) : पूर्ण।

पूरक (वि.) : पूर्ति करने वाला।

पूरापेति (क्रि.) : पूर्ण करता है।

पूरेति (क्रि.) : पूर्ति करता है।

पेक्खक (वि.) : देखने वाला।

पेक्खण (नपुं.) : दृश्य देखना।

पेक्खति (क्रि.) : देखता है।

पेखुण (नपुं.) : मोर का पिछला पंख।

पेच्च (अ.) : मरणांतर।

पेटक : (नपुं.) टोकरी, पिटारी; (वि.) पिटक संबंधी।

पेत : (वि.) मृत, (पु.) भूत-प्रेत।

पेतकिच्च (नपुं.) : अन्त्येष्टि, अंतिम संस्कार।

पेतयोनि (स्त्री.) : प्रेत-योनि।

पेतलोक (पु.) : प्रेत-लोक, मृतावास।

पेतवत्थु (नपुं.) : प्रेत -कथा, खुद्दक निकाय का सातवाँ ग्रंथ जो प्रेत-लोक की कथाओं से

समन्वित है।

पेत्तणिक (वि.) : पिता की सम्पत्ति पर जीने वाला।

पेत्तिक (वि.) : पैतृक, परंपरागत।

पेत्तिविसय (पु.), पितर-लोक।

पेत्तेय्य (वि.) : पिता का सम्मान करने वाला।

पेत्तेय्यता (स्त्री.) : पितृ-भक्ति।

पेम (नपुं.) : प्रेम।

पेमनीय (वि.) : प्रेम-पात्र।

पेय्य : (वि.) पीने योग्य; (नपुं.) पेय पदार्थ।

पेय्यवज्ज (नपुं.) : प्रिय वाणी।

पेय्याल (नपुं.) : बीच में से वाक्यांश छोड दिये रहने का संकेत।

पेलक (पु.) : खरगोश।

पेसक (पु.) : प्रेषक, भेजने वाला।

पेसकार (पु.) : बुनने वाला, बुनकर, जुलाहा।

पेसन (नपुं.) : भेजना।

पेसनकारक (पु.) : नौकर, सेवक।

पेसनकारिका (स्त्री.) : नौकरानी।

पेसल (वि.) : सदाचरण-युक्त।

पेसि / पेसिका (स्त्री.) : मांस-पेशी।

पेसित (वि.) : प्रेषित, भेजा गया।

पेसीयति (क्रि.) : भेजा जाता है।

पेसुञ्ञ (नपुं.) : चुगली, निंदा।

पेसुण (नपुं.) : चुगली खाना।

पेसुणकारक (वि.) : चुगलखोर।

पेसुणिक (पु.) : चुगलखोर, निंदक।

पेसेति (क्रि.) : भेजता है।

पेस्स / **पेसिय** / **पेस्सिक** / **पेस्सिय** (पु.) : नौकर, दूत।

पेळा (स्त्री.) : पेटी।

पोक्खर (नपुं.) : कमल।

पोक्खरणी (स्त्री.) : तालाब।

पोक्खरता (स्त्री.) : सौंदर्य।

पोक्खरपत्त (नपुं.) : कमल-पत्र।

पोक्खरमधु (नपुं.) : कमल-मधु।

पोक्खरवस्स (नपुं.) : पुष्प-वर्षा, ओलों की वर्षा।

पोट्ठपाद (पु.) : आश्विन मास, भगवान बुद्ध के साथ 'आत्मा' को लेकर प्रश्न पूछने वाला परिव्राजक।

पोठन (नपुं.) : पीटता है, चोट पहुँचाता है।

पोठेति / **पोथेति** (क्रि.) : पीटता है, चोट पहुँचाता है, उँगलियाँ चटखाता है।

पोण (वि.) : झुका हुआ।

पोत (पु.) : जानवर का बच्चा, कोंपल, नौका।

पोतक (पु.) : जानवर का बच्चा, बछड़ा।

पोतवाह (पु.) : नाविक।

पोतिका (स्त्री.) : जानवर की बच्ची, बछड़ी।

पोत्थक (पु., नपुं.) : पुस्तक, चित्र का फलक।

पोत्थनिका (स्त्री.) : बछ, कटार।

पोत्थलिका (स्त्री.) : गुड़िया।

पोथुज्जनिक (वि.), सामान्य आदमी से संबंधित।

पोनोब्भविक / **पोनोभविक** (वि.) : पुनर्भव का कारण।

पोराण / **पोराणक** (वि.) : पुराना, प्राचीन।

पोरिस : (नपुं.) पुरुषत्व; (वि.) पुरुष के लायक, पुरुष से संबंधित।

पोरिसाद (वि.) : आदमखोर।

पोरी (पु.) : नागरिक, शहरी, शिष्ट।

पोरोहिच्च (नपुं.) : पुरोहित-कर्म।

पोस : (पु.) पुरुष, (वि.) जिसका पोषण किया जाय।

पोसक (वि.) : पोषण करने वाला।

पोसिका (स्त्री.) : पोषण करने वाली, दायी।

पोसथ (पु.) : देखो **उपोसथ**।

पोसथिक (पु.) : उपोसथ व्रत करने वाला।

पोसन (नपुं.) : पोषण।

पोसावनिक (नपुं.) : पालने-पोसने का खर्चा।

पोसित (वि.) : पोषित, पोषण किया गया, पाला गया।

पोसेति (क्रि.) : पोसता है, पोषण करता है, पालन करता है।

प्लव (पु.) : तैरना, डोंगी।

प्लवङ्गम (पु.) : बंदर।

प्लवन (नपुं.) : कूदना, तैरना।

प्लवति (क्रि.) : तैरता है, कूदते रहता है, भटकते रहता है।

फ

फग्गव (पु.) : शाक का एक प्रकार।

फग्गु (पु.) : निराहार रहने का समय।

फग्गुण : महीने का नाम, फाल्गुण, फागुन।

फग्गुणी (स्त्री.) : फाल्गुणी नक्षत्र।

फण (पु.) : सांप का फन।

फणक / **फनक** (नपुं.) : सांप के फन जैसा।

फणिज्जक (पु.) : एक तरह का पौधा, जंबीर-विशेष।

फणी / **फनी** (पु.) : सर्प, नाग।

फन्दति (क्रि.) : कांपता है, धड़कता है।

फन्दन (नपुं.) / **फन्दना** (स्त्री.) : स्पंदन, हिलना-डुलना, धड़कना।

फन्दन-जातक : स्पंदन वृक्ष के नीचे पड़े शेर पर वृक्ष की शाखा टूट पड़ी। वह चोट खा गया (४७५)।

फरण (नपुं.) : व्याप्ति।

फरणक (वि.) : व्याप्त, व्याप्त करने वाला।

फरति (क्रि.) : व्याप्त करता है, फैलाता है, पूरा करता है।

फरसु (पु.) : कुल्हाड़ी, फरसा।

फरुस (वि.) : परुष, कठोर।

फरुसवचन (नपुं.) : कठोर वचन।

फरुसावाचा (स्त्री.) : कठोर वाणी।

फल (नपुं.) : फल, परिणाम, चाकू आदि का फलक।

फलक (पु., नपुं.) : तख्ता, ढाल।

फलचित्त (नपुं.) : (सोतापत्ति-) मार्ग आदि का (सोतापत्ति-) फल।

फलट्ठ (वि.) : फल-स्थित।

फलति (क्रि.) : फल देता है, फटता है।

फलत्थिक (वि.) : फलार्थी।

फलदायी (वि.) : फल देने वाला, लाभप्रद।

फलरुह (वि.) : फलोत्पन्न।

फलवन्तु (वि.) : फलदार।

फलाफल (नपुं.) : नाना प्रकार के फल।

फलासव (पु.) : फलों का आसव।

फल-जातक : जंगल में से गुजरते हुए सार्थवाह ने अपने कारवाँ को कहा कि बिना उसकी अनुमति के कोई भी किसी फल-फूल को न खाये (५४)।

फली (पु.) : फलदार पेड़।

फलु / फळु (नपुं.) : सरकंडा, बांस आदि की गाँठ।

फलुबीज (नपुं.) : गाँठ, जिससे नया पौधा उगता है।

फस्स (पु.) : स्पर्श।

फस्सेति (क्रि.) : स्पर्श करता है, प्राप्त करता है।

फाणित (नपुं.) : सीरा।

फाणितपुट (पु.) : सीरे का दोना।

फाति (स्त्री.) : बढना, समृद्धि, बढोत्तरी।

फातिकम्म (नपुं.) : मरम्मत, वृद्धि।

फारुसक (नपुं.) : फासला।

फाल (पु.) : हल की फाल।

फालक (पु.) : फाड़ने वाला या तोड़ने वाला।

फालन (नपुं.) : फाड़ना, टुकड़े करना।

फालेति (क्रि.) : फाड़ता है, तोड़ता है, टुकड़े करता है।

फासु : (पु.) आसानी, आराम; (वि.) आरामदेह, सुखदायक।

फासुक (वि.) : सुखद, आसान।

फासुका / **फासुलिका** (स्त्री.) : पसली।

फिय (नपुं.) : चप्पु।

फीत (वि.) : स्फीत, समृद्ध।

फुट (वि.) : स्पृष्ट, व्याप्त।

फुट्ठ (वि.) : स्पृष्ट।

फुल्ल / **फुल्लित** (वि.) : पूर्ण रूप से खिला हुआ।

फुसति (क्रि.) : स्पर्श करता है, पहुंचता है, प्राप्त करता है।

फुसन (नपुं.) / **फुसना** (स्त्री.) : स्पर्श करना ।

फुसितक (नपुं.) : बूँद, स्पर्श।

फुसीयति (क्रि.) : स्पर्श किया जाता है।

फुस्स : (पु.) पौष मास, नक्षत्र विशेष; (वि.) वर्णयुक्त, (नपुं.) शकुन, शुभ मुहूर्त।

फुस्सरथ (पु.) : राज्य-रथ, राज्य का उत्तराधिकारी खोज निकालने के लिए छोड़ा गया रथ।

फुस्सराग (पु.) : पुष्प-राग, पुखराज।

फेग्गु (नपुं.) : छाल, फल्गु।

फेण (नपुं.) : झाग।

फेणपिण्ड (पु.) : झाग-पिंड।

फेणुद्देहक (वि.) : झाग उठाता हुआ।

फेणिल (पु.) : झाग देनेवाला पौधा।

फोट (पु.) / **फोटक** (नपुं.) : फफोला।

फोट्ठब्ब (नपुं.) : स्पर्श का विषय।

फोसित (वि.) : छिड़का हुआ।

ब

बक (पु.) : बगुला।

बक-जातक : बगुले ने मछलियों को ठगा। अंत में एक केकड़े ने उसकी जान ली (३८)।

बक-जातक : बगुले की बगुला-भक्ति की कथा (२३६)।

बकब्रह्म-जातक : भगवान बुद्ध की बकब्रह्मा से भेंट की कथा (४०५)।

बज्झति (क्रि.) : बंधा जाता है, पकड़ा जाता है।

बत्तिंस / **बत्तिंसति** (स्त्री.) : बत्तीस।

बदर (नपुं.) : बेर।

बदरमिस्स (वि.) : बेर-मिश्रित।

बदरा (स्त्री.) : कपास, रुई।

बदरी (स्त्री.) : बेर का पेड़।

बदालता (स्त्री.) : लता-विशेष।

बद्ध (वि.) : बँधा हुआ, फँसा हुआ, दृढ।

बद्धञ्जलिक (वि.) : हाथ जोड़े हुए।

बद्धराव (पु.) : पकड़े गये, या फँसे जानवर की चिल्लाहट।

बद्धवेर (नपुं.) : दृढ वैर।

बधिर (वि.) : बहरा।

बन्ध (पु.) / **बन्धन** (नपुं.) : बंधन, आसक्ति।

बन्धति (क्रि.) : बाँधता है।

बन्धनमोक्ख-जातक : राजा ने रानी का कुशल-समाचार जानने के लिए युद्ध-भूमि से दूत भेजे। रानी ने सभी दूतों के साथ सहवास किया (१२०)।

बन्धनागार (नपुं.) : जेलखाना।

बन्धनागार-जातक : दो बच्चों की माता को छोड़ पति तपस्या करने चला गया (२०१)।

बन्धनागारिक (पु.) : कैदी।

बन्धव / **बन्धु** (पु.) : सगा-संबंधी, भाई-बंद।

बन्धापेति (क्रि.) : बँधवाता है।

बन्धुजीवक (पु.) : पौधा-विशेष।

बन्धुमन्तु (वि.) : रिश्तेदारों वाला।

बन्धुल : कुशीनगर के मल्लों के सेनापति का पुत्र।

बब्बज (नपुं.) : बब्बढ तृण, एक प्रकार की घास।

बब्बु / **बब्बुक** (पु.) : बिलार, बिल्ली।

बब्बु-जातक : धन की लोभी पत्नी मर कर चुहिया बनी (१३७)।

बरिहिस (नपुं.) : कुश घास।

बल (नपुं.) : शक्ति, ताकत, सेना।

बलकाय (पुं) : सेना।

बलक्कार (पु.) : हिंसा, जबरदस्ती, बलात्कार।

बलट्ठ / **बलत्थ** (पु.) : सैनिक।

बलवन्तु (वि.) : शक्तिशाली।

बलाका (स्त्री.) : सारस।

बलि (पु.) : बलि, भूमि-कर।

बलिकम्म (नपुं.) : बलि, आहुति।

बलिपटिग्गाहक (वि.) : आहुति ग्रहण करने वाला।

बलिपुट्ठ (पु.) : कौवा।

बलिवद्द / **बलिबद्द** (पु.) : वृषभ, बैल।

बलिहरण (नपुं.) : कर (टैक्स), उगाहना।

बलिस / बळिस (पु.) : मछली पकड़ने का काँटा।

बली (वि.) : शक्तिशाली ।

बव्हाबाध (वि.) : रोग-बहुल।

बहल (वि.) : मोटा, गहरा।

बहलत्त (नपुं.) : मोटापन, गहराई।

बहि (अ.) : बाह्य, बाहर।

बहिगत (वि.) : बाहर गया हुआ।

बहिद्धा (अ.) : बाहर।

बहिनगर (नपुं.) : नगर के बाहर या बाहर का नगर।

बहिनिक्खमन (नपुं.) : अभिनिष्क्रमण, बाहर जाना।

बहु / बहुक (वि.) : बहुत, अनेक, कई।

बहुकरणीय (वि.) : बहुकृत्य, बहुत कार्य।

बहुकार (वि.) : बहुत उपयोगी।

बहुकिच्च (वि.) : जिसे बहुत काम हो, व्यस्त।

बहुक्खत्तुं (वि.) : अनेक बार।

बहुजन (पु.) : अनेक जन।

बहुजागर (वि.) : बहुत जागृत।

बहुतर (वि.) : अधिक।

बहुत्त (नपुं) : अधिकता, बाहुल्य, बहुत्व।

बहुधन (वि.) : धनी, बड़ा धनवान।

बहुधा (क्रि.वि.) : अनेक प्रकार से।

बहुप्पद (वि.) : अनेक पैरों वाला।

बहुब्बीहि : बहुव्रीहि समास।

बहुभण्ड (वि.) : बहुत सामान वाला।

बहुभाणी (वि.) : बहुत बोलने वाला।

बहुभाव (पु.) : विपुलता।

बहुमत (वि.) : बहु-मान्य।

बहुमान (पु.) / **बहुमानन** (नपुं.) : सम्मान, गौरव।

बहुमानित (वि.) : सम्मानित।

बहुल (वि.) : विपुल।

बहुलता (स्त्री) / **बहुलत्त** (नपुं.): विपुलता।

बहुलीकत (वि.) : अभ्यस्त, ज्यादातर करके।

बहुलीकम्म (नपुं.) / **बहुलीकरण** (नपुं.) / **बहुलीकार** (पु.) : निरंतर अभ्यास।

बहुलीकरोति (क्रि.) : बढाता है।

बहुवचन (नपुं.) : अनेक वचन।

बहुविध (वि.) : अनेक प्रकार का।

बहुसो (क्रि.वि.) : अधिक करके, ज्यादातर ।

बहुस्सुत (वि.) : बहु-श्रुत, पंडित।

बहूपकार (वि.) : बहुत उपकार करने वाला।

बाकुची (स्त्री.) : सोमराजी वृक्ष।

बाण (पु.) : बाण, तीर।

बाणधि (पु.) : तूणीर।

बाधक (वि.) : रोकनेवाला।

बाधकत्त (नपुं.) : बाधकत्व।

बाधति (क्रि.) : बाधक होता है।

बाधन (नपुं.) / **बाधा** (स्त्री.) : बाधा, रुकावट।

बाधित (वि.) : बाधा-युक्त।

बाधेति (क्रि.) : बाधा डालता है, दबाता है।

बारस (वि.) : बारह।

बाराणसी (स्त्री.) : वाराणसी, काशी जनपद की राजधानी।

बाराणसेय्यक (वि.) : वाराणसी का वासी, वाराणसी-निर्मित।

बाल : (वि.) आयु में कम, अज्ञानी, अबोध; (पु.) बच्चा, मूर्ख।

बालक (पु.) : बच्चा।

बालता (स्त्री.) : मूर्खता।

बाला / **बालिका** (स्त्री.) : लड़की, बालिका।

बालिसिक (पु.) : मछुआ।

बाल्य (नपुं.) : बचपन, मूर्खता।

बावीसति (स्त्री.) : बाईस ।

बावेरू-जातक : वाराणसी से बावेरू गये व्यापारियों की कथा (३३९)।

बाहा (स्त्री.) : बाहु, बाजू।

बाहाबल (नपुं.) : बाहु-बल।

बाहित (वि.) : दूर रखा गया, बाहर रखा हुआ।

बाहिर (वि.) बाह्य, बाहरी; (नपुं.) बाहर।

बाहिरक (वि.) : दूसरे मत का।

बाहिरकपब्बज्जा (स्त्री.) : दूसरे मतों के अनुसार प्रव्रज्या।

बाहिरत्त (नपुं.) : बाहर होने का भाव।

बाहिय-जातक : राजा ने प्रसव-वेदना के अनन्तर शिशु जनने वाली देवी को अपनी पटरानी बनाया (१०८)।

बाहु (पु.) : बाजू।

बाहुजञ्ञ (वि.) : बहुजनों का, सार्वजनिक।

बाहुमूल (नपुं.) : बगल।

बाहुलिक (वि.) : विपुलता में वास करने वाला।

बाहुल्ल / **बाहुल्य** (नपुं.) : प्रचुरता, कामोपभोगी जीवन।

बाहुसच्च (नपुं.) : अधिक विद्वत्ता।

बाहेति (क्रि.) : दूर रखता है, दूर करता है।

बाळ्ह (वि.) : अधिक, दृढ़, मजबूत।

बाळ्हं (क्रि.वि.) : अत्यंत, जोर से, अधिकता से।

बिदल (नपुं.) : बाँस।

बिन्दु (नपुं.) : बिंदू, बूंद।

बिन्दुमत्त (वि.) : बूंद भर।

बिन्दुमत्तं (क्रि.वि.) : बिंदुमात्र।

बिन्दुसार : मगध के राजा, अशोक के पिता।

बिब्बोहन / **बिम्बोहन** (नपुं.) : तकिया।

बिम्ब (नपुं.) : छाया, प्रतिमा।

बिम्बा (स्त्री.) : सिद्धार्थ गौतम की पत्नी बिम्बा (यशोधरा)।

बिम्बिका / **बिम्बी** (स्त्री.) : लता-विशेष।

बिम्बिसार : मगध के राजा।

बिल : (नपुं.) सूराख, (चूहे का) बिल।

बिलङ्ग (पु.) : सिरका।

बिलङ्गथालिका (स्त्री.) : एक प्रकार की यंत्रणा / यातना।

बिलसो (क्रि.वि.) : पृथक-पृथक या ढेर करके।

बिल्ल (पु.) : बिल्ल, बेल का पेड़।

बिळार (पु.) : बिल्ला, नर बिल्ली।

बिळारभस्ता (स्त्री.) : (लोहार की) भाथी।

बिळार-जातक : ढोंगी गीदड़ प्रति दिन एक-एक चूहा मारकर खा जाता था। चूहों के नेता ने गीदड़ को मार डाला, शेष चूहों ने उसका मांस खाया (१२८)।

बिळारिकोसिय-जातक : बिलारकोसिय सेठ की कथा, जिसने अपने कंजूसपन के कारण परंपरागत दानशाला नष्ट करा दी थी (४५०)।

बिळारिका (स्त्री.) : बिल्ली।

बिळाली (स्त्री.) : बिल्ली, एक तरह का पौधा।

बीज (नपुं.) : बीज।

बीजकोस (पु.) : फूलों का बीज-कोश।

बीजगाम (पु.) : बीजों का समूह।

बीजजात (नपुं.) : बीज की प्रजाति, बीजों के अलग-अलग विभेद।

बीजबीज (नपुं.) : बीजों से उगाये जा सकने वाले पौधे।

बीभच्छ (वि.) : बीभत्स।

बीरण (नपुं.) : बीरण घास।

बीरणत्थम्भ (पु.) : बीरण घास का जंगल।

बुज्झति (क्रि.) : जानता है, समझता है, बूझता है।

बुज्झन (नपुं.) : बूझना, ज्ञान प्राप्त करना।

बुज्झनक (वि.) : समझदार।

बुज्झितु (पु.) : जागने वाला, बूझने वाला, ज्ञानी।

बुड्ढ (वि.) : वृद्ध।

बुड्ढतर (वि.) : वृद्धतर।

बुद्ध (पु.) : संपूर्ण ज्ञान के प्रतीक, बुद्धत्व-पद का लाभी।

बुद्धकारकधम्म (पु.) : बुद्धत्व प्राप्ति में सहायक विधि।

बुद्धकाल (पु.) : बुद्धोत्पत्ति का काल।

बुद्धकोलाहल (पु.) : बुद्ध के आगमन की पूर्व-सूचना।

बुद्धक्खेत्त (नपुं.) : बुद्ध की शक्ति का सीमा-क्षेत्र।

बुद्धगुण (पु.) : बुद्ध के गुण।

बुद्धघोस : त्रिपिटक के सर्वश्रेष्ठ व्याख्याकार अट्ठकथाचार्य ।

बुद्धङ्कुर (पु.) : जिसका बुद्ध बनना निश्चित है, जिसमें बुद्ध होने के अंकुर है।

बुद्धचक्खु (नपुं.) : बुद्ध की अंतर्दृष्टि।

बुद्धञाण (नपुं.) : अनंत ज्ञान।

बुद्धत्त (नपुं.) : बुद्धत्व।

बुद्धन्तर (नपुं.) : एक बुद्ध और दूसरे बुद्ध के बीच का काल।

बुद्धपुत्त (पु.) : बुद्ध-पुत्र, बुद्ध का श्रावक।

बुद्धबल (नपुं.) : बुद्ध की शक्ति।

बुद्धभाव (पु.), बुद्ध-भाव, बुद्धत्व ।

बुद्धभूमि (स्त्री.) : बुद्ध-भूमिका।

बुद्धमामक (वि.) : बुद्ध-भक्त।

बुद्धरस्मि / बुद्धरंसि (स्त्री.) : बुद्ध के शरीर से निकलनेवाली रश्मियाँ।

बुद्धलीळ्हा (स्त्री.) : बुद्ध-लीला, बुद्ध के गुण।

बुद्धवचन (नपुं.) : बुद्ध की शिक्षा।

बुद्धविसय (पु.) : बुद्ध-क्षेत्र।

बुद्धवेनेय्य (वि.) : बुद्ध के द्वारा ही विनीत बनाया जा सकने वाला।

बुद्धवंस : खुद्दक निकाय का चौदहवाँ ग्रंथ।

बुद्धसासन (नपुं.) : बुद्ध की शिक्षा।

बुद्धानुभाव (पु.) : बुद्ध का प्रताप, बुद्ध का प्रभाव।

बुद्धानुस्सति (स्त्री.) : बुद्ध का अनुस्मरण।

बुद्धारम्मण / **बुद्धालम्बन** (नपुं.) : बुद्ध के गुणों का ध्यान।

बुद्धि (स्त्री.) : बुद्धि, बुद्धिमत्ता।

बुद्धिमन्तु / **बुद्धिसम्पन्न** (वि.) : बुद्धिमान।

बुद्धुप्पाद / **बुद्धोप्पाद** (पु.) : बुद्ध-युग, बुद्ध का जन्म।

बुद्धूपट्ठाक / **बुद्धोपट्ठाक** (वि.) : बुद्ध का सेवक ।

बुध (पु.) : बुद्धिमान आदमी, बुध-ग्रह।

बुब्बुल / **बुब्बुलक** / **बुब्बुळ** (नपुं.) : बुलबुला।

बुभुक्खति (क्रि.) : खाने की इच्छा करता है।

बेलुव (पु.) : बेल-फल का पेड़ ।

बेलुवपक्क (नपुं.) पका हुआ बेल-फल।

बेलुवलट्ठि (स्त्री.) : बेल का गाछ।

बेलुवसलाटुक (नपुं.) : बेल का कच्चा फल।

बोज्झङ्ग (नपुं) : बोधि प्राप्ति के लिए आवश्यक सहायक गुण।

बोध (पु.) / **बोधन** (नपुं.) : बुद्धत्व-प्राप्ति, ज्ञान।

बोधनीय / **बोधनेय्य** (वि.) : बुद्धत्व लाभ कर सकने वाला।

बोधि (स्त्री.) : श्रेष्ठतम ज्ञान, बोधि-वृक्ष।

बोधिङ्गण (नपुं.) : बोधि-वृक्ष का आंगन।

बोधिपक्खिक / **बोधिपक्खिय** (वि.) : बोधिपक्षीय।

बोधिपादप / **बोधिरुक्ख** (पु.) : बोधिवृक्ष, पीपल।

बोधिपूजा (स्त्री.) : बोधि-वृक्ष की पूजा।

बोधिमण्ड (पु.) : बोधि-वृक्ष के नीचे का स्थान जहां सिद्धार्थ गौतम बुद्ध-प्राप्ति के लिए कृत-संकल्प होकर बैठे थे।

बोधिमह (पु.) : बोधिवृक्ष के सम्मान में उत्सव।

बोधिमूल (नपुं.) : बोधि वृक्ष की जड़।

बोधिसत्त : बुद्धत्व-प्राप्ति के लिए कृतसंकल्प प्राणी, बुद्धत्व-प्राप्ति से पूर्व का सिद्धार्थ गौतम बुद्ध का परिचायक नाम।

बोधेति (क्रि.) ज्ञान प्राप्त करता है।

बोधेतु (पु.) : जाग्रत होनेवाला, ज्ञान-लाभी।

बोन्दि (पु.) : शरीर।

ब्यग्घ (पु.) : व्याघ्र।

ब्यञ्जन / **व्यञ्जन** (नपुं.) : स्वरों के अतिरिक्त वर्णमाला के शेष अक्षर; सालन, पकवान।

ब्यापाद (पु.) : क्रोध, द्वेष।

ब्याम (पु.) : व्याम मात्र (माप)।

ब्यामप्पभा (स्त्री.) : बुद्ध के शरीर से निकलने वाली प्रभा।

ब्यूह (पु.) : सेना की रचना-पद्धति।

ब्रहन्त (वि.) : विशाल।

ब्रह्म / **ब्रह्मा** (पु.) : सृष्टि- कर्ता, उच्चतम देवलोक के देव।

ब्रह्मकायिक (वि.) : ब्रह्माओं की मंडली का।

ब्रह्मघोस (वि.) : ब्रह्मा सदृश आवाज।

ब्रह्मचरिया (स्त्री.) : श्रेष्ठ जीवन, विशुद्ध चर्या।

ब्रह्मचारी (वि.) विशुद्ध चर्या वाला, प्रव्रजित।

ब्रह्मजच्च (वि.) : ब्राह्मण-जन्मा।

ब्रह्मञ्ञ (नपुं) / **ब्राह्मञ्ञ** (नपुं) / **ब्रह्मञ्ञता** (स्त्री.) : ब्राह्मण्य, श्रेष्ठ जीवन।

ब्रह्मदण्ड (पु.) : दंड-विशेष, जो छन्न को दिया गया था।

ब्रह्मदेय्य (नपुं.) : राजकीय भेंट, ब्राह्मणों का विशेषाधिकार।

ब्रह्मप्पत्त (वि.) : श्रेष्ठतम अवस्था को प्राप्त।

ब्रह्मबन्धु (पु.) : ब्रह्म का संबंधी, ब्राह्मण।

ब्रह्मभूत (वि.) : सर्वश्रेष्ठ।

ब्रह्मलोक (पु.) : ब्रह्म-लोक, ब्रह्माओं का स्थान।

ब्रह्मविमान (नपुं.) : ब्रह्मा का निवास-स्थान।

ब्रह्मविहार (पु.) : चित्त की वांछनीय स्थिति; (मैत्री, करुणा, मुदिता, उपेक्षा)।

ब्रह्मदत्त-जातक : तपस्वी ने राजा से विदा लेते समय केवल पत्तों का एक छाता और खड़ाऊँ की जोड़ी माँगी (३२३)।

ब्राह्मण (पु.) : ब्राह्मण वर्ण का व्यक्ति, अर्हंत के लिए उपयोजित विशेषण।

ब्रह्मकञ्ञा (स्त्री.) : ब्राह्मण-कन्या।

ब्रह्मवाचनक (नपुं.) : ब्राह्मणों द्वारा किया जाने वाला वेद-पाठ।

ब्राह्मणवाटक (पु.) : ब्राह्मणों के एकत्र होने का स्थान।

ब्रूति (क्रि.) : बोलता है।

ब्रूहन (नपुं.) : वृद्धि।

ब्रूहेति (क्रि.) : बढाता है, वृद्धि करता है।

ब्रूहेतु (पु.) : बढानेवाला।

भ

भक्ख : (वि.) खाने योग्य, (नपुं.) भोजन, खाद्य-पदार्थ।

भक्खक (पु.) : खानेवाला।

भक्खति / भक्खेति (क्रि.) : खाता है, भक्षण करता है।

भक्खन (नपुं.) : खाना।

भग (नपुं.) : भाग्य, योनि।

भगवन्तु : (वि.) भाग्यवान; (पु.), भगवान, बुद्ध का एक विशेषण।

भगिनी (स्त्री.) : बहन।

भग्ग (वि.) : भग्न, टूटा हुआ।

भङ्ग : (नपुं.) टूटना; (पु.) पटुआ।

भङ्गक्खण (नपुं.) : टूटने का क्षण, विघटन होने का क्षण।

भङ्गानुपस्सना (स्त्री.) : वस्तुओं के विनाश के संबंध में अन्तर्दृष्टि ।

भच्च : (पु.) भृत्य, नौकर; (वि.) पालित-पोषित।

भजति (क्रि.) : संगति करता है, ग्रहण करता है।

भजन (नपुं.) : संगति।

भज्जति (क्रि.) : भूँजता है, भूनता है।

भञ्जक / भञ्जनक (वि.) : तोड़ने वाला, खराब करने वाला।

भञ्जति (क्रि.) : तोड़ता है, नष्ट करता है।

भञ्जन (नपुं.) : तोड़ना, विनाश।

भट (पु.) : सैनिक, सिपाही, नौकर।

भटसेना (स्त्री.) : पैदल सेना।

भट्ठ (वि.) : भुना हुआ, गिरा हुआ।

भणति (क्रि.) : बोलता है।

भणे (अ.) : संबोधन-विशेष, भाइयों !

भण्ड / भण्डक (नपुं) : सामान, चीजें।

भण्डति (क्रि.) : झगड़ा करता है।

भण्डन (नपुं.) : कलह, झगड़ा।

भण्डागार (नपुं.) : भंडार, खजाना।

भण्डागारिक (पु.) : भंडारी, खजांची।

भण्डिका (स्त्री.) : गठड़ी।

भण्डु (पु.) : सिरमुंडा।

भण्डुकम्म (नपुं.) : हजामत बनाना।

भत : (वि.) पालित-पोषित; (पु.) नौकर।

भतक (पु.) : भृत्य, मजदूर, नौकर।

भति (स्त्री.) : मजदूरी।

भत्त (नपुं.) : भात।

भत्तकारक (पु.) : रसोइया।

भत्तकिच्च (नपुं.) : भात खाना, भोजन करना।

भत्तकिलमथ (पु.) : भोजनानन्तर आलस्य।

भत्तगाम (पु.) : भेंट या सेवा देनेवाला गांव।

भत्तग्ग (नपुं.) : भोजनालय।

भत्तपुट (नपुं.) : भात का दोना।

भत्तविस्सग्ग (पु.) : भोजन परोसना।

भत्तवेतन (नपुं.) : भोजन और तनख्वाह / मजदूरी।

भत्तवेला (स्त्री.) : भोजन का समय।

भत्तसम्मद (पु.) : भोजनानन्तर तंद्रा।

भत्ति (स्त्री.) : भक्ति।

भत्तिक / **भत्तिमन्त** (वि.) : भक्त।

भत्तु (पु.) : भर्तृ, पति।

भदन्त / **भद्दन्त** (वि.) : गौरवार्ह, पूज्य, जेष्ठ भिक्षु के लिये संबोधन।

भद्द / **भद्र** (वि.) : शुभ, उत्तम।

भद्दक : (नपुं.) भाग्य-संपन्न / अच्छी वस्तु, (वि.) अच्छे गुणों वाला, भाग्यवान।

भद्दकच्चाना : यशोधरा (राहुल माता) का एक और नाम।

भद्दकुम्भ (पु.) : पानी का भरा घड़ा।

भद्ददारु (पु.) : देव-दारु की जाति का वृक्ष।

भद्दपदा (स्त्री.) : भाद्रपद नक्षत्र।

भद्दपीठ (नपुं.) : भद्रासन, उत्तम आसन।

भद्दमुख (वि.) : सुंदर मुख, शिष्ट संबोधन।

भद्दयुग (नपुं.) : श्रेष्ठ जोड़ा।

भद्दसाल-जातक : राजा के उद्यान के श्रेष्ठ भद्रशाल वृक्ष के काटे जाने की कथा (४६५)।

भद्रघट-जातक : शराबी लड़के ने इन्द्रप्रदत्त भद्र-घट भी फोड़ डाला (२९१)।

भद्दा / **भद्दिका** (स्त्री.) : शिष्ट स्त्री।

भद्दिय : अङ्ग जनपद का एक नगर। भगवान बुद्ध अनेक बार वहाँ पधारे थे।

भन्त (वि) : भ्रांत, भ्रमित।

भन्तत्त (नपुं.) : भ्रांत-भाव, गड़बड़ी।

भन्ते : भदन्त का संबोधन रूप।

भब्ब (वि.) : भव्य, योग्य।

भब्बता (स्त्री.) : भव्यता, योग्यता।

भम (पु.) : घूमने वाली चीज।

भमकार (पु.) : घुमाने वाला।

भमति (क्रि.) : घूमता है।

भमर (पु.) : भ्रमर, भौंरा।

भमरिका (स्त्री.) : लट्टू।

भमु / **भमुका** (स्त्री.) : भौं, भौंह।

भय (नपुं.) : डर।

भयङ्कर / **भयानक** (वि.) : भयानक, भयावह।

भयदस्सावी / **भयदस्सी** (वि.) : भयदर्शी ।

भर (वि.) : (समास में), पोषण करने वाला।

भरण (नपुं.) : भरण-पोषण।

भरति (क्रि.) : भरण-पोषण करता है।

भरित (वि.) : भरा हुआ।

भरिया (स्त्री.) : भार्या, पत्नी, औरत।

भरु-जातक : भरु देश के राजा ने तपस्वियों के मुकद्दमें में निर्णय दिया (२१३)।

भल्लाटक / **भल्लातक** (पु.) : वृक्ष-विशेष, लोध।

भल्लाटिक-जातक / **भल्लाटिक-जातक** : भल्लाटिय नरेश के शिकार की कथा (५०४)।

भव (पु.) : अस्तित्व, संसार।

भवग्ग (पु.) : संसार का उच्चतम शिखर।

भवङ्ग (नपुं.) : अचेतन मन।

भवचक्क (नपुं.) : भव-चक्र।

भवतण्हा / **भवनेत्ति** (स्त्री.) : भव-तृष्णा, पुनर्भव / पुनर्जन्म की इच्छा।

भवति (क्रि.) : होता है।

भवदिट्ठि (स्त्री.) : शाश्वत दृष्टि।

भवन (नपुं.) : होना, निवास स्थान।

भवन्त (वि.) : आप लोग, श्रीमान के अर्थ का अरदरयुक्त संबोधन।

भवन्तग / **भवन्तगू** (वि.) : भव के अंत तक पहुँचा हुआ।

भवसंयोजन (नपुं.) : पुनर्जन्म का बंधन।

भवाभव (पु.) : यह या वह जीवन।

भवेसना (स्त्री.) : भवेषणा, भवेच्छा ।

भवोघ (पु.) : पुनर्जन्म रूपी बाढ।

भस्ता (स्त्री.) : धौंकनी।

भस्म (नपुं.) : राख, भस्म।

भस्मच्छन्न (वि.) : राख से ढका हुआ।

भस्स (नपुं.) : बेकार बातचीत।

भस्सति (क्रि.) : गिर पड़ता है।

भस्सपुट (पु.) : चाबुक।

भस्सर (पु.) : चमकदार।

भस्सारामता (स्त्री.) : बेकार बातचीत में रुचि।

भा (स्त्री.) : प्रकाश की चमक।

भाकुटिक (वि.) : भ्राकुटिक, भृकुटि टेढी करने वाला।

भाग (पु.) : हिस्सा।

भागधेय / **भागधेय्य** (नपुं.) : भाग्य।

भागवन्तु (वि.) : हिस्सेवाला, हिस्सेदार।

भागसो (क्रि.वि.) : हिस्सों के अनुसार।

भागिनेय्य (पु.) : भांजा।

भागिनेय्या (स्त्री.) : भांजी।

भागीय (वि.) : (समास में) संबंधित।

भागी (वि.) : हिस्सेदार।

भागीरथी (स्त्री.) : गंगा नदी का एक नाम।

भाग्य (नपुं) : सौभाग्य।

भाजक / **भाजेतु** (पु.) : बाँटने वाला।

भाजन (नपुं.) : बँटवारा, बर्तन, पात्र ।

भाजनविकति (स्त्री.) : नाना प्रकार के बर्तन।

भाजेति (क्रि.) : बाँटता है।

भाणक (पु.) : धर्म-ग्रंथों का पाठ करने वाला, बड़ा मटका।

भाणवार (पु.) : तिपिटक के अनेक भागों में से एक। एक भाणवार आठ सहस्त्र अक्षरों से समन्वित माना जाता है।

भाणी (वि.) : बोलने वाला।

भाति (क्रि.) : चमकता है।

भातिक / **भातु** (पु.) : भाई।

भानु (पु.) : प्रकाश, सूर्य।

भानुमन्तु : (वि.) प्रकाशमान; (पु.) सूर्य।

भायति (क्रि.) : डरता है।

भायापेति (क्रि.) : डराता है।

भार (पु.) : बोझा।

भारनिक्खेपन (नपुं.) : भार उतार कर रख देना।

भारमोचन (नपुं.) : भार-मुक्ति।

भारवाही / भारहार (पु.) : भार ढोने वाला, बोझ ढोने वाला।

भारिक (वि.) : भार-युक्त।

भारिय (वि.) : भारी, गंभीर, गहरा।

भाव (पु.) : स्वभाव।

भावना (स्त्री.) : विकास, ध्यानाभ्यास।

भावनानुयोग (पु.) : ध्यान के अभ्यास में लगना।

भावनामय (वि.) : भावना-युक्त।

भावनाविधान (नपुं.) : ध्यान के अभ्यास की पद्धति।

भावनीय (वि.) : अभ्यास करने योग्य, सम्माननीय।

भावित (वि.) : अभ्यस्त, विकसित।

भावितत्त (वि.) : विशेष अभ्यासी, संयत।

भावी (वि.) : होनेवाला, अनिवार्य।

भावेति (क्रि.) : वृद्धि करता है, अभ्यास करता है।

भासति (क्रि.) : बोलता है, चमकता है।

भासन (नपुं.) : भाषण, उपदेश, व्याख्यान।

भासन्तर (नपुं.) : दूसरी भाषा, भाषान्तर, अनुवाद।

भासा (स्त्री.) : भाषा, बोली।

भासित (नपुं.) : कथन।

भासितु / **भासी** (पु.) : बोलने वाला, कहने वाला।

भासुर (वि.) : चमकदार।

भिक्खक (पु.) : भीख / भिक्षा मांगने वाला।

भिक्खति (क्रि.) : भीख मांगता है, भिक्षा मांगता है।

भिक्खन (नपुं.), भीख मांगना ।

भिक्खा (स्त्री.) : भिक्षा, भोजन का दान।

भिक्खाचरिया (स्त्री.) / **भिक्खाचार** (पु.) : भिक्षाटन।

भिक्खाहार (पु.) : भिक्षु द्वारा प्राप्त आहार।

भिक्खापरम्पर-जातक : राजा को प्राप्त भोजन क्रम से प्रत्येक बुद्ध को प्राप्त हुआ (४९६)।

भिक्खु (पु.) : बौद्ध भिक्षु।

भिक्खुनी (स्त्री.) : बौद्ध भिक्षुणी।

भिक्खुभाव (पु.) : भिक्षु-भाव, भिक्षुत्व।

भिक्खुसङ्घ (पु.) : भिक्षुओं का संघ।

भिङ्क (पु.) : हाथी का बच्चा।

भिङ्कार (पु.) : पानी की झारी।

भिज्जति (क्रि.) : टूट जाता है, नष्ट हो जाता है।

भिज्जन (नपुं.) : टूटना।

भिज्जनधम्म (वि.) : टूटने के स्वभाव वाला।

भित्ति (स्त्री.) : दीवार।

भित्तिपाद (पु.) : दीवार की नींव।

भिन्दति (क्रि.) : तोड़ता है, फोडता है, पृथक पृथक कर देता है।

भिन्दन (नपुं.) : टूटना, फूटना।

भिन्न (वि.) : टूटा हुआ, फूटा हुआ।

भिन्नत्त (नपुं.) : भिन्नत्व।

भिन्नपट (नपुं.) : फटा वस्त्र।

भिन्नभाव (पु.) : पार्थक्य, भिन्नता-भाव।

भिन्नमरियाद (वि.) : सीमोल्लंघित।

भिन्नसील (वि.) : शीलभ्रष्ट।

भिय्यो / **भिय्योसो** (अ.) : अत्यधिक।

भिय्योसो मत्ताय : अत्यधिक, अपनी योग्यता से अधिक।

भिस (नपुं.) : कमल-नालिका।

भिसक्क (पु.) : भिषक, चिकित्सक।

भिस-जातक : पिता के मरने पर सभी भाई तथा उनकी बहन हिमालयाभिमुख हुए (४८८)।

भिसपुप्फ (नपुं.) : कमल का फूल।

भिसपुप्फ-जातक : देवी ने बोधिसत्व को फूल की गंध मात्र सूंघने के लिए गंध-चोर कहा (३९२)।

भिसमुळाल (नपुं.) : कमल मृणाल।

भिसि (स्त्री.) : गद्दा।

भिंसन / **भिंसनक** (वि.) : भयानक, भयंकर।

भीत (वि.) : डरा हुआ।

भीति (स्त्री.) : भय।

भीम / **भीसन** (वि.) : भयानक।

भीमसेन-जातक : भीमसेन का उपयोग कर बौने धनुषधारी ने यश प्राप्त किया (८०)।

भीरु / **भीरुक** (वि.) : डरपोक, कायर, डरने वाला।

भीरुत्ताण (नपुं.) : डरपोक का संरक्षण, डरने वाले के लिए सहारा।

भुक्करण / **भुङ्करण** (नपुं.); **भुक्कार** / **भुङ्कार** (पु.) : (कुत्ते का) भौंकना।

भुङ्करोति (क्रि.) : भौंकता है।

भुज : (पु.) हाथ; (वि.) मुड़ा हुआ।

भुजग / **भुजङ्ग** / **भुजङ्गम** (पु.) : सांप।

भुजपत्त (पु.) : भोज-पत्र।

भुजिस्स (पु.) : स्वतंत्र आदमी।

भुञ्जक (पु.) : खाने वाला या भोगने वाला।

भुञ्जति (क्रि.) : खाता है, भोगता है।

भुञ्जन (नपुं.) : खाना।

भुञ्जनकाल (पु.) : भोजन का समय ।

भुत्त (वि.) : खाया हुआ, भोगा हुआ।

भुत्तावी (वि.) : खाने वाला।

भुम्म (वि.) : भूमि / पृथ्वी से संबंधित, तल्लोंवाला (मकान)।

भुम्मट्ठ (वि.) : भूमि-स्थित।

भुम्मत्थरण (नपुं.) : दरी, बिछावन।

भुम्मन्तर (नपुं.) : भिन्न भूमियाँ।

भुस : (नपुं.) भूसा; (वि.) बहुत, अधिक।

भुसं (क्रि.वि.) : अधिकांश रूप से, अधिक मात्रा में, बार-बार।

भुस्सति (क्रि.) : भौंकता है।

भू (स्त्री.) : पृथ्वी, धरती, जमीन।

भूत : (वि.) हुआ, उत्पन्न हुआ, (पु., नपुं.) प्राणी।

भूतकाय (पु.) : महाभूतों से उत्पन्न शरीर।

भूतगाम (पु.) : वनस्पति।

भूतगाह (पु.) : भूत-प्रेत द्वारा ग्रसित।

भूतत्त (नपुं.) : होने का भाव।

भूतपुब्बं (क्रि.वि.) : पूर्वकाल में।

भूतवादी (वि.) : सत्यवादी।

भूतवेज्ज (पु.) : भूत-प्रेत उतारने वाला, ओझा।

भूतिक (वि.) : भौतिक।

भूमक (वि.) : तल्लोंवाला (मकान)।

भूमि (स्त्री.) : पृथ्वी, धरती, प्रदेश, तल।

भूमिकम्प (नपुं.) / **भूमिकम्पा** (स्त्री.) : भूकंप, भूचाल।

भूमिगत (वि.) : पृथ्वी-स्थित।

भूमितल (नपुं.) : पृथ्वी-तल।

भूमिप्पदेस / **भूमिभाग** (पु.) : जमीन का टुकड़ा।

भूरि : (स्त्री.) प्रज्ञा; (वि.) विपुल।

भूरिदत्त-जातक : तपस्वी के नागकन्या द्वारा भुलाये जाने की कथा (५४३)।

भूरिपञ्ञ / **भूरिमेध** (वि.) : बहुत प्रज्ञा वाला, मेधावान।

भूरिपञ्ह-जातक : महाउम्मग्ग जातक का एक अंश (४५२)।

भूरिविज्जा (स्त्री.) : विपुल विद्या।

भूसन (नपुं.) : भूषण, गौरव, अलंकार।

भूसा (स्त्री.) : सजावट।

भूसापेति (क्रि.) : सजवाता है।

भूसेति (क्रि.) : सजाता है।

भेक (पु.) : मेंढक।

भेज्ज : (वि.) भुरभुरा, जो टूट सके; (नपुं.) टूटना या काटना।

भेण्डिवाल (पु.) : अस्त्र-विशेष।

भेण्डुक (नपुं.) : खेलने की गेंद।

भेत्तु (पु.) : तोड़ने वाला।

भेद (पु.) : मेल का अभाव, अनेकता।

भेदक (वि.) : एकता नष्ट करने वाला।

भेदकर (वि.) : भेद पैदा करने वाला।

भेदन (नपुं.) : टूटना।

भेदनक (वि.) : तोड़ डालने योग्य, फूटने योग्य।

भेदनधम्म (वि.) : टूटने के स्वभाव वाला।

भेदित (वि.) : टूटा हुआ।

भेदेति (क्रि.) : तोड़ता है।

भेरण्ड (पु.) : गीदड़।

भेरण्डक (नपुं.) : गीदड़ की आवाज।

भेरव (वि.) : भयानक, भैरव।

भेरि (स्त्री.) : ढोल, नगाड़ा।

भेरिचारण (नपुं.) : ढोल बजाकर मुनादी कराना।

भेरितल (नपुं.) : ढोल का तल्ला।

भेरिवादक (पु.) : ढोल बजाने वाला।

भेरिवादन (नपुं.) : ढोल का बजाना।

भेरिसद्द (पु.) : ढोल की आवाज।

भेरिवाद-जातक : लड़के ने पिता का कहना न मान ढोल को बार-बार बजाया। डाकुओं ने आकर पिता-पुत्र को लूट लिया (५६)।

भेसज्ज (नपुं.) : दवाई, औषधी।

भेसज्जकपाल (नपुं.) : दवाई का बर्तन।

भेसज्जमत्ता (स्त्री.) : औषधी मात्रा।

भो (अ.) : संबोधन-विशेष।

भोग (पु.) : धन, संपत्ति।

भोगक्खन्ध (पु.) : धन का ढेर।

भोगगाम (पु.) : करदाता गाँव।

भोगमद (पु.) : धन का अभिमान।

भोगवन्तु (वि.) : धनी, धनवान।

भोगी : (पु.) सर्प, धनी आदमी; (वि.) (समास में) भोग भोगनेवाला।

भोग्ग (वि.) : भोग्य।

भोजक (पु.) : खिलाने वाला, कर उगाहने वाला।

भोजन (नपुं.) : खाद्य सामग्री।

भोजनिय (वि.) : खाने योग्य, नरम खाद्य-सामग्री।

भोजाजानीय-जातक : श्रेष्ठ घोड़े की कथा, जिसने जख्मी होने पर भी शत्रु पर आक्रमण किया (२३)।

भोजापेति (क्रि.) : खिलाता है, परोसता है।

भोजी (वि.) : भोजन करनेवाला।

भोजेति (क्रि.) : खिलाता है।

भोज्ज / **भोत्तब्ब** (नपुं.) : खाने योग्य वस्तु ।

भोति : महिला के लिए संबोधन, महोदया।

भोत्तुं (अ.) : खाने के लिए।

भोन्तो : एक संबोधन, ये, हे, अरे ! मान्यवर !

भोवादी (पु.) : ब्राह्मण।

म

मंस (नपुं.) : मांस, गोश्त।

मंसचक्खु (नपुं.) : दिव्य चक्षु आदि से भिन्न भौतिक आँखे ।

मंस-जातक : शिकारी से मांस माँगने की जातक कथा (३१५)।

मंसपुञ्ज (पु.) : मांस का ढेर।

मंसपेसि (स्त्री.) : मांस-पेशी, मांस का टुकड़ा।

मकचि (पु.) : धनुष की डोरी का पटुआ।

मकचिवत्थ (नपुं.) : पटुए का बुना वस्त्र।

मकचिवाक (नपुं.) : पटुए का छिलका।

मकर (पु.) : मगरमच्छ।

मकरदन्तक (नपुं.) : मगरमच्छ के दाँतों के समान।

मकरन्द (पु.) : पुष्प-रेणु।

मकस (पु.) : मच्छर।

मकसवारण (नपुं.) : मसहरी, मशकहरी।

मकस-जातक : बेटे ने बाप के सिर पर बैठा मच्छर हटाने जाकर कुल्हाड़ी से उसका सिर चीर डाला (४४)।

मकुट (पु., नपुं.) : मुकुट, ताज।

मकुल (नपुं.) : फूल की कली।

मक्कट (पु.) : बंदर, वानर।

मक्कटक (पु.) : मकड़ी।

मक्कटकसुत्त (नपुं.) : मकड़ी का जाल।

मक्कट-जातक : बन्दर ने तपस्वी का वल्कल-चीर धारण कर कुटी में रहने वाले एक तपस्वी की कुटी में प्रवेश करना चाहा। उसे सफलता नहीं मिली (१७३)।

मक्कटी (स्त्री.) : बंदरी, वानरी।

मक्ख (पु.) : दूसरे के गुण का मूल्य घटाना, दूसरे का अवमूल्यन।

मक्खण (नपुं.) : (तेल) माखना।

मक्खली-गोसाल : बुद्ध के समकालीन छह भिन्न मतावलम्बी आचार्यों में से एक।

मक्खिका (स्त्री.) : मक्खी।

मक्खित (वि.) : माखा हुआ।

मक्खी (पु.) : दूसरे के गुणों का मूल्य घटानेवाला।

मक्खेति (क्रि.) : माखता है, चुपड़ता है।

मखादेव-जातक : राजा ने सिर में उगे सफेद बाल को 'देव-दूत' समझा, प्रव्रज्या ग्रहण की (९)।

मग (पु.) : चौपाया।

मगध (पु.) : समान भगवान बुद्ध के समय का एक प्रधान राज्य।

मगसिर (नपुं.) : मार्गशीर्ष, नक्षत्र-विशेष।

मग्ग (पु.), रास्ता, सड़क, पथ, मार्ग।

मग्गकिलन्त (वि.) : चलने से थका हुआ।

मग्गकुसल (वि.) : रास्ते का जानकार, मार्ग-कुशल।

मग्गक्खायी (वि.) : रास्ता बताने वाला।

मग्गङ्ग (नपुं.) : सम्यक-दृष्टि आदि आर्य-मार्ग के आठ अंग।

मग्गञाण (नपुं.) : मार्ग के बारे में ज्ञान, मार्ग-ज्ञान।

मग्गञ्ञू / मग्गविदू (वि.) : मार्ग का जानकार, मार्गज्ञ।

मग्गट्ठ (वि.) : मार्गस्थ, मार्ग पर चलने वाला या मार्ग पूरा कर लेने वाला।

मग्गति / मग्गेति (क्रि.) : खोजता है, पता लगाता है।

मग्गदूसी (पु.) : मुसाफिरों को लूटने वाला, डाकू।

मग्गदेसक (वि.) : मार्ग-दर्शक।

मग्गन (नपुं.) / **मग्गना** (स्त्री.) : खोज, तलाश।

मग्गपटिपन्न (वि.) : यात्री, मार्गारुढ।

मग्गभावना (स्त्री.) : आर्य-मार्ग का अभ्यास।

मग्गमूळ्ह (वि.) : मार्ग-भ्रष्ट, रास्ता भूला।

मग्गसच्च (नपुं.) : आर्य-मार्ग नामक सत्य, मार्ग-सत्य।

मग्गिक (पु.) : मार्गारुढ।

मग्गित (वि.) : खोजा हुआ।

मघवन्तु (पु.) : शक्र (इंद्र) का एक और नाम।

मघा (स्त्री.) : मघा नक्षत्र।

मङ्कु (वि.) : उत्साहहीन।

मङ्कुभाव (पु.) : नैतिक दौर्बल्य, उत्साह-हीनता।

मङ्कुभूत (वि.) : मन्दोत्साह, उदास।

मङ्गल (वि.) : शुभ, अच्छा, शुभ-मुहूर्त, शुभ शगुन, समृद्धि।

मङ्गलकिच्च (नपुं.) : मङ्गल-कृत्य, उत्सव।

मङ्गलकोलाहल (पु.) : शुभ-घटना को लेकर कोलाहल / शोरगुल।

मङ्गलदिवस (पु.) : उत्सव का दिन।

मङ्गलपोक्खरणी (स्त्री.) : मंगल-पुष्करणी।

मङ्गलसिन्धव / मङ्गलास्स (पु.) : राजकीय अश्व।

मङ्गलसिलापट्ट (नपुं.) : राज्यासन।

मङ्गलसुपिन (नपुं.) : शुभ-स्वप्न, अच्छा स्वप्न।

मङ्गलहत्थी (पु.) : राजकीय हाथी।

मङ्गल-जातक : चूहे द्वारा काट डाले गये कपड़ों को घर में रखना अशुभ समझ ब्राह्मण ने उन्हें श्मशान-भूमि में फिंकवाना चाहा (८७)।

मङ्गुर : (पु.) नदी की मछली-विशेष; (वि.) पीत-वर्ण, पीले रंग का।

मच्च (पु.) : मर्त्य, आदमी, मनुष्य।

मच्चु (पु.) : मृत्यु, मौत।

मच्चुतर (वि.) : मृत्युंजयी।

मच्चुधेय्य (नपुं.) : मृत्यु-क्षेत्र।

मच्चुपरायण (वि.) : मरणाधीन।

मच्चुपास (पु.) : मृत्यु-पाश।

मच्चुमुख (नपुं.) : मृत्यु-मुख।

मच्चुराज (पु.) : मृत्यु-राज।

मच्चुवस (पु.) : मृत्यु का सामर्थ्य।

मच्चुहायी (वि.) : मृत्यु को जीतने वाला।

मच्छ (पु.) : मछली।

मच्छगुम्ब (पु.) : मछलियों का झुंड।

मच्छण्ड (नपुं.) : मछली का अंडा।

मच्छण्डी (स्त्री.) : गुड़, शक्कर आदि की तरह गन्ने से बनी हुई एक वस्तु, जो मछली के अंडे समान दिखती है।

मच्छमंस (नपुं.) : मत्स्य और मांस, मांस-मछली।

मच्छबन्ध (पु.) : मछुवा।

मच्छ-जातक : मछुआरे ने पकड़ी हुई मछली को पुरोहित ने मुक्त किया (३४)।

मच्छ-जातक : मछली की सत्य-क्रिया से वर्षा हुई (७५)।

मच्छ-जातक : उक्त कथा (३४) से मिलती-जुलती है (२१६)।

मच्छेर / मच्छरिय (नपुं.) : मात्सर्य, कंजूसी।

मच्छरायति (क्रि.) : कंजूसी करता है।

मच्छरी (पु.) : कंजूस।

मच्छा : सोलह जनपदों में से एक जनपद मत्स्य के वासी।

मच्छिक (पु.) : मछलीमार।

मच्छी (स्त्री.) : मछली।

मच्छुद्दान-जातक : मछली के पेट में से रुपयों की थैली वापिस मिली (२८८)।

मज्ज (नपुं.) : मद्य, शराब।

मज्जति (क्रि.) : माँजता है, साफ करता है; नशा करता है।

मज्जना (स्त्री.) : माँजना, घसना।

मज्जप / मज्जपायी (वि.) : मद्यप, शराबी।

मज्जपान (नपुं.), शराब पीना।

मज्जविक्कयी (पु.) : मद्य-विक्रेता, शराब बेचने वाला।

मज्जार (पु.) : मार्जार, बिल्ला।

मज्जारी (स्त्री.) : मार्जारी, बिल्ली।

मज्झ : (पु.) मध्य-भाग; (वि.) बीच का।

मज्झट्ठ / मज्झत्त (वि.) : मध्यस्थ, पक्षपात-रहित।

मज्झण्ह (पु.) : मध्यान्ह।

मज्झत्तता (स्त्री.) : मध्यस्थता, पक्षपात न करना।

मज्झदेस (पु.) : मध्य-देश।

मज्झन्तिक / मज्झन्तिकसमय (पु.) : मध्यान्ह, दोपहर।

मज्झन्तिक (थेर) : अशोक-पुत्र महेन्द्र स्थविर को उपसम्पदा देने वाले महास्थविर। बाद में वे धर्म-प्रचारार्थ काश्मीर-गन्धार की ओर गये।

मज्झिम (वि.) : मध्यम, केन्द्रीय।

मज्झिमदेस : मध्य मण्डल, जिसकी पूर्वी सीमा वर्तमान कंकजोल मानी जा सकती है, जिसके मध्य में वर्तमान सिलई नदी थी, जिसके दक्षिण भाग में हजारी बाग जिले का सेतकण्णिक नाम का कोई कस्बा रहा, जिसकी पश्चिमी सीमा हरियाणा प्रदेश के कर्नाल जिले का थानेसर नाम का कस्बा था और जिसकी उत्तरी सीमा उशीरध्वज नाम का हिमालय का कोई पर्वत-भाग रही।

मज्झिमनिकाय : सुत्त पिटक के पाँच निकायों में से मध्यमाकार के सुत्तों का संग्रह।

मज्झिमपुरिस (पु.) : मध्याकार का आदमी, मध्यम-पुरुष।

मज्झिमयाम (पु.) : अर्ध-रात्रि, मध्य-रात्री।

मज्झिमवय (पु.) : प्रौढ।

मञ्च (पु.) : चारपाई।

मञ्चक (पु.) : छोटी चारपाई।

मञ्चपरायण (वि.) : चारपाई पर पड़ा।

मञ्चपीठ (नपुं.) : चारपाई तथा कुर्सी आदि।

मञ्चवान (नपुं.) : चारपाई का बुनना।

मञ्जरी (स्त्री.) : गुच्छा।

मञ्जिट्ठ / मञ्जेट्ठ (वि.) : मजीठिया रंग।

मञ्जिट्ठा (स्त्री.) : वृक्ष-विशेष।

मञ्जिर (नपुं.) : पांव का आभरण, पांव का गहना।

मञ्जु (वि.) : आकर्षक, प्रियकर।

मञ्जुभाणक (वि.) : प्रियंवद।

मञ्जुस्सर (वि.) : प्रियभाणी।

मञ्जूसक (पु.) : देवताओं का वृक्ष।

मञ्जूसा (स्त्री.) : पेटी।

मञ्जेट्ठी (स्त्री.) : मजीठ (लता)।

मञ्ञति (क्रि.) : कल्पना करता है, संकल्प करता है, विचार करता है।

मञ्ञना (स्त्री.) : मान्यता, कल्पना।

मञ्ञित (नपुं) : मान्य, कल्पित।

मञ्ञे (अ.) : मैं मानता / सोचता हूँ।

मट्ट (वि.) : चिकना, घिसा हुआ, पालिश किया हुआ।

मट्टसाटक (नपुं.) : चिकना वस्त्र।

मट्ठ (वि.) : चिकना, घिसा हुआ, नशा किया हुआ।

मट्ठकुण्डलि-जातक : ब्राह्मण के पुत्रशोक से मुक्त होने की कथा (४४९)।

मणि (पु.) : मणि, जवाहिर।

मणिक (पु.) : बड़ा बर्तन, घड़ा।

मणिकुण्डल (नपुं.) : मणियों की बाली।

मणिक्खन्ध (पु.) : बड़ी भारी मूल्यवान मणि।

मणिपल्लङ्क (पु.) : मणि-जड़ा सिंहासन।

मणिबन्ध (पु.) : कलाई।

मणिमय (पु.) : मणि-निर्मित।

मणिरतन (नपुं.) : मूल्यवान मणि।

मणिवण्ण (वि.) : मणि के रंग का।

मणिसप्प (पु.) : मणि वाला सर्प ।

मणिकण्ठ-जातक : मणिकंठ नाम के सर्प से उसकी मणि मांगने पर सर्प ने तपस्वी को हैरान करना छोड़ दिया (२५३)।

मणिकुण्डल-जातक : राजा ने अपना रनिवास दूषित करनेवाले मंत्री को देश से निकाल बाहर किया (३५१)।

मणिचोर-जातक : राजा ने अपनी मणि गृहस्थ की गाड़ी में छिपाकर, उसे चोर घोषित कराकर, उसकी सुन्दर पत्नी को हथियाना चाहा (१९४)।

मणिसूकर-जातक : सूअरों ने मणि को जितना ही रगड़ा, उतनी ही वह अधिकाधिक चमकी (२८५)।

मण्ड : (पु.) माँड; (वि.) अति स्पष्ट।

मण्डन (नपुं.) : सजावट।

मण्डनजातिक (वि.) : सजावट-प्रिय।

मण्डप (पु.) : मंडप, तंबू।

मण्डल (नपुं.) : घेरा, गोल वेदिका।

मण्डलमाल (पु.) : गोलाकार मंडप।

मण्डलिक (वि.) : प्रदेश (मंडल), से संबंधित।

मण्डलिस्सर (पु.) : मंडल का शासक।

मण्डली (वि.) : मंडल वाला।

मण्डित (वि.) : सजाया हुआ, सुसज्जित।

मण्डुक (पु.) : मेंढक।

मण्डेति (क्रि.) : सजाता है।

मत (वि.) / मतक (पु.) : मृत, मृतक, मरा हुआ।

मतकभत्त (नपुं.) : मृत व्यक्ति के संबंधियों द्वारा दिया जानेवाला दान, श्राद्ध।

मतकवत्थ (नपुं.) : मृत व्यक्ति के संबंधियों द्वारा दान दिया गया वस्त्र।

मतकभत्त-जातक : श्राद्ध करने के इच्छुक ब्राह्मण ने बकरी की बलि देने से पूर्व अपने शिष्यों से कहा कि उसे नहला लाओ (१८)।

मतरोदन-जातक : भाई तथा पिता के मरने पर भी अनित्यता का स्मरण कर बोधिसत्त्व ने एक भी आँसू नहीं गिराया (३१७)।

मतकिच्च (नपुं.) : मृत व्यक्ति के संबंध में करणीय।

मति (स्त्री.) : बुद्धी, मति।

मतिमन्तु (वि.) : बुद्धिमान।

मतिविप्पहीन (वि.) : मूर्ख।

मत्त : (वि.) नशे में चूर, (समास में) मात्रा, मात्र।

मत्तहत्थी (पु.) : नशे में चूर हाथी।

मत्तञ्ञू (वि.) : मात्रज्ञ, मात्रा का जानकार।

मत्तञ्ञुता (स्त्री.) : मात्रज्ञ होना।

मत्ता (स्त्री.) : मात्रा।

मत्तिका (नपुं.) : मृत्तिका, मिट्टी।

मत्तिकापिण्ड (पु.) : मिट्टी का पिंड।

मत्तिकाभाजन (नपुं.) : मिट्टी का बर्तन।

मत्तिघ (पु.) : मातृहत्या।

मत्तेय्य (वि.) : माता की सेवा / आदर करने वाला।

मत्तेय्यता (स्त्री.) : मातृ-भक्ति।

मत्थक (पु.) : मस्तक, शिखर।

मत्थलुङ्ग (नपुं.) : दिमाग।

मत्थु (नपुं.) : दही से पृथक मथा हुआ जल।

मथति (क्रि.) : मथता है।

मथन (नपुं.) : मथना।

मद (पु.) : अहंकार।

मदन : (पु.) कामदेव; (नपुं.) नशा।

मदनीय (वि.) : नशीला।

मदिरा (स्त्री.) : सुरा, धान्य-निर्मित शराब।

मद्दति (क्रि.) : मर्दन करता है, दबाता है, निचोड़ता है, रौंदता है।

मद्दन (नपुं.) : मर्दन करना, रौंदना।

मद्दव : (नपुं.) मार्दव, कोमलता; (वि.) कोमल।

मद्दित (वि.) : मर्दन किया गया, रौंदा गया।

मधु (नपुं.) : मधु, मशहद, सुरा।

मधुक (पु.) : वह पेड़ जिससे मधु तैयार होती है।

मधुकर / **मधुब्बत** (पु.) : शहद की मक्खी।

मधुका (स्त्री.) : मुलहटी, औषधि-विशेष।

मधुगण्ड / **मधुपटल** (पु.) : शहद का छत्ता।

मधुप (पु.) : भ्रमर, भौरा।

मधुपिण्डिका (स्त्री.) : शहद-पिंड।

मधुमक्खित (वि.) : शहद से माखा हुआ।

मधुमेह (पु.) : मधु-मेह, बहुमूत्र रोग।

मधुर : (वि.) मीठा; (नपुं.) मीठी चीज।

मधुरकजात (वि.) : मदहोश।

मधुरत्त (नपुं.) / मधुरता (स्त्री.) : मधुरता, मिठास।

मधुरस्सर : (पु.) मधुर स्वर, (वि.) मधुर-भाषी।

मधुलट्ठिका (स्त्री.) : मुलहठी।

मधुलाज (पु.) : शहद-मिश्रित खील।

मधुस्सव (वि.) : शहद से चूता हुआ।

मध्वासव (पु.) : सुरा।

मन (पु., नपुं.) : मन।

मनं (अ.) : लगभग।

मनक्कार / **मनसिकार** (पु.) : मनोसंकल्प, विचार।

मनता (स्त्री.) : मनो-भाव, (**अत्तमनता** = आनन्दपूर्ण मनोभाव)।

मनन (नपुं.) : सोचना, चिंतन करना।

मनसिकरोति (क्रि.) : मन में रखता है, चिंतन करता है।

मनाप / **मनापिक** (वि.) : मनोनुकूल, आकर्षक, मनभावन।

मनुज (पु.) : मनुष्य।

मनुजाधिप / **मनुजिन्द** (पु.) : नरेन्द्र, राजा।

मनुञ्ञ (वि.) : मनोज्ञ, सुंदर।

मनुस्स (पु.) : मनुष्य।

मनुस्सत्त (नपुं.) : मनुष्यत्व।

मनुस्सभाव (पुं.) : मनुष्य-भाव।

मनुस्सभूत (वि.) : जो आदमी होकर उत्पन्न हुआ।

मनुस्सलोक (पु.) : मनुष्य-लोक।

मनेसिका (स्त्री.) : दूसरे के विचारों का ज्ञान।

मनो (समास में) : मन।

मनोकम्म (नपुं.) : मानसिक कर्म।

मनोजव (वि.) : मन के समान तीव्र गति।

मनोदुच्चरित (नपुं.) : मानसिक दुष्कर्म।

मनोद्वार (नपुं.) : मन रूपी द्वार (इन्द्रिय)।

मनोधातु (स्त्री.) : चित्त।

मनोपदोस (प.) : द्वेष।

मनोपसाद (पु.) : भक्ति।

मनोपुब्बङ्गम (वि.) : जिसका पूर्वगामी मन हो।

मनोमय (वि.) : मन से उत्पन्न।

मनोरथ (पु.) : इच्छा, संकल्प।

मनोरम (वि.) : आनंददायक।

मनोविञ्ञाण (नपुं.) : मनोविज्ञान।

मनोविञ्ञेय्य (वि.) : मन के द्वारा जानने योग्य।

मनोवितक्क (प.) : विचार।

मनोसिला (स्त्री.) : संखिया।

मनोहर (वि.) : सुंदर, आकर्षक।

मनोज-जातक : मनोज ने राजकीय अश्वों पर आक्रमण किया। राजा के धनुर्धारियों द्वारा मारा गया (३९७)।

मन्त (नपुं.) : मंत्र।

मन्तज्झायक (वि.) : मंत्रों का अध्ययन करने वाला।

मन्तधर (वि.) : मंत्रों का जानकार।

मन्तन (नपुं.) / **मन्तना** (स्त्री.) : मंत्रणा, विचार-विमर्श।

मन्ती (पु.) : मंत्री।

मन्तिणी (स्त्री.) : मंत्रिणी।

मन्तु (पु.) : कल्पना करने वाला।

मन्तेति (क्रि.) : मंत्रणा करता है, विचार-विमर्श करता है।

मन्थ (पु.) : मथानी, च्युड़ा।

मन्थर (पु.) : कछुवा।

मन्द (वि.) : मंद(बुद्धि), आलसी।

मन्दत्त (नपुं.) / **मन्दता** (स्त्री.) : मन्द-भाव, मूर्खता, जड़ता।

मन्दं / **मन्दमन्दं** (क्रि.वि.) : धीरे-धीरे।

मन्दाकिनी (स्त्री.) : झील तथा नदी का नाम।

मन्दामुखी (स्त्री.) : अंगीठी।

मन्दार (पु.) : पर्वत-विशेष।

मन्दिय (नपुं.) : मूर्खता, आलस्य।

मन्दिर (नपुं.) : भवन, महल।

मन्धातु-जातक : मन्धाता नरेश की कथा (२५८)।

ममङ्कार (पु.) / ममत्त (नपुं.) : ममत्व, आसक्ति।

ममायना (स्त्री.) : स्वार्थपरता, आसक्ति।

ममायति (क्रि.) : आसक्त होता है।

मम्म / **मम्मट्ठान** (नपुं.) : मर्म-स्थान।

मम्मच्छेदक (वि.) : मर्म-स्थान को चोट पहुंचाने वाला।

मम्मन (वि.) : हकलाने वाला।

मयं (सर्व.) : हम।

मयूख (पु.) : प्रकाश की किरण।

मयूर (पु.) : मोर।

मय्हक-जातक : भाई ने भतीजे को नदी में डुबाकर मार डाला (३९०)।

मरण (नपुं.) : मृत्यु, मौत।

मरणकाल (पु.) : मरने का समय।

मरणचेतना (स्त्री.) : मार डालने का इरादा।

मरणधम्म (वि.) : मरण-स्वभाव, मृत्यु को प्राप्त होने के स्वभाव वाला।

मरणन्त / **मरणपरियोसान** (वि.) : जिसका अंत मृत्यु हो।

मरणभय (नपुं.) : मृत्यु का भय।

मरणमञ्चक (पु.) : जिस चारपाई पर किसी की मृत्यु हुई हो या होनेवाली हो।

मरणमुख (नपुं.) : मृत्यु का मुँह।

मरणसति (स्त्री.) : मरणानुस्मृति, मृत्यु का स्मरण।

मरणसमय (पु.) : मृत्यु का समय।

मरति (क्रि.) : मरता है।

मरिच (नपुं.) : मिर्च।

मरियादा (स्त्री.) : सीमा, नियम।

मरीचि (स्त्री.) : प्रकाश किरण।

मरीचिका (स्त्री.) : मृगतृष्णा, मृगजल।

मरीचिधम्म (वि.) : मृगतृष्णा सदृश।

मरु : (स्त्री.) बालू, कान्तार; (पु.) देवता।

मरुम्ब (नपुं.) : बिलौर।

मल (नपुं.) : मैल, मैला।

मलतर (वि.) : अधिक मैला।

मलय (पु.) : मलय पर्वत।

मलयज (पु.) : चन्दन।

मलिन / मलिनक (वि.) : धब्बेदार, मैला।

मल्ल (पु.) : पहलवान, मल्ल जाति से संबंधित।

मल्लक (पु.) : बर्तन, थैला।

मल्लयुद्ध (नपुं.) : कुश्ती।

मल्लिका (स्त्री.) : चमेली।

मसारगल्ल (नपुं.) : बहुमूल्य पत्थर-विशेष।

मसि (पु.) : कालिख।

मस्सु (नपुं.) : दाढी।

मस्सुक (वि.) : दाढीवाला।

मस्सुकम्म / मस्सुकरण (नपुं.) : हजामत।

मह (पु.) : धार्मिक उत्सव।

महग्गत (वि.) : बहुत ऊँचा, श्रेष्ठ।

महग्घ (वि.) : अत्यन्त मूल्यवान।

महग्घता (स्त्री.) : कीमतीपन।

महग्घस (वि.) : बहुत खाने वाला, भुक्खड़।

महण्णव (पु.) : विशाल समुद्र।

महति (क्रि.) : आदर करता है, गौरव करता है।

महत्त (नपुं.) : महत्त्व, महानता।

महद्धन (वि.) : अत्यंत धनवान।

महनीय (वि.) : आदरणीय।

महन्त (वि.) : महान, बड़ा।

महप्फल (वि.) : महान फल वाला।

महब्बल : (वि.) महान बलशाली; (नपुं.) बड़ी भारी सेना।

महब्भय (नपुं.) : भयंकर भय।

महल्लक (वि.) बूढा, बूढा आदमी।

महल्लकतर (वि.) : वृद्धतर।

महल्लिका (स्त्री.) : वृद्धा स्त्री।

महा : महान; समास पदों में 'महन्त' का 'महा' हो जाता है, और अधिकतर अंतिम 'आ' का ऱ्हस्व स्वर 'अ' में परिवर्तन होता है।

महाअस्सारोह-जातक : युद्ध में हारकर राजा घोड़े पर चढकर भाग गया (३०२)।

महाउक्कुस-जातक : मित्रों ने मित्र की सहायता की (४८६)।

महाउपासक (पु.) : बुद्ध का श्रेष्ठ उपासक।

महाउपासिका (स्त्री.) : बुद्ध की श्रेष्ठ उपासिका।

महाउम्मग्ग-जातक : महोषध पंडित के पाण्डित्य की कथाएँ (५४६)।

महाकण्ह-जातक : शक्र (इंद्र) ने महाकण्ह नाम के अपने कुत्ते को साथ ले दुराचारी मनुष्यों को बुरी तरह भयभीत किया (४६९)।

महाकपि-जातक : बंदर ने नदी पर अपने शरीर का पुल बना, अपनी सारी जाति को अपने शरीर पर से गुजरने देकर यथार्थ नेता का धर्म निभाया (४०७)।

महाकपि-जातक : कृतघ्न आदमी ने बंदर का सिर फोड़ दिया। परहितकामी बंदर ने ऐसे आदमी की भी जान बचाई (५१६)।

महाकरुणा (स्त्री.) : महान दया।

महाकस्सप थेर : भगवान बुद्ध के प्रधान के प्रधान शिष्यों में से एक प्रमुख शिष्य।

महाकाय (वि.), बड़े शरीर वाला।

महागण (पु.) : बड़ी मंडली, बड़ा समूह।

महागणी (पु.) : जिसके अनेक अनुयायी हो।

महाजन (पु.) : जनता।

महाजनक-जातक : मिथिला के महाजनक नाम के राजा के दो पुत्रों के संघर्ष की कथा (५३९)।

महाजनकाय (पु.) : लोगों का बहुत बड़ा समुदाय।

महाजनपद : अनेक स्थलों पर नामांकित सोलह जनपद (राज्य)। वे थे कासी, कोसल, अंग, मगध, वज्जि, मल्ल, चेतिय, वंस, कुरु, पंचाल, मच्छ, सूरसेन, अस्सक, अवंती, गंधार तथा कंबोज । इनमें से प्रथम चौदह मज्झिमदेस (मध्य-मंडल) में हैं, अंत के दो उत्तरापथ में।

महातण्ह (वि.) : बहुत लोभी।

महातल (नपुं.) : भवन के ऊपर की खुली छत।

महाधन (नपुं.) : विशाल धन।

महाधम्मपाल-जातक : चिरंजीवी होने का रहस्य (४४७)।

महाधम्मरक्खित थेर : तृतीय संगीति के बाद अशोक और मोग्गलिपुत्त तिस्स स्थविर द्वारा में भेजे गये धर्म प्रचारक महास्थविर।

महानरक (पु.) : भयानक नरक।

महानस (नपुं.) : रसोई घर।

महानारदकस्सप-जातक : नारद कस्सप ब्रह्मा ने अंगति नरेश को परलोक का विश्वास दिलाया (५४४)।

महानुभाव (वि.) : महान प्रतापी, मान्यवर।

महानेरू / महामेरू : सुमेरू पर्वत का ही एक ओर नाम।

महापजापति गोतमी : सिद्धार्थ गौतम की मौसी का नाम, सिद्धार्थ गौतम की माता महामाया का देहांत होने पर मौसी महापजापति गौतमी ने ही सिद्धार्थ को दूध पिलाकर पाला था। भिक्षुणी-संघ की स्थापना का सारा श्रेय महापजापति गौतमी को ही है।

महापञ्ञ (वि.) : अत्यंत प्रज्ञावान।

महापथ / **महामग्ग** (पु.) : महामार्ग।

महापदुम-जातक : विमाता ने पुत्र पर झूठा लांछन लगाया (४७२)।

महापनाद-जातक : इसकी कथा सुरूचि जातक में आई है (२६४)।

महापलोभन-जातक : इसकी कथा **चुल्लपलोभन-जातक** के ही समान है (५०७)।

महापिङ्गल-जातक : दुष्ट महापिङ्गल नरेश के मरने पर उसकी प्रजा ने खुशियाँ मनाई (२४०)।

महापितु (पु.) : पिता का बड़ा भाई, ताया, ताऊ।

महापुरिस (पु.) : महापुरुष।

महाबोधि-जातक : राजा ने बोधि की न्याय-प्रियता के कारण उसे न्यायाधीश नियुक्त किया (५२८)।

महाभूत (नपुं.) : पृथ्वी, जल, आदि चार महाभूत।

महाभोग (वि.) : ऐश्वर्यशाली।

महामङ्गल-जातक : शकुनों की व्याख्या। वास्तविक महामङ्गल कौन-कौनसे है (४५३)।

महामच्च / **महामत्त** (पु.) : मुख्यमंत्री, प्रधानमंत्री।

महामति (पु.) : महान बुद्धिमान।

महामाया / **माया** : सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) की माता। उसका पिता था देवदह का अञ्जन शाक्य और उसकी माता थी जयसेन की लडकी यशोधरा।

महामुनि (पु.) : महान मुनि, भगवान बुद्ध।

महामेघ (पु.) : वर्षा की तेज बौछाड़।

महामोग्गल्लान थेर : भगवान बुद्ध के दो प्रधान शिष्यों में से एक।

महायञ्ञ / महायाग (पु.) : महान यज्ञ।

महायस (वि.) : महान यशस्वी।

महारक्खित थेर : तीसरी संगीति के अनंतर यवन-देश में धम्म-प्रचारार्थ जाने वाले महास्थविर।

महारट्ठ : तीसरी संगीति के अनंतर महाधम्मरक्खित महारट्ठ (महाराष्ट्र) में ही धम्म-प्रचारार्थ गये।

महारह (वि.) : अत्यंत मूल्यवान।

महाराज (पु.) : महान नरेश, महान राजा।

महालतापसाधन (नपुं.) : स्त्रियों के श्रृंगार में सहायक होने वाली लता।

महावंस : सिंहल द्वीप का प्रसिद्ध ऐतिहासिक महाकाव्य। इसके प्रथम खंड की रचना चौथी शताब्दी में महानाम स्थविर के द्वारा हुई। उसके बाद से इसके उत्तर-कालीन खंडों की भी रचना बराबर होती रही।

महावग्ग : विनय पिटक के पांच ग्रंथों में से एक, जो आगे खन्धकों में विभक्त है।

महावाणिज-जातक : वट वृक्ष की एक शाखा से व्यापारियों को पानी मिला, दूसरी से भोजन, तीसरी से सुंदर लडकियाँ और चौथी से अनेक दूसरी मूल्यवान वस्तुएँ (४९३)।

महाविहार : अनुराधपुर (सिंहल द्वीप) का प्रसिद्ध विहार। शताब्दियों तक यही बौद्ध धर्म का प्रधान केंद्र बना रहा।

महावेस्सन्तर-जातक : देखो **वेस्सन्तर-जातक**।

महासङ्घिक : द्वितीय संगीति के ही समय स्थविरवाद से पृथक हो जाने वाला एक बौद्ध पंथ।

महासत्त (पु.) : महान सत्त्व, महान प्राणी।

महासमुद्द (पु.) : महासमुद्र।

महासर (नपुं.) : बड़ी झील।

महासार / महासाल (पु.) : विशाल धन का स्वामी।

महासार-जातक : एक बंदरी रानी की मोतियों की माला उठा ले गई (९२)।

महासावक (नपुं.) : महाश्रावक, महान शिष्य।

महासीलव-जातक : मंत्री ने राजा के रनिवास को दूषित किया। राजा ने उसे देश-निकाला दे दिया (५१)।

महासुक-जातक : गूलर के वृक्ष के फल रहित हो जाने पर भी तोते ने उसका परित्याग नहीं किया (४२९)।

महासुतसोम-जातक : मनुष्य मांस भोजी राजा की कथा (५३७)।

महासुदस्सन-जातक : महासुदस्सन की मृत्यु का वृत्तांत (९५)।

महासुपिन-जातक : कोसल नरेश प्रसेनजित द्वारा देखे गये सोलह महान स्वप्नों की व्याख्या (७७)।

महाहंस-जातक : रानी की बलवती इच्छा हुई कि स्वर्ण-वर्ण राजहंस उसे सिंहासन पर बैठ धर्मोपदेश दे (५३४)।

महिंसासक : स्थविरवाद से पृथक हो जाने वाला एक और बौद्ध पंथ ।

महिका (स्त्री.) : धुंध।

महिच्छ (वि.) : अत्यंत लोभी।

महिच्छता (स्त्री.) : अत्यधिक लोभ।

महित (वि.) : पूजित।

महिद्धिक (वि.) : महा-ऋद्धिवान।

महिन्द (पु.) : महान इंद्र; भिक्षुणी संघमित्रा के भाई तथा महाराज अशोक के सुपुत्र, जो महामोग्गलिपुत्त तिस्स की प्रेरणा से धम्म-प्रचारार्थ सिंहल पहुंचे थे।

महिला (स्त्री) : स्त्री।

महिलामुख-जातक : महिलामुख नामक राजकीय हाथी की कथा (२६)।

महिस (पु.) : भैंसा।

महिस-जातक : भैंसे ने बंदर द्वारा की गई सभी शरारतों को सहन किया। वह बंदर एक दूसरे भैंसे द्वारा मारा गया (२७८)।

महिसमण्डल : महादेव स्थविर का धर्म प्रचार क्षेत्र, वर्तमान मैसूर।

महिस्सर (पु.) : महेश्वर, महादेव।

मही (स्त्री.) : पृथ्वी, नदी-विशेष।

महीतल (नपुं.) : जमीन की सतह।

महीधर (पु.) : पर्वत।

महीपति / **महीपाल** (पु.) : राजा।

महीरूह (पु.) : वृक्ष, पेड़।

महेसक्ख (वि.) : महाप्रतापशाली।

महेसि (पु.) : महर्षि।

महेसी (स्त्री.) : रानी।

महोघ (पु.) : भयंकर बाढ़।

महोदधि (वि.) : समुद्र, सागर, महासागर ।

महोदर (वि.) : बडे पेट वाला।

महोरग (पु.) : सांपों (नागों) का राजा।

महोसध (नपुं.) : सोंठ, सूखा अदरक।

मा (अ.) : निषेधार्थक, मत, नहीं; (पु.) चांद।

मागध / **मागधक** (वि.) : मगध संबंधी।

मागधी (स्त्री.) : मगध की भाषा, पालि भाषा का प्रारंभिक नाम।

मागविक (पु.) : शिकारी।

मागसिर (पु.) : मार्गशीर्ष महीना।

माघ (पु.) : महीना-विशेष।

माघात (पु.) : हत्या से विरत रहने की आज्ञा।

माणव / **माणवक** (पु.) : तरुण, ब्रह्मचारी, छात्र।

माणविका / **माणवी** (स्त्री.) : तरुणी, ब्रहमचारिणी, छात्रा।

मातङ्ग (पु.) : हाथी का नाम, नीची मानी जाने वाली जाति।

मातली : इंद्र के सारथी का नाम।

मातापितु (पु.) : माता-पिता।

मातापेत्तिक (वि.) : माता-पिता से आगत।

मातापेत्तिभर (वि.) : माता-पिता की सेवा / भरण-पोषण करने वाला।

मातामह (पु.) : नाना।

मातामही (स्त्री.) : नानी।

मातिक (वि.) : माता संबंधी।

मातिका (स्त्री.) : जल-मार्ग; अनुक्रमणिका, पातिमोक्ख नियमावलि।

मातिपक्ख (पु.) : मातृपक्ष।

मातु (स्त्री.) : माता, माँ।

मातुकुच्छि (पु.) : माता की कोख।

मातुगाम (पु.) : नारी, महिला।

मातुघात (पु.) : मातृ-हत्या।

मातुघातक (पु.) : मातृ-हत्यारा।

मातुच्छा / **मातुभगिनी** (स्त्री.) : मौसी।

मातुपट्ठान (नपुं.) : माता की सेवा।

मातुपोसक (वि.) : माता का पोषक, माता की सेवा करने वाला।

मातुपोसक-जातक : हाथी ने अपनी अंधी माता की सेवा की (४५५)।

मातुल (पु.) : मामा।

मातुलानी (स्त्री.) : मामी।

मातुलुङ्ग (पु.) : चकोतरा।

मादिस (वि.) : मेरे जैसा।

मान : (नपुं) माप; (पु.) अहंकार।

मानकूट (पु.) : खोटा माप।

मानत्थद्ध (वि.) : अहंकार से जडीभूत ।

मानद (वि.) : गौरवार्ह, आदरणीय।

मानन (नपुं.) : आदर करना, सम्मान करना ।

मानव (पु.) : मनुष्य, मानव।

मानस : (नपुं.) मन, चित्त, विज्ञान; (समास में) संकल्प लिये हुए।

मानित (वि.) : सम्मानित।

मानी (पु.) : अभिमानी।

मानुस (वि.) : मनुष्य संबंधी, (पु.), मनुष्य ।

मानुसक (वि.) : मनुष्य संबंधी।

मानुसी (स्त्री.) : मानुषी, स्त्री।

मानेति (क्रि.) : आदर करता है, सन्मान करता है, सत्कार करता है।

मापक (पु.) : रचयिता, निर्माण करने वाला।

मापित (वि.) : रचित, निर्मित।

मापेति (क्रि.), निर्माण करता है।

मामक (वि.) : श्रद्धावान, प्रेमी, ममत्वयुक्त।

माया (स्त्री.) : ठगी, जादू।

मायाकार (पु.) : जादूगर।

मायावी (वि.) : माया करने वाला, ढोंगी, जादूगर।

मायु (पु.) : पित्त।

मार (पु.) : चित्त की अकुशल वृत्तियों की मूर्ति, लुभाने वाला, मृत्यु-लोक का अधिपति।

मारक (वि.) : मारने वाला।

मारकायिक (वि.) : मार-लोक संबंधी।

मारण (नपुं.) : मार डालना।

मारधेय्य (नपुं.) : मार का क्षेत्र।

मारबंधन (नपुं.) : मृत्यु का बंधन।

मारसेना (स्त्री.) : मार की सेना, विकार।

मारापित (वि.) : मरवाया गया।

मारापेति (क्रि.) : मरवाता है।

मारित (वि.) : मारा गया ।

मारिस (वि.) : संबोधन-विशेष, मित्र, मान्यवर!

मारुत / मालुत (पु.) : हवा।

मारेति (क्रि.) : मारता है।

मारेतु (पु.) : मारने वाला।

माल / मालक (पु.) : घेरेदार जगह, गोल आँगन।

मालती (स्त्री.) : मालती-लता।

माला (स्त्री.) : (फूलों की) माला।

मालाकम्म (नपुं.) : माला गूंथने का काम, दीवार पर उत्कीर्ण फूल।

मालाकार (पु.), माली।

मालागच्छ (पु.) : फूल देने वाला पौधा।

मालागुण / **मालाचुम्बटक** / **मालादाम** (पु.) : फूलों की माला / गजरा।

मालागुळ (नपुं.) : फूलों का ढेर।

मालाधर / **मालाधारी** (वि.) : मालाधारी।

मालापुट (पु.) : फूलों का दोना।

मालावच्छ (नपुं.) : पुष्पोद्यान, पुष्पशैया।

मालिक / **माली** (वि.) : जिसके पास मालाएं हो।

मालिनी (स्त्री.) : मालाधारिणी।

मालुत-जातक : तपस्वी ने निर्णय दिया कि जब कभी भी हवा चलती है, तब अधिक ठंड पडती है (१७)।

मालुवा (स्त्री.) : आकाश-बेल।

मालूर (पु.) : वृक्ष-विशेष।

माल्य (नपुं.) : पुष्प-माला।

मास (पु.) : महीना, माश की दाल।

मासक (पु.) : मासा (सिक्का)।

मासिक / **मासिय** (वि.) : माहवार, महीने से संबंधित।

माळ (पु.) : एक तल्ले वाला मकान।

माळक (नपुं.) : टांड़, अलमारी।

मिग (पु.) : पशु, चौपाया, हिरण।

मिगचापक / **मिगपोतक** (पु.) : हिरण का बच्चा।

मिगतण्हिका (स्त्री.) : मृगतृष्णा।

मिगदाय (पु.) : मृगोद्यान।

मिगमद (पु.) : कस्तुरी।

मिगमातुका (स्त्री.) : मृग-विशेष।

मिगलुद्दक (पु.) : शिकारी।

मिगपोतक-जातक : तपस्वी ने बडे स्नेह से हिरण के बच्चे का पालन-पोषण किया। उसके मरने पर तपस्वी बहुत संतप्त हुआ (३७२)।

मिगव (नपुं.) : शिकार।

मिगारमातुपासाद : श्रावस्ती के पूर्व के पूर्वाराम में विसाखा मिगारमाता द्वारा बनवाये गये विहार का नाम।

मिगालोप-जातक : मिगालोप ने अपने पिता गृध्र का कहना न मान जान गँवाई (३८१)।

मिगिन्द (पु.) : पशुओं का राजा, सिंह।

मिगी (स्त्री.) : हरिणी।

मिच्छत्त (नपुं.) : मिथ्यात्व, झूठापन।

मिच्छा (अ.) : मिथ्या, झूठ, असत्य।

मिच्छाकम्मन्त (पु.) : मिथ्याचरण, दुराचरण।

मिच्छागहण (नपुं.) : गलत समझ।

मिच्छाचार (पु.) : कदाचार, मिथ्याचरण।

मिच्छाचारी (वि.) : कदाचारी, दुराचारी।

मिच्छादिट्ठि : (स्त्री.) मिथ्यादृष्टि; (वि.) मिथ्या-मतधारी।

मिच्छापणिहित (वि.) : गलत और झुका हुआ।

मिच्छावाचा (स्त्री.) : मिथ्या वाणी।

मिच्छावायाम (पु.) : मिथ्या प्रयत्न।

मिच्छासङ्कप्प (पु.) : मिथ्या संकल्प।

मिञ्ज (नपुं.) / मिञ्जा (स्त्री.) : मज्जा।

मिणन (नपुं.) : माप, मापना।

मिणाति / **मिनाति** (क्रि.) : मापता है, तोलता है।

मित (वि.) : मापा गया, तोला गया।

मितभाणी (पु.) : संयत-भाषी।

मितचिन्ती-जातक : बहुचिन्ती, अप्पचिन्ती तथा मितचिन्ती मछलियों की कथा (११४)।

मित्त (पु., नपुं.) : मित्र।

मित्तदुब्भि / **मित्तदूभी** / **मित्तद्दु** (पु.) : मित्र-द्रोही।

मित्तपतिरूपक (वि.) : झूठा मित्र।

मित्तभेद / **मिथुभेद** (पु.) : मैत्री-विच्छेद।

मित्तसन्थव (पु.) : मैत्री-संबंध।

मित्तविन्द-जातक : चतुद्वार-जातक में वर्णित मित्तविन्द जातक कथा का एक अंश (८२)।

मित्तविन्द-जातक : चतुद्वार-जातक का ही एक और अतिरिक्त अंश (१०४)।

मित्तविन्द-जातक : चतुद्वार-जातक का ही और दूसरा अतिरिक्त अंश (३६९)।

मित्तीमित्त-जातक : तपस्वी ने हाथी के बच्चे का पोषण किया। उसने बड़े होने पर तपस्वी को मार डाला (१९७)।

मित्तामित्त-जातक : सच्चे मित्र के लक्षण संबंधी कथा (४७३)।

मिथिला : विदेह जनपद की राजधानी। नेपाल की सीमा के अंदर वर्तमान जनकपुर।

मिथु (अ.) एक के बाद एक, छिप कर ।

मिथुन (नपुं.) : युगल, जोडा।

मिद्ध (नपुं.) : आलस्य।

मिद्धी (वि.) : आलसी।

मिय्यति / **मीयति** (क्रि.) : मरता है।

मिलक्ख (पु.) : बर्बर जाति का।

मिलक्खदेस (पु.) : बर्बर-देश।

मिलात (वि.) : म्लान हुआ।

मिलातता (स्त्री.) : म्लान-भाव, कुम्हलायापन।

मिलायति (क्रि.) : कुम्हलाता है।

मिलिन्द : सागल का राजा मिनाण्डर। उसका जन्म अलसन्दा (अलैक्जैण्ड्रिया), के समीप कलसी में हुआ था। मिलिन्द-पञ्ह में उसी के साथ का नागसेन स्थविर का शास्त्रार्थ दर्ज है।

मिलिन्दपञ्ह : भिक्षु नागसेन तथा राजा मिलिन्द के प्रश्नोत्तरों से समन्वित पालि ग्रंथ।

मिस्स / मिस्सक (वि.) : मिश्रित।

मिस्सेति (क्रि.) : मिश्रित करता है।

मिहित (नपुं.) : मुस्कराहट।

मीन (पु.) : मछली।

मीळ्ह (नपुं.) : गूंह।

मुकुल (नपुं.) : कली।

मुख : (नपुं.) मुंह, चेहरा, प्रवेश द्वार; (वि.) प्रमुख।

मुखतुण्ड (नपुं.) : चोंच।

मुखद्वार (नपुं.) : मुंह।

मुखधोवन (नपुं) : मुंह का धोना, कुल्ला करना।

मुखपुञ्छन (नपुं.) : मुंह पोंछने का वस्त्र।

मुखपूर : (नपुं.) मुंह भरना; (वि.) मुंह भरने वाला।

मुखर (वि.) : वाचाल, अधिक बोलने वाला।

मुखरता (स्त्री.) : वाचालता।

मुखवट्टि (स्त्री.) : किनारा।

मुखवण्ण (पु.) : चेहरे का रंग।

मुखविकार (पु.) : चेहरे का रंग-ढंग।

मुखसङ्कोचन (नपुं.) : चेहरे की विकृति।

मुखसंयत (वि.) : वाणी का संयमी।

मुखाधान (नपुं.) : लगाम।

मुखुल्लोकक (वि.) : किसी के चेहरे की ओर देखने वाला।

मुखोदक (नपुं.) : मुंह धोने का जल।

मुख्य (वि.) : प्रमुख, प्रधान।

मुग्ग (पु.) : मूंग।

मुग्गर (पु.), मुग्दर, गदा।

मुङ्गुस (पु.) : नेवला।

मुचलिन्द : वृक्ष-विशेष, उरूवेल में अजपाल-न्यग्रोध के पास का एक वृक्ष, जिसके नीचे बुद्धत्व प्राप्ति के अनंतर भगवान बुद्ध ने तीसरा सप्ताह बिताया।

मुच्चति (क्रि.) : स्वतंत्र होता है, मुक्त होता है।

मुच्छति (क्रि.) : मूर्छित होता है।

मुच्छन (नपुं.) / **मुच्छना** (स्त्री.) / **मुच्छा** (स्त्री.) : मूर्छा, बेहोशी।

मुञ्चक / **मुञ्चनक** (वि.) : मुक्त करने वाला।

मुञ्चति (क्रि.) : मुक्त करता है, छोड़ता है।

मुञ्चन (नपुं.) : छोडना, मुक्त करना।

मुञ्ज (नपुं.) : मूंज, घास का एक प्रकार।

मुट्ठ (वि.) : विस्मृत।

मुट्ठसच्च (वि.) : विस्मृति।

मुट्ठस्सति (वि.) : भूल जाने वाला।

मुट्ठि (पु., स्त्री.) : मुट्ठी, मूठ।

मुट्ठिक / **मुट्ठिमल्ल** (पु.) : पहलवान, मुक्केबाज।

मुट्ठियुद्ध (नपुं.) : मुक्का-मुक्की।

मुण्ड / **मुण्डक** (वि.) : बाल-रहित, (मुंडित) सिर वाला।

मुण्डच्छद (पु.) : चौडी छत वाला मकान।

मुण्डत्त / **मुण्डिय** (नपुं.) : मुंड-भाव, बाल-रहित होना।

मुण्डेति (क्रि.) : मूंडता है, सिर की हजामत बनाता है।

मुणिक-जातक : मालिक की बेटी के विवाह के अवसर पर बैलों की उपेक्षा कर सूअर को बहुत खिलाया पिलाया गया, उसे मोटा कर उसकी हत्या करने के लिए (३०)।

मुत (नपुं.) : नाक, जीभ तथा स्पर्शेंद्रिय द्वारा होने वाला इंद्रियानुभव।

मुतिङ्ग / **मुदिङ्ग** (पु.) : मृदंग।

मुतिमन्तु (वि.) : समझदार, बुद्धिमान।

मुत्त : (वि.) मुक्त; (नपुं.) मूत्र।

मुत्तकरण (नपुं.) : पेशाब करना।

मुत्तवत्थि (स्त्री.) : मूत्राशय।

मुत्ता (स्त्री.) : मोती।

मुत्ताचार (वि.), शिथिलाचार, मुक्ताचार।

मुत्ताजाल (नपुं.) : मोतियों का जाल।

मुत्तावलि (स्त्री.) : मोतियों की माला।

मुत्ति (स्त्री.) : मुक्ति, स्वतंत्रता।

मुदा (स्त्री.) : प्रसन्नता, आनंद, खुशी।

मुदित (वि.) : प्रसन्न।

मुदितमन (वि.) : प्रसन्न-चित्त।

मुदिता (स्त्री.) : दूसरों की समृद्धि देखकर आनंदित होना।

मुदु / **मुदुक** (वि.) : मृदु, कोमल, मुलायम।

मुदुचित्त (वि.) : मृदु-चित्त, कोमल-चित्त।

मुदुजातिक (वि.) : मृदु-स्वभाव वाला।

मुदुत्त (नपुं.) / **मुदुता** (स्त्री.) : मृदु-भाव, मृदुत्व।

मुदुभूत (वि.) : कोमल, नाजुक।

मुदुलक्खण-जातक : मुदुलक्खण नामक तपस्वी राजा की रानी पर मोहित हो गया (६६)।

मुद्दङ्कन / **मुद्दापन** (नपुं.) : मुद्रण, छपाई।

मुद्दा (स्त्री.) : मुद्रा, संकेत।

मुद्दापक (पु.) : मुद्रक।

मुद्दायन्त (नपुं.) : मुद्रणालय ।

मुद्दपेति (क्रि.) : छापता है, मुद्रित करता है।

मुद्दिका (स्त्री.) : अंगूठी, अंगूर की बेल।

मुद्दिकासव (पु.) : अंगूरी आसव ।

मुद्ध (वि.) : मूढ़, मूर्ख, चकित।

मुद्धज (पु.) : मूर्धा से उत्पन्न अक्षर, बोल।

मुद्धता (स्त्री.) : मूढ़ता, मूर्खता।

मुद्धातुक (वि.) : मूर्ख / मूढ़ स्वभाव वाला।

मुद्धा (पु.) : शीर्ष, शिखर, सिरा।

मुद्धाधिपात (पु.) : सिर का गिरना, सिर का विदारण।

मुद्धाभिसित्त / मुद्धावसित्त (वि.) : राज-तिलक किया हुआ (राजा), अभिषिक्त।

मुधा (अ.) : मुफ्त, बिनामूल्य।

मुनाति (क्रि.) : जानता है।

मुनि (पु.) : मुनि, मनन करने वाला साधु।

मुनिन्द (पु.) : मुनियों में प्रधान (बुद्ध)।

मुय्हति (क्रि.) : भूल जाता है, मन्द-बुद्धि होता है, मोहित होता है।

मुय्हन (नपुं.) : भूल, विस्मृति, मोहित होना।

मुरज (पु.) : चंग या झाँझ।

मुसति (क्रि.) : धोखा करता है, हर लेता है।

मुरमुरायति (क्रि.) : चबाता है, मुर-मुर शब्द करके काट डालता है।

मुसल (पु.) : मूसल, अनाज कूटने का डंडा।

मुसली (वि.) : मूसल वाला।

मुसा (अ.) : मृषा, झूठ।

मुसावाद (पु.) : झूठ बोलना।

मुस्सति (क्रि.) : भूल जाता है, मोहित / भ्रमित होता है।

मुहुं (क्रि.वि.) : तेजी से।

मुहुत्त (पु., नपुं.) : मुहूर्त, क्षण।

मुहुत्तिक : (वि.) क्षण-भर रहने वाला; (पु.) ज्योतिषी।

मुळाल (नपुं.) : मृणाल, कमल की नाल।

मुळालपुप्फ (नपुं.) : कमल का फूल।

मूग (वि.) : गूँगा।

मूल (नपुं.) : जड, मूल, मूल्य, उत्पत्ति, कारण, नींव, आरंभ।

मूलक (वि.) : (समास में), कारणीभूत।

मूलकन्द (पु.) : कंद-विशेष।

मूलपरियाय-जातक : काल सबको खाता है, अपने आपको भी। सभी को खाने वाले काल को कौन खा सकता है ? प्रश्न का समाधान (२४५)।

मूलबीज (नपुं) : कोंपल निकले मूल बीज।

मूलिक (वि.) : महत्वपूर्ण।

मूल्य (नपुं.) : कीमत, मजदूरी ।

मूसा (स्त्री.) : धातु पिघलाने की घरिया।

मूसिक (पु.) : चूहा।

मूसिकछिन्न (वि.) : चूहों द्वारा काटा गया।

मूसिक-जातक : पुत्र ने पिता की हत्या करने की चेष्टा की (३७३)।

मूसिकवच्च (नपुं.) : चूहे की मेगन।

मूसिका (स्त्री.) : चुहिया।

मूळ्ह (वि.) : मूढ।

मेखला (स्त्री.) : करधनी।

मेघ (पु.) : बादल, वर्षा।

मेघनाद (पु.) : बादलों की गर्जना।

मेघपासाण (पु.) : ओले।

मेघवण्ण (वि.) : बादलों के वर्ण का, काला।

मेचक (वि.) : काला या गहरा नीला।

मेज्झ (वि.) : पवित्र, शुद्ध।

मेण्ड / मेण्डक (पु.) : मेंढा या भेड।

मेण्डक : विशाखा मिगारमाता का पितामह।

मेत्तचित्त (वि.) : मैत्रीपूर्ण चित्त वाला।

मेत्ता (स्त्री.) : मैत्री-भावना।

मेत्ताकम्मट्ठान (नपुं.) : मैत्री कर्म-स्थान।

मेत्ताभावना (स्त्री.) : मैत्री का अभ्यास करना।

मेत्तायति (क्रि.) : मैत्री करता है।

मेत्तायना (स्त्री.) : मैत्री-भाव।

मेत्ताविहारी (वि.) : मैत्री-भाव में रमता हुआ।

मेत्तेय्यनाथ (पु.) : भावी बुद्ध, मेत्तेय्य।

मेथुन (नपुं.) : मैथुन।

मेथुनधम्म (पु.) : मैथुन-क्रिया।

मेद (पु.) : चर्बी।

मेदकथालिका (स्त्री.) : चर्बी भूनने का भाजन।

मेदवण्ण (वि.) : चर्बी के रंग का।

मेदिनी (स्त्री.) : पृथ्वी, धरती।

मेध (पु.) : यज्ञ।

मेधग (पु.) : झगड़ा, विवाद।

मेधा (स्त्री.) : बुद्धि, प्रज्ञा, मेधा।

मेधावी (वि.) : प्रज्ञावान।

मेरय (नपुं.) : शराब।

मेरु (पु.) : उच्चतम पर्वत का नाम।

मेलन (नपुं.) : मेल मिलाप, मिलना, लोगों की परिषद।

मेस (पु.) : मेष, भेड़ा।

मेह (पु.) : मूत्र-रोग।

मेहन (नपुं.) : पुरुष अथवा स्त्री की इंद्रिय।

मोक्ख (पु.) : मोक्ष, मुक्ति।

मोक्खक (वि.) : मोक्षदाता, मुक्तिदाता।

मोक्खचिक (नपुं.) : एक जुआ।

मोक्खति (क्रि.) : मुक्त होता है।

मोक्खमग्ग (पु.) : मोक्ष का मार्ग, मुक्ति का मार्ग।

मोग्गल्लान / महामोग्गल्लान : भगवान बुद्ध के दो प्रधान शिष्यों में से एक।

मोग्गलिपुत्ततिस्स थेर : तृतीय संगीति के प्रधान स्थविर, सम्राट अशोक के गुरु।

मोघ (वि.) : व्यर्थ, बेकार, निकम्मा।

मोघपुरिस (पु.) : बेकार का आदमी, मूर्ख।

मोच (पु.) : केला।

मोचन (नपुं.) : मुक्त करना ।

मोचापन (नपुं.), मुक्त कराना।

मोचापेति (क्रि.) : मुक्त कराता है।

मोचेति (क्रि.) : मुक्त करता है।

मोदक (पु.) : लड्डू।

मोदति (क्रि.) : आनंदित होता है।

मोदन (नपुं.) / मोदना (स्त्री.) : आनंदित होना, प्रमुदित होना।

मोन (नपुं.) : बुद्धि, संयम, मौन।

मोनेय्य (नपुं.) : नैतिक संपूर्णता, मुनित्व।

मोमुह (वि.) : जड़-बुद्धि, मूर्ख।

मोर (पु.) : मोर पक्षी।

मोरपिञ्ज (नपुं.) : मोर की पूँछ।

मोर-जातक : सूर्य तथा बुद्ध की प्रशंसा में स्तोत्र गाने वाला मोर हर तरह से सुरक्षित रहा (१५९)।

मोलि / मोळि (पु.) : मौली, सिर का उच्चतम भाग, जटा।

मोस (पु.) / **मोसन** (नपुं.) : चोरी।

मोसवज्ज (नपुं.) : असत्य।

मोह (पु.) : मोह, मूर्खता ।

मोहक्खय (पु.) : अविद्या का नाश, मोह-क्षय।

मोहचरित (वि.) : मूढ-चरित।

मोहतम (पु.) : मोहांधकार।

मोहन (नपुं.) : मोहना, मूर्ख बनाना।

मोहनक (वि.), मोह उत्पन्न करने वाला, भ्रमित करने वाला।

मोहनीय / मोहनेय्य (वि.) : मोहने वाला।

मोहेति (क्रि.) : मोह उत्पन्न करता है, धोखा देता है, भ्रमित करता है।

य

यं : (सर्व.) जो, जो कौन, जो कुछ; (क्रि.वि.) क्यों कि।

यंनून (अ.) : तो फिर, अब, क्यों ना... ?

यकन (नपुं.) : यकृत।

यक्ख (पु.) : यक्ष।

यक्खगण (पु.) : यक्ष-गण।

यक्खगाह (पु.) : यक्षाधिकृत।

यक्खत्त (नपुं.) : यक्षत्व।

यक्खभूत (वि.) : यक्ष होकर पैदा हुआ।

यक्खसमागम (पु.) : यक्षों का सम्मेलन।

यक्खाधिप (पु.) : यक्षों का राजा।

यक्खिनी / यक्खी (स्त्री.) : यक्षिणी।

यग्घे (वि.) : आदरसूचक संबोधन।

यजति (क्रि.) : यज्ञ करता है, दान करता है।

यजन (नपुं.) : यज्ञ करना, दान देना।

यजु (नपुं.) : यजुर्वेद।

यञ्ञ (पु.) : यज्ञ, आहुती, बलि।

यञ्ञसामी (पु.) : यज्ञ-स्वामी, यज्ञ कराने वाला।

यञ्ञावाट (पु.) : यज्ञ-वेदिका (यज्ञगर्त)।

यञ्ञुपनीत (वि.) : यज्ञ (-बलि) के लिए लाया गया।

यट्ठि (पु., स्त्री.) : लकड़ी।

यट्ठिकोटि (स्त्री.) : लकड़ी का सिरा।

यट्ठिमधुका (स्त्री.) : मुलहठी।

यत (वि.) : रोका गया, संयत किया गया।

यतति (क्रि.) : प्रयत्न करता है।

यतन (नपुं.) : प्रयत्न।

यति (पु.) : भिक्षु, साधु, प्रव्रजित, सन्यासी।

यतो (अ.) : जहां से, जब से।

यत्तक (वि.) : जितना।

यत्थ / यत्र (क्रि.वि.) : जहां कहीं।

यथत्त (नपुं.) : यथार्थता, सत्य।

यथरिव (क्रि.वि.) : जिस तरह।

यथा (क्रि.वि.) : जैसे।

यथाकथं (क्रि.वि.) : किस प्रकार, कैसे।

यथाकम्मं (क्रि.वि.) : यथा-कर्म, कर्मानुसार।

यथाकामं (क्रि.वि.) : यथेच्छ।

यथाकामकारी (वि.) : अपनी मर्जी से करनेवाला ।

यथाकालं (क्रि.वि.) : योग्य समय पर, उचित समय।

यथाक्कमं (क्रि.वि.) : क्रमानुसार।

यथाठित (वि.) : यथास्थित।

यथातथ (वि.) : यथा-तथ्य, सत्य।

यथातथं (क्रि.वि.) : यथा-सत्य, सत्य के अनुसार।

यथाधम्मं (क्रि.वि.), धर्म के अनुसार, नियमानुसार।

यथाधोत (वि.) : जैसे धूला हो।

यथानुभावं (क्रि.वि.) : योग्यतानुसार।

यथापसादं (क्रि.वि.) : प्रसन्नता के अनुसार।

यथापि (अ.) : जैसे, जिस प्रकार।

यथापूरित (वि.) : पूरी तरह भरा हुआ।

यथाफासुक (वि.) : सुविधाजनक।

यथाबलं (क्रि.वि.) : यथाबल, शक्ति के अनुसार।

यथाभतं (क्रि.वि.) : जैसे लाया गया।

यथाभिरन्तं (क्रि.वि.) : जब तक इच्छा हो।

यथाभूत (वि.) : जैसा है, यथार्थ रूप।

यथाभूतं (क्रि.वि.), यथार्थ रूप से I

यथारहं (क्रि.वि.) : योग्यतानुसार।

यथारुचिं (क्रि.वि.) : रुचि के अनुसार।

यथावतो (क्रि.वि.) : यथावत।

यथाविधिं (क्रि.वि.) : यथाविधि, विधिवत।

यथाविहित (वि.) : जो व्यवस्था के अनुसार हो।

यथावुड्ढं (क्रि.वि.) : ज्येष्ठपन के अनुसार।

यथावुत्त (वि.) : यथोक्त, जो (पहले) कहा गया।

यथासकं (क्रि.वि.) : अपना-अपना।

यथासत्तिं (क्रि.वि.) : शक्ति के अनुसार।

यथासद्धं (क्रि.वि.) : श्रद्धा के अनुसार।

यथासुखं (क्रि.वि.) : सुखपूर्वक।

यथिच्छित्तं (क्रि.वि.) : इच्छानुसार।

यदा (क्रि.वि.) : जब।

यदि (अ.) : अगर।

यदिदं (अ.) : जो यह, जैसे कि।

यन्त (नपुं.) : यंत्र।

यन्तनाळि (स्त्री.) : नली, पाइप।

यन्तमुत्त (वि.) : यंत्र द्वारा फेंका गया।

यन्तयुत्त (वि.) : यंत्र से संबंधित।

यन्तिक (पु.) : यांत्रिक, यंत्र बनाने या सुधारने वाला।

यन्तेति (क्रि.) : उछालता है, फेंकता है, प्रेरित करता है।

यम (पु.) : यमराज (पौराणिक देवता)।

यमक : (वि.) जुड़वाँ, दोहरा; (नपुं.) जोड़ा।

यमक : अभिधम्म पिटक का छठा प्रकरण (ग्रंथ)।

यमकसाल (पु.) : शाल वृक्षों की जोड़ी।

यमदूत (पु.) : यमराज का दूत।

यमपुरिस (पु.) : नरक में यंत्रणा देने वाले।

यमलोक (पु.) : प्रेत-लोक।

यमुना : जम्बुद्वीप की पाँच बड़ी नदियों में से एक।

यव (पु.) : जौ (एक अनाज)।

यवस (पु.) : घास-विशेष।

यवसूक (पु.) : जौ की रोटी।

यस / यसो (पु., नपुं.) : यश, प्रसिद्धि।

यसदायक (वि.) : ऐश्वर्यदाता।

यसमहत्त (नपुं.) : ऐश्वर्य अथवा प्रसिद्धि की विशालता।

यसलाभ (पु.) : यश अथवा ऐश्वर्य का लाभ।

यस थेर : वाराणसी के सेठ का पुत्र यश, जिसके संतप्त हृदय को बुद्ध की अमृत-वाणी ने शांति प्रदान की थी ।

यसोधर (वि.) : प्रसिद्ध, यशधारी।

यसोलद्ध (वि.) : यश के द्वारा प्राप्त।

यहं / यहिं (क्रि.वि.) : यहां, जहां भी।

या (स्त्री.) : जो कोई भी (स्त्री)।

याग (पु.) : यज्ञ, हवन।

यागु (स्त्री.) : यवागु।

याचक (पु.) : मांगने वाला, भिखारी।

याचति (क्रि.) : मांगता है, याचना करता है।

याचन (नपुं.) : याचना।

याचयोग (वि.) : दानशील, उदार।

याचित (वि.) : मांगा गया।

याजक (पु.) : यज्ञ कराने वाला।

यात (वि.) : जो गया हो।

याति (क्रि.) : जाता है।

यात्रा (स्त्री.) : गमन, मुसाफरी।

याथाव (वि.) : ठीक-ठीक, सही।

यादिस (वि.) : जिसके समान।

यान (नपुं.) : गाडी, रथ।

यानक (नपुं.) : छोटी गाडी।

यानगत (वि.) : गाडी में बैठा।

यानभूमि (स्त्री.) : गाडी जा सकने लायक भूमि।

यानी (पु.) : गाडी हांकने वाला।

यानीकत (वि.) : अभ्यस्त।

यापन (नपुं.) : गुजारा, आहार।

यापनीय (वि.) : जीवन-आधार।

यापेति (क्रि.) : गुजारा करता है।

याम (पु.) : रात्रि का प्रहर।

यामकालिक (वि.) : भिक्षु द्वारा अपरान्ह तथा रात के समय ग्रहण की जा सकने वाली वस्तु।

यायी (वि.) : जाने वाला।

याव (अ.) : तक, पर्यंत।

यावकालिक (वि.) : अस्थायी।

यावजीव (वि.) : आजीवन।

यावजीवं (क्रि.वि.) : जीवन-भर।

यावजीविक (वि.) : जीवन पर्यंत बने रहने वाला।

यावतक (वि.) : जितना।

यावता (अ.) : जहाँ तक ।

यावतायुकं (क्रि.वि.) : जीवन बना रहने तक।

यावतावतिहं (क्रि.वि.) : जितने दिनों तक।

यावदत्थं (क्रि.वि.) : जितना चाहे, आवश्यकता नुसार।

यावदेव (अ.) : वैसे ही।

यिट्ठ (वि.) : जो दिया गया, जिसकी आहुति दी गई।

युग (नपुं.) : जोडा, जुआ, युग, जमाना।

युगग्गाह (पु.) : ईर्षा, काबू।

युगच्छिद्द (नपुं.) : जुए का छेद।

युगनद्ध / **युगनन्ध** (वि.) : जुए में जुता हुआ, समरस, सुसंगत।

युगन्त (पु.) : युग का अंत।

युगन्धर (पु.) : हिमालय के पर्वतों में से एक।

युगमत्त (वि.) : युग-मात्र, जुए की लम्बाई भर की दूरी।

युगल / **युगलक** (नपुं.) : जोडा।

युज्झति (क्रि.) : युद्ध करता है, झगड़ा करता है।

युज्झन (नपुं.) : झगड़ा, युद्ध करना।

युञ्जति (क्रि.) : शामिल होता है, प्रयत्न करता है।

युञ्जन (नपुं.) : जोडना, सम्मिलित होना।

युत्त (वि.) : जोता हुआ, जुड़ा हुआ, संबंधित; युक्त, योग्य।

युत्तक (वि.) : युक्त, योग्य।

युत्ति (स्त्री.) : न्याय, योग्यता।

युद्ध (नपुं.) : संग्राम, लडाई, युद्ध।

युद्धभूमि (स्त्री.) / **युद्धमण्डल** (नपुं.) : संग्राम-भूमि, युद्धभूमि।

युव (पु.) : तरुण, नौजवान।

युवञ्जय-जातक : ओस की बूंदो का सूख जाना देख राजकुमार को संसार की अनित्यता का बोध हुआ (४६०)।

युवती (स्त्री.) : तरुणी।

यूथ (पु.) : समूह, पुश-समूह।

यूथजेट्ठ (पु.) : पशुओं के झुंड का मुखिया।

यूप (पु.) : यज्ञ-स्तंभ।

यूस (पु.) : (मांस का) सूप।

येन (क्रि.वि.) : जिसके कारण से।

येभुय्य (वि.) : अनेक, कई।

येभुय्येन (क्रि.वि.) : अधिकतर।

येव (अ) : ही।

यो (सर्व.) : जो, जो कोई (पुरुष)।

योग (पु.) : संबंध, आसक्ति, प्रयत्न।

योगक्खेम (पु.) : आसक्ति से मुक्ति।

योगयुत्त (वि.) : आसक्ति से बंधा।

योगातिग (वि.) : पुनर्जन्म के बंधन से मुक्त।

योगावचर / **योगी** (पु.) : योगी।

योग्ग : (वि.) योग्य; (नपुं.) गाडी, रथ।

योजक (पु.) : जोड़ने वाला, योजना / नियुक्त करने वाला।

योजन (नपुं.) : नियुक्त होना, दूरी का माप-विशेष (= करीब दो मील)।

योजना (स्त्री.) : निर्माण।

योजित (वि.) : बनाया हुआ, मिला हुआ।

योजेति (क्रि.) : जोडता है, बनाता है।

योत्त (नपुं) : धागा, रस्सी।

योध / **योधाजीव** (पु.) : योद्धा, सैनिक।

योधेति (क्रि.) : लडता है, युद्ध करता है।

योनकधम्मरक्खित थेर : तीसरी संगीति के बाद मोग्गलिपुत्त तिस्स द्वारा अपरन्तक जनपद की ओर धम्म प्रचारार्थ भेजे गये स्थविर।

योना / योनका / युवाना : यवन, ग्रीस (यूनान) के निवासी।

योनि (स्त्री) : मूल, (मनुष्य-)योनि, (स्त्री-)योनि।

यानिसो (क्रि.वि.) : यथार्थ ढंग से, बुद्धिपूर्वक।

योनिसोमनसिकार (पु.) : यथार्थ विचार।

योब्बञ्ञ / योब्बन (नपुं.) : यौवन।

योब्बनमद (पु.) : यौवन-मद।

र

रक्खक (पु.) : रक्षक, पहरेदार।

रक्खति (क्रि.) : रक्षा करता है।

रक्खन (नपुं.) : रक्षण।

रक्खनक (वि.) : रक्षण करता हुआ।

रक्खस (पु.) : राक्षस।

रक्खा (स्त्री.) : आरक्षा।

रक्खित (वि.) : संरक्षित।

रक्खित थेर : तृतीय संगीती की समाप्ति पर वनवासि प्रदेश में भेजे गये स्थविर।

रक्खिय (वि.) : रक्षण करने योग्य।

रगा (स्त्री.) : मार की तीन कन्याओं में से एक, जिसने बुद्ध को प्रलोभित करने की चेष्टा की थी।

रङ्ग (पु.) : रंग।

रङ्गकार (पु.) : रंगने वाला, नाटक के पात्र।

रङ्गजात (नपुं.) : नाना प्रकार के रंग।

रङ्गरत्त (वि.) : रंग से रंगा।

रङ्गाजीव (पु.) : चित्रकार या रंगसाज।

रचना (स्त्री.) : व्यवस्था।

रचयति (क्रि.) : रचता है, व्यवस्था करता है, तैयार करता है।

रच्छा (स्त्री.) : पथ, गाड़ी का रास्ता।

रज / रजो (पु., नपुं.) : धूलि, धूल, रज।

रजक (पु.) : धोबी।

रजक्ख (वि.) : रज (= चित्त-मैल) से युक्त, जिसकी आंख में धूल हो।

रजक्खन्ध (पु.) : धूल का अंबार।

रजत (नपुं.) : चांदी।

रजति (क्रि.) : रंगता है।

रजन (नपुं.) / **रजनकम्म** (नपुं.) : रंगना ।

रजनी (स्त्री.) : रात्रि।

रजनीय (वि.) : आकर्षक।

रजोजल्ल (नपुं.) : कीचड।

रजोहरण (नपुं.) : धूल का हटाना।

रज्ज (नपुं.) : राज्य।

रज्जति (क्रि.) : आनंदित होता है, जुड़ जाता है, आसक्त होता है।

रज्जन (नपुं.) : मैल।

रज्जसिरि (स्त्री.) : प्रभुत्व, साम्राज्य, राजकीय सत्ता।

रज्जसीमा (स्त्री.) : राज्य की सीमा।

रज्जु (स्त्री.) : रस्सी।

रज्जुगाहक (पु.) : जमीन मापने वाला।

रञ्जति (क्रि.) : आनंदित होता है।

रञ्जेति (क्रि.) : आनंद देता है, रंगता है।

रट्ठ (नपुं.) : राष्ट्र, देश।

रट्ठपिण्ड (पु.) : राष्ट्र-पिंड, लोगों का दिया हुआ भोजन।

रट्ठवासिक / **रट्ठवासी** (पु.) : राष्ट्र का अधिवासी।

रट्ठिक (वि) : राष्ट्रिक, राष्ट्रीय, राष्ट्र-विशेष का, सरकारी अफसर।

रण (नपुं.) : युद्ध, लड़ाई।

रणञ्जह (वि.) : रण-मुक्त।

रत (वि.) : अनुरक्त, आनंद लेता हुआ।

रतन (नपुं.) : रत्न, रतन; लंबाई का माप।

रतनत्तय (नपुं.) : रत्न-त्रय, त्रिरत्न - बुद्ध, धर्म तथा संघ।

रतनवर (नपुं.) : श्रेष्ठ रतन।

रतनाकर (पु.) : समुद्र, महासागर।

रतनिक (वि.) : (इतने) रतन लंबा-चौड़ा।

रति (स्त्री.) : आसक्ति, प्रेम ।

रतिकीळा (स्त्री.) : मैथुन-क्रीडा।

रती : मार की कन्याओं में से एक।

रत्त : (वि.) अनुरक्त, रंगा हुआ, लाल रंग का।

रत्तक्ख (वि.) : लाल आंखों वाला।

रत्तचन्दन (नपुं.) : रक्तचंदन, लाल चंदन।

रत्तञ्ञू (वि.) : दीर्घकालीन।

रत्तन्धकार (पु.) : रात का अंधेरा।

रत्तपदुम (नपुं.) : लाल कमल।

रत्तपा (स्त्री.) : जोंक।

रत्तफला (स्त्री.) : लाल फलों वाली लता।

रत्तमणि (पु.) : लाल मणि, माणिक।

रत्तातिसार (पु.) : रक्त-अतिसार।

रत्ति (स्त्री.) : रात्रि, रात।

रतिक्खय (पु.) : रात्रि-क्षय।

रत्तिक्खित्त (वि.) : रात्रि में फेंका गया।

रत्तिभाग (पु.) : रात्रि का समय।

रत्तिभोजन (नपुं.) : रात्रि का भोजन।

रत्तूपरत (वि.) : रात्रि के भोजन से विरत।

रथ (पु.) : रथ, गाड़ी।

रथकार (पु.) : रथ बनानेवाला ।

रथङ्ग (नपुं.) : रथ का अंग।

रथचक्क (नपुं.) : रथ का पहिया।

रथपञ्जर (पु.) : रथ का ढाँचा।

रथयुग (नपुं.) : रथ की बल्ली।

रथरेणु (पु.) : रथ की धूलि।

रथाचरिय (पु.) : रथ हांकने वाला।

रथानीक (नपुं.) : युद्ध के रथों का समूह।

रथारोह (पु.) : रथ में बैठा योद्धा ।

रथलट्ठि-जातक : पुरोहित की पैणी से उसके अपने सिर में चोट लगी (३३२)।

रथिक (पु.) : रथ में बैठकर युद्ध करने वाला।

रथिका (स्त्री.) : मार्ग, गाड़ी का रास्ता।

रद (पु.) / **रदन** (नपुं.) : (हाथी-) दांत।

रन्ध (नपुं.) : रंध्र, छेद।

रन्धक (पु.) : राँधने वाला, रसोइया।

रन्धगवेसी (पु.) : छिद्रान्वेषी।

रन्धन (नपुं.) : राँधना, पकाना।

रन्धेति (क्रि.) : पकाता है, उबालता है, राँधता है।

रभस (वि.) : तेज-स्वभाव।

रमण (नपुं.) : मजा लेना।

रमणक / **रमणीय** (वि.) : आकर्षक।

रमणी (स्त्री.) : औरत।

रमति (क्रि.) : आनंदित होता है।

रम्म (वि.) : रम्य, सुंदर।

रम्मक (पु.) : चैत्र मास का नाम।

रय (पु.) : बहाना, जाना, वेग।

रव (पु.) : आवाज।

रवति (क्रि.) : शोर करता है, ऊँची आवाज निकालता है।

रवन (नपुं.) : चिल्लाना।

रवि (पु.) : सूर्य।

रविहंस (पु.) : पक्षी-विशेष।

रस (पु.) : स्वाद।

रसक (पु.) : रसोइया।

रसग्ग (नपुं.) : अत्यंत स्वादिष्ट।

रसञ्जन (नपुं.) : आँख में लगाने का एक प्रकार का अंजन।

रसतण्हा (स्त्री.) : रस-तृष्णा।

रवति (क्रि.) : शोर करता है, चिल्लाता है।

रसना (स्त्री.) : स्त्रियों की मेखला।

रसवती (स्त्री.) : रसोईघर।

रसवाहिनी : वेदेह नाम के एक भिक्षु द्वारा संगृहीत पालि कथा-ग्रंथ।

रसाल (पु.) : ऊख।

रसित (नपुं.) : मेघ-ध्वनि, गर्जन।

रस्मि (स्त्री.) : (घोड़े की) लगाम, सूर्य की किरण।

रस्स (वि.) : ऱ्हस्व, बौना।

रस्सत्त (नपुं.) : ऱ्हस्वत्व, बौनापन।

रह (नपुं.) / **रहो** (नपुं, अ.) : एकांत स्थान।

रहति (क्रि.) : छोड़ता है, त्यागता है।

रहद (पु.) : तालाब।

रहस्स (नपुं.) : रहस्य।

रहाभाव (पु.) : रहस्य के अभाव की स्थिति।

रहित (वि.) : बिना।

रहोगत (वि.) : एकांत में गया हुआ।

रंसि (स्त्री.) : सूर्य की किरण।

रंसिमन्तु : (पु.) सूर्य; (वि.) प्रकाशमान।

राग (पु.) : रंग, आसक्ति।

रागक्खय (पु.) : आसक्ति का नाश।

रागग्गि (पु.) : रागाग्नि।

रागचरित (वि.) : राग-प्रवृत्त।

रागरत्त (वि.) : राग से अनुरक्त।

रागी (वि.) : अनुरागी, कामुक।

राज (पु.) : राजा।

राजककुधभण्ड (नपुं.) : राजकीय चिन्ह।

राजकञ्ञा / **राजकुमारी / राजधीतु / राजपुत्ती** (स्त्री.) : राजकन्या।

राजकथा (स्त्री.) : राजाओं के बारे में बातचीत।

राजकम्मिक (पु.) : राजकीय अधिकारी, सरकारी अफसर।

राजकुमार / **राजपुत्त** (पु.) : राजपुत्र।

राजकुल (नपुं.) : राज्य-कुल, महल।

राजगह : मगध जनपद की राजधानी, आधुनिक राजगिर।

राजगेह / **राजभवन** / **राजमन्दिर** (नपुं.) : राजा का महल।

राजङ्गण (नपुं.) : राजमहल का आंगन।

राजञ्ञ (पु.) : क्षत्रिय।

राजति (क्रि.) : चमकता है।

राजत्त (नपुं.) : राजत्व।

राजदण्ड (पु.) : राजा द्वारा दिया गया दंड।

राजदाय (पु.) : राजा द्वारा दी गई भेंट।

राजदूत (पु.) : राजा का दूत।

राजदेवी (स्त्री.) : राजा की रानी।

राजधम्म (पु.) : राजा का कर्तव्य।

राजधानी (स्त्री.) : राजकीय नगर।

राजनिवेसन (नपुं.) : राजभवन।

राजन्तेपुर (नपुं.) : रनिवास।

राजपरिसा (स्त्री.) : राज्य-परिषद।

राजपुरिस (पु.) : सरकारी नौकर।

राजबलि (पु.) : राज्य-कर।

राजभट (पु.) : सैनिक।

राजभय (नपुं.) : राजा का भय, सरकार का डर।

राजभोग्ग (वि.) : राजा के लिए योग्य।

राजमहामत्त (पु.) : प्रधानमंत्री।

राजमहेसी (स्त्री.) : पटरानी।

राजमुद्दा (स्त्री.) : राजकीय मुद्रा।

राजवर (पु.) : श्रेष्ठ राजा।

राजवल्लभ (वि.) : राजा का प्रिय पात्र, प्रेम-भाजन।

राजसम्पत्ति (स्त्री.) : सरकारी ठाट-बाट, राजकीय ऐश्वर्य।

राजहंस (पु.) : राजकीय हंस, एक पक्षी।

राजाणा (स्त्री.) : राजाज्ञा।

राजानुभाव (पु.) : राजा का प्रताप या ठाट-बाट।

राजामच्च (पु.) : राजामात्य, राजा का मंत्री ।

राजायतन (पु.) : वृक्ष-विशेष। तपस्सु-भल्लिक नाम के दो व्यापारियों ने ऐसे ही एक वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध की मधु-पिंड से सेवा की थी।

राजिद्धि (स्त्री.) : राजकीय शक्ति।

राजिनी (स्त्री.) : रानी।

राजिसि (पु.) : राजर्षि।

राजुपट्ठान (नपु.) : राजा की सेवा में रहना।

राजुय्यान (नपुं.) : राजकीय उद्यान।

राजुल (पु.) : राजल सांप, दोमुहाँ सांप।

राजोरोध (पु.) : राजा का रनिवास।

राजोवाद-जातक : काशी तथा कोसल नरेश अपने-अपने राज्यों की सीमा लांघकर अपने अवगुणों का पता लगाने चले (१५१)।

राजोवाद-जातक : राजा का अन्यायपूर्ण शासन फलों की कड़वाहट का कारण (३३४)।

राध-जातक : पोट्ठपाद तथा राध नाम के दो तोतों की कथा (१६८)।

राधित (वि.) : तैयार किया गया।

रामगाम (नपुं.) : गंगा के तट पर बसा हुआ एक कोलिय-ग्राम। इसके बाशिन्दों ने भी बुद्ध के शरीर की पवित्र धातु का एक अंश प्राप्त कर उस पर चैत्य बनवाया था।

रामञ्ञ (पु.) : बर्मा देश का पालि नाम।

रामणेय्यक (वि.) : सुंदर, आकर्षक।

राव (पु.) : शब्द, चिल्लाहट, आवाज।

रासि (पु.) : ढेर, मात्रा।

रासिवड्ढक (पु.) : राज्य-कर का व्यवस्थापक।

राहसेय्यक (वि.) : रहस्य या एकांत में रहने वाला।

राहु (पु.) : एक असुर राजा, चांद को ग्रसने वाला राहु।

राहुमुख (नपुं.) : राहु का मुंह, दंड-विशेष।

राहुल थेर (पु.) : सिद्धार्थ गौतम के एकमात्र पुत्र जिनका जन्म सिद्धार्थ गौतम के गृह त्याग करने के दिन ही हुआ था।

राहुल माता (स्त्री.) : सिद्धार्थ गौतम की पत्नी तथा राहुल जननी। उसके दूसरे नाम है भद्दकच्चाना, यशोधरा, बिम्बा देवी और सम्भवतः बिम्बा सुन्दरी भी।

रिञ्चति (क्रि.) : छोड देता है, खाली कर देता है।

रित्त (वि.) : रिक्त।

रित्तमुट्ठि (वि.) : खाली मुट्ठी।

रित्तहत्थ (वि.) : खाली हाथ (आदमी)।

रिपु (पु.) : शत्रु।

रुक्ख (पु.) : वृक्ष, पेड़।

रुक्खगहन (नपुं.) : वृक्षों का झुंड, पेड़ों का समूह।

रुक्खदेवता (स्त्री.) : वृक्ष देवता।

रुक्खमूल (नपुं.) : वृक्ष की जड।

रुक्खमूलिक (वि.) : वृक्ष के नीचे रहने वाला।

रुक्खसुसिर (नपुं.) : पेड का खोडर (खोखला)।

रुक्खधम्म-जातक : वृक्ष देवताओं की कथा (७४)।

रुचि (स्त्री.) : पसंद, पसंदगी।

रुचिर (वि.) : सुंदर, रुचिकर, अनुकूल।

रुच्चति (क्रि.) : अच्छा लगता है।

रुच्चन (नपुं.) : रुचि, आनंद।

रुच्चनक (वि.) : अच्छा लगने वाला।

रुजति (क्रि.), दर्द होता है, पीड़ा होती है।

रुजन (नपुं.) / **रुजा** (स्त्री.) : पीड़ा।

रुजनक (वि.) : दुखता हुआ ।

रुज्झति (व.क्रि.), रूंधता है, रूकावट पैदा होती है।

रुट्ठ (वि.) : रुष्ट।

रुण्ण (वि.) : रोता हुआ, चिल्लाता हुआ।

रुत (नपुं.) : किसी जानवर का शब्द।

रुदति (क्रि.) : रोता है।

रुदम्मुख (वि.) : अश्रु-मुख।

रुद्ध (वि.) : अवरुद्ध, रुका हुआ।

रुधिर / रुहिर (नपुं.) : रक्त, खून।

रुन्धति (क्रि.) : रोकता है, बाधा डालता है, कारावास में डालता है।

रुन्धन (नपुं.) : रोक, बंदिस्त करना।

रुप्पति (क्रि.) : परिवर्तित होता है, चिढता है।

रुप्पन (नपुं,) : लगातार परिवर्तन।

रुरु (पु.) : मृग-विशेष।

रुरु(मिग)-जातक : अयोग्य पुत्र ने माता पिता की सारी संपत्ति नष्ट कर दी और कर्जदार हो गया (४८२)।

रुह (वि.) : (समास मे) उगने वाला, वृद्धि को प्राप्त होने वाला।

रुहक-जातक : रुहक की पत्नी ने अपने पुरोहित पति को उल्लू बनाया (१९१)।

रुहन (नपुं.) : उगाना, वृद्धि होना।

रूप (नपुं) : चक्षु-इंद्रिय का विषय, भौतिक पदार्थ, आकार, मूर्ति।

रूपक (नपुं.) : एक छोटा आकार प्रकार, उपमा।

रूपतण्हा (स्त्री.) : रूप-तृष्णा ।

रूपदस्सन (नपुं) : रूप-दर्शन।

रूपभव (पु.) : रुप-लोक।

रूपराग (पु.) : रूप-लोक में उत्पन्न होने की इच्छा।

रूपवन्तु (वि.) : सुंदर।

रूपसम्पत्ति (स्त्री.) : सौंदर्य।

रूपसिरि (स्त्री.) : लावण्य, सुंदरता।

रूपारम्मण (नपुं.) : चक्षु-इंद्रिय का विषय, भौतिक वस्तु।

रूपावचर (वि.) : रूप-लोक से संबंधित।

रूपिनी (स्त्री.) : सुंदरी।

रूपिय (नपुं.) : रजत, चांदी।

रूपियमय (वि.) : रजतमय।

रूपी (वि.) : (भौतिक) रूप वाला।

रूपूपजीविनी (स्त्री.) : वेश्या।

रूळ्ह (वि.) : उगा हुआ, बढ़ा हुआ।

रूहति / **रोहति** (क्रि.) : उगता है, चढता है, बढ़ता है।

रूहन / **रोहन** (नपुं.) : उगना, चढना, वृद्धि, (जख्म का) भरना।

रे : एक संबोधन।

रेचन (नपुं.) : बाहर निकलना, पेट साफ होना।

रेणु (पु., नपुं.) : धूलि, कण, रेणु।

रोग (पु.) : रोग, बिमारी।

रोगनिड्ड / **रोगनीळ** (नपुं.) : रोग का स्थान।

रोगहारी (पु.) : वैद्य।

रोगातुर (वि.) / **रोगी** (पु.) : रोगी, बीमार।

रोचति (क्रि.) : चमकता है।

रोचन (नपुं.) : चुनाव, पसंद, चमक।

रोचेति (क्रि.) : पसंद करता है।

रोदति (क्रि.) : चिल्लाता है, रोता है।

रोदन (नपुं.) : रोना।

रोध (पु.) : रुकावट, अवरोध।

रोधन (नपुं.) : रोक।

रोप (पु.) : पौधा, पौधे लगाने का कार्य।

रोपक (वि.) : पौधा, पौधे लगाने वाला।

रोपेति (क्रि.) : रोपता है।

रोम (नपुं.) : शरीर का बाल।

रोमक (वि.) : रोम-निवासी।

रोमञ्च (नपुं.) : रोमांच, बालों का उठ खडे होना।

रोमन्थति (क्रि.) : जुगाली करता है।

रोमन्थन (नपुं.) : जुगाली करना।

रोरुव (पु.) : रोरव नरक ।

रोस (पु.) : रोष, क्रोध।

रोसक (वि.) : रोषक, क्रोधित करने वाला।

रोसना (स्त्री.) : रोष का भाव।

रोसेति (क्रि.) : क्रोधित करता है।

रोहिणी (स्त्री.) : रोहिणी नक्षत्र, रोहिणी नाम की नदी।

रोहित : (वि.) लाल, (पु.) मृग-विशेष।

रोहितमच्छ (पु.) : रोहित मछली।

ल

लकार (पु.) : (नाव की) पाल।

लकुण्टक (वि.) : बौना।

लक्ख (नपुं.) : निशान, लक्ष्य, लाख (संख्या)।

लक्खण (नपुं.) : निशान, लक्षण, गुण।

लक्खणपाठक (पु.) : ज्योतिषी।

लक्खणसम्पत्ती (वि.) : अच्छे लक्षण।

लक्खणसम्पन्न (वि.) : अच्छे लक्षणों वाला।

लक्खण-जातक : लक्खण तथा काळ मृगों की कथा (११)।

लक्खिक (वि.) : भाग्यवान।

लक्खित (वि.) : लक्षित, चिन्हित।

लक्खी (स्त्री.) : लक्ष्मी, भाग्य, ऐश्वर्य।

लक्खेति (क्रि.) : चिन्ह लगाता है।

लगुळ (पु.) : डंडा।

लग्ग (वि.) : लगा हुआ, जुडा हुआ।

लग्गति / **लग्गेति** (क्रि.) : लगता है, जुडता है, लटकता है।

लग्गन (नपुं.) : लगना, जुडना, लटकना।

लङ्की (स्त्री) : द्वार-दंड।

लङ्गुल (नपुं) : पूंछ।

लङ्घक (पु.) : लांघने वाला, बाजीगर।

लङ्घति (क्रि.) : लांघता है, कूदता है।

लङ्घन (नपुं.) : लांघना, कूदना ।

लङ्घी (पु.) : लांघने वाला, चौखट, डेवढ़ी।

लङ्घेति (क्रि.) : कूदता है, छलांग मारता है, उल्लंघन करता है।

लच्छति (भविष्य.क्रि.) : प्राप्त करेगा।

लज्जति (क्रि.) : लज्जा करता है, शरम / संकोच करता है।

लज्जन (नपुं.) : लज्जित होना ।

लज्जापन (नपुं.) : लज्जित करना।

लज्जापेति (क्रि.) : लज्जित करता है ।

लज्जितब्बक (वि.) : लज्जा करने योग्य, जिसके कारण लज्जित होना पडे।

लज्जी (वि.) : लज्जा अनुभव करने वाला, शर्मीला।

लञ्च (पु.) : रिश्वत।

लञ्चखादक (वि.) : रिश्वतखोर।

लञ्चदान (नपुं.) : रिश्वत देना, घूस देना।

लञ्छ (पु.) / **लञ्छन** (नपुं.) : चिन्ह, निशान।

लञ्छक (पु.) : निशान लगाने वाला।

लञ्छति / **लञ्छेति** (क्रि.) : निशान लगाता है।

लञ्छित (वि.) : चिन्हित।

लटुकिक-जातक : बटेरनी ने उसके बच्चों को रौंद डालने वाले हाथी से बदला लिया (३५७)।

लटुकिका (स्त्री.) : बटेरनी, एक पक्षी।

लट्ठि / **लट्ठिका** (स्त्री.) : लाठी।

लण्ड (पु.) / **लण्डिका** (स्त्री.) : लेंडी।

लता (स्त्री.) : बेल, वेल।

लताकम्म (नपुं.) : बेल बूटे का काम।

लद्ध (वि.) : प्राप्त।

लद्धक (वि.) : आकर्षक, अच्छा लगने वाला।

लद्धब्ब (वि.) : प्राप्तव्य, प्राप्त करने योग्य।

लद्धभाव (पु.) : प्राप्ति।

लद्धस्साद (वि.) : दुःख से मुक्त।

लद्धा / लद्धान (पू.क्रि.) : प्राप्त करके।

लद्धि (स्त्री.) : लब्धि, दृष्टिकोण, मत ।

लद्धिक (वि.) : जिसका मत हो, संप्रदाय वाला।

लप / लपक (वि.) : बातुनी।

लपति (क्रि.) : बोलता है, बकबक करता है।

लपन (नपुं.) : बोलना, बकना, मुंह।

लपनज (पु.) : दांत।

लपना (स्त्री.) : जबान की लपलप, खुशामद।

लबुज (पु.) : कटहल जैसा एक फल, उसका पेड़।

लब्भति (क्रि.) : प्राप्त करता है, प्राप्त होता है, हासिल करता है।

लब्भा (अ.) : संभव, मुमकिन।

लभति (क्रि.) : प्राप्त करता है।

लम्ब (वि.) : लटकता हुआ।

लम्बक (नपुं.) : लटकने वाला, लोलक।

लम्बति (क्रि.) : लटकता है।

लय (पु.) : समय का बहुत ही छोटा भाग।

ललना (स्त्री.) : स्त्री, महिला, नारी।

ललित (नपुं.) : सुंदर ढंग, मोहकता, लीला, खेल।

लव (पु.) : बूंद।

लवङ्ग (नपुं.) : लौंग।

लवण (नपुं.) : नमक।

लवन (नपुं.) : काटना ।

लसति (क्रि.) : चमकता है, खेलता है।

लसिका (स्त्री.) : शरीर के जोड़ों को तर रखने वाला पदार्थ।

लसी (स्त्री.) : मस्तिष्क।

लसुण / **लसुन** (नपुं.) : लहसुन।

लहु : (वि.) हलका, शीघ्र; (नपुं.) ह्रस्व स्वर।

लहुक (वि.) : हलका।

लहुं / लहुकं / **लहुसो** (क्रि.वि.) : शीघ्रता से।

लहुता (स्त्री) : हलकापन।

लहुपरिवत्त (वि.) : शीघ्र बदलने वाला।

लाखा (स्त्री.) : लाख (मुहर लगाने की लाख)।

लाखारस (पु.) : लाख का सार, जो रंगने के काम आता है।

लाज (पु.) : खील, लावा।

लाजपञ्चमक (वि.) : अन्य चार वस्तुओं सहित पाँचवी चीज खील / लावा।

लाप (पु.) : बटेर।

लापु / लाबु (स्त्री.) : लौकी।

लाबुकटाह (पु.) : तूंबा।

लाभ (पु.) : फायदा, प्राप्ति।

लाभकम्यता (स्त्री.) : लाभ की इच्छा।

लाभग्ग (पु.) : श्रेष्ठतम लाभ।

लाभमच्छरिय (नपुं.) : लाभ मात्सर्य।

लाभसक्कार (पु.) : लाभ और सत्कार।

लाभगरह-जातक : शिष्य ने दुनिया में 'लाभ' कमाने का रास्ता बताया (२८७)।

लाभा (अ.) : 'यह लाभ की बात है, यह फायदे की बात है' इन अर्थों में प्रयुक्त होता है।

लाभी (पु.) : जिसे बहुत लाभ होता है।

लामक (वि.) : निकृष्ट, घटिया।

लायक (पु.) : (घास) काटने वाला।

लायति (क्रि.) : (घास) काटता है।

लालन (नपुं.) : लाड़।

लालपति (क्रि.) : अधिक बोलता है।

लालसा (स्त्री.) : बलवती इच्छा।

लालेति (क्रि.) : लाड करता है।

लाळ / लाट : विजय राजकुमार का जन्म-प्रदेश, वर्तमान गुजरात।

लास (पु.) / **लासन** (नपुं.) : नृत्य, लास (-विलास)।

लिकुच (पु.) : कटहल जैसा एक फल, उसका पेड़।

लिक्खा (स्त्री.) : जूँ का अण्डा, लीख, माप-विशेष।

लिखति (क्रि.) : लिखता है।

लिखन (नपुं.) : लेखन, लिखावट।

लिखापेति (क्रि.) : लिखवाता है।

लिखितक (पु.) : जिसे विद्रोही घोषित कर दिया गया।

लिङ्ग (नपुं.) : चिन्ह, निशान।

लिङ्गपरिवत्तन / **लिङ्गविपल्लास** (पु.) : लिंग-परिवर्तन।

लिङ्गिक (वि.) : (व्याकरण में) लिंग संबंधी अथवा स्त्री-पुरुष लिंग संबंधी।

लिच्छवि : बुद्ध की समकालीन, वैशाली जनपद की लिच्छवि जाति।

लित्त (वि.) : लेप किया हुआ, लिप्त।

लित्त-जातक : छली जुआरी मुँह में गोटी छिपा लेता था (९१)।

लिपि (स्त्री.) : लेखाक्षर लिपि।

लिपिकार (पु.) : लेखक।

लिम्पति / **लिम्पेति** (क्रि.) : लेप करता है।

लिम्पन (नपुं.) : लेप करना।

लिम्पापेति (क्रि.) : लिपवाता है।

लिहति (क्रि.) : चाटता है।

लीन (वि.) : संकोची, शर्मीला।

लीनता (स्त्री.) / **लीनत्त** (नपुं.) : संकोच, लज्जा।

लीयति (क्रि.) : संकोच करता है, सिकुड़ता है।

लीयन (नपुं.) : संकुचित होना, सिकुड़ना।

लीला (स्त्री.) : हाव-भाव।

लुग्ग (वि.) : टूटा हुआ, बिखरा हुआ।

लुज्जति (क्रि.) : टूटता है, बिखर जाता है।

लुज्जन (नपुं.) : टूटना, टुकड़े टुकड़े होना, बिखरना।

लुञ्चति (क्रि.) : लुंचन करता है, नोचता है।

लुत्त (वि.) : काट दिया गया; लुप्त।

लुद्द : (वि.) निर्दयी; (पु.) शिकारी।

लुद्दक (पु.) : शिकारी।

लुद्ध (वि.) : लोभी।

लुनाति (क्रि.) : काटता है।

लुब्भति (क्रि.) : लोभ करता है।

लुब्भन (नपुं.) : लोभ, लोभ करना।

लुम्पति (क्रि.) : लूटता है।

लुम्पन (नपुं.) : लूटना।

लुम्बिनी : कपिलवस्तु तथा देवदह के मध्य स्थित लुम्बिनी नाम का उद्यान जहां सिद्धार्थ गौतम (बुद्ध) का जन्म हुआ था।

लुळित (वि.) : हिलाया गया, चंचल।

लूख (वि.) : रुखा।

लूखचीवर (वि.) : मोटा-झोटा चीवर।

लूखता (स्त्री.) : रुक्षता, मोटा-झोटापन।

लूखप्पसन्न (वि.) : मोटा-झोटा पहनने वाले के प्रति श्रद्धावान।

लूखाजीवी (वि.) : रुक्षचर्या वाला।

लूण / लून (वि.) : जो काटा गया।

लूयति (क्रि.) : काटा जाता है।

लेखक (पु.) : लिपि-कारक, लेखक, लिखने वाला।

लेखन (नपुं.) : लिखना।

लेखनी (स्त्री.) : कलम।

लेखनीमुख (नपुं.) : निब।

लेखा (स्त्री.) : लेख, पत्र, (शिला-) लेख, रेखा, लकीर, लेखन-कला।

लेखिका (स्त्री.) : लिखने वाली।

लेड्डु (पु.) : मिट्टी का ढेला।

लेड्डुपात (पु.) : ढेला फेंक सकने की दूरी-भर।

लेण (नपुं.) : संरक्षण, गुफा।

लेप (पु.) / लेपन (नपुं.) : लेप करना ।

लेपेति (क्रि.) : लेप करता है।

लेय्य (वि.) : जो चाटा जा सके।

लेस (पु.) : बहाना, लेश (-मात्र)।

लोक (पु.) : दुनिया, लोग, संसार।

लोकग्ग (पु.) : लोकाग्र, लोक में सर्वश्रेष्ठ (बुद्ध)।

लोकधातु (स्त्री.) : विश्व, संसार, जग, पृथ्वी।

लोकन्त (पु.) : लोक का अंत।

लोकन्तगू (पु.) : लोक के अंत को पहुंचा हुआ।

लोकन्तर (नपुं.) : दूसरा लोक, अन्य लोक।

लोकन्तरिक (वि.) : दो लोकों के बीच स्थित।

लोकनायक (पु.) : लोक-स्वामी, बुद्ध।

लोकनिरोध (पु.) : लोक-विनाश।

लोकपाल (पु.) : लोक-संरक्षक।

लोकवज्ज (नपुं.) : दुनिया की दृष्टि में दोष।

लोकविदू (पु.) : संसार को जाननेवाला, बुद्ध।

लोकविवरण (नपुं.) : लोक-उद्घाटन।

लोकवोहार (पु.) : सामान्य व्यवहार।

लोकाधिपच्च (नपुं.) : लोकाधिपत्य, लोक पर अधिकार।

लोकानुकम्पा (स्त्री.) : लोगों पर दया।

लोकायतिक (वि.) : लोकायत-दृष्टिवाला, भौतिकवादी।

लोकिक / **लोकिय** (वि.) : लौकिक, दुनियावी।

लोकुत्तर (वि.) : लोकोत्तर।

लोचक (वि.) : (बालों को), नोचने वाला, जड़ से उखाड़ने वाला।

लोचन (नपुं.) : आंख।

लोण : (नपुं.) नमक; (वि.) नमकीन।

लोणकार (पु.) : नमक बनाने वाला।

लोणधूपन (नपुं.) : नमक से छौंकना।

लोणफल / **लोणसक्खरा** (स्त्री.) : नमक के छोटे छोटे टुकड़े।

लोणिक (वि.) : क्षार।

लोप (पु.) : लुप्त होना, काटना।

लोभ (पु.) : लालच।

लोभनीय (वि.) : लोभ करने योग्य।

लोभमूलक (वि.) : जिसके मूल में लोभ हो।

लोम (नपुं.) : बदन का बाल।

लोमकूप (पु.) : लोम-छिद्र।

लोमस (वि.) : (बदन पर) बालों वाला।

लोमसकस्सप-जातक : बदन पर बड़े बड़े बाल होने के कारण तपस्वी का नाम लोमसकस्सप पड़ा (४३३)।

लोमसपाणक (पु.) : कमला, इल्ली।

लोमहट्ठ (वि.) : जिसे लोमहर्ष (बालों का सीधा खड़ा होना) हुआ हो, रोमांचित।

लोमहंस (पु.) / **लोमहंसन** (नपुं.) : लोम हर्ष।

लोमहंस-जातक : आजीवक ने सभी प्रकार के काय-क्लेश सहन किये (९४)।

लोल-जातक : कबूतर तथा लोभी कौवे की कथा (२७४)।

लोल (वि.) : लोभी, चंचल।

लोलता (स्त्री.) : उत्सुकता, लोभ।

लोलुप (वि.) : लोभी, लालची।

लोलुप्प (नपुं.) : लोभ, लालच ।

लोलेति (क्रि.) : हिलाता है।

लोसक-जातक : निवासी भिक्षु आगंतुक भिक्षु के प्रति ईर्षालु हो गया (४१)।

लोह (नपुं.) : तांबा।

लोहकटाह (पु.) : तांबे का कड़ाहा।

लोहकार (पु.) : तांबे का काम करने वाला, लोहार।

लोहकुम्भि-जातक : पुरोहित के शिष्य ने यज्ञ में बलि दिये जानेवाले पशुओं की जान बचाई (३१४)।

लोहकुम्भी (स्त्री.) : गागर।

लोहपिट्ठ (पु., नपुं.) : सारस, बगुला।

लोहथालक (पु.) : तांबे की थाली।

लोहपासाद : श्रीलंका के अनुराधपुर का प्रसिद्ध विहार।

लोहभण्ड (नपुं.) : तांबे का सामान।

लोहमासक (पु.) : तांबे का सिक्का।

लोहसलाका (स्त्री.) : तांबे की सलाई।

लोहित : (नपुं.) रक्त; (वि.) रक्त-वर्ण।

लोहितक : (नपुं.) लाल वर्ण मणि; (वि.) लाल वर्ण।

लोहितक्ख (वि.) : लाल आंखों वाला।

लोहितचन्दन (नपुं.) : रक्त-वर्ण चंदन।

लोहितपक्खन्दिका (स्त्री.) : रक्तातिसार।

लोहितभक्ख (वि.) : रक्त-भक्षक।

लोहितुप्पादक (पु.) : (बुद्ध के शरीर का) रक्त बहाने वाला।

व

व : इव (जैसा) या एव (ही) का संक्षिप्त रूप।

वक (पु.) : (वृक) भेड़िया।

वक-जातक : भेड़िये ने बकरे को देखा। उसका झूठ-मूठ का व्रत उसी समय खंडित हो गया (३००)।

वकुल (पु.) : वृक्ष-विशेष, बकुल।

वक्क (नपुं.) : गुर्दा।

वक्कल (नपुं.) : वल्कल-चीर, पेड़ की छाल का बना वस्त्र।

वक्कली (वि.) : वल्कल-चीर पहनने वाला।

वक्खति (क्रि.) : बताता है, कहता है।

वग्ग : (पु.) वर्ग, समूह, पुस्तक का परिच्छेद; (वि.) भिन्न, पृथक-पृथक।

वग्गबन्धन (नपुं.) : वर्ग में संगठित करना।

वग्गिय (वि.) : (समास में) वर्ग से संबंधित।

वग्गु (वि.) : प्रिय, मधुर।

वग्गुवद (वि.) : प्रियं-वद, मधुर भाषी।

वग्गुलि (पु., स्त्री.) : चमगादड़।

वङ्क : (वि.) टेढा, बेईमान; (नपुं.) (मछली पकडने का) काँटा।

वङ्कघस्त (वि.) : जो काँटा निगल गयी हो (मछली)।

वङ्कता (स्त्री.) : टेढापन।

वङ्ग (पु.) : वंग प्रदेश, बंगाल।

वच / वचो (पु., नपुं.) : शब्द, कहावत।

वचन (नपुं.) : शब्द, वाणी, व्याख्या।

वचनकर (वि.) : आज्ञाकारी।

वचनक्खम (वि.) : कहने के अनुसार चलने वाला।

वचनत्थ (पु.) : शब्द का अर्थ।

वचनीय (वि.) : कहने-सुनने योग्य।

वचनपथ (पु.) : वचन-मार्ग।

वचा (स्त्री.) : वच नाम की औषधि।

वची (स्त्री.) : भाषण, वाणी, वाचा।

वचीकम्म (नपुं.) : वाणी का कर्म।

वचीगुत्त (वि.) : वाणी का संयत।

वचीदुच्चरित (नपुं.) : वाणी का असंयम।

वचीपरम (वि.) : बोलने में बहादुर, वाणी का शूर।

वचीभेद (पु.) : मुँह से निकले शब्द।

वचीविञ्ञत्ति (स्त्री.) : वाणी द्वारा सूचना।

वचीसङ्खार (पु.) : वाणी का संस्कार (चेतसिक)।

वचीसमाचार (पु.) : शुभ वचन बोलना।

वचीसुचरित (नपुं.) : वाणी का संयम।

वच्च (नपुं.) : मल, गूह।

वच्चकुटि (स्त्री.) : पाखाना।

वच्चकूप (पु.) : पाखाना करने का कुएँ जैसा गड्ढा।

वच्चमग्ग (पु.) : गुदा।

वच्चसोधक (पु.) : पाखाने के सफाई करने वाला।

वच्छ (पु.) : वत्स, बछड़ा।

वच्छक (पु.) : छोटा बछड़ा।

वच्छगिद्धिनी (स्त्री.) : बछड़े के लिए लालायित।

वच्छतर (पु.) : बड़ा बछड़ा।

वच्छनख-जातक : वच्छनख तपस्वी ने गृहस्थ-जीवन के दोष बताये (२३५)।

वच्छर (नपुं.) : वत्सर, वर्ष।

वच्छल (वि.), वत्सल, स्नेह-पात्र।

वज (पु.) : व्रज, पशुओं का अड्डा।

वजति (क्रि.) : जाता है।

वजिर (नपुं.) : हीरा, वज्र, बिजली।

वजिरपाणी / वजिरहत्थ (पु.) : शक्र, इंद्र।

वज्ज : (नपुं.) वद्य, दोष, वाद्य, बाजा; (वि.) कहने योग्य (वद्य), अकरणीय, वर्ज्य।

वज्जन (नपुं.) : वर्जन, नहीं करना।

वज्जनीय (वि.) : वर्जनीय, न करने योग्य।

वज्जिय (पू.क्रि.) : छोड़कर, वर्जित करके।

वज्जी : बुद्ध के समय के सोलह जनपदों में से एक वज्जी-जनपद।

वज्जेति (क्रि.) : मना करता है, त्यागता है।

वज्झ (वि.) : वध्य, मार डालने योग्य।

वज्झप्पत्त (वि.) : वध्य, प्राण-दंड दिया गया।

वज्झभेरि (स्त्री.) : प्राण-दण्ड की डौण्डी या मुनादी।

वज्झेति (क्रि.) : वध करता है, काट डालता है।

वञ्चक (पु.) : ठग।

वञ्चन (नपुं.) / **वञ्चना** (स्त्री.) : ठगी।

वञ्चनिक (वि.) : ठग, ठगने वाला।

वञ्चेति (क्रि.) : ठगता है।

वञ्झ (वि.) : वंध्या, बाँझ।

वञ्झा (स्त्री.) : बाँझ स्त्री।

वट (पु.) : वट-वृक्ष, बरगद / बड़ का पेड़।

वटंसक (पु.) : सिर के लिए पुष्प माला।

वटुम (नपुं.) : रास्ता, सड़क।

वट्ट : (वि.) गोल; (नपुं.), चक्कर, घेरा, जन्म-मरण का चक्कर, यान-व्यवस्था।

वट्टक-जातक : बटेर की सत्य-क्रिया से आग बुझी (३५)।

वट्टक-जातक : बटेर ने अपने-आपको भूखा रख मुक्ति पाई (११८)।

वट्टक-जातक : बटेर ने कौवे को अपने मोटापे का रहस्य बताया (३९४)।

वट्टक-जातक : देखो **सम्मोदमान-जातक।**

वट्टका (स्त्री.) : बटेरनी।

वट्टति (क्रि.) : घूमता है, उचित है, उपयुक्त होता है।

वट्टन (नपुं.) : घूमना।

वट्टि / **वट्टिका** (स्त्री.) : बत्ती, दिये की बाती, किनारा।

वट्टुल (वि.) : वर्तुल, गोलाकार ।

वट्टेति (क्रि.) : घूमता है, घुमाता है।

वट्ठ / **वुट्ठ** (वि.) : बरसा हुआ।

वठर (वि.) : स्थूल, मोटा।

वड्ढ / **वड्ढक** / **वड्ढनक** (वि.) : बढता हुआ।

वड्ढन (नपुं.) : वर्धन।

वड्ढकी (पु.) : बढई।

वड्ढकिसूकर-जातक : सूअरों ने शेर को मार डाला (२८३)।

वड्ढति (क्रि.) : बढता है।

वड्ढि (स्त्री.) : वृद्धि, सूद।

वड्ढेति (क्रि.) : बढाता है, विकसित करता है।

वण (नपुं.) : व्रण, जख्म।

वणचोळक (नपुं.) : जख्म पर बाँधने की पट्टी।

वणपटिकम्म (नपुं.) : जख्म की चिकित्सा।

वणबन्धन (नपुं.) : जख्म के लिए पट्टी।

वणिज्जा (स्त्री.) : वाणिज्य, व्यापार।

वणित (वि.) : व्रण-युक्त, जख्मी।

वणिप्पथ (पु.) : व्यापार का देश।

वणिब्बक / **वनिब्बक** (पु.) : दरिद्र, याचक, भिखारी।

वण्ट / **वण्टक** (नपुं.) : डंठल।

वण्टिक (वि.) : डंठल वाला।

वण्ण (पु.) : वर्ण, रंग, चमड़ी का रंग, गुण।

वण्णक (नपुं.) : रंग (कपड़े रंगने का)।

वण्णकसिण (नपुं.) : चित्त की एकाग्रता का अभ्यास करने के लिए रंगीन चक्कर।

वण्णद (वि.) : वर्ण दान करने वाला, सौंदर्य प्रदान करने वाला।

वण्णदासी (स्त्री.) : वेश्या, नगर-वधू।

वण्णधातु (स्त्री.) : रंग।

वण्णना (स्त्री.) : व्याख्या।

वण्णनीय (वि.) : प्रशंसनीय।

वण्णपोक्खरता (स्त्री.) : वर्ण का निखार।

वण्णवन्तु (वि.) : वर्णवान।

वण्णवादी (पु.) : आत्म-प्रशंसक।

वण्णसंपन्न (वि.) : वर्ण-युक्त, सुंदर।

वण्णारोह-जातक : गीदड़ ने शेर और चीते में मनमुटाव पैदा करने की कोशिश की (३६१)।

वण्णित (वि.) : वर्णित, व्याख्यात, प्रशंसित।

वण्णी (वि.) : (समास में), वर्ण का, शक्ल का।

वण्णु (स्त्री.) : बालू, रेत।

वण्णुपथ (पु.) : बालू की जमीन।

वण्णुपथ-जातक : सार्थवाह के अप्रमाद से सभी के प्राण बचे (२)।

वण्णेति (क्रि.) : वर्णन करता है, व्याख्या करता है, प्रशंसा करता है।

वत : (अ.) निश्चय से; (नपुं.) व्रत।

वतपद (नपुं.) : व्रत-पद।

वतवन्त (वि.) : व्रती।

वतसमादान (नपुं.) : व्रत ग्रहण करना।

वति / **वतिका** (स्त्री.) : बाड़, चारदीवारी।

वतिक (वि.) : (समास में), अभ्यासी, व्रत करने वाला।

वत्त (नपुं.) : कर्तव्य, सेवा कार्य।

वत्तक / **वत्तेतु** (पु.) : वरतने वाला, वर्तन करने वाला, (नियम) पालन करने वाला।

वत्तति (क्रि.) : घटित होता है।

वत्तन (नपुं.) / **वत्तना** (स्त्री.) : वर्तन, व्यवहार, आचरण।

वत्तनी (स्त्री.) : सड़क, रास्ता।

वत्तपटिवत्त (नपुं.) : सभी कर्तव्य।

वत्तब्ब (वि.) : कहने योग्य।

वत्तमान : (वि.) विद्यमान; (पु.) वर्तमान काल।

वत्तमानक (वि.) : विद्यमान।

वत्तमाना (स्त्री.) : वर्तमान काल।

वत्तसम्पन्न (वि.) : कर्तव्य का पालन करने वाला।

वत्तिका (स्त्री.) : बत्ती, बाती।

वत्तितब्ब (वि.) : जारी रखने योग्य।

वत्ती (वि.) : (समास में), अभ्यासी।

वत्तु (पु.) : वक्ता, बोलने वाला।

वत्तेति (क्रि.) : जारी रखता है।

वत्थ (नपुं.) : वस्त्र।

वत्थगुय्ह (नपुं.) : वस्त्र से ढका हुआ, गुह्य-स्थान।

वत्थन्तर (नपुं.) : वस्त्र का नमूना।

वत्थयुग (नपुं.) : कपड़ों का जोड़ा।

वत्थि (स्त्री.) : वस्ति, मूत्राशय।

वत्थिकम्म (नपुं.) : वस्ति-क्रिया (पेट की सफाई)।

वत्थु (नपुं.) : वस्तु, स्थान, भूमि, कथा।

वत्थुक (वि.) : (समास में) स्थानीय, आधारित।

वत्थुकत (वि.) : आधार-कृत, अभ्यस्त।

वत्थुगाथा (स्त्री.) : भूमिका के पद।

वत्थुदेवता (स्त्री.) : स्थानीय देवता।

वत्थुविज्जा (स्त्री.) : गृहनिर्माण शिल्प।

वत्वा (पू.क्रि.) : कहकर।

वदञ्ञुता (स्त्री.) : उदारता।

वदञ्ञू (वि.) : उदार।

वदति (क्रि.) : बोलता है।

वदन (नपुं.) : चेहरा, वाणी।

वदापन (नपुं.) : बुलवाना।

वदापेति (क्रि.) : बुलवाता है, कहलवाता है।

वदेति (क्रि.) : कहता है।

वद्दलिका (स्त्री.) : घने बादल।

वद्धापचायन (नपुं.) : बड़ों का सम्मान।

वध (पु.) : दंड, प्राण-दंड।

वधक (पु.) : जल्लाद।

वधुका (स्त्री.) : तरुण पत्नी, पुत्र-वधू।

वधू (स्त्री.) : औरत, पत्नी, पुत्र-वधू।

वधेति (क्रि.) : जान से मार डालता है, चिढाता है, कष्ट पहुँचाता है।

वन (नपुं.) : जंगल।

वनकम्मिक (पु.) : जंगल से लकड़ी लाने वाला, जंगल में काम करने वाला।

वनगहन (नपुं.) : घना जंगल।

वनगुम्ब (पु.) : घने पेड़।

वनचर / वनचरक / वनचारी (वि.) : वनवासी, वन में रहने वाला, वन में विचरने वाला।

वनथ (पु.) : तृष्णा।

वनदुग्ग (नपुं.) : कांतार।

वनदेवता (स्त्री.) : वन-देवता।

वनपत्थ (नपुं.), जंगल में दूर की जगह।

वनप्पति (नपुं.) : बिना फूलों के फल देनेवाला वृक्ष, वनस्पती।

वनवास : दक्षिण में सम्भवतः उत्तर-कन्नड़ (जिला)। तीसरी संगीति के बाद रक्खित स्थविर को वहीं धम्म प्रचारार्थ भेजा गया था।

वनवासी (पु.) : जंगल में रहनेवाला।

वनसण्ड (पु.) : वन-खंड।

वनिक (वि.) : (समास में), वन-संबंधी।

वनिता (स्त्री.) : नारी, स्त्री, महिला।

वन्त (वि., कृ.) : वमन किया गया, परित्यक्त।

वन्तकसाव (वि.) : दोष-विरहित।

वन्तमल (वि.) : निर्मल, शुद्ध, पवित्र।

वन्दक (वि.) : वंदना करने वाला।

वन्दति (क्रि.) : वंदना करता है, नमस्कार करता है।

वन्दन (नपुं.) / **वन्दना** (स्त्री.) : नमस्कार।

वन्दापन (नपुं.) : वंदना करवाना।

वन्दापेति (क्रि.) : वंदना कराता है।

वपति (क्रि.) : बोता है, मुंडन करता है।

वपन (नपुं.) : बोना।

वपु (नपुं.) : शरीर।

वप्प (पु.) : बोना, महीना-विशेष।

वप्पकाल (पु.) : बीज बोने का समय।

वप्पमङ्गल (नपुं.) : हल चलाने का उत्सव।

वप्प थेर : पंचवर्गीय स्थविरों में से एक।

वमति (क्रि.) : वमन करता है।

वमथु (पु.) : वमन, वमित पदार्थ।

वम्भन (नपुं.) / **वम्भना** (स्त्री.) : तिरस्कार, घृणा।

वम्भी (पु.) : घृणा करने वाला।

वम्भेति (क्रि.) : घृणा करता है।

वम्म (नपुं.) : कवच।

वम्मी (पु.) : कवचधारी।

वम्मिक (पु.) : दीमक की बाँबी।

वम्मित (वि.) : कवच धारण किया हुआ ।

वम्मेति (क्रि.) : कवच धारण करता है।

वय / **वयो** (पु., नपुं.) : आयु, हानि, खर्च।

वयकरण (नपुं.) : खर्च।

वयकल्याण (नपुं.) : तरुणाई का आकर्षण।

वयट्ठ (वि.) : प्रौढ होना ।

वयप्पत्त (वि.) : आयु-प्राप्त, विवाह करने के योग्य (उम्र का)।

वयस्स (पु.) : मित्र, वयस्क।

वयोवुद्ध (वि.) : वयोवृद्ध, बुजूर्ग।

वयोहर (वि.) : आयु / जीवित हरण करने वाला।

वय्ह (नपुं.) : वाहन, गाड़ी।

वर : (वि.) श्रेष्ठ; (पु.) वरदान।

वरक (पु.) : धान्य-विशेष।

वरङ्गना (स्त्री.) : वरांगना, विदुषी।

वरण (पु.) : वृक्ष-विशेष।

वरत्ता (स्त्री.) : पट्टा, चमड़े की पट्टी।

वरद (वि.) : वर देनेवाला।

वरदान (नपुं.) : वर का देना।

वरपञ्ञ (वि.) : श्रेष्ठ-प्रज्ञ।

वरलक्खण (नपुं.) : श्रेष्ठ चिन्ह।

वरण-जातक : आलसी लड़का जलाने के लिये गीली लकड़ी ले आया, जिसके कारण आग न जल सकी (७१)।

वराक (वि.) : बेचारी या बेचारा, दया करने लायक।

वरारोहा (स्त्री.) : सुंदर स्त्री।

वराह (पु.) : सुअर।

वराही (स्त्री.) : सुअरी।

वलञ्ज (नपुं.) : मार्ग, उपयोग।

वलञ्जन (नपुं.) : उपयोग में लाना, सहारा लेना, मलत्याग।

वलञ्जनक (वि.) : उपयोग में लाने योग्य।

वलञ्जेति (क्रि.) : मार्ग चलता है, उपयोग में लाता है, खर्च करता है।

वलय (नपुं.) : कंगन।

वलयाकार (वि.) : गोलाकार।

वलाहक (पु.) : बादल।

वलाहस्स-जातक : वलाहक अश्व ने दो सौ पचास व्यापारियों की रक्षा की (१९६)।

वलि (स्त्री.) : (कपड़े) कि तह, झुर्री।

वलिक (वि.) : तह / परतों वाला।

वलित / **वली** (वि.) : झुर्रियों वाला।

वलित्तच (वि.) : जिसकी त्वचा पर झुर्रियां पड़ी हो।

वलिर (वि.) : ऐंची आँख वाला, भेंगा।

वलीमुख (पु.) : बंदर, जिसके चेहरे पर झुर्रियाँ पड़ी हों।

वल्लकी (स्त्री.) : सारंगी, वीणा।

वल्लभ (वि.) : प्रिय।

वल्लभत्त (नपुं.) : प्रिय होना।

वल्लरी (स्त्री.) : गुच्छा।

वल्लिहारक (पु.) : लताओं का संग्राहक।

वल्लिभ (पु.) : कद्दू।

वल्ली (स्त्री.) : लता।

वल्लूर (नपुं.) : सूखी मछली।

ववत्थपेति (क्रि.) : व्यवस्था करता है, निश्चित करता है।

ववत्थापन (नपुं.) : व्यवस्थापन, स्थिर करना, निश्चित करना।

ववत्थेति (क्रि.) : विश्लेषण करता है, व्याख्या करता है।

वस (पु.) : अधिकार, प्रभाव।

वसग / **वसङ्गत** (वि.) : जो किसी के अधिकार में हो।

वसति (क्रि.) : वास करता है, रहता है।

वसन (नपुं.) : वस्त्र; रहना, रहने का स्थान।

वसनक (वि.) : रहने वाला।

वसनट्ठान (नपुं.) : निवास-स्थान।

वसन्त (पु.) : वसंत ऋतु।

वसल (पु.) : वृषल, अंत्यज।

वसवत्तक / **वसवत्ती** (वि.) : शक्तिशाली, प्रभावशाली।

वसवत्तन (नपुं.) : वशवर्ती होना, प्रभाव।

वसानुग / **वसानुवत्ती** (वि.) : आज्ञाकारी।

वसा (स्त्री.) : चर्बी।

वसापेति (क्रि.) : बसाता है, ठहरवाता है।

वसिता (स्त्री.) : वश में होना, दक्षता।

वसिप्पत्त (वि.) : जिसने वश में कर लिया।

वसी (वि.) : वश वाला, शक्तिशाली।

वसीकत (वि.) : वशीकृत।

वसीभाव (पु.) : वश में होना।

वसीभूत (वि.) : वश में हुआ।

वसु (नपुं.) : धन।

वसुधा / **वसुन्धरा** / **वसुमति** (स्त्री.) : पृथ्वी।

वस्स (नपुं., पु.) : वर्ष, साल, वर्षा।

वस्सकाल (पु.) : वर्षाकाल।

वस्सग्ग (नपुं.) : भिक्षुओं का ज्येष्ठपन।

वस्सति (क्रि.) : बरसता है, आवाज निकालता है।

वस्सन (नपुं.) : बरसना, जानवर की आवाज।

वस्सान (पु.) : वर्षा रुतु।

वस्सापनक (वि.) : बरसाने वाला।

वस्सापेति (क्रि.) : बरसाता है।

वस्सिक (वि.) : वर्षा ऋतु संबंधी, इतने वर्ष (आयु) वाला।

वस्सिका (स्त्री.) : चमेली ।

वस्सित (वि.) : बरसा हुआ।

वस्सूपगत (वि.) : वर्षा का मौसम बिताने वाला, वस्सावास करने वाला (भिक्षु)।

वहति (क्रि.) : ढोता है, धारण करता है, सहन करता है, बहता है।

वहन (नपुं.) : ढोना, ले जाना, बहना।

वहनक (वि.) : लाता हुआ।

वहितु (पु.) : धारण करने वाला, ले जाने वाला, सहन करने वाला।

वळवा (स्त्री.) : घोड़ी।

वळवामुख (नपुं.) : समुद्र के भीतर की आग।

वंस (पु.) : जाति, नस्ल, वंश-परंपरा, बांस, बांस की मुरली।

वंस : कोसल जनपद के दक्षिण का प्रदेश। यमुना नदी के किनारे स्थित कोसम्बी इसकी राजधानी थी।

वंसकळीर (पु.) : बांस की कोंपल।

वंसज (वि.) : वंश-विशेष में उत्पन्न।

वंसवण्ण (पु.) : वैडूर्य, बहुमूल्य नीला रत्न।

वंसागत (वि.) : वंश-परंपरा से प्राप्त।

वंसानुपालक (वि.) : वंश-परंपरा का रक्षक।

वंसिक (वि.) : वंश संबंधी।

वा (अ.) : या, अथवा।

वाक (नपुं.) : पेड़ की छाल।

वाकचीर (नपुं.) : वल्कल-चीर।

वाकमय (वि.) : वल्कल-छाल निर्मित।

वाकरा / वागुरा (स्त्री.) : हिरण पकड़ने का जाल।

वाक्करण (नपुं.) : बात-चीत।

वाक्य (नपुं.) : शब्दों का सार्थक समूह, फिकरा।

वागुरिक (पु.) : जाल का उपयोग करने वाला।

वाचक (पु.) : शिक्षक अथवा पाठक।

वाचनक (नपुं.) : पाठ।

वाचनामग्ग (पु.) : पाठ करने की पद्धति।

वाचसिक (वि.) : वाणी से संबंधित।

वाचा (स्त्री.) : शब्द, वाणी।

वाचानुरक्खी (वि.) : वाणी का संयमी।

वाचाल (वि.) : व्यर्थ बातचीत करनेवाला, बकवासी।

वाचुग्गत (वि.) : कंठस्थ।

वाचेति (क्रि.) : पढता है, पढाता है, पाठ करता है।

वाचेतु (पु.) : पढने वाला या पढाने वाला।

वाज (पु.) : तीर का पंख, पेय पदार्थ विशेष।

वाजपेय्य (नपुं.) : यज्ञ-विशेष।

वाजी (पु.) : घोडा।

वाट / वाटक (पु.) : घेरा।

वाणिज / वाणिजक (पु.) : व्यापारी।

वाणिज्ज (नपुं.) : व्यापार।

वाणी (स्त्री.) : शब्द, बोल, बात।

वात (पु.) : हवा।

वातग्गसिन्धव-जातक : गधी ने अपने प्रेम-पात्र घोड़े को लतियाया और बाद में उसके वियोग में मर गई (२६६)।

वातघातक (पु.) : वृक्ष-विशेष।

वातजव (वि.) : वायु समान वेग वाला, अत्यंत तेज।

वातपान / वातायन (नपुं.) : खिडकी, झरोखा।

वातमण्डलिका (स्त्री.) : झंझावात।

वातमिग-जातक : वातमिग रस-तृष्णा के कारण पकड़ लिया गया (१४)।

वातरोग / वाताबाध (पु.) : वायु के कारण उत्पन्न बीमारी।

वातवुट्ठि (स्त्री.) : हवा तथा वर्षा ।

वातवेग (पु.) : वायु का जोर।

वातातप (पु.) : हवा तथा धूप।

वाताभिहत (वि.) : वायु से हिलाया हुआ, वायु-ताड़ित।

वाताहट (वि.) : वायु द्वारा लाया गया।

वाति (क्रि.) : बहता है, चलता है।

वातिक (वि.) : वायु से संबंधित।

वातेरित (वि.) : वायु-संचालित।

वाद (पु.) : सिद्धांत, मत, मान्यता।

वादक (पु.), किसी वाद्य यंत्र को बजानेवाला।

वादकाम (वि.) : वाद-विवाद का इच्छुक, शास्त्रार्थ-कामी।

वादक्खित्त (वि.) : वाद-विवाद में उखड़ा हुआ।

वादपथ (पु.) : वाद-विवाद का कारण, वाद-विवाद का आधार।

वादित (वि.) : बजाया हुआ।

वादी (पु.) : मत-विशेष की स्थापना करने वाला।

वादेति (क्रि.) : वाद्य-यंत्र को बजाता है।

वान (नपुं.) : तृष्णा, चारपाई का बुनना।

वानर (पु.) : बंदर।

वानर-जातक : बंदर ने मगरमच्छ को बेवकूफ बनाया (३४२)।

वानरिन्द (पु.) : बंदरों का राजा।

वानरिन्द-जातक : बंदर ने मगरमच्छ को छकाया (५७)।

वानरी (स्त्री.) : बंदरी।

वापी (स्त्री.) : तालाब, पुष्करणी।

वापित (वि.) : बोया गया।

वाम (वि.) : बायां।

वामपस्स (नपुं.) : बायां अंग, (शरीर का) बायां हिस्सा।

वामन / **वामनक** (पु., वि.) बौना।

वाय (पु., नपुं.) : बुनना।

वायति (क्रि.) : बहता है, चलता है, सुगंधि फैलाता है; (कपड़ा) बुनता है।

वायन (नपुं.) : (हवा का), चलना, सुगंधि का फैलना।

वायमति (क्रि.) : प्रयास करता है, कोशिश करता है।

वायस (पु.) : कौवा।

वायसारि (नपुं.) : उल्लू।

वायाम (पु.) : प्रयास, प्रयत्न।

वायित (वि.) : बुना गया, बहाया हुआ।

वायिम (वि.) : बुना हुआ।

वायु (नपुं.) : हवा।

वायेति (क्रि.) : बुनवाता है।

वायो : समास में **वायु** का ही रूपांतर।

वायोकसिण (नपुं.) : चित्तेकाग्रता के लिए 'वायु' को ध्यान का विषय बनाना।

वायोधातु (स्त्री.) : वायु तत्व।

वार (पु.) : बारी, मौका।

वारक (पु.) : मटका, बडा बर्तन।

वारण : (पु.) हाथी, बाज की एक जाति; (नपुं.) वारना, रोकना, हटाना।

वारि (नपुं.) : जल।

वारिगोचर (वि.) : पानी में रहने वाला।

वारिज : (वि.) पानी में उत्पन्न; (पु.) मछली; (नपुं.) कमल।

वारित (वि., कृ.) : हटाया गया, रोका गया।

वारित्त (नपुं.) : न करना, न करने योग्य कार्य ।

वारिद / **वारिधर** / **वारिवाह** (पु.) : बादल।

वारिमग्ग (पु.) : नाली।

वारियमान (वि.) : रोका जाता हुआ, मना किया जाता हुआ।

वारुणी (स्त्री.) : शराब।

वारुणीजातक : शिष्य ने शराब में नमक मिलाया (४७)।

वारेति (क्रि.) : मना करता है, बाधा डालता है, रोकता है।

वाल (पु.) : पूंछ के बाल; (वि.) भयानक, ईर्षालु।

वालकम्बल (नपुं.) : (घोड़े के), बालों का कंबल।

वालग्ग (नपुं.) : बाल का सिरा।

वालण्डुपक (पु., नपुं.) : घोड़े के बालों की बनी कूँची या ब्रश।

वालधि (पु.) : पूंछ, दूम।

वालबीजनी (स्त्री.) : चँवरी।

वालवेधी (पु.) : बाल को बींध सकनेवाला धनुर्धारी।

वालिका / **वालुका** (स्त्री.) : बालू, रेत।

वालिकन्तार / **वालुकन्तार** (पु.) : बालू का रेगिस्तान।

वालिपुञ्ज / **वालुपुञ्ज** (पु.), बालू का ढेर ।

वालिपुलिन / **वालुपुलिन** (नपुं.) : बालू-तट।

वालोदक-जातक : घोड़ों और गधों को अंगूरी पिलाये जाने की कथा (१८३)।

वास (पु.) : रहना, प्रवास, वस्त्र, सुगंधि।

वासचुण्ण (नपुं.) : सुगंधित चूर्ण।

वासट्ठान (नपुं.) : रहने का स्थान ।

वासन (नपुं.) : सुगंधित करना, बसाना।

वासना (स्त्री.) : पूर्व-संस्कार, पूर्वस्मृति।

वासर (पु.) : दिन।

वासव (पु.) : इंद्र।

वासि (स्त्री.) : (बढई का) वसूला या बसूली।

वासिक / **वासी** (पु.) : (समास में) रहने वाला।

वासिजट (नपुं.) : बसूले की मूठ।

वासितक (नपुं.) : सुगंधित चूर्ण।

वासिफल (नपुं.) : बसूले का लोहअंश।

वासेति (क्रि.) : बसाता है, सुगंधित करता है।

वाह : (वि.) ले जाता हुआ, मार्ग दिखाता हुआ; (पु.) नेता, गाड़ी, गाड़ी का भार, माल ढोने वाला पशु, जल-धारा।

वाहक (पु.) : भार ढोने या ले जाने वाला।

वाहन (नपुं.) : गाड़ी।

वाहसा (अ.) : कारण से।

वाहिनी (स्त्री.) : सेना, नदी।

वाही (वि.) : वाहक, ले जाता हुआ।

वाहेति (व.क्रि.) : ले जाता है।

वाळमिग (पु.) : श्वापद, हिंस्र पशु, जंगली जानवर।

विकच (वि.) : विकसित हुआ, खिला हुआ।

विकट : (वि.) परिवर्तित, बदला हुआ; (नपुं.) गंदगी।

विकण्णक-जातक : राजा को जब यह मालूम हुआ कि मछलियां और कछुवे उसके संगीत पर मोहित है, तो उसने उनको रोज खाना खिलाये जाने की व्यवस्था की (२३३)।

विकति (स्त्री.) : विकृति, प्रकार, किस्म।

विकतिक (वि.) : नाना आकार-प्रकार के।

विकत्थक / विकत्थी (पु.) : शेखी बघारने वाला।

विकत्थति (क्रि.) : शेखी बघारता है।

विकत्थन (नपुं.) : शेखी बघारना।

विकन्तति (क्रि.) : काटता है।

विकन्तन (नपुं.) : काटना, काटने का चाकू।

विकप्प (पु.) : विचार, विकल्प, अनिश्चय।

विकप्पन (नपुं.) : अस्थिरता।

विकप्पेति (क्रि.) : संकल्प करता है, व्यवस्था करता है, परिवर्तन करता है।

विकम्पति (क्रि.) : कांपता है।

विकम्पन (नपुं.) : कांपना।

विकरोति (क्रि.) : परिवर्तन करता है।

विकल / विकलक (वि.) : सदोष, अभावपूर्ण।

विकसति (क्रि.) : विकसित होता है।

विकार (पु.) : परिवर्तन, तबदीली, विकृति।

विकाल (पु.) : अनुचित समय, मध्यान्होत्तर तथा रात्रि।

विकालभोजन (नपुं.) : मध्यान्होत्तर तथा रात्रि का भोजन।

विकास (पु.) : फैलाव।

विकासेति (क्रि.) : विकसित करता है, प्रकाशित करता है।

विकिण्ण (वि.) : विकीर्ण, बिखरा हुआ।

विकिण्णकेस (वि.) : बिखरे हुए बाल वाला।

विकिरण (नपुं.) : बिखेरना।

विकिरति (क्रि.) : बिखेरता है, छिड़कता है, फैलाता है।

विकिरीयति (क्रि.) : बिखेरा जाता है।

विकुणित (वि.) : विकृत।

विकुब्बति (क्रि.) : परिवर्तन करता है, प्रातिहार्य (करिश्मे) करता है।

विकुब्बन (नपुं.) : ऋद्धि-बल का प्रदर्शन।

विकूजति (क्रि.) : कूजता है, शब्द करता है, चहचहाता है।

विकूजन (नपुं.) : पक्षियों का कूजना, चहचहाना।

विकूल (वि.) : ढलान।

विकोपन (नपुं.) : कुपित करना, हानि पहुंचाना।

विकोपेति (क्रि.) : कुपित करता है, हानि पहुंचाता है।

विक्कन्त (नपुं.) : विक्रांत-भाव, वीरता।

विक्कन्दति (क्रि.) : चिल्लाता है, चीखता है।

विक्कम (पु.) : विक्रम, शक्ति।

विक्कमन (नपुं.) : प्रयास, गमन।

विक्कय (पु.) : विक्रय, विक्री।

विक्कयभण्ड (नपुं.) : विक्री का सामान।

विक्कयिक / **विक्केतु** (पु.) : विक्रय करने वाला।

विक्किणाति (क्रि.) : बेचता है।

विक्खम्भ (पु.) : व्यास, गोलाकार के एक सिरे से दूसरे सिरे तक मध्यबिंदु में से होकर गुजरती हुई रेखा।

विक्खम्भन (नपुं.) : रोकना, त्यागना, हटाना, दबाना।

विक्खम्भेति (क्रि.) : त्यागता है, हटाता है, दबाता है।

विक्खालेति (क्रि.) : धोता है।

विक्खित्त (वि.) : विक्षिप्त, अस्वस्थ।

विक्खित्तक : (वि.) सर्वत्र बिखरा हुआ; (नपुं.) सर्वत्र बिखरा हुआ मृतक शरीर।

विक्खित्तचित्त (वि.) : अस्वस्थ-चित्त, पागल।

विक्खिपति (क्रि.) : विक्षेप उत्पन्न करता है।

विक्खिपन (नपुं.) / **विक्खेप** (पु.) : विक्षेप, गडबडी।

विक्खेपक (वि.) : गड़बड़ी मचाने वाला, विक्षेप उत्पन्न करने वाला।

विक्खोभन (नपुं.) : विक्षोभ, गड़बड़ी।

विक्खोभेति (क्रि.) : हिलाता-डुलाता है, क्षुब्ध करता है।

विगच्छति (क्रि.) : विदा होता है।

विगत (वि.) : चला गया, विरहित हो गया।

विगतखिल (वि.) : दोष-रहित।

विगतरज (वि.) : रज-रहित।

विगतास (वि.) : तृष्णा-रहित।

विगतासव (वि.) : चित्तमैल रहित, अर्हत।

विगम (पु.) / **विगमन** (नपुं.) : विदा, प्रस्थान।

विगय्ह (पू.क्रि.) : प्रविष्ट होकर, गोता लगाकर।

विगरहति (क्रि.) : निंदा करता है, गाली देता है।

विगलित (वि.) : स्थान से च्युत, पतित।

विगाहति (क्रि.) : प्रविष्ट होता है, डुबकी लगाता है।

विगाहन (नपुं.) : डुबकी लगाना, प्रविष्ट होना।

विग्गय्ह (पू.क्रि.) : विग्रह करके, विश्लेषण करके, झगड़ा करके।

विग्गह (पु.) : झगड़ा, विवाद, शरीर, शब्द-व्युत्पत्ति।

विग्गाहिककथा (स्त्री.) : झगड़े की बातचीत।

विघट्टन (नपुं.) : प्रहार देना ।

विघाटन (नपुं.) : उद्घाटन, विवृत्त करना, ढीला करना।

विघाटेति (क्रि.) : खोलता है, तोड़ता है।

विघात (पु.) : विनाश, दुरावस्था, विद्वेष।

विघातेति (क्रि.) : हत्या करता है, नष्ट करता है।

विघास (पु.) : बचा हुआ भोजन।

विघासाद (पु.) : अवशिष्ट भोजन खाने वाला।

विघास-जातक : तपस्वी ने तपस्वी जीवन का स्वरूप स्पष्ट किया (३९३)।

विचक्खण : (वि.) विचक्षण, चतुर; (पु.) बुद्धिमान आदमी।

विचय (पु.) : (धर्म-) विवेचन, अन्वेषण।

विचरण (नपुं.) : विचरना, घुमना, आना-जाना।

विचरति (क्रि.) : घूमता है, आता-जाता है।

विचार (पु.) / **विचारण** (नपुं.) / **विचारणा** (स्त्री.) : खोजना, चिंतन करना, व्यवस्था करना, योजना बनाना।

विचारक (पु.) : विचार करने वाला, खोज-बीन करने वाला, व्यवस्थापक।

विचारेति (क्रि.) : सोचता है, व्यवस्था करता है, योजना बनाता है।

विचिकिच्छति (क्रि.) : संदेह करता है, हिचकिचाता है।

विचिकिच्छा (स्त्री.) : संदेह, हिचकिचाना।

विचिण्ण / **विचित** (वि.) : सोचा हुआ, चिंतित, चुना हुआ।

विचित्त (वि.) : विचित्र, अलंकृत, सजाया गया।

विचिनन (नपुं.) : विवेचन करना, चुनाव करना।

विचिनाति (क्रि.) : विचार करता है, चुनाव करता है, संग्रह करता है।

विचिन्तिय (पू.क्रि.) : विचार करके।

विचिन्तेति (क्रि.) : विचार करता है, मनन करता है, चिंतन करता है।

विचुण्ण (वि.) : चूर्ण किया गया, टुकड़े-टुकड़े किया गया।

विचुण्णेति (क्रि.) : पीसता है, चूर्ण बनाता है, टुकड़े-टुकड़े करता है।

विच्छिक (पु.) : बिच्छु।

विच्छिद्दक (वि.) : छिद्रों से भरा हुआ।

विच्छिन्दति (क्रि.) : काटता है, रोकता है, बाधक होता है।

विच्छिन्न (वि.) : कटा हुआ, पृथक किया हुआ।

विच्छेद (पु.) : काट, पार्थक्य।

विजटन (नपुं.) : सुलझाना, सुलझावट।

विजटित (वि.) : सुलझाया हुआ।

विजटेति (क्रि.) : सुलझाता है।

विजन (वि.) : जन-रहित, शून्य-स्थान।

विजनवात (वि.) : एकान्त, सूनापन लिये।

विजम्भति (क्रि.) : अंगड़ाई लेता है, जम्हाई लेता है।

विजम्भना (स्त्री.) : अंगड़ाई लेना, जम्हाई लेना।

विजम्भिका (स्त्री.) : जम्हाई, उबासी।

विजय (पु.) : जीत।

विजय : सिंहल-द्वीप का प्रथम महान राजा, सिंह-बाहु तथा सिंह-सीवली की संतान।

विजयति (क्रि.) : जीतता है।

विजहति (क्रि.) : छोड़ता है, त्याग देता है।

विजहन (नपुं.) : परित्याग।

विजहित (वि.) : परित्यक्त।

विजाता (स्त्री.) : जननी, शिशु-माता, जिसने अभी शिशु को जन्म दिया हो।

विजातिक (वि.) : विदेशी, दूसरी जाति का।

विजानन (नपुं.) : ज्ञान, पहचान।

विजानाति (क्रि.) : जानता है, पहचानता है।

विजायति (क्रि.) : जन्म देती है।

विजायन (नपुं.) : जन्म देना।

विजायिनी (स्त्री.) : बच्चे को जन्म दे सकने वाली।

विजित : (वि.) जीता गया; (नपुं.) राज्य।

विजितसङ्गाम (वि.) : संग्राम में विजयी, लड़ाई जीतने वाला।

विजितावी (पु.) : विजयी।

विजिनाति (क्रि.) : जीत लेता है।

विज्जट्ठान (नपुं.) : अध्ययन का विषय।

विज्जति (क्रि.) : विद्यमान होता है, पाया जाता है।

विज्जन्तरिका (स्त्री.) : बिजली कड़कने के बीच का समय।

विज्जा (स्त्री.) : विद्या, ज्ञान।

विज्जाचरण (नपुं.) : विद्या तथा आचरण।

विज्जाधर (वि.) : ओझा, जादू टोना करने वाला।

विज्जाविमुत्ति (स्त्री.) : विद्या द्वारा विमुक्ति।

विज्जु / **विज्जुता** / **विज्जुल्लता** (स्त्री.) : बिजली।

विज्जोतति (क्रि.) : चमकता है।

विज्झति (क्रि.) : बींधता है, छेद करता है, चीरता है।

विज्झन (नपुं.) : बींधना, निशाना लगाना।

विज्झापेति (क्रि.) : (आग) बुझाता है।

विज्झायति (क्रि.) : बुझता है।

विञ्ञत्त (वि.) : सूचित।

विञ्ञत्ति (स्त्री) : सूचना।

विञ्ञाण (नपुं.) : विज्ञान, चेतना।

विञ्ञाणक (वि.) : सचेतन।

विञ्ञाणक्खन्ध (पु.) : विज्ञान-स्कन्ध।

विञ्ञाणट्ठिति (स्त्री.), विज्ञान-स्थिति, चेतना की अवस्था।

विञ्ञाणधातु (स्त्री.) : विज्ञान, चेतना, चित्त, मन।

विञ्ञात (वि.) : विज्ञात, ज्ञात, जाना गया।

विञ्ञातब्ब (वि.) : जानने योग्य, समझने योग्य।

विञ्ञातु (पु.) : जानने वाला।

विञ्ञापक (पु.) : जानने वाला, शिक्षक।

विञ्ञापन (नपुं.) : विज्ञापन, जानकारी।

विञ्ञापय (वि.) : शैक्ष, जिसे सिखाया जा सके।

विञ्ञापित (वि.) : सूचित किया हुआ।

विञ्ञापेति (क्रि.) : सूचित करता है, शिक्षा देता है।

विञ्ञापेतु (पु.) : सूचना देने वाला, शिक्षक।

विञ्ञाय (पू.क्रि.) : जानकर, सीखकर।

विञ्ञायति (क्रि.) : जाना जाता है।

विञ्ञू : (वि.) बुद्धिमान, ज्ञाता, विज्ञ; (पु.) बुद्धिमान आदमी।

विञ्ञुता (स्त्री.) : विज्ञता, विवेक।

विञ्ञुप्पसत्थ (वि.) : बुद्धिमानों द्वारा प्रशंसित।

विञ्ञेय्य (वि.) : जानने योग्य।

विटङ्क (पु., नपुं.), कबूतर का दरबा।

विटप (पु.) : शाखा।

विटपी (पु.) : शाखा वाला, वृक्ष, पेड़।

विडूडभ : पसेनदि (प्रसेनजित) तथा वासभ खत्तिया का पुत्र, प्रसिद्ध सेनापति।

विडोज (पु.) : इंद्र।

वितक्क (पु.), वितर्क।

वितक्कन (नपुं.) : विचार, मनन।

वितक्केति (क्रि.) : विचार करता है, मनन करता है।

वितच्छिका (स्त्री.) : खुजली।

वितच्छेति (क्रि.) : छिलका उतारता है, चिकना करता है।

वितण्डवाद (पु.) : व्यर्थ का वाद-विवाद।

वितत (वि.) : फैलाया हुआ, विस्तृत किया गया।

वितथ (वि., नपुं) : असत्य, अयथार्थ, झूठ।

वितनोति (क्रि.) : फैलाता है।

वितरण (नपुं.) : बांटना।

वितरति (क्रि.) : बांटता है।

वितान (नपुं.) : चंदवा।

वितुदति (क्रि.) : चुभोता है।

वितुदन (नपुं.) : चुभोना।

वित्त (नपुं.) : धन, संपत्ति।

वित्ति (स्त्री.) : प्रीति।

वित्थ (नपुं.) : शराब पीने का पात्र।

वित्थम्भन (नपुं.) : विस्तार।

वित्थम्भेति (क्रि.) : फैलाता है।

वित्थार (पु.) : व्याख्या, विस्तार।

वित्थारकथा (स्त्री.) : टीका।

वित्थारतो (क्रि.वि.) : विस्तार से।

वित्थारिक (वि.) : विस्तारित, फैला हुआ।

वित्थारेति (क्रि.) : विस्तार करता है, फैलाता है।

विदत्थि (स्त्री.) : बालिश्त, नाप-विशेष।

विदहति (क्रि.) : व्यवस्था करता है।

विदारण / **विदालन** (नपुं.) : चीरना-फाड़ना।

विदारित / **विदालित** (वि.) : चीरा गया, फाड़ा गया।

विदारेति / **विदालेति** (क्रि.) : चीरता है, फाड़ता है।

विदित (वि.) : ज्ञात।

विदितत्त (नपुं.) : जान लिये जाने का भाव।

विदिसा (स्त्री.) : कुतुबनुमा का मध्यबिंदु।

विदुग्ग (नपुं.) : कठिन स्थल, कठिनाई से पहुँचा जा सकनेवाला किला।

विदू (वि., पु.) : बुद्धिमान।

विदूर (वि.) : अति दूर।

विदूर-जातक : देखो **सुचिर-जातक**।

विदूसित (वि.) : दूषित, भ्रष्ट।

विदूसेति (क्रि.) : दूषित करता है, भ्रष्ट करता है।

विदेस (पु.) : विदेश।

विदेसिक / **विदेसी** (वि.) : विदेशी।

विदेह : वज्जि जनपद का एक भाग विदेह था, जिसकी राजधानी थी मिथिला नगरी।

विद्दसु (वि.) : बुद्धिमान।

विद्देस (पु.) : शत्रुता, विद्वेष।

विद्ध (वि.) : बींधा गया।

विद्धंसक / विधमक (वि.) : विध्वंस करने वाला।

विद्धंसन (नपुं.) : विध्वंस करना, विनष्ट करना।

विद्धंसेति / विधमति (क्रि.) : विध्वंस करता है, विनष्ट करता है।

विध (वि.) : (समास में) नाना प्रकार का, बहुविध।

विधमन (नपुं.) : विनाश।

विधमेति (क्रि.) : विध्वंस करता है, बिखेरता है।

विधवा (स्त्री.) : जिसके पति का देहांत हो गया हो।

विधा (स्त्री.) : प्रकार, ढंग, अभिमान, अहंकार।

विधातु (पु.) : विधाता, सृष्टि रचयिता।

विधान (नपुं.) : व्यवस्था, आज्ञा, पद्धति।

विधायक (वि.) : व्यवस्था करने वाला।

विधावति (क्रि.) : दौड़ता-भागता है।

विधावन (नपुं.) : दौड़ना-भागना।

विधि (पु.) : ढग, भाग्य, प्रकार, पद्धति।

विधुनाति (क्रि.) : धुनता है।

विधुर (वि.) : विदुर, खरिदने-बेचने में कुशल, तनहा, एकाकी।

विधुरपण्डित-जातक : विधुर पंडित ने, चारों राजाओं में से कौन सबसे ज्यादा शीलवान है, इस प्रश्न का उत्तर दिया (५४५)।

विधूत (वि.) : धुना गया।

विधूपन (नपुं.) : पंखा, पंखा करना, छौंकना, धुआं देना।

विधूपेति (क्रि.) : छौंकता है, धुआं देता है, बिखेरता है।

विधूम (वि.) : धूम्र-रहित, राग-रहित।

विधेय्य (वि.) : आज्ञाकारी।

विनट्ठ (वि.) : विनष्ट।

विनत (वि.) : झुका हुआ।

विनता : गरुडों की माता।

विनद्ध (वि.) : घेरा हुआ, लपेटा हुआ।

विनन्धति (क्रि.) : घेरता है, लपेटता है।

विनन्धन (नपुं.) : लपेटना।

विनय (पु.) : भिक्षु-जीवन के नियम-उपनियम।

विनयधर (वि.) : विनय का विशेषज्ञ।

विनयन (नपुं.) : हटा देना, दूर करना, नियमबद्ध करना, शिक्षित करना।

विनयपिटक : भिक्षुओं के नियम-उपनियमों का संग्रह।

विनयवादी (पु.) : विनय के नियमों के समर्थन में बोलने वाला।

विनळीकत (वि.) : नष्ट किया हुआ।

विनस्सति (क्रि.) : नष्ट होता है।

विनस्सन (नपुं.) : नष्ट होना।

विना (अ.) : रहित।

विनाति (क्रि.) : बुनता है।

विनाभाव (पु.) : पार्थक्य, अलगाव।

विनाम / विनामन (नपुं.) : शरीर का झुकाना।

विनामेति (क्रि.) : झुकाता है।

विनायक (पु.) : महान नेता, बुद्ध।

विनास (पु.) : विनाश।

विनासक (वि.) : विनाश करने वाला।

विनासन (नपुं.) : विनाश करना।

विनासेति (क्रि.) : नष्ट कराता है, दूषित करता है।

विनिग्गत (वि.) : बाहर निकला हुआ।

विनिच्छय (पु.) : विनिश्चय, फैसला।

विनिच्छयकथा (स्त्री.) : विश्लेषणात्मक वार्ता।

विनिच्छयट्ठान (नपुं.) / **विनिच्छयसाला** (स्त्री.) : न्यायालय, कचहरी।

विनिच्छित (वि.) : निश्चय हुआ, फैसला हुआ।

विनिच्छिनन (नपुं.) : फैसला देना।

विनिच्छिनाति / **विनिच्छेति** (क्रि.) : खोज-बीन करता है, फैसला देता है।

विनिधाय (पू.क्रि.) : अनुचित व्यवस्था करके, अनुचित स्थापना करके।

विनिपात (पु.) : दुःख भोगने का स्थान, नरक।

विनिपातिक (वि.) : नरक में गिरने वाला।

विनिपातेति (क्रि.) : नाश का / पतन कारण होता है।

विनिबद्ध (वि.) : संबंधित।

विनिबन्ध (पु.) : बंधन, आसक्ति।

विनिब्भुजति (क्रि.) : पृथक-पृथक करता है, बांटता है।

विनिब्भोग (पु.) : पृथक्करण।

विनिमय (पु.) : अदला-बदली।

विनिमोचेति (क्रि.) : अपने-आपको मुक्त करता है, छुटकारा पाता है।

विनिम्मुत्त (वि.) : विमुक्त।

विनिवट्टेति (क्रि.) : लोट-पोट होता है, फिसलता है।

विनिविज्झति (क्रि.) : बींध डालता है।

विनिविज्झन (नपुं.) : बींधना।

विनिविद्ध (वि.) : बींधा गया।

विनिवेठेति (क्रि.) : बन्धन-मुक्त करता है, सुलझाता है।

विनिवेठन (नपुं.) : बन्धन मुक्त होना या करना, सुलझाना।

विनीत (वि.) : शिक्षित, अभ्यस्त।

विनीलक-जातक : हंस और कौवे के मेल से विनीलक का जन्म हुआ (१६०)।

विनीवरण (वि.) : चित्त-मलों से मुक्त।

विनेति (क्रि.) : शिक्षित करता है।

विनेतु (पु.) : शिक्षक।

विनेयजन (पु.) : बुद्ध द्वारा विनीत किये जानेवाले लोग।

विनेय्य : (पू.क्रि.) हटाकर; (वि.) शिक्षित किये जाने योग्य।

विनोद (पु.) : प्रीति, आनंद।

विनोदन (नपुं.) : हटाना, दूर करना।

विनोदेति (क्रि.) : दूर करता है, हटाता है।

विन्दक (पु.) : अनुभव करने वाला।

विन्दति (क्रि.) : अनुभव करता ।

विन्दियमान (वि.), अनुभव किया जाता हुआ।

विपक्ख (वि.) : विपक्ष, विरोधी।

विपक्खिक (वि.) : विरोधी का पक्षपाती।

विपच्चति (क्रि.) : पकता है, फल देता है।

विपज्जति (क्रि.) : व्यर्थ सिद्ध होता है, विनष्ट होता है।

विपज्जन (नपुं.) : व्यर्थ सिद्ध होना, नष्ट होना।

विपत्ति (स्त्री.) : असफलता, मुसीबत।

विपथ (पु.) : कुमार्ग।

विपन्न (वि.) : विपद्-ग्रस्त।

विपन्नदिट्ठि (वि.) : मिथ्या-दृष्टि वाला।

विपन्नसील (वि.) : शील-भ्रष्ट।

विपरिणत (वि.) : परिवर्तित, रागी।

विपरिणाम (पु.) : परिवर्तन।

विपरिणामेति (क्रि.) : परिवर्तित करता है, बदलता है।

विपरियय / **विपरियाय** / **विपरियेस** (पु.) : विरुद्ध भाव, प्रतिकूल होना।

विपरिवत्तति (क्रि.) : उलट होता है।

विपरिवत्तन (नपुं.) : परिवर्तन, उलट देना।

विपरीत (वि.) : उलटा, बदल दिया गया।

विपरीतता (स्त्री.) : विरोधी भाव।

विपल्लत्थ (वि.) : पलट दिया गया।

विपल्लास (पु.) : पलटा खा जाना, विपर्यास, व्यतिरेक।

विपस्सक (वि.) : अंतर्दृष्टि-वाला।

विपस्सति (क्रि.) : यथाभूत देखता है, अंतर्दृष्टि प्राप्त करता है।

विपस्सना (स्त्री.) : विपश्यना, अंतर्दृष्टि।

विपस्सनाञाण (नपुं.) : विपश्यना-ज्ञान।

विपस्सनाधुर (नपुं.) : विपश्यना-पथ।

विपस्सी (पु.) : विपश्यी, अंतर्दृष्टि-युक्त \।

विपाक (पु.) : परिणाम, फल।

विपिट्ठिकत्वा (पू.क्रि.) : (किसी की ओर) पीठ करके, मुँह फेरकर।

विपिन (नपुं.) : जंगल।

विपुल (वि.) : विशाल।

विपुलता (स्त्री.) / **विपुलत्त** (नपुं.) : विशालता, प्रचुरता, आधिक्य।

विप्प (पु.) : विप्र, ब्राह्मण।

विप्पकत (वि.) : अधूरा।

विप्पकार (पु.) : परिवर्तन, बजाय।

विप्पकिण्ण (वि.) : बिखेरा हुआ।

विप्पकिरति (क्रि.) : चारों तरफ बिखेरना, नष्ट करना।

विप्पकुल (नपुं.) : ब्राह्मण-कुल।

विप्पजहति (क्रि.) : छोड़ देता है, त्याग देता है।

विप्पटिपज्जति (क्रि.) : गलती करता है, दोष-भागी होता है।

विप्पटिपत्ति (स्त्री.) : दुराचरण।

विप्पटिपन्न (वि.) : कुपथ-गामी।

विप्पटिसार (पु.) : पश्चात्ताप।

विप्पमुत्त (वि.) : विमुक्त।

विप्पयुत्त (वि.) : पृथक किया हुआ।

विप्पलपति (क्रि.) : विलाप करता है।

विप्पलाप (पु.) : प्रलाप।

विप्पलुज्जति (क्रि.) : टुकडे-टुकडे हो जाता है।

विप्पवसति (क्रि.) : अनुपस्थित होता है, प्रवास करता है।

विप्पवास (पु.) : अनुपस्थिति, प्रवास।

विप्पवुत्थ (वि.) : अनुपस्थित, प्रवासी।

विप्पसन्न (वि.) : अति स्पष्ट, तेजस्वी, शुद्ध।

विप्पसीदति (क्रि.) : स्पष्ट होता है।

विप्पहान (नपुं.) : प्रहाण, त्याग देना।

विप्फन्दति (क्रि.) : फड़फड़ाता है, हाथ-पैर मारता है।

विप्फन्दन (नपुं.) : संघर्ष करना, फड़फड़ाना, हाथ-पैर मारना।

विप्फार (पु.) : विस्तार।

विप्फारिक / **विप्फारित** (वि.) : विस्तृत, फैलाया हुआ।

विप्फुरण (नपुं.) : व्याप्ति।

विप्फुरति (क्रि.) : व्याप्त होता है, हलचल करता है, कांपता है।

विप्फुलिङ्ग (नपुं.) : स्फुलिंग, अग्निकण।

विफल (वि.) : व्यर्थ, निष्फल।

विबन्ध (पु.) : बंधन।

विबाधक (वि.) : बाधा डालने वाला, हानि पहुंचाने वाला।

विबाधति (क्रि.) : बाधा डालता है, रुकावट डालता है।

विबाधन (नपुं.) : बाधा, रुकावट।

विब्भन्त (वि.) : विभ्रांत।

विब्भन्तक (वि.) : जिसने भिक्षु-जीवन त्याग दिया हो।

विब्भमति (क्रि.) : कुपथगामी होता है, भटक जाता है, भिक्षु-जीवन त्याग देता है।

विभङ्ग (पु.) : बँटवारा, विभाग, वर्गीकरण ।

विभङ्ग : विनय-पिटक के पाराजिक तथा पाचित्तिय दोनों ग्रंथों का सामूहिक नाम।

विभङ्गप्पकरण : अभिधम्मपिटक के सात प्रकरणों में से दूसरा प्रकरण या ग्रंथ।

विभजति (क्रि.) : बँटवारा करता है, वर्गीकरण करता है।

विभज्ज (पू.क्रि.) : विभक्त करके, विश्लेषण करके।

विभज्जवाद (पु.) : युक्तिवाद, विभक्तकरणवाद।

विभज्जवादी (पु.) : थेरवाद का अनुयायी।

विभत्त (वि.) : विभक्त, बँटा हुआ।

विभत्ति (स्त्री.) : वर्गीकरण, विभक्ति(-रूप)।

विभव (पु.) : धन, ऐश्वर्य।

विभाग (पु.) / **विभाजन** (नपुं.) : बँटवारा।

विभात (वि.) : चमकीला, तेजस्वी।

विभाति (क्रि.) : चमकता है।

विभावन (नपुं.) / **विभावना** (स्त्री.) : व्याख्या, भाष्य।

विभावी (वि., पु.) : प्रज्ञावान।

विभावेति (क्रि.) : स्पष्ट करता है।

विभीतक (पु.) / **विभीतकी** (स्त्री.) : बहेड़ा।

विभूत (वि.) : स्पष्ट ।

विभूति (स्त्री.) : प्रताप, ऐश्वर्य।

विभूसन (नपुं.) : आभूषण, सजावट।

विभूसित (वि.) : विभूषित।

विभूसेति (क्रि.) : सजाता है, अलंकृत करता है।

विमति (स्त्री.) : संदेह, शक।

विमतिच्छेदक (वि.) : संदेह की निवृत्ति करने वाला।

विमन (वि.) : असंतुष्ट।

विमल (वि.) : निर्मल, स्वच्छ।

विमान (नपुं.) : भवन।

विमानपेत (पु.) : प्रेत-विशेष।

विमानवत्थु : दिव्य भवनों की कहानियों का खुद्दकनिकाय का एक ग्रंथ।

विमानन (नपुं.) : अनादर, अपमान।

विमानेति (क्रि.) : अनादर करता है।

विमुख (वि.) : लापरवाह।

विमुच्चति (क्रि.) : मुक्त होता है, मुक्त किया जाता है।

विमुच्चन / विमोचन (नपुं.) : मुक्ति, मुक्त करना।

विमुञ्चति (क्रि.) : मुक्त होता है।

विमुत्त (वि.) : विमुक्त।

विमुत्ति (स्त्री.) : विमुक्ति।

विमुत्तिरस (पु.) : मुक्ति-रस।

विमुत्तिसुख (नपुं.) : मुक्ति-सुख।

विमोक्ख (पु.) : विमुक्ति, विमोक्ष।

विमोचक (पु.) : मुक्त करने वाला।

विमोचेति (क्रि.) : मुक्त करता है।

विमोहेति (क्रि.) : मोह में डालता है, भ्रम उत्पन्न करता है।

विम्हय (पु.) : विस्मय, आश्चर्य।

विम्हापक (वि.) : आश्चर्य में डालने वाला, चकित करने वाला।

विम्हापन (नपुं.) : आश्चर्य में डालना।

विम्हापेति (क्रि.) : आश्चर्य उत्पन्न करता है, चकित करता है।

विम्हित (वि.) : विस्मित, चकित।

विय (अ.) : समान, जैसा (तुलनार्थक)।

वियत्त (वि.) : व्यक्त, पंडित।

वियूहति (क्रि.) : हटाता है, बिखेरता है।

वियूहन (नपुं.) : हटाना, बिखेरना।

वियूळ्ह / व्यूळ्ह (वि.) : एकत्रित।

वियोग (पु.) : पृथक होना।

विरचयति (क्रि.) : रचना करता है, निर्माण करता है।

विरचित (वि.) : रचा हुआ।

विरज (वि.) : निर्मल, शुद्ध।

विरज्जति (क्रि.) : वैराग्य को प्राप्त होता है, अनासक्त होता है।

विरज्जन (नपुं.) : विरक्त होना।

विरज्झति (क्रि.) : चूक जाता है।

विरत (वि.) : जो रत न हो।

विरति (स्त्री.) : रति का अभाव, अनासक्ति।

विरत (वि.) : विरक्त, अनासक्त।

विरद्ध (वि.) : चूक गया।

विरमण (नपुं.) : दूर रहना, विरत रहना।

विरमति (क्रि.) : विरत रहता है।

विरल / **विरळ** (वि.) : बिरला, पतला।

विरव / **विराव** (पु.) / **विरवन** (नपुं.): चीख-चिल्लाहट।

विरवति (क्रि.) : चीखता है, चिल्लाता है।

विरह (पु.) : पार्थक्य, शून्यता।

विरहित (वि.) : खाली, शून्य, बिना।

विराग (पु.) : वैराग्य, आसक्ति का अभाव।

विरागता (स्त्री.) : राग का न होना ।

विरागी (वि.) : राग-रहित।

विराजति (क्रि.) : चमकता है।

विराजेति (क्रि.) : दूर करता है, हटाता है, नष्ट करता है।

विराधना (स्त्री.) : असमर्थता, चूक जाना।

विराधेति (क्रि.) : चूक जाता है।

विरिच्चति (क्रि.) : विरेचन किया जाता है।

विरित्त (वि.) : विरेचन हुआ।

विरिय / **वीरिय** (नपुं.) : शक्ति, सामर्थ्य, साहस।

विरियबल (नपुं.) : वीर्य बल।

विरियवन्तु (वि.) : वीर्यवान, सामर्थ्यवान।

विरियसमता (स्त्री.) : न कम और न अधिक प्रयत्न।

विरियारम्भ (पु.) : प्रयत्न का आरंभ।

विरियिन्द्रिय (नपुं.) : वीर्य, प्रयास, प्रयत्न।

विरुज्झति (क्रि.) : विरुद्ध होता है, प्रतिकूल होता है।

विरुद्ध (वि.) : विरोधी।

विरुद्धता (स्त्री.) : विरोधी-भाव।

विरुप (वि.) : कुरुप।

विरुपक्ख : नागों का अधिपति।

विरुपता (स्त्री.) : कुरुपता।

विरूळ्ह (वि.) : उगा हुआ, बढा हुआ।

विरूळ्हि (स्त्री.) : वृद्धि ।

विरूहति (क्रि.), उगता है, बढता है।

विरेक (पु.) / **विरेचन** (नपुं.) : विरेचन, जुलाब।

विरेचेति (क्रि.) : पेट की सफाई करता है।

विरोचति (क्रि.) : चमकता है।

विरोचन (नपुं.) : चमकना।

विरोचक-जातक : गीदड़ ने हाथी पर आक्रमण किया। वह उसके पाँव तले रौंदा गया (१४३)।

विरोचेति (क्रि.) : प्रकाशित करता है।

(विरोचेन्ति, विरोचेसि, विरोचित, विरोचेत्वा) ।

विरोध (पु.) / **विरोधन** (नपुं.) : प्रतिकूल होना, प्रतिकूलता।

विरोधेति (क्रि.) : विरोध करता है, बाधा डालता है।

विलग्ग (वि.) : चिपका हुआ, लगा हुआ।

विलङ्घति (क्रि.) : कूदता है, फांदता है, कलाबाजी खाता है।

विलङ्घेति (क्रि.) : उल्लंघन करता है।

विलपति (क्रि.) : प्रलाप करता है।

विलम्बति (क्रि.) : विलंब करता है, देर लगाता है, लटकता रहता है।

विलम्बन (नपुं.) : मटरगश्ती करना, देर लगाना।

विलम्बेति (क्रि.) : मुंह चिढाता है, शक्ल बनाता है, नीची नजर से देखता है।

विलय (पु.) : विलीन हो जाना, घुलमिल जाना।

विलसति (क्रि.) : चमकता है, खेलता है।

विलसित (वि.) : प्रसन्न-चित्त, शानदार।

विलाप (पु.) : रोना-पीटना, व्यर्थ की बकवास।

विलास (पु.) : सौंदर्य (हास-) विलास, नखरा।

विलासिता (स्त्री.) : नखरा।

विलासिनी (स्त्री.) : स्त्री, महिला।

विलासी (पु.) : विलास-युक्त पुरुष।

विलिखति (क्रि.) : खुरचता है, रगड़ कर चमकाता है।

विलिखित (वि.) : खुरचा हुआ।

विलित्त (वि.) : लेप किया गया।

विलिम्पति (क्रि.) : लेप करता है।

विलिम्पेति (क्रि.) : लेप करता है, अभिषेक करता है।

विलीन (वि.) : घुल-मिल गया, लीन हो गया।

विलीयति (क्रि.) : पिघल जाता है, घुल जाता है, नष्ट हो जाता है।

विलीयन (नपुं.) : घुलना।

विलीव / विलिव (नपुं.) : बांस या सरकंडे की खपची।

विलीवकार (पु.) : टोकरी बनाने वाला।

विलुग्ग (वि.) : टूटा, टुकड़े-टुकड़े हो गया।

विलुत्त (वि) : लूटा गया।

विलून (वि.) : काटा गया।

विलेख (पु.) : उलझन, काटना-पीटना, खरोंच।

विलेपन (नपुं.) : उबटन, लेप, सुगंधित चूर्ण आदि।

विलेपित (वि.) : सुगंधित लेप किया गया।

विलेपेति (क्रि.) : सुगंधित लेप करता है।

विलोकन (नपुं.) : देखना, खोज-बीन करना।

विलोकेति (क्रि.) : देखता है, खोजबीन करता है।

विलोचन (नपुं.) : आंख।

विलोपन (नपुं.) : लूट-मार।

विलोपक (पु.) : लूटमार करने वाला।

विलोम (वि.) : विरुद्ध, प्रतिकूल।

विलोमता (स्त्री.) : प्रतिकूलता, न्यूनता।

विलोमेति (क्रि.) : असहमत होता है, विवाद करता है।

विलोळन (नपुं.) : बिलोना, मथना।

विलोळेति (क्रि.) : बिलोता है, मथता है।

विवज्जन (नपुं.) : त्याग, दूर-दूर रहना।

विवज्जेति (क्रि.) : बचाता है, त्यागता है, छोड़ देता है।

विवट (वि.) : विवृत, खुला, नंगा।

विवट्ट (नपुं.) : उत्तरोत्तर बढते कल्पों के संबंध में 'पलट'।

विवट्टकप्प : उत्तरोत्तर बढता हुआ कल्प (समय विभाग)।

विवट्टति (क्रि.) : पीछे की ओर हटता है, फिर से आरंभ करता है।

विवट्टन (नपुं.) : पीछे हटना, मुड़ जाना।

विवट्टति (क्रि.) : पीछे हटता है, दूसरी ओर जाता है, नष्ट कर देता है।

विवण्ण (वि.) : बदरंग, दुर्बल।

विवण्णेति (क्रि.) : निंदा करता है, बदनामी करता है।

विवदति (क्रि.) : विवाद करता है, झगड़ा करता है।

विवदन (नपुं.) : विवाद, झगड़ा, मतभेद।

विवर (नपुं.) : दरार, सुराग।

विवरण (नपुं.) : उघाड़ना, खोलना, निवारण, व्याख्या करना, व्याख्या।

विवरति (क्रि.) : विवृत करता है, उघाड़ता है, स्पष्ट करता है, विश्लेषण करता है।

विवस (वि.) : बे-वश, असंयत।

विवाद (पु.) : कलह, झगड़ा।

विवादी (पु.) : विवाद करने वाला।

विवादक (पु.) : झगड़ालू।

विवाह (पु.) : शादी, ब्याह, मंगलपरिणय।

विवाहमङ्गल (नपुं.) : शादी-मंगल।

विविच्च (अ.) : पृथक, अलहदा।

विवित्त (वि.) : अकेला, एकांत में।

विवित्तता (स्त्री.) : एकांत का भाव।

विविध (वि.) : नाना प्रकार के।

विवेक (पु.) : एकांत, अकेले में।

विवेचन (नपुं.) : आलोचना, विवेचन।

विवेचेति (क्रि.) : पृथक-पृथक करता है, आलोचना करता है।

विस (नपुं.) : विष, जहर।

विसकण्टक (नपुं.) : विषैला कंटक।

विसधर (पु.) : सांप, विष धारण करने वाला।

विसपीत (वि.) : विष में बुझा हुआ।

विसरुक्ख (पु.) : विष-वृक्ष, जहरीला पेड़।

विसवेज्ज (पु.) : विष-वैद्य।

विससल्ल (नपुं.) : विष में बुझा तीर।

विसञ्ञ (वि.) : बेहोश, अचेतन।

विसञ्ञी (वि.) : बेहोश, अचेतन।

विसट / **विसत** (वि.) : फैला हुआ।

विसत्त (वि.) : विशेष रूप से आसक्त, उलझा हुआ।

विसत्तिका (स्त्री.) : तृष्णा, आसक्ति।

विसद (वि.) : स्पष्ट, साफ, व्यक्त।

विसदकिरिया (स्त्री.) : स्पष्ट करना।

विसदता (स्त्री.) / **विसदभाव** (पु.) : स्पष्टता।

विसभाग (वि.) : भिन्न, विरोधी, असाधारण।

विसम (वि.) : विषम, ऊबड़-खाबड़।

विसय (वि.) : स्थान, प्रदेश, क्षेत्र, (इंद्रियों का) विषय।

विसय्ह (वि.) : जो सहन किया जा सके।

विसय्ह-जातक : उदार दानी विसय्ह सेठ के दान से शक्र का आसन गर्म हो उठा (३४०)।

विसर (पु.) : समूह।

विसवन्त-जातक : सर्प विष-वैद्य ने सर्प को पुनः अपना विष चूसने को कहा (६९)।

विसलित्त (वि.) : विष में बुझा हुआ (तीर)।

विसल्ल (वि.) : शोक-मुक्त।

विसहति (क्रि.) : समर्थ होता है, साहस करता है।

विसंयुत्त (वि.) : जो जुता नहीं, जो पृथक किया गया।

विसंयोग (पु.) : पार्थक्य।

विसंवाद (पु.) : धोखा, झूठ।

विसंवादक (वि.) : अविश्वसनीय।

विसंवादन (नपुं.) : झूठ बोलना, झूठा व्यवहार करना।

विसंवादेति (क्रि.) : वचन-भंग करता है, झूठ बोलता है।

विसंसट्ठ (वि.) : पृथक हुआ।

विसङ्कित (वि.) : संदिग्ध।

विसङ्खार (पु.) : सङ्खार-निरोध।

विसङ्खित (वि.) : नष्ट किया गया।

विसाखा (स्त्री.) : विशाखा नक्षत्र।

विसाखा : भगवान बुद्ध की उदार-चेता दायिका, उपासिकाओं में प्रमुख, मिगारमाता विसाखा।

विसाण (नपुं.) : विषाण, सींग।

विसाणमय (वि.) : सींग का बना।

विसाद (पु.) : विषाद, खेद, उल्लास का अभाव।

विसारद (वि.) : विशारद, दक्ष, संयत।

विसाल (वि.) : विशाल।

विसालक्खी (स्त्री.) : विशालाक्षी।

विसालता (स्त्री.) / **विसालत्त** (नपुं.) : विशालता, विशालत्व।

विसिखा (स्त्री.) : गली, सड़क।

विसिट्ठ (वि.) : विशिष्ट, प्रमुख, असाधारण।

विसिट्ठतर (वि.) : विशिष्टतर।

विसिब्बेति (क्रि.) : उघेड़ता है, सिलाई उखाड़ता है।

विसीदति (क्रि.) : हतोत्साह होता है।

विसीदन (नपुं.) : हतोत्साह होना ।

विसीवन (नपुं.), अपने-आपको गर्माना।

विसीवेति (क्रि.) : अपने-आपको गर्माता है।

विसुज्झति (क्रि.) : स्वच्छ होता है।

विसुद्ध (वि.) : विशुद्ध, परिशुद्ध।

विसुद्धता / **विसुद्धि** (स्त्री.) : विशुद्धि-भाव, पवित्रता।

विसुद्धिदेव (पु.) : सच्चरित्र व्यक्ति।

विसुद्धिमग्ग (पु.) : विशुद्धि का मार्ग।

विसुद्धिमग्ग : संघपाल स्थविर की प्रार्थना पर आचार्य बुद्धघोस द्वारा रचित बौद्ध-धम्म का विश्वकोश।

विसुं (क्रि.वि.) : पृथक-पृथक, अलग-अलग।

विसुंकरण (नपुं.) : पार्थक्य, अलग करना।

विसूक (नपुं) : तमाशा, नाटक।

विसूकदस्सन (नपुं.) : नाटक आदि का देखना।

विसूचिका (स्त्री.) : हैजा।

विसेस (पु., वि.) / **विसेसता** (स्त्री.) : विशेष, भेद-प्राप्ति, विशेषता।

विसेसक (पु.) : विशेष चिन्ह।

विसेसगामी (वि.) : विशेषता की ओर अग्रसर।

विसेसतो (क्रि.वि.) : विशेष रूप से।

विसेसन (नपुं.) : विशेषण।

विसेसभागिय (वि.) : विशेषता की ओर अग्रगामी।

विसेसाधिगम (पु.) : विशेष पद की प्राप्ति।

विसेसिय / **विसेसितब्ब** (वि.) : विशेष व्यवहार का पात्र।

विसेसी (वि.) : विशेषता-युक्त।

विसेसेति (क्रि.) : विशेष करता है, व्याख्या करता है।

विसोक (वि.) : शोक-रहित।

विसोधन (नपुं.) : शुद्धिकरण।

विसोधेति (क्रि.) : शुद्ध करता है।

विसोसेति (क्रि.) : सुखाता है, बिखेर देता है।

विस्सगन्ध (पु.) : कच्चे मांस की सी गंध।

विस्सग्ग (पु.) : दान।

विस्सज्जक / **विस्सज्जनक** (वि.) : देने वाला, बाँटने वाला, प्रश्न का उत्तर देने वाला।

विस्सज्जति (क्रि.) : देता है, बाँटता है, प्रश्नों का उत्तर देता है।

विस्सज्जन (नपुं.) : भेजना, प्रत्युत्तर, खर्चा।

विस्सज्जनीय (वि.) : बाँटने योग्य, उत्तर देने योग्य।

विस्सज्जेति (क्रि.) : उत्तर देता है, बाँटता है, भेजता है, खर्च करता है, बाहर करता है, जाने देता है।

विस्सट्ठ (वि.) : भेजा गया, उत्तरित।

विस्सट्ठि (स्त्री.) : बाहर निकलना।

विस्सत्थ (वि.) : विश्वस्त, विश्वसनीय ।

विस्सन्द (पु.) / **विस्सन्दन** (नपुं.) : उमड़ना, उफान आना।

विस्सन्दति (क्रि.) : उफन जाता है।

विस्समति (क्रि.) : विश्राम करता है, आराम करता है।

विस्सर (वि.) : दुःखपूर्ण स्वर।

विस्सरति (क्रि.) : भूल जाता है।

विस्ससति (क्रि.) : विश्वास करता है।

विस्सास (पु.) : विश्वास, घनिष्ठता।

विस्सासक / **विस्सासिक** / **विस्सासी** / **विस्सासनीय** (वि.): विश्वसनीय।

विस्सासभोजन-जातक : सिंह ने हिरनी की देह को चाटा। उस पर विष चुपड़ा था। वह मर गया (९३)।

विस्सुत (वि.) : विश्रुत, प्रसिद्ध।

विहग / **विहङ्गम** (पु.) : पक्षी, पंछी, चिड़िया।

विहञ्ञति (क्रि.) : दुखित होता है।

विहत (वि.) : मारा गया, धुनी गई (कपास)।

विहनति (क्रि.) : मारता है।

विहरति (क्रि.) : जीता है, (किसी स्थान पर) रहता है।

विहाय (पू.क्रि.) : छोड़कर।

विहार (पु.) : निवास-स्थान, भिक्षुओं के रहने की जगह, बौद्ध प्रतिमा-गृह।

विहारदेवी : दुट्ठगामणी की माता।

विहारिक / **विहारी** (वि.) : रहने वाला या विचरने वाला।

विहिंसति (क्रि.) : कष्ट पहुंचाता है।

विहिंसना / **विहिंसा** (स्त्री.) : क्रौर्य, निर्दयता।

विहित (वि.) : योग्य, उचित, व्यवस्थित।

विहीन (वि) : त्यक्त, विरहित।

विहेठक (वि.) : कष्ट देने वाला, हानि पहुंचाने वाला।

विहेठजातिक (वि.) : तंग करने वाला।

विहेठन (नपुं.) : कष्ट देना।

विहेठियमान (वि.) : दुःख पहुंचाया जाता हुआ।

विहेठेति / **विहेसेति** (क्रि.) : कष्ट देता है।

विहेसक (वि.) : कष्टप्रद।

विहेसा (स्त्री.) : हैरानी।

वीचि (स्त्री.) : लहर, अंतराल, बीच का समय।

वीजति / **वीजेति** (क्रि.) : पंखा करता है।

वीजन (नपुं.) : पंखा करना।

वीजनी (स्त्री.) : पंखा।

वीणा (स्त्री.) : वीणा, सारंगी।

वीणादण्डक (पु.) : वीणा-दंड।

वीणादोणि (स्त्री.) : वीणा-द्रोणि।

वीणाथूण-जातक : बनारस के सेठ की लड़की कुबड़े के साथ भाग गई, बाद में समझा-बुझाकर वापस लाई गई (२३२)।

वीत (वि.) : रहित, बुना हुआ (वायित)।

वीतच्चिक (वि.) : लौ रहित (चमक)।

वीतगेध (वि.) : लोभ-रहित।

वीततण्ह (वि.) : तृष्णा-रहित।

वीतमल (वि.) : मल-रहित।

वीतमोह (वि.) : मोह-रहित, अज्ञान-रहित।

वीतराग : (वि.) राग-रहित, (पु.) अर्हत।

वीतिक्कम (पु.) : व्यतिक्रम, नियम का उल्लंघन।

वीतिक्कमति (क्रि.) : व्यतिक्रमण करता है, नियम का उल्लंघन करता है। `

वीतिच्छ-जातक : प्रति-प्रश्न पूछकर प्रश्नकर्ता को हराया (२४४)।

वीतिनामेति (क्रि.) : समय बिताता है।

वीतिवत्त (वि.) : गुजर गया, खर्च हो गया, जीत लिया गया।

वीतिवत्तेति (क्रि.) : जीत लेता है, समय व्यतीत करता है।

वीतिसारेति (क्रि.) : समय बिताता है, बातचीत करता है।

वीतिहरण (नपुं.) : लंबे-लंबे डग धरना।

वीतिहार (पु.) : डग।

वीतिहरति (क्रि.) : चलता है, टहलता है।

वीथि (स्त्री.) : गली, रास्ता।

वीथिचित्त (नपुं.) : क्रियाशील चित्त।

वीमंसक / **विमंसी** (वि.) : विमर्श करने वाला, परीक्षा करने वाला।

वीमंसन (नपुं.) / **वीमंसा** (स्त्री.) : विमर्श करना, छान-बीन, परीक्षण।

वीमंसति (क्रि.) : विमर्श करता है, खोज-बीन करता है, परीक्षण करता है।

वीर (वि.) : बहादुर।

वीरक-जातक : साविट्ठिक नाम का कौवा वीरक नाम के कौवे का नौकर बन, वीरक की मारी हुई मछलियाँ खाता रहा (२०४)।

वीयति (क्रि.) : बुनता है।

वीसति (स्त्री.) : बीस।

वीसतिम (वि.) : बीसवाँ।

वीहि (पु.) : धान।

वुच्चति (क्रि.) : कहा जाता है।

वुच्चमान (वि) : कहा जाता हुआ।

वुट्ठ (वि.) : बारिश का भीगा, बरसा हुआ।

वुट्ठहति / **वुट्ठाति** (क्रि.) : उठता है, उभरता है।

वुट्ठान (नपुं) : उत्थान, उन्नती।

वुट्ठापेति (क्रि.) : उठवाता है।

वुट्ठि (स्त्री.) : वर्षा, बारिश।

वुट्ठिक (वि.) : वर्षा वाला।

वुड्ढ / **वुद्ध** (वि.) : वृद्ध, ज्येष्ठ, बूढा।

वुड्ढतर (वि.) : वृद्धतर, ज्येष्ठतर।

वुड्ढि / **वुद्धि** (स्त्री.) : वृद्धि, ऐश्वर्य।

वुत्त (वि.) : कहा गया, बोया गया।

वुत्तप्पकार (वि.) : कथनानुसार।

वुत्तप्पकारेन (क्रि.वि.) : उक्त कथनानुसार।

वुत्तवादी (पु.) : दोहराने वाला, कथित बात को कहने वाला।

वुत्तसिर (पु.) : मुंडित सिर वाला।

वुत्ति (स्त्री.) : व्यवहार, आचरण, जीविका।

वुत्तिक / **वुत्ती** (वि.) : (किसी प्रकार की) वृत्ति वाला।

वृत्तिका (स्त्री), वृत्ति का भाव ।

वुत्थ (वि.) : जो रह चुका हो, समय बिताया हुआ।

वुत्थवस्स (वि.) : जिसने वर्षावास किया हो।

वुद्धिप्पत्त (वि.) : आयु प्राप्त, विवाह करने योग्य।

वुद्धियुत्त (वि.) : समृद्ध।

वुय्हति (क्रि.) : ले जाया जाता है।

वुय्हन (नपुं.) : ढोया जाना।

वुसित (वि.) : वास किया।

वुसितत्त (नपुं.) : रहना।

वुसितभाव (पु.) : निवास का भाव।

वुस्सति (क्रि.) : रहा जाता है।

वूपकट्ठ (वि.) : एकांत-सेवी।

वूपसन्त (वि.) : शांति-प्राप्त, उपशांत।

वूपसम (पु.) / **वूपसमन** (नपुं.) : शांति, समाप्ति।

वूपसमेति (क्रि.) : शांत करता है।

वूपसम्मति (क्रि.) : उपशमित होता है, शांत होता है।

वूळ्ह (वि.) : ले जाया गया।

वे (अ.) : वास्तव में, स्थिर रूप से।

वेकल्ल (नपुं.) : विकल-भाव।

वेकल्लता (स्त्री.) : विकलता, अंग-विकृति।

वेग (पु.) : शक्ति, गति, जोर।

वेजयन्त (पु.) : इंद्र के महल का नाम।

वेज्ज (पु.) : वैद्य, चिकित्सक।

वेज्जकम्म (नपुं.) : वैद्य-कर्म, चिकित्सा।

वेठक (वि.) : लपेटने वाला, घेरने वाला।

वेठन (नपुं.) : लपेट, पगड़ी।

वेठियमान (वि.) : लपेटा जाने वाला, मरोड़ा जाने वाला।

वेठेति (क्रि.) : लपेटता है।

वेण (पु.) : टोकरी बनाने वाला।

वेणविक (पु.) : वंशी बजाने वाला।

वेणिक (पु.) : वीणा बजाने वाला।

वेणी (स्त्री.) : बालों की लट।

वेणीकत (वि.) : गुंथा हुआ सिर।

वेणीकरण (नपुं.) : गूंथना, गट्ठर बांधना।

वेणु (पु.) : बांस।

वेणुगुम्ब (पु.) : बांसों का झुंड।

वेणुबलि (पु.) : बांस के रूप में कर चुकता करना।

वेणुवन (नपुं.) : बांसों का वन।

वेतन (नपुं.) : मजदूरी, तनख्वाह।

वेतनिक (नपुं.) : वैतनिक, वेतन पर काम करनेवाला, किराये का टट्टू।

वेतरणी (स्त्री.) : नरक की त्रासदायिनी नदी।

वेतस (पु.) : सरकंडा, नरकट।

वेतालिक (पु.) : राजदरबारी कलाकार, संगीतज्ञ, गायक।

वेति (क्रि.) : लुप्त हो जाता है, अंतर्धान हो जाता है।

वेत्त (नपुं.) : बेंत।

वेत्तग्ग (नपुं.) : बेंत का सिरा।

वेत्तलता (स्त्री.) : बेंत की छड़ी।

वेद (पु.) : धार्मिक भावना, अनुभूति, ब्राह्मणों के 'स्वयं-प्रमाण' माने जानेवाले चार ग्रंथ।

वेदगू (पु.) : उच्चतम ज्ञान प्राप्त।

वेदजात (वि.) : आनंदित।

वेदनक (पु.) : अनुभव करने वाला, भोगने वाला।

वेदनट्ट (वि.) : कष्ट से पीड़ित।

वेदना (स्त्री.) : पीड़ा, इंद्रिय-जनित अनुभूति।

वेदनाक्खन्ध (पु.) : वेदना-स्कन्ध, वेदना समूह।

वेदन्तगू (पु.) : ज्ञान की पराकाष्ठा पर पहुंचा हुआ।

वेदपारगू (पु.) : वेदों के ज्ञान में श्रेष्ठ।

वेदब्भ-जातक : वेदब्भ-मंत्र के जानकार ब्राह्मण की कथा; लोभी डाकुओं ने प्राण गँवाये (४८)।

वेदयित (नपुं.) : अनुभूति, अनुभव।

वेदिका / वेदी (स्त्री.) : वेदिका, मंच।

वेदित (वि.) : अनुभूत, ज्ञात।

वेदियति (क्रि.) : अनुभव किया जाता है।

वेदियमान (वि.) : अनुभव किया जाता हुआ।

वेदेति (क्रि.) : अनुभव करता है, जानता है।

वेदेह (वि.) : विदेह देश का।

वेदेहीपुत्त (पु.) : विदेह की राजकुमारी का पुत्र।

वेध (पु.) / **वेधन** (नपुं.) : बींधना, तीर मारना।

वेधति (क्रि.) : कांपता है।

वेधी (पु.) : बींधनेवाला।

वेनयिक (पु.) : 'विनय' का विशेषज्ञ।

वेनेय्य (वि.) : 'विनीत' बनाया जा सकने वाला, शिक्षणीय।

वेपुल्ल (नपुं.) : विपुलता।

वेपुल्ल : राजगृह के आसपास के पांच पर्वतों में से उच्चतम पर्वत।

वेभङ्गिय (वि.) : बांटने योग्य।

वेभार : राजगृह के चारों ओर के पर्वत शिखरों में से एक।

वेम (पु.) : ढरकी, शटल, ठरकी।

वेमज्झ (नपुं.) : बीच, मध्य।

वेमतिक (वि.) : संदिग्ध।

वेमत्त (नपुं.) : भेद, फरक।

वेमत्तता (स्त्री.) : द्वैध-भाव, भेद।

वेमातिक (वि.) : विमाता वाला, सौतेला।

वेमानिक (वि.) : 'विमान' वाला, दिव्य भवन का स्वामी।

वेमानिकपेत (पु.) : विमान-प्रेत।

वेय्यग्घ (वि.) : बाघ-संबंधी, बाघ के चमड़े से ढका हुआ।

वेय्यञ्जनिक / **व्यञ्जनिक** (वि., पु.) : चिन्हों का जानकार, ज्योतिषि।

वेय्यत्तिय (नपुं.) : स्पष्टता।

वेय्याकरण : (नपुं.) व्याख्या; (पु.) व्याकरण का जानकार, व्याख्याकार।

वेय्याबाधिक (वि.) : कष्टप्रद, दुःखदायी।

वेय्यायिक (नपुं.) : खर्च।

वेय्यावच्च (नपुं.) : सेवा, कर्तव्य।

वेय्यावच्चकर / **वेय्यावतिक** (पु.) : सेवक, नौकर।

वेर (नपुं.) : वैर।

वेरज्जक (वि.) : नाना राज्यों का।

वेरञ्जा : नगर-विशेष, जहां भगवान बुद्ध ने अपना एक वर्षा-वास बिताया।

वेरमणी (स्त्री.) : विरति, अलिप्त रहना, दूर रहना।

वेरम्भवात (पु.) : पर्वत-प्रदेशों में चलने वाली हवा।

वेरिक / वेरी (वि.) : शत्रु, द्वेषी, दुश्मन।

वेरी-जातक : डाकुओं के डर से बैलों को तेज भगाकर धनी व्यापारी सकुशल घर लौट आया (१०३)।

वेरोचन (पु.) : सूर्य।

वेला (स्त्री.) : समय, किनारा, मर्यादा।

वेलातिक्कम (पु.) : सीमा को लाँघ जाना।

वेल्लित (वि.) : टेढा, घुंघराले (बाल)।

वेल्लितग्ग (वि.) : घुँघराले बालों का सिरा ।

वेवचन (नपुं.) : पर्याय वचन, समानार्थी वचन।

वेवण्णिय (नपुं.) : विवरण करना, बदरंग करना।

वेस (पु.) : वेश, भेष।

वेसम्म (नपुं.) : विषमता ।

वेसाख (पु.) : वैशाख महीना। बुद्ध का जन्म, ज्ञान-प्राप्ति, परिनिर्वाण, सभी वैशाख में हुए माने जाते हैं ।

वेसारज्ज (नपुं.) : विशारदता, आत्मविश्वास।

वेसाली : लिच्छवियों की प्रसिद्ध राजधानी वैशाली।

वेसिया / वेसी (स्त्री.) : वेश्या।

वेस्म (नपुं.) : निवास स्थान, घर।

वेस्स (पु) : वैश्य, बनिया, व्यापारी।

वेस्सन्तर-जातक : वेस्संतर राजा की दानशीलता की कथा (५४७)।

वेहास (पु.) : आकाश, आसमान।

वेहासकुटी (स्त्री.) : ऊपर के तल्ले पर हवादार कमरा।

वेहासगमन (नपुं.) : आकाश-गमन।

वेहासट्ठ (वि.) : आकाश-स्थित।

वेळु (पु.) : बांस।

वेळुरिय (नपुं.) : वैडूर्य, एक कीमती रत्न।

वेळुक-जातक : बांस में रखे, पोषित सांप ने सपेरे को काटा (४३)।

वेळुवन : राजगृह के समीप राजा बिंबिसार का प्रमोद-उद्यान, जो बाद में बुद्ध-प्रमुख भिक्षुसंघ को अर्पित कर दिया गया था।

वो (सर्व.) : **तुम्ह** का पर्याय, तुम।

वोकार (पु.) : रूप, वेदना आदि पांच स्कन्ध।

वोकिण्ण (वि.) : मिला-जुला, ढका हुआ।

वोक्कमति (क्रि.) : एक ओर हो जाता है।

वोच्छिज्जति (क्रि.) : कटता है, रोका जाता है।

वोत्थपन (नपुं.) : परिभाषा, व्याख्या।

वोदक (वि.) : जल-रहित।

वोदपन / **वोदान** (नपुं.) / **वोदपना** (स्त्री.) : शुद्धि, विशुद्धी।

वोदपेति (क्रि.) : शुद्ध करता है।

वोमिस्सक (वि.) : मिश्रित।

वोरोपन (नपुं.) : वंचना, वंचित करना।

वोरोपेति (क्रि) : वंचित करता है।

वोलोकेति (क्रि.) : परीक्षा करता है।

वोसित (वि.) : समाप्त, पूरा हुआ।

वोस्सग्ग (पु.) / **वोस्सजन** (नपुं.) : दान, त्यागना, परित्याग।

वोस्सजति (क्रि.) : परित्याग करता है।

वोहरति (क्रि.) : व्यवहार में लाता है, प्रकट करता है।

वोहरियमान (वि.), बुलाया जाता हुआ।

वोहार (पु.) : बुलाना, प्रकट करना, उपयोग, व्यवहार, व्यापार, कानून।

वोहारिक (पु.) : व्यापारी, न्यायाधीश।

वोहारिकामच्च (पु.) : मुख्य न्यायाधीश।

व्यग्घ (पु.) : बाघ।

व्यग्घ-जातक : बाघ और सिंह के जंगल से चले जाने पर लोग जंगल के पेड़ काटने लगे। वृक्ष देवता कुछ न कर सके (२७२)।

व्यञ्जन (नपुं.) : दाल-सब्जी, चिन्ह।

व्यञ्जेति (क्रि.) : प्रकट करता है, व्यक्त करता है, संकेत करता है।

व्यत्त (वि.) : पंडित।

व्यत्ततर (वि.) : बड़ा पंडित, अधिक होशयार।

व्यत्तता (स्त्री.) : पांडित्य, होशियारी।

व्यथति (क्रि.) : कष्ट देता है, दबाता है।

व्यन्तिकरोति (क्रि.) : नष्ट करता है, छोड़ देता है।

व्यन्तिभवति (क्रि.) : नष्ट होता है, रुकता है।

व्यपगच्छति (क्रि.) : विदा होता है।

व्यम्ह (नपुं.) : विमान, महल, भवन।

व्यसन (नपुं.) : दुर्भाग्य।

व्याकत (वि.) : व्याख्यात, स्पष्ट किया गया।

व्याकरण (नपुं.) : व्याकरण, व्याख्या।

व्याकरियमान (वि.) : व्याख्या किया जाता हुआ।

व्याकरोति (क्रि.) : व्याख्या करता है।

व्याकुल (वि.) : गड़बड़ाया हुआ, उलझा हुआ।

व्याख्याति (क्रि.) : सूचित करता है, समझता है।

व्याध (पु.) : शिकारी।

व्याधि (पु.) : रोग, बिमारी।

व्याधित (वि.) : रोगी, बिमार।

व्यापक (वि.) : व्याप्त।

व्यापज्जति (क्रि.) : असफल होता है।

व्यापज्जना (स्त्री.) : असफलता, क्रोध।

व्यापन्न (वि.) : मार्ग-भ्रष्ट।

व्यापाद (पु.) : द्वेष, नफरत।

व्यापादेति (क्रि.) : बिगाड़ता है।

व्यापार (पु.) : पेशा, धंधा, उद्योग।

व्यापारित (वि.) : उत्तेजित।

व्यापित (वि.) : पूरित।

व्यापेति (क्रि.) : व्याप्त होता है, फैलता है।

व्याबाधेति (क्रि.) : हानि पहुंचाता है।

व्याभङ्गी (स्त्री.) : लाठी, मूसल, बहंगी, कांवर।

व्याम (पु.) : लंबाई या गहराई का माप।

व्यावट्ट (वि.) : व्याकृत, संलग्न।

व्यासत्त (वि.) : आसक्त।

व्यासेचन (नपुं.) : सींचना, छिड़कना।

व्याहरति (क्रि.) : बोलता है, बातचीत करता है।

व्यूह (पु.) : सैनिक व्यवस्था, व्यूहरचना।

व्योसित (वि.) : परिपूर्ण।

स

स (वि.) : स्वकीय, अपना, सहित।

सउपादान (वि.) : आसक्ति सहित।

सउपादिसेस (वि.) : शरीर रहते (निर्वाण)।

सक : (वि.) स्वकीय; (पु.) संबंधी; (नपुं.) अपनी निजी संपत्ति।

सकङ्ख (वि.) : शंका-सहित, संदेह-सहित।

सकट (पु., नपुं.) : गाड़ी।

सकटभार / **सकटवाह** (पु.) : गाड़ी का भार।

सकटव्यूह (पु.) : गाड़ियों का (चक्र-)व्यूह।

सकण्टक (वि.) : कंटक-सहित।

सकदागामी (पु.) : धम्म-पथ का ऐसा पथिक, जिसके पुनः एक ही बार और इस संसार में जन्म लेने की संभावना हो।

सकबल (वि.) : अपना बल।

सकमन (वि.) : आनंदित।

सकम्म / **सकिच्च** (नपुं.) : स्वकीय कर्म।

सकम्मक (वि.) : सकर्मक (क्रिया)।

सकरणीय (वि.) : जिसके लिए 'करणीय' शेष हो।

सकल (वि.) : संपूर्ण, तमाम।

सकलिका (स्त्री.) : खमाची।

सकास (पु) : पड़ोस।

सकिञ्चन (वि.) : दुनियावी वस्तुओं का मालिक, आसक्ति-युक्त।

सकिं (क्रि.वि.) : एक बार।

सकीय (वि.) : स्वकीय, अपना।

सकुण / सकुन्त (पु.) / **सकुणी** (स्त्री.) : पक्षी, पंछी।

सकुणग्घी (पु.) : बाज, पंछी।

सकुणग्घी-जातक : बटेर ने अपनी चतुराई से बाज की जान ली (१६०)।

सकुण-जातक : पक्षिराज ने पक्षियों को सावधान किया कि उनके घोंसलों में आग लगने वाली है (३६)।

सक्क : (वि.) योग्य, समर्थ, संभव; (पु.) शाक्य वंश, देवेंद्र शक्र।

सक्कच्च (पूर्व.क्रि.) : भली भांति तैयारी करके।

सक्कच्चकारी (पु.) : सावधानी बरतने वाला।

सक्कच्चं (क्रि.वि.) : सावधानी से।

सक्कत (वि.) : सत्कृत, सम्मानित।

सक्कत्त (नपुं.) : शक्रत्व, देवेंद्र शक्र जैसी स्थिति।

सक्करोति (क्रि.) : सत्कार करता है, आदर करता है, आतिथ्य करता है।

सक्का (अ.) : शक्य, संभव।

सक्काय (पु.) : विद्यमान शरीर, सत्काय ।

सक्कायदिट्ठि (स्त्री.) : आत्म-दृष्टि।

सक्कार (पु.) : सत्कार, आदर, सन्मान ।

सक्कुणाति / सक्कोति (क्रि.), समर्थ होता है।

सक्कुणेय्यत्त (नपुं.) : संभावना।

सक्खरा (स्त्री.) : शर्करा, शक्कर, कंकर।

सक्खलि / सक्खलिका (स्त्री.) : छिद्र।

सक्खि (अ.) : आमने-सामने।

सक्खिक / सक्खी (वि.) : साक्षी, गवाह।

सक्खिदिट्ठ (वि.), आमने-सामने दिखाई दिया।

सक्खिपुट्ठ (वि.), गवाह के रूप में पूछा गया।

सक्कपुत्तिय : शाक्य-पुत्र, बौद्ध भिक्षुओं को दिया गया नाम।

सक्कमुनि : भगवान बुद्ध का ही एक नाम, शाक्यमुनि।

सक्कसीह (पु.) : गौतम बुद्ध का एक अधिवचन।

सख / **सखि** (पु.) : मित्र।

सखिल (वि.) : मधुर भाषी।

सख्य (नपुं.) : सखा-भाव, मैत्री।

सगब्भ (वि.) : गर्भवती।

सगह / **सगाह** (वि.) : भयानक जंतुओं (घड़ियालों) से युक्त।

सगामेय्य (वि.) : एक ही ग्राम के।

सगारव (वि.) : गौरव सहित (व्यक्ति)।

सगारवं (क्रि.वि.) : गौरव सहित।

सगारवता (स्त्री.) : आदर, गौरव, सम्मान।

सगोत्त (वि.) : एक ही गोत्र के।

सग्ग (पु.) : स्वर्ग, सुखावस्था।

सग्गकाय (पु.) : स्वर्गीय सभा।

सग्गमग्ग (पु.) : स्वर्ग-मार्ग, सुख का मार्ग।

सग्गलोक (पु.) : ड्वर्ग-लोक, स्वर्ग-प्रदेश।

सग्गसंवत्तनिक (वि.) : स्वर्गाभिमुख।

सग्गवासी (पु.) : देवतागण, सुख को प्राप्त।

सग्गुण (पु.) : सद्गुण।

सङ्कट (नपुं.) : तंग स्थान।

सङ्कटीर (नपुं.) : कूड़े कचरे का ढे।

सङ्कड्ढति (क्रि.) : एकत्र करता है, खींचता है।

सङ्कति (क्रि.) : संदेह करता है, शंका करता है।

सङ्कन्तति (क्रि.) : चारों ओर से काटता है।

सङ्कन्तिक (वि.) : सांक्रान्तिक, एक अवस्था में से दूसरी में जाने वाला।

सङ्कन्तिकरोग (पु.) : छूत की बीमारी।

सङ्कप्प (पु.) : इरादा, संकल्प।

सङ्कप्प-जातक : राजा के बाहर गए रहने पर तपस्वी ने रानी के शरीर का नग्न अंश देख, उस पर आसक्त हो गया (२५१)।

सङ्कप्पेति (क्रि.) : संकल्प करता है।

सङ्कमति (क्रि.) : संक्रमण करता है।

सङ्कमन (नपुं.) : रास्ता, पुल।

सङ्कम्पति (क्रि.) : कांपता है।

सङ्कर (वि.) : आनंद-दायक, मिश्रित।

सङ्कलन (नपुं.) : संग्रह।

सङ्कस्स : बुद्धकालीन एक बौद्ध स्थल, जो उत्तर प्रदेश में है।

सङ्का (स्त्री.) : शंका, संदेह।

सङ्कायति (क्रि.) : शंका करता है।

सङ्कार (पु.) : कूड़ा-करकट।

सङ्कारकूट (पु.) : कूड़े-करकट का ढेर।

सङ्कारचोळ (नपुं.) : कूड़े-कचरे के ढेर पर से उठाया गया चिथड़ा।

सङ्कारट्ठान (नपुं.) : कूड़ा-कचरा फेंकने की जगह।

सङ्कास (वि.) : समान, एक जैसा।

सङ्कासना (स्त्री.) : व्याख्या, परिभासा।

सङ्किच्च-जातक : संकिच्च ने राजकुमार को पितृ-हत्या के संकल्प से विरत रखने का प्रयास किया (५३०)।

सङ्कित्तन (नपुं.) : संकीर्तन, प्रचारित करना।

सङ्किलिट्ठ (वि.) : मैला हुआ।

सङ्किलिस्सति (क्रि.), अशुद्ध होता है, मैला होता है।

सङ्किलिस्सन (नपुं.) : अशुद्धि, मैल।

सङ्किलेस (पु.) : चित्त-मैल, चित्त-विकार।

सङ्किलेसिक (वि.) : हानिकारक।

सङ्की (वि.) : संदेह करनेवाला।

सङ्कु (पु.) : खूँटा।

सङ्कुचति (क्रि.) : संकोच करता है, संकुचित होता है, सिकुड़ता है।

सङ्कुचन (नपुं.) : सिकोड़ना।

सङ्कुचित (वि.) : सिकुड़ा।

सङ्कुपित (वि.) : क्रुद्ध।

सङ्कुल (वि.) : भरा हुआ, भीड़ सहित।

सङ्केत (पु., नपुं.) : निशान, चिन्ह।

सङ्केतकम्म (नपुं.) : समझौता।

सङ्कोच (पु.) : हिचकिचाहट।

सङ्कोचेति (क्रि.) : हिचकिचाता है, सिकुड़ता है।

सङ्कोप (पु.) : कुपित करना, विघ्न उपस्थित करना।

सङ्ख (पु.) : शंख।

सङ्खकुट्टी (पु.) : कुष्ठ रोगी, कोढी।

सङ्खथाल (पु.) : शंख-थाली।

सङ्खधमक (पु.) : शंख बजाने वाला।

सङ्खमुण्डिक (नपुं.) : त्रास देने की विधि-विशेष।

सङ्ख-जातक " मणिमेखला ने सप्ताहभर तक समुद्र में तैरते वीर की सहायता करनी चाही, जिसे उसने अस्वीकार किया (४४२)।

सङ्ख-जातक : सुसीम के पिता ने मृत पुत्र का सम्मान किया। यह कथा जातकट्ठकथा में नहीं।

सङ्खत (वि.) : संस्कृत, समुत्पन्न।

सङ्खधम्म-जातक : पुत्र ने पिता को बार-बार शंख बजाने से मना किया (६०)।

सङ्खपाल-जातक : तपस्वी ने शंखपाल नाग को धर्मोपदेश दिया (५२४)।

सङ्खय (पु.) : हानि।

सङ्खरण (नपुं.) : मरम्मत, तैयारी।

सङ्खरोति (क्रि.) : मरम्मत करता है, संस्कार करता है।

सङ्खला (स्त्री.) : हाथी के पाँव की श्रृंखला।

सङ्खलिका (स्त्री.) : बेड़ी।

सङ्खा / सङ्ख्या (स्त्री.) : गिनती।

सङ्खात (वि) : (अमुक) नाम का।

सङ्खादति (क्रि.) : चबाता है।

सङ्खान (नपुं.) : गिनती।

सङ्खाय (पू.क्रि.) : विचार करके, मनन करके।

सङ्खार (पु.) : संस्कार।

सङ्खारक्खन्ध (पु.) : संस्कार-स्कन्ध।

सङ्खारदुक्ख (नपुं.) : (उपादान), संस्कार-दुःख।

सङ्खारलोक (पु.) : संपूर्ण प्रकृति, संसार, विश्व।

सङ्खित्त (वि.) : संक्षिप्त।

सङ्खिपति (क्रि.) : संक्षेप करता है।

सङ्खुभति (क्रि.) : क्षुब्ध होता है।

सङ्खुभन (नपुं.) : क्षोभ।

सङ्खेप (पु.) : संक्षेप, सारांश।

सङ्खेय्य (वि.) : जिसकी गिनती की जा सके।

सङ्खेय्य परिवेण : सागल का वह विहार, जिसमें राजा मिलिन्द के साथ शास्त्रार्थ करने वाले भिक्षु नागसेन रहते थे।

सङ्खोभ (पु.) : क्षोभ, हलचल।

सङ्खोभेति (क्रि.) : क्षुब्ध करता है।

सङ्ख्याभेद (पु.) : संख्या-विशेष जैसे एक लाख।

सङ्ग (पु.) : आसक्ति।

सङ्गच्छति (क्रि.) : साथ-साथ चलता है।

सङ्गणिका (स्त्री.) : समाज, भीड़।

सङ्गणिकाराम (वि.) : समाज में / लोगों के साथ रहने में आनंद उठाना।

सङ्गणिकारत (वि.) : जिसे लोगों में रहना पसंद हो।

सङ्गण्हाति (क्रि.) : संग्रह करता है, शालीनता का व्यवहार करता है।

सङ्गति (स्त्री.) : साथ रहना ।

सङ्गम (पु.) : मेल, संग्रह।

सङ्गर (पु.) : मित्रता, रिश्वत, युद्ध, प्रतिज्ञा आदि अर्थों में ।

सङ्गह (पु.) : संग्रह, आतिथ्य।

सङ्गाम (पु.) : संग्राम, युद्ध।

सङ्गामावचर (वि.) : प्रायः युद्ध-रत।

सङ्गामावचर-जातक : पीलवान के वचनों ने आक्रामक हाथी को उत्साहित किया (१८२)।

सङ्गमेति (क्रि.) : संग्राम करता है।

सङ्गायति (क्रि.) : संगायन करता है।

सङ्गाह (पु.) : संग्रह।

सङ्गाहक (वि.) : संग्रह करने वाला।

सङ्गीति (स्त्री.) : तिपिटक के वचनों का संगायन करने के लिए अर्हतों का सम्मेलन।

सङ्गीतिकारक (पु.) : संगीति करनेवाले अर्हत गण।

सङ्घ (पु.) : समूह, परिषद, भिक्षुओं की मंडली।

सङ्घकम्म (नपुं.) : भिक्षु-संघ के सदस्यों द्वारा किया गया धार्मिक कार्य।

सङ्घगत (वि.) : संघ को दिया गया (दान)।

सङ्घटेति (क्रि.) : संघटन करता है।

सङ्घट्टन (नपुं.) : संगठन; चोट पहुंचाना।

सङ्घट्टेति (क्रि.) : चोट पहुंचाता है, उत्तेजित करता है।

सङ्घत्थेर (पु.) : संघ का ज्येष्ठतम भिक्षु।

सङ्घभत्त (नपुं.) : संघ को कराया गया भोजन।

सङ्घभेद (पु.) : संघ में फूट, संघ में विभाजन।

सङ्घभेदक (पु.) : संघ में भेद / विभाजन पैदा करने वाला।

सङ्घमामक (वि.) : संघ के प्रति ममत्व रखने वाला।

सङ्घमित्ताथेरी : अशोक-पुत्री तथा महास्थविर महिन्द की बहन। उसका जन्म उज्जैनी हुआ था। वही बोधगया से बोधिवृक्ष की शाखा लेकर सिंहल-द्वीप पहुंची थी।

सङ्घाट (पु.) : जोड़, मेल, बेड़ा।

सङ्घाटी (स्त्री.) : बौद्ध भिक्षु के तीन चीवरों में से एक।

सङ्घात (पु.) : आघात, आक्रमण, उँगलियों का चटखाना, संग्रह।

सङ्घिक (वि.) : संघ संबंधी, संघ की मलकियत।

सङ्घी (वि.) : संघ या समूह का नेता।

सङ्घुट्ठ (वि.) : घोषित, गूँजता हुआ।

सचित्त (नपुं.) : अपना चित्त।

सचित्तक (वि.) : चित्त वाला।

सचे (अ.) : यदि, अगर।

सचेतन (वि.) : चेतना-युक्त, प्राणवान।

सच्च : (नपुं.) सत्य, सच; (वि.) सत्य (वचन)।

सच्चकार (पु.) : प्रतिज्ञा।

सच्चकिरिया (स्त्री.) : किसी सत्य बात की बाजी लगाकर कोई कामना करना।

सच्चङ्किर-जातक : दुष्ट राजकुमार अकृतज्ञ निकला (७३)।

सच्चपटिवेध (पु.) : सत्य का साक्षात्कार।

सच्चबद्ध : श्रावस्ती तथा सूनापरन्त के बीच का कोई पर्वत।

सच्चवाचा (स्त्री.) : सत्यवाणी।

सच्चवादी (पु.) : सत्य बोलने वाला।

सच्चसन्ध (वि.) : विश्वसनीय।

सच्चापेति (क्रि.) : शपथ दिलाता है।

सच्चाभिसमय (पु.) : सत्य का ज्ञान।

सच्छिकत (वि.) : साक्षात कृत।

सच्छिकरण (नपुं.) / **सच्छिकिरिया** (स्त्री.) : साक्षात करना।

सच्छिकरणीय (वि.) : साक्षात करने योग्य।

सच्छिकरोति (क्रि.) : साक्षात करता है।

सजति (क्रि.) : गले लगाता है।

सजन (पु.) : रिश्तेदार, स्वकीय जन।

सजातिक (वि.) : उसी जाति या नस्ल का।

सजीव (वि.) : प्राणवान, जीवन-युक्त।

सजोतिभूत (वि.) : प्रज्वलित।

सज्जति (क्रि.) : चिपकता है, लटकता है, आसक्त होता है।

सज्जन : (नपुं.) : आसक्ति, सजावट, तैयारी; (पु.) सत्पुरुष।

सज्जित (वि.) : तैयार हुआ।

सज्जु (अ.) : तुरंत, उसी समय।

सज्जुकं (क्रि.वि.) : शीघ्रता से।

सज्जुलस (पु.) : राल।

सज्जेति (क्रि.) : तैयारी करता है, सजाता है।

सज्झाय (पु.) : अध्ययन, पाठ।

सज्झायति (क्रि.) : अध्ययन करता है, दोहराता है, मिलकर पाठ करता है।

सज्झायना (स्त्री.) : मिलकर पाठ करना, अध्ययन करना।

सज्झु (नपुं.) : चांदी।

सज्झुमय (वि.) : चांदी का बना।

सञ्चय (पु.) : एकत्रीकरण, इकट्ठा करना।

सञ्चरण (नपुं.) : विचरना।

सञ्चरति (क्रि.) : विचरता है, घूमता है।

सञ्चरित्त (नपुं.) : संदेशों का ले जाना।

सञ्चलति (क्रि.) : अस्थिर होता है, उत्तेजित होता है।

सञ्चलन (नपुं.) : हलचल, उत्तेजना।

सञ्चार (पु.) : रास्ता, हलचल, संचरण।

सञ्चारण (नपुं.) : चलने के लिए अथवा कुछ करने के लिए प्रेरित करना।

सञ्चारेति (क्रि.) : संचार कराता है।

सञ्चिच्च (अ.) : जान-बूझकर।

सञ्चिण्ण (वि.) : संगृहीत, अभ्यस्त, आचरित।

सञ्चित (वि.) : एकत्रित।

सञ्चिनन (नपुं.) : एकत्रीकरण, इकट्ठा करना।

सञ्चिनाति (क्रि.) : इकट्ठा करता है, चयन करता है।

सञ्चुण्णेति (क्रि.) : पीस डालता है, चूर्ण बना देता है।

सञ्चेतना (स्त्री.) : चेतना, इरादा, संचेतना।

सञ्चेतनिक (वि.) : जान-बूझ कर (किया हुआ)।

सञ्चेतेति (क्रि.) : सोचता है, सूझबूझ दिखाता है।

सञ्चोदित (वि.) : प्रेरित, उत्तेजित, उत्साहित।

सञ्चोपन (नपुं.) : हटाना, स्थानांतरित करना।

सञ्छन्न (वि.) : ढका हुआ, भरा हुआ।

सञ्छादेति (क्रि.) : ढकता है, छत डालता है।

सञ्छिन्दति (क्रि.) : काट डालता है, नष्ट कर डालता है।

सञ्झग्घति (क्रि.) : हंसता है, मजाक करता है।

सञ्जनन (नपुं.) : उत्पत्ति।

सञ्जनेति (क्रि.) : उत्पन्न करता है, पैदा करता है।

सञ्जय बेलट्ठिपुत्त : भगवान बुद्ध के समकालीन छह प्रमुख आचार्यों में से एक। वह संपूर्ण रूप से अनिश्चयवादी था।

सञ्जात (वि) : उत्पन्न, उठा, पैदा हुआ।

सञ्जाति (स्त्री.) : उत्पत्ति, जन्म ग्रहण करना।

सञ्जानन (नपुं.) : पहचानना, जानना।

सञ्जानाति (क्रि.) : पहचानता है, अनुभव करता है।

सञ्जानित (वि) : पहचान लिया गया, जान लिया गया।

सञ्जायति (क्रि.) : जन्म ग्रहण करता है, पैदा होता है, उत्पन्न होता है।

सञ्जीव-जातक : सञ्जीव मुर्दों को जिलाना जानता था, फिर मारना नहीं (१५०)।

सञ्जीवन (वि.) : पुनर्जीवन, प्राणसंचार।

सञ्झा (स्त्री.) : संध्या-काल, शाम।

सञ्झाघन (पु.) : शाम के बादल।

सञ्झातप (पु.) : शाम की धूप।

सञ्ञत्त (वि.) : प्रेरित, सूचित।

सञ्ञत्ति (स्त्री.) : सूचना, शान्त-भाव।

सञ्ञा (स्त्री.) : जानने की मानसिक क्रिया, नाम, इशारा।

सञ्ञाक्खन्ध (पु.) पांच स्कन्धों में से संज्ञा-स्कंध।

सञ्ञाण (नपुं.) : संकेत, इशारा।

सञ्ञापक (पु.) : सूचना देनेवाला ।

सञ्ञापन (नपुं.) : जानकारी देना, सूचित करना।

सञ्ञापेति (क्रि.) : प्रकट करता है, सूचित करता है।

सञ्ञित (वि.) : संज्ञा वाला, नाम वाला।

सञ्ञी (वि.) : संज्ञा युक्त, होश सहित।

सट्ठि (स्त्री.) : साठ (६०)।

सट्ठिहायन (वि.) : साठ वर्ष का।

सट्ठुं (अ.) : त्याग के लिए, छोड़ देने के लिए।

सठ (वि.) : शठ, दुष्ट, ठग।

सठता (स्त्री.) : शठता, दुष्टता।

सणति / सनति (क्रि.) : शोर मचाता है।

सण्ठपन (नपुं.) : स्थापित करना।

सण्ठपेति (क्रि.), स्थापित करता है।

सण्ठहन (नपु.) : दुबारा पैदाइश, दुबारा उत्पत्ति।

सण्ठाति (क्रि.) : ठहरता है, स्थिर होता है।

सण्ठान (नपुं.) : आकार-प्रकार, संस्थान, स्थिति।

सण्ठित (वि.) : स्थित, संस्थापित।

सण्ठिति (स्त्री.) : स्थिरता, संस्थिति।

सण्ड (पु.) : झुंड, समूह।

सण्डास (पु.) : संडसी, सँड़ासी, चिमटा।

सण्ह (वि.) : चिकना, नर्म, मृदु।

सण्हकरणी (स्त्री.) : चक्की, खरेल।

सण्हेति (क्रि.) : पीसता है, चूर्ण बनाता है।

सत : (वि.) चेतन, जागरूक; (नपुं.) सौ (१००)।

सतक (नपुं.) : शतक, सौ जने या सौ चीजें।

सतक्कु (वि.) : सौ लकीरों वाला।

सतक्खत्तुं (क्रि.वि.) : सौ बार।

सतत (वि.) : लगातार, स्थिर, नित्य ।

सततं (क्रि.वि.) : लगातार, निरंतर, सदैव।

सतधम्म-जातक : सतधम्म ब्राह्मण ने भूख से पीड़ित होने पर चांडाल का जूठा भात खाया (१७९)।

सतधा (क्रि.वि.) : सौ तरह से।

सतपत्त : (नपुं.) कमल; (पु.), कठफोड़वा।

सतपत्त-जातक : मां का कहना मानकर लड़का बाप द्वारा दिए गए हजार वसूल करने गया (२७९)।

सतपदी (पु.) : कनखजूरा।

सतपुञ्ञलक्खण (वि.) : अनेक पुण्यचिन्हों वाला।

सतपोरिस (वि.) : सौ आदमियों की ऊँचाई जितना।

सतभिसज (पु.) : सत्ताईस नक्षत्रों में से एक।

सतमूली (स्त्री.) : सतावर।

सतरंसी (पु.) : सूर्य ।

सतवंक (पु.) : मछली विशेष।

सतसहस्स (नपुं.) : लाख (१,००,०००)।

सति (स्त्री.) : स्मृति, जागरूकता।

सतिन्द्रिय (नपुं.) : जागरूकता, सजग रहने की क्षमता।

सतिपट्ठान (नपुं.) : स्मृति-उपस्थान।

सतिमन्तु (वि.) : स्मृतिमान, सजग।

सतिवोसग्ग (पु.) : प्रमाद।

सतिसम्पजञ्ञ (नपुं.) : सजगता, जागरूकता।

सतिसम्बोज्झङ्ग (पु.) : संबोधि-अंग स्वरूप स्मृति ।

सतिसम्मोस (पु.) : विस्मृति।

सती (स्त्री.) : पतिव्रता स्त्री।

सतेकिच्छ (पु.) : जिसकी चिकित्सा हो सके, जिसे क्षमा किया जा सके।

सत्त : (पु.) सत्व, जीव, प्राणी; (वि) आसक्त, सात (संख्या)।

सत्तक (नपुं.) : सात का समूह, सप्तक।

सत्तक्खत्तुं (क्रि.वि.) : सात बार ।

सत्तगुण (वि.) : सात-गुना।

सत्ततन्ति (वि.) : सात तारोंवाली (वीणा)।

सत्ततालमत्त (वि.) : ताड़ के सात पेड़ों की ऊंचाई जितना ।

सत्तति (स्त्री.) : सत्तर (७०)।

सत्ततिंसा (स्त्री.) : सैतीस (३७)।

सत्तदस / सत्तरस (वि.) : सत्रह (१७)।

सत्तपण्णी (पु.) : सप्तपर्णी का पेड़।

सत्तपण्णीगुहा : राजगृह की प्रसिद्ध गुफा, जिसमें प्रथम बौद्ध संगीति हुई थी।

सत्तभूमक (वि.) : सात तल्लेवाला (भवन)।

सत्तम (वि.) : सातवां।

सत्तमहासर (पु.) : अनोतत्त आदि सात महान ताल।

सत्तमी (स्त्री.) : सातवां दिन, सप्तमी विभक्ति।

सत्तरतन (नपुं.) : सोना, चांदी आदि सात मूल्यवान पदार्थ।

सत्तरत्त (नपुं.) : एक सप्ताह।

सत्तला / सत्तलि (स्त्री.) : नवमल्लिका।

सत्तवंक (पु.) : मछली विशेष।

सत्तवस्सिक (वि.) : सात वर्ष का।

सत्तवीसति (स्त्री.) : सत्ताईस (२७)।

सत्तसट्ठि (स्त्री.) : सड़सठ (६७)।

सत्तसत्तति (स्त्री.) : सतहत्तर (७७)।

सत्ताह (नपुं.) : सप्ताह।

सत्ति (स्त्री.) : शक्ति, योग्यता, सामर्थ्य, बर्छी।

सत्तिसूल (नपुं.) : बर्छी की नोक।

सत्तिगुम्ब-जातक : डाकुओं के पास रहने वाले तोते ने राजा को मार डालने की बातें की, तपस्वियों के पास रहने वाले तोते ने राजा का स्वागत किया (५०३)।

सत्तु (पु.) : शत्रु, सत्तू।

सत्तुभस्ता (स्त्री.) : सत्तू की थैली।

सत्तुभस्ता-जातक : एक सांप ब्राह्मण की सत्तुओं की थैली में घुस गया (४०२)।

सत्थ : (नपुं.) शास्त्र, शस्त्र; (पु.) सार्थ, कारवाँ।

सत्थक (नपुं.) : छुरी।

सत्थकम्म (नपुं.) : शल्य-क्रिया।

सत्थकवात (पु.) : तीव्र वेदना।

सत्थगमनीय (वि.) : कारवां के साथ जाने लायक रास्ता।

सत्थवाह (पु.) : कारवां का मुखिया।

सत्थि (स्त्री) : जांघ।

सत्थु (पु.) : शास्ता, भगवान बुद्ध, शासक।

सदत्थ (पु.) : सदर्थ, स्व-कल्याण।

सदन (नपुं.) : घर, सदन।

सदर (वि.) : दुःखद, डरावना, भयानक।

सदस (वि.) : किनारी वाली (चटाई)।

सदस्स (पु.) : अच्छा घोड़ा, अच्छी नस्ल का घोड़ा।

सदा (क्रि.वि.) : हमेशा, सदा।

सदार (पु.) : अपनी पत्नी।

सदारतुट्ठि (स्त्री.) : अपनी पत्नी से ही संतुष्ट रहना।

सदिस (वि.) : सदृश, समान।

सदिसत्त (नपुं.) : समानता, बराबरी।

सदेवक (वि.) : देवताओं सहित।

सद्द (पु.) : शब्द, आवाज।

सद्दत्थ (पु.) : शब्द का अर्थ।

सद्दविदू (पु.) : नानाविध आवाजों को समझ सकने वाला।

सद्दवेधी (पु.) : शब्दवेधी बाण चला सकने वाला।

सद्दसत्थ (नपुं.) : शब्द-शास्त्र।

सद्दल (पु.) : नये घास से ढकी जगह।

सद्दहति (क्रि.) : श्रद्धा करता है, विश्वास करता है।

सद्दहन (नपुं.) / **सद्दहना** (स्त्री.) : विश्वास करना।

सद्दायति (क्रि.) : आवाज करता है।

सद्दूल (पु.) : तेंदुआ, सिंह, शार्दूल।

सद्ध (वि.) : श्रद्धावान, विश्वास करने वाला।

सद्धम्म (पु.) : सद्धर्म।

सद्धा (स्त्री.) : श्रद्धा, भक्ति।

सद्धातब्ब (वि.) : श्रद्धा करने योग्य।

सद्धादेय्य (वि.) : श्रद्धापूर्वक दिया हुआ (दान)।

सद्धाधन (नपुं.) : श्रद्धारूपी धन।

सद्धायिक (वि.) : विश्वसनीय ।

सद्धालु (वि.) : श्रद्धालु।

सद्धिविहारिक / सद्धिविहारी (पु.) : सहप्रव्रजित, प्रव्रजित साथी, साथ में रहने वाला।

सद्धिं (अ.) : साथ में।

सद्धिंचर (वि.) : साथी, साथ में विचरण करने वाला।

सधन (वि.) : धनी।

सनन्तन (वि.) : सनातन, सदा से, पुराना।

सनाभिक (वि.) : नाभि-सहित।

सनित (वि.) : ध्वनित, जिसकी नाक बजती हो।

सन्त : (वि.) शांत, विद्यमान; (पु.) सत्पुरुष।

सन्तक : (वि.) स्वकीय, अपना, सीमित; (नपुं.) संपत्ति।

सन्तकाय (वि.) : शांत काय।

सन्तज्जेति (क्रि.) : त्रास देता है, डराता है।

सन्ततं (क्रि.वि.) : निरंतर, लगातार।

सन्ततर (वि.) : शांततर।

सन्तति (स्त्री.) : संतति, परंपरा।

सन्तत्त (वि.) : संतप्त, तपा हुआ।

सन्तप्पति (क्रि.) : अनुतप्त होता है, दुःखी होता है।

सन्तप्पित (वि) : संतुष्ट, प्रसन्न।

सन्तप्पेति (क्रि.) : संतुष्ट होता है, आनंदित होता है, प्रसन्न होता है।

सन्तभाव (पु.) : शांत-भाव।

सन्तमानस (वि.) : शांत-चित्त।

सन्तरति (क्रि.) : शीघ्रता करता है, जल्दी करता है।

सन्तरबाहिर (वि.) : भीतर तथा बाहर।

सन्तरबाहिरं (क्रि.वि.) : भीतर-बाहर करके।

सन्तसति (क्रि.) : डरता है, भयभीत होता है।

सन्तसन (नपुं.) : भय, डर।

सन्तान (नपुं.) : संतति, परंपरा, मकड़ी का जाला।

सन्तानेति (क्रि.) : परंपरा बनाए रखता है।

सन्ताप (पु.) : ताप, पश्चाताप।

सन्तापेति (क्रि.) : तपाता है, जलाता है, त्रास देता है।

सन्तास (पु.) : डर, त्रास, कांपना।

सन्तासी (वि.) : कांपता हुआ, डरता हुआ।

सन्ति (स्त्री.) : शांति।

सन्तिक : (वि.) समीप, (नपुं.) पड़ोस।

सन्तिकम्म (नपुं.) : शांति स्थापित करना।

सन्तिका (अ.) : (उसके) पास से।

सन्तिकावचर (वि.) : नजदीक रहने वाला।

सन्तिट्ठति (क्रि.) : ठहरता है, निश्चल रहता है।

सन्तिपद (नपुं.) : शांत-अवस्था।

सन्तिकेनिदान : जातकट्ठकथा का वह भाग, जिसमें भगवान बुद्ध के बुद्धत्व-लाभ से लेकर परिनिवृत्त होने तक का वृत्तान्त संग्रहीत है।

सन्तीरण (नपुं.) : खोज-बीन करना।

सन्तुट्ठ / **सन्तुसित** / **सन्तुस्सक** (वि.) : संतुष्ट, प्रसन्न-चित्त।

सन्तुट्ठता (स्त्री.) : संतुष्ट रहना।

सन्तुट्ठि (स्त्री.) : संतोष, प्रीति, आनंद।

सन्तुस्सति (क्रि.) : संतुष्ट होता है।

सन्तुस्सन (नपुं.) / **सन्तोस** (पु.): संतुष्टि, संतोष।

सन्थत (वि) : ढका हुआ।

सन्थम्भेति (क्रि.) : कठोर बनता है।

सन्थम्भना (स्त्री.) : कठोर होना।

सन्थर : (पु.) चटाई, (नपुं.) बिछाना।

सन्थरति (क्रि.) : बिछाता है।

सन्थरापेति (क्रि.) : बिछवाता है।

सन्थव (पु.) : गहरी मित्रता, संसर्ग, समागम।

सन्थव-जातक : अग्नि को दी गई आहुति के कारण कुटिया में आग लग गई (१६२)।

सन्थागार (पु., नपुं.) : सभा-भवन।

सन्थार (पु.) : फर्श, बिछावन, दरी, चादर।

सन्थुत (वि.) : परिचित।

सन्द : (वि.) घना; (पु.) बहाव।

सन्दच्छाय (वि.) : घनी छाया वाला।

सन्दति (क्रि.) : बहता है ।

सन्दन : (नपुं.) बहना; (पु.) रथ।

सन्दस्सक (पु.) : दिखाने वाला, मार्गदर्शक।

सन्दस्सन (नपुं.) : शिक्षण, मार्गदर्शन।

सन्दस्सियमान (वि.) : सिखाया जाता हुआ।

सन्दस्सेति (क्रि.) : दिखाता है, समझाता है, व्याख्या करता है।

सन्दहति (क्रि.) : मेल बिठाता है।

सन्दहन (नपुं.) : मेल बिठाना।

सन्दान (नपुं.) : जंजीर, परंपरा।

सन्दालेति (क्रि.) : तोड़ता है, चीरता है।

(सन्दालेन्ति, सन्दालेसि, सन्दालित, सन्दालेत्वा) ।

सन्दिट्ठ : (वि.) एक साथ देखे गये; (पु.) मित्र।

सन्दिट्ठिक (वि.) : दिखाई देने वाला, इह-लोक संबंधी।

सन्दित (वि.) : जो बह गया।

सन्दिद्ध (वि.) : विष-मिश्रित।

सन्दिस्सति (क्रि.) : साथ दिखाई देता है, सहमति दर्शाता है।

सन्दीपन (नपुं.) : स्पष्ट करना, प्रकाशित करना।

सन्दीपेति (क्रि.) : प्रकाशित करता है।

सन्देस (पु.) : संदेश।

सन्देसहर (पु.) : संदेश-वाहक।

सन्देसागार (नपुं.) : डाकखाना।

सन्देह (पु.) : शक, सन्देह, शंका, अपना देह।

सन्दोह (पु.) : ढेर।

सन्धन (नपुं.) : निजी संपत्ति।

सन्धमति (क्रि.) : फूंकता है, बजाता है।

सन्धातु (पु.) : मेल मिलाने वाला।

सन्धान (नपुं.) : मेल, एकता।

सन्धाय (पू.क्रि.) : मेल होकर।

सन्धारक (वि.) : धारण करने वाला, रोकने वाला।

सन्धारण (नपुं.) : धारण करना, रोकना।

सन्धारेति (क्रि.) : सहन करता है, धारण करता है, रोक लगाता है।

सन्धावति (क्रि.) : दौड़ता है।

सन्धि (स्त्री.) : मेल, समझौता।

सन्धिच्छेदक (वि.) : सेंध लगाने वाला।

सन्धिभेद-जातक : गौ और शेर की संतान के बीच स्थापित हुए मैत्रीसंबंध को एक गीदड़ ने नष्ट किया (३४९)।

सन्धिमुख (नपुं.) : सेंध का मुंह।

सन्धीयति (क्रि.) : मेल मिलाया जाता है।

सन्धुपायति (क्रि.) : धुआं बाहर निकालता है।

सन्धूपेति (क्रि.) : धुआं देता है।

सन्नकद्दु (पु.) : वृक्ष विशेष।

सन्नद्ध (वि.) : बंधा हुआ, हथियारबंद।

सन्नय्हति (क्रि.) : बांधता है, शस्त्र बाँधता है।

सन्नाह (पु.) : कवच, एक साथ बांधना।

सन्निकट्ठ (नपुं.) : पड़ोस।

सन्निकास (वि.) : मेल खाता हुआ, समान।

सन्निचय (पु.) : संग्रह, याद करना।

सन्निचित (वि.) : संग्रहीत।

सन्निट्ठान (नपुं.) : सारांश, निष्कर्ष।

सन्निधान (नपुं.) : सामीप्य, समानता, नजदीकी।

सन्निधि (पु.) : एकत्र करना, जमा करना।

सन्निधिकत (वि.) : जमा किया हुआ (माल)।

सन्निधिकारक (पु.) : जमा करके रखने वाला।

सन्निपतति (क्रि.) : सम्मेलन होता है, मिलाप होता है।

सन्निपात (पु.) : सम्मेलन, वात-पित्त-कफ का मेल।

सन्निपातन (नपुं.) : इकट्ठा करना।

सन्निपातिक (वि.) : शारीरिक गुणों (वात-पित्त-कफ) का परिणाम।

सन्निपातेति (क्रि.), सम्मेलन बुलाता है, इकट्ठा करता है, इकट्ठा होते है।

सन्निभ (वि.) : मेल खाता हुआ।

सन्निय्यातन (नपुं.) : सौंपना, स्तीफा देना।

सन्निरुम्भन (नपुं.) : रोकना।

सन्निरुम्भेति (क्रि.) : रोकता है, बाधा करता है।

सन्निवसति (क्रि.) : एक साथ रहता है।

सन्निवारेति (क्रि.) : रोक लगाता है, विरोध करता है।

सन्निवास (पु.) : संगति ।

सन्निवेस (पु.) : एक साथ रहना।

सन्निसीदति (क्रि.) : शांत हो जाता है, स्थिर हो जाता है।

सन्निस्सित (वि.) : आश्रित, संबंधित।

सन्निहित (वि.) : रखा गया, निश्चित किया गया।

सन्नेति (क्रि.) : मिश्रित करता है।

सपजापतिक (वि.) : पत्नी सहित।

सपति (क्रि.) : शपथ खाता है, शाप देता है।

सपत्त (पु., वि.) : विरोधी, शत्रु।

सपत्तभार (वि.) : केवल अपने पंखों का भार लिये।

सपत्ती (स्त्री.) : सपत्नी, सौत।

सपथ (पु.) : शपथ।

सपदान (वि.) : क्रम से।

सपदानं (क्रि.वि.) : लगातार, क्रम से, बिना रुकावट।

सपदानचारिका (स्त्री.) : बिना एक भी घर छोड़े, हर घर से भिक्षाटन करना।

सपदि (अ.) : तुरंत।

सपरिग्गह (वि.) : अपनी संपत्ति अथवा पत्नी के साथ।

सपाक / सोपाक (पु.) : अंत्यज।

सप्प (पु.) : सर्प, सांप।

सप्पच्चय (वि.) : सहेतुक, सकारण।

सप्पञ्ञ (वि.) : बुद्धिमान।

सप्पटिकम्म (वि.) : प्रायश्चित कर्म।

सप्पटिघ (वि.) : जिससे प्रतिक्रिया हो, हानिकारक।

सप्पटिभय (वि.) : भयानक, भयंकर।

सप्पति (क्रि.) : रेंगता है।

सप्पन (नपुं.) : रेंगना।

सप्पपोतक (पु.) : सांप का बच्चा।

सप्पाणक (वि.) : प्राणी-सहित।

सप्पाय (वि.) : लाभ-प्रद, उचित, योग्य।

सप्पायता (स्त्री.) : कल्याणकारी होना।

सप्पि (नपुं.) : घी।

सप्पिनिका / सप्पिनी : राजगृह के बीच से बहने वाली नदी।

सप्पिनी (स्त्री.) : सांपिन, सर्पिणी।

सप्पीतिक (वि.) : प्रीति-युक्त।

सप्पुरिस (पु.) : सत्पुरुष, भला आदमी।

सफरी (स्त्री.) : मछली-विशेष।

सफल (वि.) : फल-युक्त, सफल।

सबल (वि.) : बलशाली।

सब्ब (वि.) : सब, सभी।

सब्बकनिट्ठ (वि.) : सबसे छोटा।

सब्बकम्मिक (वि.) : सर्वकामी (मंत्री)।

सब्बञ्ञुता (स्त्री.) : सर्वज्ञ-भाव।

सब्बञ्ञू : (वि.) सब जानने वाला; (पु.) भगवान बुद्ध।

सब्बट्ठक (वि.) : आठ प्रकार की आठ-आठ चीजें (८ x ८ चीजों का दान)।

सब्बतो (क्रि.वि.) : हर तरह से, हर दिशा से।

सब्बत्थ / सब्बत्र (क्रि.वि.) : सर्वत्र, हर जगह।

सब्बथा (क्रि.वि.) : हर तरह, सर्वथा।

सब्बदा (क्रि.वि.) : सर्वदा, हमेशा।

सब्बदाठ-जातक : गीदड़ ने ब्राह्मण से 'पृथ्वी-जय' नाम का मंत्र सीख कर जंगल के सभी प्राणियों को वशीभूत कर लिया और स्वयं उनका राजा बन बैठा (२४१)।

सब्बधि (क्रि.वि.) : सर्वत्र, सभी ओर, सभी जगह।

सब्बपठम (वि.) : सबसे प्रमुख।

सब्बपठमं (क्रि.वि.) : सबसे आगे, सबसे पहले।

सब्बविदू (वि.) : सब जानने वाला।

सब्बसो (क्रि.वि.) : सब तरह से, पूरी तरह से।

सब्बसोवण्ण (वि.) : संपूर्ण स्वर्णनिर्मित।

सब्बस्स (नपुं.) : तमाम संपत्ति, सर्वस्व।

सब्बस्सहरण (नपुं.) : सारी संपत्ति का हरण।

सब्बावन्त (वि.) : संपूर्ण।

सब्भि (वि.), गुणोंवाला, सभ्य।

सब्रह्मक (वि.) : ब्रह्मलोक सहित।

सब्रह्मचारी (पु.) : सहपाठी, गुरु-भाई।

सभग्गत (वि.) : सभा में गया हुआ।

सभा (स्त्री.) : परिषद, सभा, सभा-भवन।

सभाग (वि.) : समान, एक ही विभाग से संबंधित।

सभागट्ठान (नपुं.) : अनुकूल स्थान, सुविधा का स्थान।

सभागवुत्ती (वि.) : परस्पर शालीनता पूर्वक रहने वाला।

सभाय (नपुं.) : सभा-भवन।

सभाव (पु.) : स्वभाव, प्रकृति।

सभावधम्म (पु.) : स्वभाव का सिद्धांत, स्वभाव-धर्म।

सभोजन (वि.) : भोजन-सहित।

सम : (वि.) सम, बराबर, समान; (पु.) निश्चलता, शांति, श्रम, थकावट।

समं (क्रि.वि.) : बराबर-बराबर, समान।

समक (वि.) : समान, बराबर।

समग्ग (वि.) : समग्र-भाव, एकता ।

समग्गकरण (नपुं.) : मेल कराना।

समग्गत्त (नपुं.) : सामंजस्य, समग्र-भाव, समझौता ।

समग्गरत / **समग्गाराम** (वि.) : एकता में प्रसन्न ।

समङ्गिता (स्त्री.) : युक्त होना।

समङ्गी (वि.) : युक्त, समन्वित।

समङ्गीभूत (वि.) : युक्त, एक भाव।

समचरिया (स्त्री.) : शांत चर्या, शांत आचरण।

समचित्त (वि.) : समता-युक्त चित्त।

समचित्तता (स्त्री.) : चित्त की समता का भाव।

समजातिक (वि.) : एक ही जाति का।

समज्ज (नपुं.) : मेले की भीड़।

समज्जट्ठान (नपुं.) : मेले की जगह।

समज्जाभिचरण (नपुं.), मेलों में घूमना।

समञ्ञा (स्त्री.) : पद, नाम।

समञ्ञात (वि.) : पद-प्राप्त, जाना हुआ।

समण (नपुं.) : श्रमण, भिक्षु, साधु।

समणकुत्तक (पु.) : बनावटी नकली श्रमण / साधु।

समणी (स्त्री.) : साध्वी, श्रमणी, भिक्षुणी।

समणुद्देस (पु.) : श्रामणेर।

समणधम्म (पु.) : श्रमण-धर्म, भिक्षु के कर्तव्य।

समणसारुप्प (वि.) : श्रमण के योग्य।

समता (स्त्री.) : बराबरी, समानता।

समतिक्कन्त (वि.) : लांघ गया, सीमा पार कर गया।

समतिक्कम (पु.) / **समतिक्कमन** (नपुं.) : सीमा लांघ जाना।

समतिक्कमति (क्रि.) : सीमा लाँघ जाता है।

समतित्तिक (वि.) : किनारे तक भरा हुआ।

समतिवत्तति (क्रि.) : सीमा लांघता है, पार कर जाता है।

समत्त : (वि.) संपूर्ण; (नपुं.) समत्व, बराबरी का भाव।

समत्थ (वि.) : समर्थ, सबल।

समत्थन (नपुं.) : झगड़े का फैसला।

समथ (पु.) : चित्त की शांति, कानूनी झगड़ों का निबटारा।

समथभावना (स्त्री.) : चित्त-शांति का अभ्यास, समाधि का अभ्यास।

समधिगच्छति (क्रि.) : प्राप्त करता है, भली प्रकार समझता है।

समनन्तर (वि.) : तुरंत बाद का।

समनन्तरा (क्रि.वि.) : ठीक बाद में।

समनुगाहति (क्रि.) : कारणों का पता लगाता है।

समनुञ्ञ (वि.) : स्वीकार करने वाला, स्वीकृति देने वाला।

समनुञ्ञा (स्त्री.) : स्वीकृति, अनुज्ञा।

समनुञ्ञात (वि.) : स्वीकृत, अनुज्ञात।

समनुपस्सति (क्रि.) : देखता है, अनुभव करता है।

समनुभासति (क्रि.), बातचीत करता है।

समनुभासना (स्त्री.) : वार्तालाप, बातचीत, पूर्वाभ्यास।

समनुयुञ्जति (क्रि.) : प्रश्नोत्तर करता है।

समनुस्सरति (क्रि.) : अनुस्मरण करता है।

समन्त (वि.) : सब, सारा।

समन्तचक्खु (वि.) : सब कुछ देखने वाला।

समन्ततो / समन्ता (क्रि.वि.) : चारों ओर से।

समन्तपासादिक (वि.) : सबको प्रसन्न रखने वाला।

समन्तपासादिका : आचार्य बुद्धघोष द्वारा रचित विनय पिटक की अट्ठकथा।

समन्तभद्दक (वि.) : सबके लिए कल्याण कारक।

समन्नागत (वि.) : युक्त।

समन्नाहरति (क्रि.) : इकट्ठा करता है।

समपेक्खति (क्रि.) : भली प्रकार देखता है।

समप्पेति (क्रि.) : समर्पित करता है, सौंपता है।

समय (पु.) : काल, परिषद, ऋतु, अवसर, धार्मिक मत।

समयन्तर (नपुं.) : भिन्न-भिन्न सम्प्रदाय।

समर (नपुं.) : युद्ध, संग्राम, समर।

समल (वि.) : अपवित्र, मल-सहित।

समलङ्कत (वि.) : अलंकृत।

समलङ्करोति (क्रि.) : सजाता है।

समवाय (पु.) : मेल, एकत्र होना।

समवेक्खति (क्रि.) : भली प्रकार छानबीन करता है, प्रतीक्षा करता है।

समवेपाकिनी (स्त्री.) : हजम करनेवाली।

समसिप्पी (पु.) : समान शिल्पवाले, हमपेशा।

समस्सास (पु.) : सहायता, विश्राम।

समस्सासेति (क्रि.) : सहायता पहुंचाता है, आराम पहुंचाता है।

समा (स्त्री.) : वर्ष, साल।

समाकड्ढति (क्रि.) : सार निकालता है, खींचता है।

समाकड्ढन (नपुं.) : खींचना, घसीटना, सार निकालना।

समाकिण्ण (वि.) : एकत्र किया हुआ, भरा हुआ, बिखेरा हुआ।

समागच्छति (क्रि.) : आकर मिलता है, एकत्र होता है।

समागत (वि.) : एकत्रित।

समागम (पु.) : परिषद, सभा।

समाचरण (नपुं.) / **समाचार** (पु.) : आचरण, व्यवहार।

समाचरति (क्रि.) : आचरण करता है, अभ्यास करता है।

समादपक / **समादपेतु** (पु.) : उत्साहित करने वाला, प्रेरित करने वाला।

समादपन (नपुं.) : उत्साहित करना, प्रेरित करना, उत्तेजित करना।

समादपेति (क्रि.) : उत्साहित करता है, प्रेरित / उत्तेजित करता है, दीक्षित करता है।

समादहति (क्रि.) : जोड़ता है, एकाग्र करता है, (अग्नि), जलाता है।

समादाति (क्रि.) : ग्रहण करता है, स्वीकार करता है।

समादान (नपुं.) : स्वीकार करना, अंगीकार करना, आचरण करना।

समादाय (पू.क्रि.) : लेकर, स्वीकार कर।

समादियति (क्रि.) : अंगीकार करता है।

समादिसति (क्रि.) : आदेश देता है, आज्ञा देता है।

समाधान (नपुं.) : एकत्र करना, एकाग्रता।

समाधि (पु.) : ध्यान, चित्त की एकाग्रता।

समाधिज (वि.) : समाधि से उत्पन्न।

समाधिबल (नपुं.) : समाधि का बल।

समाधिभावना (स्त्री.) : समाधि का अभ्यास।

समाधियति (क्रि.) : समाहित होता है।

समाधिसम्बोज्झङ्ग (पु.) : संबोधि के अंग-स्वरूप समाधि।

समाधिसंवत्तनिक (वि.) : एकाग्रता में सहायक।

समान (वि.) : बराबर।

समानगतिक (वि.) : समान गति वाला।

समानत्त : (नपुं.) समानत्व; (वि.) (समान+अत्त) शांत चित्त वाला।

समानत्तता (स्त्री.) : निष्पक्षपात, शांत भाव।

समानवस्सिक (वि.) : भिक्षु-आयु में समान।

समानसंवासक (वि.) : एक ही साथ रहने वाला।

समानेति (क्रि.) : मेल मिलाता है, पासपास लाता है।

समापज्जति (क्रि.) : (कार्य में) लगता है, रत होता है।

समापज्जन (नपुं.) : कार्य में लगना, रत होना।

समापत्ति (स्त्री.) : प्राप्ति।

समापन्न (वि.) : कार्यरत।

समापेति (क्रि.) : समाप्त करता है।

समायाति (क्रि.) : समीप आता है, एकत्र होता है।

समायुत (वि.) : जुड़ा हुआ।

समायोग (पु.) : मेल, जोड़।

समारक (वि.) : मार (-देव) सहित।

समारद्ध (वि.) : आरंभ किया हुआ।

समारब्भति (क्रि.) : आरंभ करता है।

समारम्भ (पु.) : कार्य, हानि (जानवरों का) वध।

समारुहति (क्रि.) : ऊपर चढता है।

समारुहन (नपुं.) : चढना ।

समारोपन (नपुं.) : चढाना, ऊपर उठाना।

समारोपेति (क्रि.) : चढाता है।

समावहति (क्रि.) : लाता है, घटित करता है, कार्य संपादन करता है।

समास (पु.), समास, शब्दों का संक्षिप्त रुप।

समासेति (क्रि.) : संगति करता है, जोड़ता है।

समाहत (वि.) : चोट खाया हुआ।

समाहनति (क्रि.) : चोट पहुंचाता है।

समाहार (पु.) : संग्रह।

समाहित (वि.) : एकाग्रचित्त।

समिज्झति (क्रि.) : सफल होता है।

समिज्झन (नपुं.) : सफलता।

समिञ्जति / सम्मिञ्जति (क्रि.) : पीछे झुकता है, मोड़ता है।

समित (वि.) : शमित, शांत।

समितं (क्रि.वि.) : निरंतर, सदैव।

समितत्त (नपुं.) : शांत-भाव।

समितावी (वि.) : शांत (व्यक्ति)।

समिति (स्त्री.) : परिषद, समिति।

समिद्ध (वि.) : समृद्ध, सफल।

समिद्धि (स्त्री.) : समृद्धि, सफलता।

समिद्धि-जातक : तपस्वी सूर्योदय होने पर, स्नान के अनंतर एक ही वस्त्र पहने, अपना बदन धूप सुखा रहा था। एक अप्सरा ने उसे प्रलोभित करने की चेष्टा की (१६७)।

समीप (वि.) : नजदीक, करीब, पास।

समीपग (वि.) : समीप गया हुआ।

समीपचारी (वि.) : समीप रहने वाला।

समीपट्ठ (वि.) : समीप स्थित।

समीपट्ठान (नपुं.) : नजदीक का स्थान।

समीर / समीरण (पु.) : हवा, वायु।

समीरति (क्रि.) : हवा चलती है।

समीरेति (क्रि.) : आवाज निकालता है, बोलता है।

समुक्कंसेति (क्रि.) : बड़ाई करता है।

समुग्ग-जातक : असुर ने अपनी सुंदर स्त्री को सुरक्षित रखने के लिए एक डिबिया में बंद किया और उसे निगल गया (४३६)।

समुग्ग (पु.) : बक्सा, टोकरी।

समुग्गच्छति (क्रि.) : ऊपर उठता है, उत्पन्न होता है।

समुग्गत (वि.) : उत्पन्न हुआ, ऊपर उठा हुआ।

समुग्गण्हाति (क्रि.) : पाठ को भली प्रकार ग्रहण करता है।

समुग्गम (पु.) : उत्पत्ति।

समुग्गिरति (क्रि.) : बोलता है, बाहर निकालता है।

समुग्गिरण (नपुं.) : उच्चारण, मुंह से निकले हुए शब्द।

समुग्घात (पु.) : चोट पहुंचाना, आघात करना, हटाना, उखाड़ देना।

समुग्घातक (वि.) : उखाड़ फेंकने वाला, हटाने वाला।

समुग्घातेति (क्रि.) : उखाड़ फेंकता है, हटाता है, दूर करता है।

समुचित (वि.) : संग्रहीत, इकट्ठा।

समुच्चय (पु.) : संग्रह, इकट्ठा।

समुच्छिन्दति (क्रि.) : मूलोच्छेद करता है, नष्ट करता है।

समुच्छिन्दन (नपुं.) : मूलोच्छेद, विनाश।

समुच्छिन्न (वि.) : मूलोच्छेद कृत, विनष्ट।

समुज्जल (वि.) : अत्यंत उज्ज्वल।

समुज्झित (वि.) : फेंका गया, छोड़ दिया गया, परित्यक्त।

समुट्ठहति / **समुट्ठाति** (क्रि.) : ऊपर उठता है, खड़ा होता है।

समुट्ठान (नपुं.) : उत्पत्ति, समुत्थान।

समुट्ठापक (वि.) : उत्पन्न करने वाला।

समुट्ठापेति (क्रि.) : ऊपर उठाता है।

समुत्तरति (क्रि.) : ऊपर से गुजरता है, पार कर जाता है।

समुत्तेजक (वि.) : उत्तेजित करता हुआ।

समुत्तेजन (नपुं.) : उत्तेजना।

समुत्तेजेति (क्रि.) : ऊपर उठाता है, उत्तेजित करता है, तेज करता है।

समुदय (पु.) : उत्पत्ति।

समुदयसच्च (नपुं.) : (दुःख की) उत्पत्ति संबंधी सत्य।

समुदागत (वि.) : उत्पन्न, पैदा।

समुदागम (पु.) : उत्पत्ति, निर्मिती।

समुदाचरण (नपुं.) : आचरण, अभ्यास, व्यवहार।

समुदाचरति (क्रि.) : आचरण करता है।

समुदाचिण्ण (वि.) : आचरित।

समुदाय (पु.) : समूह, समुदाय।

समुदाहरण (नपुं.) / **समुदाहार** (पु.) : शब्दोच्चारण, बातचीत।

समुदाहरति (क्रि.) : शब्द उच्चारण करता है।

समुदीरण (नपुं.) : शब्दोच्चारण, हलचल।

समुदीरेति (क्रि.) : शब्दोच्चारण करता है, हलचल करता है।

समुदेति (क्रि.) : ऊपर उठता है।

समुद्द (पु.) : समुद्र, समंदर।

समुद्दट्ठक (वि.) : समुद्र-स्थित।

समुद्द-जातक : समुद्र देवता ने अत्यंत लोभी कौवे को डराकर भगा दिया (२९६)।

समुद्दवाणिज-जातक : ऋणी व्यापारी द्वीपान्तर में पहुंचकर धनी हो गये (४६६)।

समुद्धट (वि.) : उद्धृत, ऊपर उठाया गया।

समुद्धरति (क्रि.) : ऊपर उठाता है, बाहर निकालता है।

समुपगच्छति (क्रि.) : समीप पहुंचता है।

समुपगमन (नपुं.) : नजदीक पहुंचना।

समुपगम्म (पू.क्रि.) : पास पहुंचकर।

समुपब्बूळ्ह (वि.) : भीड़-युक्त।

समुपसोभित (वि.) : शोभित, अलंकृत।

समुपागत (वि.) : नजदीक आया हुआ।

समुप्पज्जति (क्रि.) : उत्पन्न होता है।

समुब्बहति (क्रि.) : धारण करता है, ढोता है, सहन करता है।

समुब्भवति (क्रि.) : उत्पन्न होता है।

समुल्लपति (क्रि.) : बातचीत करता है।

समुल्लपन (नपुं.) / **समुल्लाप** (पु.) : बातचीत करना, बातचीत।

समुस्सय (पु.) : जमाव, तमाम चीजों का इकट्ठा रूप।

समुस्सापेति (क्रि.) : ऊपर उठाता है।

समुस्साहेति (क्रि.) : उत्साहित करता है, उत्तेजित करता है।

समुस्सित (वि.) : ऊपर उठाया गया, अहंकार-युक्त।

समूलक (वि.) : जड़ सहित।

समूह (पु.) : झुंड, समूह।

समूहनति (क्रि.) : जड़ से उखाड़ देता है।

समेक्खति (क्रि.) : भली प्रकार देखता है, विचार करता है।

समेक्खन (नपुं.) : देखना।

समेत (वि.) : संबंधित, जोड़ दिया गया।

समेति (क्रि.) : पास आता है, इकट्ठा होता है, मेल खाता है, खुश करता है।

समेरित (वि.) : हिलाया गया, गति दिया गया।

समोकिरण (नपुं.) : छिड़कना।

समोकिरति (क्रि.) : छिड़कता है।

समोतत (वि.) : सर्वत्र फैलाया गया।

समोतरति (क्रि.) : (पानी में) उतरता है।

समोदहति (क्रि.) : इकट्ठा करता है।

समोदहन (नपुं.) : इकट्ठा करना, एक स्थान पर रखना।

समोधान (नपुं.) : मेल, मिलाप।

समोधानेति (क्रि.) : मेल मिलाता है।

समोसरण (नपुं.) : इकट्ठा होना।

समोसरति (क्रि.) : एक जगह होता है, एक स्थान पर सम्मिलित होता है।

समोह (वि.) : मोह-युक्त।

समोहित (वि.) : अंतर्गत, ढका हुआ, एकत्र किया हुआ।

सम्पकम्पति (क्रि.) : कांपता है।

सम्पजञ्ञ (नपुं.) : विवेक बुद्धी, ठीक समझ।

सम्पजान (वि.) : ठीक प्रकार समझने वाला।

सम्पज्जति (क्रि.) : घटित होता है, सफल होता है।

सम्पज्जन (नपुं.) : सफलता, घटित होना।

सम्पज्जलित (वि.) : प्रज्वलित।

सम्पटिच्छति (क्रि.) : प्राप्त करता है, स्वीकार करता है।

सम्पटिच्छन (नपुं.) : स्वीकृति।

सम्पति (अ.) : सम्प्रति, अभी।

सम्पतित (वि.) : पतित, गिरा, घटित।

सम्पत्त (वि) : पहुंचा, जिसने प्राप्त किया।

सम्पत्ति / सम्पदा (स्त्री.) : धन, संपत्ति।

सम्पदान (नपुं.) : देना, चतुर्थी विभक्ति।

सम्पदालन (नपुं.) : चीरना।

सम्पदालेति / सम्पदाळेति (क्रि.) : चीरता है, फाड़ता है।

सम्पदुस्सति (क्रि.) : दूषित होता है।

सम्पदुस्सन (नपुं.) : दूषण।

सम्पदोस (पु.) : शरारत, बदनामी, दुष्टता।

सम्पन्न (वि.) : सफल।

सम्पयात (वि.) : गया।

सम्पयुत्त (वि.) : संप्रयुक्त, समन्वित, संबंधित।

सम्पयोग (पु.) : मेल, मिलाप।

सम्पयोजेति (क्रि.) : मिलाता है।

सम्पराय (पु.) : भविष्यकाल, भावी अवस्था।

सम्परायिक (वि.) : परलोक संबंधी।

सम्परिकड्ढति (क्रि.) : घसीटता है।

सम्परिवज्जेति (क्रि.) : दूर-दूर रखता है, टाल देता है।

सम्परिवत्तति (क्रि.) : पलटता है, लोटपोट होता है।

सम्परिवारेति (क्रि.) : घेरता है, सेवा में उपस्थित रहता है।

सम्पवत्तेति (क्रि.) : प्रवर्तित करता है।

सम्पवायति (क्रि.) : बहता है, (हवा) चलती है, बाहर आता है।

सम्पवेधति (क्रि.) : जोर से कांपता है, हिलता है, त्रस्त होता है।

सम्पसाद (पु.) : आनंद, प्रसन्नता।

सम्पसादनिय (वि.) : शांति-प्रद, आनंददायी, सुखद।

सम्पसादेति (क्रि.) : प्रसन्न करता है।

सम्पसारेति (क्रि.) : फैलाता है।

सम्पसीदति (क्रि.), प्रसन्न होता है, आनंदित होता है।

सम्पसीदन (नपुं.) : आनंद, प्रीति।

सम्पस्सति (क्रि.) : भली प्रकार देखता है।

सम्पहट्ठ (वि.) : आनंदित, प्रसन्नचित्त।

सम्पहंसक (वि.) : प्रसन्नता-दायक।

सम्पहंसति (क्रि.) : प्रसन्न होता है।

सम्पहार (पु.) : प्रहार देना, झगड़ा होना, लड़ाई होना।

सम्पात (पु.) : एक साथ गिरना, एक साथ आ पड़ना।

सम्पादक (वि.) : तैयारी करने वाला, प्राप्त करने वाला।

सम्पादन (नपुं.) : प्राप्त करना, प्राप्ति।

सम्पादियति (क्रि.) : उसे प्राप्त किया जाता है, उस तक (सामान) पहुंचाया जाता है।

सम्पादेति (क्रि.) : पूरा करने का प्रयास करता है, तैयारी करता है।

सम्पापक (वि.) : लाने वाला, (किसी ओर) ले जाने वाला।

सम्पापन (नपुं.) : ले जाना, पहुंचना।

सम्पापुणाति (क्रि.) : पहुंचता है प्राप्त करता है।

सम्पिण्डन (नपुं.) : मेल मिलाना, पिंड बनाना।

सम्पिण्डेति (क्रि.) : मेल मिलाता है।

सम्पियायति (क्रि.) : प्रेम करता है, प्रेम के साथ स्वागत करता है।

सम्पियायना (स्त्री.) : प्रेम, अत्यंत निकट संबंध।

सम्पीणेति (क्रि.) : संतुष्ट करता है, खुश करता है।

सम्पीळेति (क्रि.) : पीड़ा देता है।

सम्पुच्छति (क्रि.) : पूछता है, अनुमति मांगता है।

सम्पुट (पु.) : दोना, अंजलि।

सम्पुण्ण (वि.) : संपूर्ण।

सम्पुप्फित (वि.) : पुष्पित।

सम्पूजेति (क्रि.) : सम्मान करता है।

सम्पूरेति (क्रि.) : भरता है, पूरा करता है।

सम्फ (नपुं.) : व्यर्थ, निष्प्रयोजन।

सम्फप्पलाप (पु.) : व्यर्थ बकवास।

सम्फस्स (पु.) / **सम्फुसना** (स्त्री.) : स्पर्श।

सम्फुल्ल (वि.) : अच्छी तरह खिला हुआ (फूल)।

सम्फुसति (क्रि.) : स्पर्श करता है।

सम्फुसित (वि.) : स्पर्श किया हुआ।

सम्बद्ध (वि.) : जुड़ा हुआ।

सम्बन्ध (पु.) : परस्पर का संबंध।

सम्बन्धति (क्रि.) : जोड़ता है, एक साथ करता है।

सम्बन्धन (नपुं.) : जोड़ना ।

सम्बरी (स्त्री.) : माया-जाल।

सम्बल (नपुं.) : सामान (खाने-पीने का)।

सम्बहुल (वि.) : अनेक, बहुत।

सम्बाध (पु.) : बाधा, रुकावट, भीड़-भाड़।

सम्बाधेति (क्रि.) : बाधित होता है, भीड़-भाड़ से घिरा रहता है।

सम्बाहति (क्रि.) : रगड़ता है, मालिश करता है।

सम्बाहन (नपुं.) : रगड़ना, मालिश।

सम्बुक (पु.) : सीप।

सम्बुज्झति (क्रि.) : पूरी तरह से समझता है, ज्ञान प्राप्त करता है।

सम्बुद्ध (पु.) : सम्यक संबुद्ध, संपूर्ण ज्ञानी।

सम्बुल-जातक : सम्बुला ने जंगल में भी साथ जाकर अपने कोढी पति की सेवा की (५१९)।

सम्बोज्झङ्ग (पु.) : संबोधि-प्राप्ति में सहायक अंग।

सम्बोधन (नपुं.) : प्रबोध, अष्टमी विभक्ति (संबोधन)।

सम्बोधि (स्त्री.) : पूर्ण ज्ञान।

सम्बोधेति (क्रि.) : ज्ञान देता है, शिक्षा देता है।

सम्भग्ग (वि.) : टूटा हुआ।

सम्भञ्जति (क्रि.) : तोड़ता है।

सम्भत (वि.) : लाया गया।

सम्भत्त (वि.) : मित्र।

सम्भम (पु.) : उत्तेजना, संभ्रम।

सम्भमति (क्रि.) : चक्कर खाता है।

सम्भव (पु.) : उत्पत्ति, जन्म, पैदाइश ।

सम्भवति / सम्भोति (क्रि.) : उत्पन्न होता है।

सम्भवन (नपुं.) : उत्पन्न होना।

सम्भवेसी (पु.) : उत्पत्ति की इच्छा करने वाला।

सम्भार (पु.) : सामग्री।

सम्भावना (स्त्री.) : सत्कार।

सम्भावनीय (वि.) : आदरणीय।

सम्भावेति (क्रि.) : सत्कार करता है, सम्मान करता है।

सम्भिन्दति (क्रि.) : मिलाता है, तोड़ता है।

सम्भिन्न (वि.) : टूटा हुआ।

सम्भीत (वि.) : भयभीत।

सम्भुञ्जति (क्रि.) : मिलकर खाता-पीता है।

सम्भूत (वि) : उत्पन्न हुआ।

सम्भेद (पु.) : मिलावट, संभ्रम।

सम्भोग (पु.) : सहभोज, सहवास।

सम्म (संबोधन) : निकटस्थ व्यक्तियों के लिए संबोधन वचन।

सम्मक्खेति (क्रि.) : माखता है, लेप लगता है।

सम्मक्खन (नपुं.) : माखना।

सम्मग्गत (वि.) : सम्यक मार्गी।

सम्मज्जति (क्रि.) : झाड़ू देता है।

सम्मज्जनी (स्त्री.) : झाड़ू ।

सम्मत (वि.) : जिसे सहमति प्राप्त हो, मान्य, स्वीकृत।

सम्मताल (पु.) : मंजीरा।

सम्मति (क्रि.) : शांत होता है, शमन होता है।

सम्मत्त (वि.) : नशे में धुत्त, मत्त।

सम्मद (पु.) : तंद्रा, (भोजन के बाद) सुस्ती।

सम्मदक्खात (वि.) : सम्यक प्रकार से समझाया गया।

सम्मदञ्ञा / सम्मदञ्ञाय (पू.क्रि.) : अच्छी तरह समझकर।

सम्मदेव (अ.) : ठीक तरह से।

सम्मद्द (पु.) : भीड़।

सम्मद्दति (क्रि.) : कूचल देता है।

सम्मद्दन (नपुं.) : कुचलना, संमर्दन।

सम्मद्दस (वि.) : सम्यक दृष्टि रखने वाला ।

सम्मन्तेति (क्रि.) : मंत्रणा करता है, विचार विमर्श करता है, परामर्श करता है।

सम्मन्नति (क्रि.) : अधिकार देता है, सहमत होता है; स्वीकार करता है, चुनाव करता है।

सम्मपञ्ञा (स्त्री.) : सम्यक प्रज्ञा।

सम्मप्पधान (नपुं.) : सम्यक प्रयत्न।

सम्मसति (क्रि.) : ग्रहण करता है, छूता है।

सम्मा (अ.) : सम्यक रूप से।

सम्माआजीव (पु.) : सम्यक आजीविका।

सम्माकम्मन्त (पु.) : सम्यक आचरण।

सम्मादिट्ठि (स्त्री.) : सम्यक दृष्टि, सही दृष्टि।

सम्मादिट्ठिक (वि.) : सम्यक दृष्टिवाला।

सम्मापटिपत्ति (स्त्री.), सम्यक अभ्यास।

सम्मावाचा (स्त्री.) : सम्यक वाणी।

सम्मावायामो (पु.) : सम्यक प्रयत्न।

सम्माविमुत्ति (स्त्री.) : सम्यक विमुक्ति।

सम्मासङ्कप्प (पु.) : सम्यक संकल्प।

सम्मासति (स्त्री.) : सम्यक स्मृति (मन की जागरूकता)।

सम्मासमाधि (पु.) : सम्यक समाधि (मन की एकाग्रता)।

सम्मासम्बुद्ध (पु.) : संपूर्ण ज्ञानी।

सम्मासम्बोधि (स्त्री.) : सम्यक ज्ञान।

सम्मान (पु.) : सत्कार, गौरव।

सम्मानना (स्त्री.) : आदर, सन्मान।

सम्मिस्स (वि.) : संमिश्र, मिश्रित।

सम्मिस्सता (स्त्री.) : मिश्रित भाव।

सम्मुख (वि.) : आमने-सामने।

सम्मुखा (अ.) : सामने।

सम्मुच्छति (क्रि.) : मूर्छित होता है, मोहवश होता है।

सम्मुञ्जनी (स्त्री.) : झाड़ू।

सम्मुति (स्त्री.) : सम्मति, सामान्य राय।

सम्मुदित (वि.) : प्रसन्न-चित्त।

सम्मुय्हति (क्रि.) : भूल जाता है, विस्मरण होता है।

सम्मुय्हन (नपुं.) : भूलना।

सम्मुस्सति (क्रि.) : भूलता है।

सम्मूळ्ह (वि.) : समूढ, मोहप्राप्त।

सम्मोदक (वि.) : प्रसन्नता-पूर्वक बोलने वाला, नम्र स्वभाव वाला।

सम्मोदति (क्रि.) : आनंदित होता है।

सम्मोदना (स्त्री.) : आनंदित होना।

सम्मोदनीय (वि.) : प्रसन्न होने योग्य।

सम्मोदमान-जातक : बटेर शिकारी के जाल को साथ लिये उड़ गया (३३)।

सम्मोस / सम्मोह (पु.) : मूढता, अचंभा, घबराहट, मोह।

सय (वि.) : अपना, स्वयं, खुद।

सयति (क्रि.) : सोता है, लेटता है।

सयन (नपुं.) : शयन।

सयनघर (नपुं.) : शयनागार, सोने का कमरा।

सयम्भू (पु.) : स्वयंभू।

सयं (अ.) : अपने आप, स्वयं, खुद।

सयंकत (वि.) : स्वयंकृत, स्वयंनिर्मित।

सयंपभा (नपुं.) : स्वयंप्रकाशमान।

सयंवर (पु.) : स्वयंवर, अपने पति का चुनाव स्वयं करना।

सयान (वि.) : सोता हुआ।

सयापित (वि) : लेटाया गया।

सयापेति (क्रि.) : सुलाता है।

सय्ह (वि.) : सहन करने योग्य।

सय्ह-जातक : राजा ने अपने सहपाठी मित्र को राजपुरोहित बनाना चाहा (३१०)।

सर (पु., नपुं.) : शर, तीर; स्वर (आवाज); स्वर (अ-व्यंजन अक्षर); झील, सरकंडा।

सरक (पु.) : कसोरा, सराव।

सरज (वि.) : धूल-सहित।

सरट (पु.) : गिरगिट।

सरण (नपुं.) : शरण, संरक्षण, याद।

सरणागमन (नपुं.) : शरण-ग्रहण।

सरणीय (वि.) : स्मरणीय।

सरति (क्रि.) : याद करता है, बहता है, गतिमान होता है।

सरतीर (नपुं.) : सरोवर का किनारा।

सरतुण्ड (नपुं.) : तीर की नोक।

सरद (पु.) : शरद (ऋतु)।

सरभ (पु.) : मृग की जाति विशेष।

सरभ-जातक / सरभमिग-जातक : सरभ मृग ने राजा को धर्मोपदेश दिया (४८३)।

सरभङ्ग (पु.) : तीर को तोड़ डालना।

सरभङ्ग-जातक : राजा ने जोतिपाल को अपनी धनुर्विद्या का प्रदर्शन करने के लिए कहा (५२२)।

सरभञ्ञ (नपुं.) : गायन-विधि विशेष।

सरभाणक (पु.) : धर्म ग्रंथों का सस्वर पाठ करने वाला।

सरभू (स्त्री.) : छिपकली।

सरभू / सरयू : पांच प्रधान नदियों में से एक।

सरमण्डल (नपुं.) : स्वर-मंडल।

सरस (वि.) : स्वादिष्ट।

सरसी (स्त्री.) : झील।

सरसीरुह (नपुं.) : कमल।

सराग (वि.) : रागी।

सराजक (वि.) : राजा के साथ।

सराव / सरावक (पु.) : सकोरा, कटोरा, प्याला।

सरिक्खक (वि.) : एक जैसा।

सरितब्ब (वि.) : स्मरण करने योग्य।

सरिता (स्त्री) : नदी।

सरितु (पु.) : याद रखने वाला।

सरीर (नपुं.) : शरीर, काया।

सरीरकिच्च (नपुं.) : शौच-कर्म।

सरीरट्ठ (वि.) : शरीर में स्थित।

सरीरधातु (स्त्री.) : बुद्ध के पवित्र शरीर-धातु ।

सरीरनिस्सन्द (पु.) : शरीर का मल।

सरीरप्पभा (स्त्री.) : शरीर-प्रभा, काया की चमक।

सरीरमंस (नपुं.) : शरीर का मांस।

सरीरवण्ण (पु.) : शरीर का वर्ण।

सरीरवलञ्ज (पु.) : शरीर-मल।

सरीरवलञ्जट्ठान (नपुं.) : शौचस्थान।

सरीरसण्ठान (नपुं.) : शरीर-संस्थान, शारीरिक आकार-प्रकार।

सरीरी (पु.) : प्राणी, जीव।

सरूप (वि.) : उसी रूप का।

सरूपता (स्त्री.) : समानता।

सरोज / **सरोरुह** (नपुं.) : कमल।

सलक्खण (वि.) : लक्षणों सहित।

सलभ (पु.) : पतंगा (दीपक पर जलने वाला)।

सलळवती / **सलिलवती** : मध्य-मंडल की दक्षिणी सीमा।

सलाका (स्त्री.) : शलाका, घास की पत्ती, चीर-फाड़ का औजार।

सलाकग्ग (नपुं.) : शलाका भोजन बांटने का स्थान।

सलाकागाह (पु.) : शलाकाओं का ग्रहण करना।

सलाकागाहापक (पु.) : शलाका बांटने वाला।

सलाकाभत्त (नपुं.) : शलाकाओं के अनुसार बांटा जानेवाला भोजन।

सलाकावुत्त (वि.) : शलाका भोजन खाकर रहने वाला।

सलाटु / सलाटुक (वि.) : कच्चा, ताजा।

सलाभ (पु.) : अपना लाभ, स्वयं का लाभ।

सलिल (नपुं.) : जल, पानी।

सलिलधारा (स्त्री.) : जल-धारा, पानी का प्रवाह।

सल्ल (पु.) : तीर।

सल्लक (पु.) : साही, शल्यक।

सल्लकत्त (पु.) : शल्य-कर्ता।

सल्लकत्तिय (नपुं.) : शल्य कर्म।

सल्लक्खण (नपुं.) / **सल्लक्खणा** (स्त्री.) : विवेक, विचार, मनन, चिंतन।

सल्लक्खेति (क्रि.) : ध्यान देता है, चिंतन करता है।

सल्लपति (क्रि.) : बातचीत करता है।

सल्लपन (नपुं.) : बातचीत, वार्तालाप।

सल्लहुक (वि.) : हलका ।

सल्लाप (पु.) : मैत्रीपूर्ण बातचीत।

सल्लिखति (क्रि.) : टुकड़े-टुकड़े कर डालता है।

सल्लीन (वि.) : एकांत प्राप्त।

सल्लीयति (क्रि.) : एकांत-वास करता है।

सल्लीयना (स्त्री.) : एकांत।

सल्लेख (पु.) : कड़ी तपस्या ।

सवङ्क (वि.) : टेढ़ा, टेढेपन सहित।

सवति (क्रि.) : बहता है।

सवन (नपुं.) : कान, सुनना, बहना।

सवनीय (वि.) : श्रवणीय, कर्ण-प्रिय, सुनने योग्य।

सवन्ती (स्त्री.) : नदी।

सविघात (वि.) : विद्वेष के साथ।

सविञ्ञाणक (वि.) : चेतन प्राणी, होश वाल।

सवितक्क (वि.) : सवितर्क, संकल्प-विकल्प युक्त।

सविभत्तिक (वि.) : वर्गीकरण सहित।

सवेर (वि.) : वैर सहित।

सव्यञ्जन (वि.) : सालन-सहित, व्यंजन / अक्षरों सहित।

सस (पु.) : खरगोश।

ससलक्खण / **ससलञ्छन** (नपुं.) : चन्द्रमा में खरगोश का चिन्ह।

ससविसाण (नपुं.) : खरगोश की सींग (असंभव बात)।

सस(पण्डित)-जातक : खरगोश ने अपना शरीर ही दान देने का संकल्प किया (३१६)।

ससक्कं (क्रि.वि.) : निश्चय से, जितना हो सके उतना।

ससङ्क / **ससी** (पु.) : शशांक, चन्द्रमा, चांद।

ससति (क्रि.) : सांस लेता है।

ससत्थ (वि.) : सशस्त्र।

ससम्भार (वि.) : अचार-चटनी आदि के साथ।

ससीसं (क्रि.वि.) : सिर के साथ, सिर तक।

ससुर (पु.) : श्वशुर, पत्नी अथवा पति का पिता।

ससेन (नपुं.) : सेना सहित।

सस्स (नपुं.) : धान्य, फसल।

सस्सकम्म (नपुं.) : खेती।

सस्सकाल (पु.) : खेती काटने का समय।

सस्सत (वि.) : शाश्वत, सदैव रहनेवाला।

सस्सतदिट्ठि (स्त्री.) : शाश्वत-दृष्टि।

सस्सतवाद (पु.) : शाश्वत-मत।

सस्सतवादी (पु.) : आत्मा को नित्य माननेवाला।

सस्सतिक (वि.) : आत्मा को शाश्वत / अनंतकालिक मानने वाला।

सस्समणब्राह्मण (वि.) : श्रमणों तथा ब्राह्मणों सहित।

सस्सामिक (वि.) : जिसका पति हो, जिसका मालिक हो।

सस्सिरीक (वि.) : धन-सहित, ऐश्वर्य-सहित।

सस्सु (स्त्री.) : सास, पति अथवा पत्नी की मां।

सह : (उपसर्ग) साथ; (वि.) सहनशील।

सहकार (पु.) : आम्र-फल, आम।

सहगत (वि.) : युक्त, समन्वित।

सहज / **सहजात** (वि.) : एक साथ उत्पन्न।

सहजाति : नगर-विशेष, जहां वज्जिपुत्तकों द्वारा उठाये गये दस प्रश्नों के बारे में सोरेय्य रेवत स्थविर का मत जानने के लिए यस काकांडपुत्तक स्थविर ने उनसे भेंट की थी।

सहजीवी (वि.) : साथ रहने वाला।

सहति (क्रि.) : सहन करता है, समर्थ होता है, जीत लेता है।

सहत्थ (पु.) : अपना हाथ।

सहधम्मिक (वि.) : अपने (समान) धर्म का मानने वाला।

सहन (नपुं.) : सहन-शक्ति, सहन करना।

सहनन्दी (वि.) : साथ-साथ आनंद मनाने वाला।

सहभू (वि.) : एक साथ उत्पन्न होने वाला।

सहम्पति : अनेक ब्रह्माओं में से एक ब्रह्मा।

सहयोग (पु.) : सहायता।

सहवास (पु.) : साथ रहना।

सहव्य (नपुं.) : मित्र।

सहव्यता (स्त्री.) : मैत्री, मित्रता।

सहसा (क्रि.वि.) : अचानक, जबरदस्ती से -

सहसेय्या (स्त्री.) : साथ-साथ सोना।

सहस्स (नपुं.) : हजार (१०००)।

सहस्सक्ख / **सहस्सनेत्त** (पु.) : सहस्त्राक्ष इंद्र।

सहस्सक्खत्तुं (क्रि.वि.) : हजार बार।

सहस्सग्घनक (वि.) : हजार के मूल्य का।

सहस्सत्थविका / **सहस्सभण्डिका** (स्त्री.) : हजार की थैली।

सहस्सधा (क्रि.वि.) : हजार तरह से।

सहस्सरंसी (पु.) : सूर्य, सहस्त्ररश्मी, सूरज।

सहस्सार (वि.) : (पहिये की) हजार तीलियों वाला।

सहस्सिक (वि.) : हजार वाला।

सहस्सिलोकधातु (स्त्री.) : हजार गुना लोक धातु ।

सहाय / **सहायक** (पु.) : मित्र, दोस्त, सहायक, सहयोगी।

सहायता (स्त्री.) : मित्रता, सहयोग।

सहित (वि.) : साथ, साथ लिये।

सहितब्ब (वि.) : सहन करने योग्य।

सहितु (पु.) : सहन करने वाला।

सहेतुक (वि.) : सकारण।

सहोढ (वि.) : चुराये गये माल के साथ।

सळायतन (नपुं.) : आंख, कान, नाक, जिव्हा, काया और मन ये छह इन्द्रियां।

संयत (वि.) : आत्म-जित।

संयतचारी (वि.) : संयमी।

संयतत्त (वि.) : आत्म-विजयी, स्वयंपर विजय पाने वाला, संयमी ।

संयम (पु.) / **संयमन** (नपुं.) : इंद्रियों का वश में होना, इन्द्रियों पर काबू।

संयमी (पु.) : इंद्रिय-जयी।

संयमेति (क्रि.) : संयम करता है।

संयुञ्जति (क्रि.) : जुड़ता है, संबंधित होता है।

संयुत / **संयुत्त** (वि.) : जुड़ा हुआ, संबंधित।

संयुत्तनिकाय : सुत्त पिटक के पांच निकायों में से एक।

संयूहति (क्रि.) : ढेर बना देता है।

संयोग (पु.) : बन्धन, एकता, स्वर का ताल-मेल।

संयोजन (नपुं.) : संबंध, बंधन।

संयोजनिय (वि.) : संयोजनों (बंधनों) के अनुकूल।

संयोजेति (क्रि.) : जोड़ता है, बांधता है।

संरक्खति (क्रि.) : पहरा देता है, रक्षा करता है।

संरक्खना (स्त्री.) : पहरा देना, संरक्षण।

संवच्छर (नपुं.) : वर्ष, साल।

संवट्टकप्प (पु.) : उच्छिन्न होने वाला कल्प।

संवट्टति (क्रि.) : उच्छिन्न होता है।

संवट्टन (नपुं.) : संवर्तन, लौटना, उच्छिन्न होना।

संवड्ढ (वि.) : बढा हुआ।

संवड्ढति (क्रि.) : बढता है, वृद्धि को प्राप्त होता है।

संवड्ढितत (वि.) : संवर्धित, बढा हुआ ।

संवड्ढेति (क्रि.) : बढाता है, पोसता है, पालन करता है।

संवण्णना (स्त्री.) : व्याख्या, परिभाषा।

संवण्णेति (क्रि.) : व्याख्या करता है।

संवत्तनिक (वि.) : प्रेरक, अनुकूल।

संवत्तति (क्रि.) : विद्यमान रहता है।

संवत्तेति (क्रि.) : प्रवृत्त करता है।

संवर (पु.) : संयम।

संवर-जातक : संवर राजकुमार ने आचार्योपदेश के अनुसार कार्य किया (४६२)।

संवरण (नपुं.) : रोक।

संवरति (क्रि.) : रोकता है।

संवरी (स्त्री.) : रात्रि, रात।

संवसति (क्रि.) : संगति करता है।

संवास (पु.) : साथ रहना।

संवासक (वि.) : साथ-साथ रहने वाला।

संविग्ग (वि.) : संविग्न, उद्विग्न।

संविज्जति (क्रि.) : विद्यमान रहता है।

संविदहति (क्रि.) : व्यवस्था करता है।

संविदहन / संविधान (नपुं.) : व्यवस्था।

संविधाय (पू.क्रि.) : व्यवस्था करके।

संविधायक (वि.) : व्यवस्थापक।

संविभजति (क्रि.) : बांटता है।

संविभजन (नपुं.) / **संविभाग** (पु.) : बांटना।

संविभत्त (वि.) : अच्छी तरह विभक्त।

संविभागी (पु.) : उदार, दानी।

संविहित (वि.) : अच्छी तरह से तैयार किया गया, व्यवस्थित।

संवुत (वि.) : संयत।

संवुतिन्द्रिय (वि.) : संयतेद्रिय।

संवेग (पु.) : व्यग्रता, वैराग्य जागना।

संवेजन (नपुं.) : संवेग पैदा होना।

संवेजनिय (वि.) : संवेग पैदा करने वाला।

संवेजेति (क्रि.) : संवेग पैदा करता है।

संसग्ग (पु.) : संगति, संबंध।

संसट्ठ (वि.) : आसक्त, जुड़ा हुआ।

संसन्दति (क्रि.) : अनुकूल होता है।

संसन्देति (क्रि.) : मिलान करता है।

संसप्पति (क्रि.) : रेंगता है।

संसप्पन (नपुं.) : रेंगना।

संसय (पु.) : संशय, संदेह, शंका।

संसरण (नपुं.) / **संसार** (पु.) : संचरण, संसार-चक्र में घूमना।

संसरति (क्रि.) : चलता-फिरता है, संसरण करता है।

संसादेति (क्रि.) : एक ओर रखता है।

संसारचक्क (नपुं.) : जन्म-मरण का चक्र।

संसारदुक्ख (नपुं.) : जन्म-मरण रूपी दुःख।

संसारसागर (पु.) : संसार-रूपी समुद्र।

संसिज्झति (क्रि.) : सफल होता है, पूरा होता है।

संसित (वि.) : प्रतीक्षित, आशान्वित।

संसिद्ध (वि.) : सफल, पूरा।

संसिद्धि (स्त्री.) : सफलता।

संसिब्बित (वि.) : सिया हुआ, गूँथा गया।

संसीदति (क्रि.) : डूबता है, हिम्मत हार जाता है, दिल बैठ जाता है, असफल होता है।

संसीदन (नपुं.) : तह में जाना, गहराई में जाना।

संसीन (वि.) : गिरा, नष्ट।

संसुद्ध (वि.) : परिशुद्ध, पवित्र।

संसुद्धगहणिक (वि.) : शुद्ध वंश-परंपरा का।

संसुद्धि (स्त्री.) : पवित्रता।

संसूचक (वि.) : सूचित करने वाला।

संसेदज (वि.) : पसीने / नमी में से उत्पन्न होने वाले जीव।

संसेव (पु.) / **संसेवना** (स्त्री.) : संगति।

संसेवति (क्रि.) : संगति करता है, सेवा में रहता है।

संसेवी (वि.) : संगति में रहने वाला, सेवा में रहने वाला।

संहट (वि.) : संहृत, एकत्रित।

संहत (वि.) : दृढ, कसा हुआ।

संहरण (नपुं.) : एकत्र करना, तह बिठाना।

संहरति (क्रि.) : एकत्र करता है।

संहार (पु.) : संक्षेप, संग्रह।

संहारक (वि.) : एकत्र करता हुआ।

संहित (वि.) : युक्त, सहित।

संहिता (स्त्री.) : मेल, स्वरों का ताल-मेल।

सा : (सर्व. स्त्री.) : वह ।

साक (पु., नपुं.) : शाक-सब्जी।

साकच्छा (स्त्री.) : परामर्श, चर्चा।

साकटिक (पु.) : गाड़ी वाला।

साकपत्र (नपुं.) : शाक के पत्ते।

साकल्य (नपुं.) : सकल-भाव, संपूर्णता।

साकिय (वि.) : शाक्य जाति का।

साकियानी (स्त्री.) : शाक्य जाति की स्त्री।

साकुणिक / **साकुन्तिक** (पु.) : चिड़ीमार।

साकेत : कोसल जनपद का प्रसिद्ध नगर। वर्तमान फैजाबाद।

साकेत-जातक : एक ब्राह्मण ने भगवान बुद्ध को अपना पुत्र बना घर ले गया (६८)।

साकेत-जातक : ऊपर की साकेतजातक कथा के समान (२३७)।

साखा (स्त्री.) : शाखा।

साखानगर (नपुं.) : उपनगर।

साखापलास (नपुं.) : शाखा तथा पत्ते।

साखाभङ्ग (पु.) : शाखा का टूटना।

साखामिग (पु.) : बन्दर।

साखी (पु.) : वृक्ष, पेड़।

सागतं (अ.) : स्वागत।

सागर (पु.) : समुद्र, सागर।

सागार (वि.) : घर में रहने वाला।

सागल : राजा मिलिंद की राजधानी।

साचरियक (वि.) : आचार्य के साथ।

साचियोग (नपुं.) : कुटिलता।

साटक (पु.) : वस्त्र, कपड़ा।

साटिका (स्त्री.) : वस्त्र, भिक्षु का वस्त्र।

साठेय्य (नपुं.) : शठता।

साण (नपुं.) : सन या सन का कपड़ा।

साणि (स्त्री.) : परदा।

साणिपसिब्बक (पु.) : सन का थैला।

साणिपाकार (पु.) : सन की दीवार।

सात : (नपुं.) आनंद, आराम; (वि.) आनंददायक।

सातकुम्भ (नपुं.) : स्वर्ण, सोना।

सातच्च (नपुं.) : सातत्य, लगातार लगे रहना।

सातच्चकारी (पु.) : लगातार कार्यरत।

सातच्चकिरिया (स्त्री.) : लगातार लगे रहना।

साततिक (वि.) : लगातार लगे रहने वाला।

सातिरेक (वि.) : अतिरेक के साथ, हद से ज्यादा।

सातोदिका : सुरट्ठ (सूरत) में एक नदी।

सात्थ / सात्थक (वि.) : उपयोगी, अर्थ-सहित।

साथलिक (वि.) : शिथिल, ढीला-ढाला।

सादर (वि.) : आदर सहित, जो आदर दर्शाता हो।

सादरं (क्रि.वि.) : आदर के साथ, प्रेमपूर्वक।

सादियति (क्रि.) : स्वीकार करता है, आनंद उठाता है, अनुमति देता है।

सादियन (नपुं.) / **सादियना** (स्त्री.) : स्वीकृति, अंगीकार करना।

सादिस (वि.) : सदृश, समान।

सादु (वि.) : स्वादिष्ट, मधुर।

सादुतर (वि.) : अधिक स्वादिष्ट, अधिक मधुर।

सादुरस (वि.) : स्वादिष्ट रस, स्वादिष्ट वस्तु।

साधक (वि.) : जो घटित / प्रमाणित हो सके, पूरा करने वाला, साध्य करने वाला।

साधन (नपु.) : प्रमाण, सहायक-कृति, कर्ज-मुक्ति।

साधारण (वि.) : सामान्य।

साधिक (वि.) : अधिकता लिए, अधिक मात्र में।

साधित (वि.) : प्रमाणित, घटित, कर्ज-मुक्त।

साधिय (वि.) : जो संपन्न किया जा सके, जो प्रमाणित किया जा सके।

साधीन-जातक : मिथिला के साधीन नामक राजा की दानशीलता का वर्णन (४९४)।

साधु : (वि.) अच्छा, लाभप्रद, शीलसंपन्न; (अ.) हां, बहुत अच्छा।

साधुकं (क्रि.वि.) : अच्छी तरह।

साधुकम्यता (स्त्री.) : कार्य के भली प्रकार संपन्न होने की इच्छा।

साधुकार (पु.) : 'बहुत अच्छा किया' कहने का भाव।

साधुकीळन (नपुं.) : एक पवित्र त्यौहार।

साधुरूप (वि.) : अच्छे स्वभाव का।

साधुसम्मत (वि.) : आदर प्राप्त, भले आदमियों द्वारा प्रशंसित।

साधुसील-जातक : ब्राह्मण ने आचार्य का उपदेश मानकर अपनी चारों लड़कियां शीलसंपन्न व्यक्ति को दी (२००)।

साधेति (क्रि.) : (कार्य) सिद्ध करता है, (बात को) प्रमाणित करता है, कर्ज उतारता है।

सानु (पु., नपुं.) : ऊंची भूमि।

सानुचर (वि.) : अनुचरों सहित।

सानुवज्ज (वि.) : सदोष, दोषयुक्त।

साप (पु.) : शाप।

सापतेय्य (नपुं.) : संपत्ति, धन।

सापत्तिक (वि.) : आपत्ति प्राप्त, जिसने विनय के नियमों का उल्लंघन किया हो।

सापद (नपुं.) : श्वापद, जानवर।

सापदेस (वि.) : कारण सहित।

सापेक्ख / सापेख (वि.) : अपेक्षा-सहित, आशावान।

साम : (वि.) श्याम, काला; (पु.) : शांति।

साम-जातक : राजा दशरथ द्वारा श्रमण कुमार की हत्या की कथा से मिलती जुलती कथा (५४०)।

सामं (अ.) : स्वयं, अपने आप।

सामग्गी (स्त्री.) : एकता, मेल-जोल।

सामग्गिय (नपुं.) : एकता का भाव।

सामच्च (वि.) : मंत्रियों या मित्रों सहित।

सामञ्ञ (नपुं.) : श्रमण-भाव, श्रामण्य।

सामञ्ञता (स्त्री.) : श्रमणों के प्रति आदर का भाव।

सामञ्ञफल (नपुं.) : श्रमण-जीवन का फल।

सामणक (वि.) : श्रमण के लिए योग्य अथवा आवश्यक।

सामणेर (पु.) : श्रामणेर, भिक्षु का शिष्य, भिक्षु बनने से पूर्व की अवस्था वाला।

सामणेरी (स्त्री.) : श्रामणेरी, भिक्षुणी की शिष्या, भिक्षुणी बनने से पूर्व की अवस्था वाली।

सामत्थिय (नपुं.) : सामर्थ्य, योग्यता।

सामन्त : (नपुं.) पास-पड़ोस; (वि.) पड़ोस-संबंधी।

सामयिक (वि.) : धार्मिक कर्तव्य, समय संबंधी, अस्थायी।

सामा : (स्त्री.) श्यामा (तुलसी); काले रंग की स्त्री।

सामाजिक (पु.) : सदस्य (समाज अथवा परिषद का)।

सामिक / **सामी** (पु.) : पति, स्वामी, मालिक।

सामिनी (स्त्री.) : स्वामिनी, मालकिन।

सामिवचन (नपुं.) : षष्ठी विभक्ति।

सामिस (वि.) : मांस सहित, आहार सहित, भौतिक।

सामीचि (स्त्री.) : उचित, योग्य, मैत्रीपूर्ण आचरण।

सामीचिकम्म (नपुं.) : उचित कार्य, मैत्रीपूर्ण व्यवहार।

सामीचिपटिपन्न (वि.) : उचित पथ पर आरूढ।

सामुद्दिक (वि.) : समुद्र पर रहने वाला, समुद्र की यात्रा करने वाला।

सायक (वि.) : चखने वाला।

सायण्ह / **सायण्हकाल** / **सायण्हसमय** (पु.) : संध्या-काल, शाम, सांझ।

सायति (क्रि.) : चखता है।

सायन (नपुं.) : चखना, स्वाद लेना।

सायनीय (वि.) : चखने योग्य, स्वाद लेने योग्य।

सार : (पु.) तत्व, वृक्ष का सारभाग; (वि.) आवश्यक, श्रेष्ठ, समर्थ।

सारक्ख (वि.) : आरक्षा सहित, संरक्षित।

सारगन्ध (पु.) : वृक्ष के सार की सुगंधि।

सारगवेसी (वि.) : सार खोजने वाला।

सारज्जति (क्रि.) : आसक्त होता है।

सारज्जना (स्त्री.) : आसक्ति।

सारणीय / साराणीय (वि.) याद कराने योग्य, मैत्रीपूर्ण (संवाद)।

सारत्त (वि.) : अनुरक्त।

सारथि / सारथी (पु.) : रथ हांकने वाला।

सारद / सारदिक (वि.) : शरद ऋतु संबंधी।

सारद्ध (वि.) : उत्साही।

सारमय (वि.) : (लकड़ी के) सार से निर्मित।

सारमेय (पु.) : कुत्ता।

सारसूचि (स्त्री.) : मजबूत लकड़ी की बनी सुई।

सारम्भ (पु.) : क्रोध, उत्तेजना, कलह, विवाद।

सारम्भ-जातक : नन्दिविसाल-जातक की ही पुनरुक्ति (८८)।

सारवन्तु (वि.) : सारवान।

सारस (पु.) : सारस पक्षी।

साराग (वि.) : रागयुक्त।

सारिबा (स्त्री.) : सारसपरिल्ला नामक रक्तशोधक पौधा।

सारिपुत्त : भगवान बुद्ध के दो प्रमुख शिष्यों में से एक। उनका एक नाम उपतिस्स भी है। 'सारि' नाम की माता के पुत्र होने से ही वह सारिपुत्त कहलाये।

सारी (वि.) : (समासों में) वितरण करने वाला, अनुसरण करने वाला।

सारी : सारिपुत्त की माता का नाम। पूरा नाम था 'रूपसारी'।

सारीरिक (वि.) : शारीरिक, शरीर से संबंधित।

सारुप्प (वि.) : योग्य, ठीक, उचित।

सारेति (क्रि.) : घूमाता है, चलाता है, याद दिलाता है।

साल (पु.) : श्याल, साला, शाल-वृक्ष।

सालय (वि.) : आलय सहित, आसक्ति सहित।

सालरुक्ख (पु.) : शाल-वृक्ष।

साललट्ठि (स्त्री.) : शाल का पौधा।

सालवन (नपु.) : शाल-वृक्ष।

सालक-जातक : एक सपेरे ने सालक नाम का बंदर पाला था। वह बंदर सांप से खेलता था। यही सपेरे की जीविका का साधन था (२४९)।

साला (स्त्री.) : शाला, भवन।

सालाकिय (नपुं.) : आंख का चिकित्साशास्त्र, आंख में सलाई डालना।

सालि (पु.) : शालि, धान।

सालिका (स्त्री.) : सारिका, मैना।

सालिकेदार-जातक : तोता अपने माता-पिता के लिए धान ले जाता था (४८४)।

सालिक्खेत्त (नपुं.) : धान का खेत।

सालिगब्भ (पु.) : पकती हुई शालि, धान की फसल।

सालित्तक-जातक : बातूनी पुरोहित की कथा (१०७)।

सालित्तकसिप्प (नपुं.) : गुलेल से पत्थर फेंकने की विद्या।

सालिभत्त (नपुं.) : चावल का भोजन।

सालियजातक : गांव के वैद्य ने लड़के को सांप पकड़ने को भेजा। सांप ने वैद्य की ही जान ली (३६७)।

सालुक (नपुं.) : जल-कमल की जड़।

सालूक-जातक : सालूक सुअर को खिला-पिलाकर उसका वध किये जाने की कथा (२८६)।

सालोहित (पु.) : रक्त-संबंधी, रिश्तेदार।

सावक (पु.) : सुनने वाला, शिष्य, श्रावक।

सावकत्त (नपुं.) : श्रावकत्व, शिष्य-भाव।

सावकसङ्घ (पु.) : शिष्यों का समूह।

सावज्ज : (वि.) सदोष; (नपुं.) सदोषपन।

सावज्जता (स्त्री.) : सदोष होने का भाव।

सावट्ट (वि.) : भंवर-सहित।

सावण (नपुं.) : घोषणा, सावन का महीना।

सावत्थी (स्त्री.) : श्रावस्ती, कोसल जनपद की राजधानी।

सावसेस (वि.) : अवशेष सहित, अपूर्ण।

साविका (स्त्री.) : शिष्या, श्राविका।

सावेति (क्रि.) : सुनाता है, घोषणा करता है।

सावेतु (पु.) : सुनाने वाला।

सासङ्क (वि.) : आशंका-सहित, संदिग्ध।

सासति (क्रि.) : शिक्षा देता है, शासन करता है।

सासन (नपुं.) : शिक्षण, आज्ञा, संदेश, सिद्धांत।

सासनकर / **सासनकारक** / **सासनकारी** (वि.) : शिक्षा के अनुसार चलनेवाला ।

सासनहर (पु.) : संदेश-वाहक।

सासनान्तरधान (नपुं.) : (बुद्ध-) शासन का लोप।

सासनावचर (वि.) : धर्मानुयायी।

सासनिक (वि.) : बुद्ध-शासन संबंधी।

सासप (पु.) : सरसों के दाने।

सासव (वि.) : आस्रव-सहित, चित्त-मैल युक्त।

साहत्थिक (वि.) : अपने हाथ से किया।

साहस (नपुं.) : हिंसा, दुस्साहस, मनमानी करना।

साहसिक (वि.) : हिंसक या असभ्य।

साहु (अ.) : **'साधु'** शब्द के समान, अच्छा।

साळव (पु.) : कच्ची साग-सब्जी का भोजन।

सिकता (स्त्री.) : बालू।

सिक्का (स्त्री.) : छीका।

सिक्खति (क्रि.) : सीखता है, अभ्यास करता है।

सिक्खन (नपुं.) : शिक्षण, अभ्यास।

सिक्खा (स्त्री.) : शिक्षा, नियम पालन।

सिक्खाकाम (वि.) : उपदेशानुसार चलने का इच्छुक।

सिक्खापक / सिक्खापनक (पु.) : शिक्षक।

सिक्खापद (नपुं.) : शील संबंधी नियम।

सिक्खापन (नपुं.) : शिक्षण।

सिक्खासमादान (नपुं.) : शील ग्रहण करना।

सिक्खित (वि.) : शिक्षित।

सिखण्ड (पु.) : मोर के सिर की कलंगी।

सिखण्डी (पु.) : मोर।

सिखर (नपुं.) : शिखर।

सिखरी (पु.) : शिखर वाला, पर्वत।

सिखा (स्त्री.) : शिखा, (दीपक की) लौ।

सिखी (पु.) : आग; मोर।

सिगाल / सिङ्गाल (पु.) : गीदड़।

सिगालक (नपुं.) : गीदड़ की आवाज।

सिगाल-जातक : गीदड़ ने ब्राह्मण की चादर में मल-मूत्र त्याग दिया (११३)।

सिगाल-जातक : आदमी ने मरे होने का नाटक किया। गीदड़ भाँप गया। आदमी गीदड़ की जान न ले सका (१४२)।

सिगाल-जातक : गीदड़ हाथी के पेट में जाकर कैद हो गया (१४८)।

सिगाल-जातक : गीदड़ ने शेरनी को अपना प्रेम निवेदन किया। शेरनी ने इसे अपना अपमान समझा (१५२)।

सिग्गु (पु.) : वृक्ष-विशेष।

सिङ्ग (नपुं.) : सींग।

सिङ्गार (पु.) : सिंगार, श्रृंगार रस।

सिङ्गिवेर (नपुं.) : अदरक।

सिङ्गी : (वि.) सींग वाला; (स्त्री.) सोना, सुवर्ण।

सिङ्गीनद (नपुं.) : सोना, सुवर्ण।

सिङ्गीवण्ण (वि.) : सुनहरा।

सिङ्घति (क्रि.) : नस लेता है, सूंघता है।

सिङ्घाटक (पु., नपुं.) : चौरस्ता।

सिङ्घाणिका (स्त्री.) : नाक की सीढ।

सिज्झति (क्रि.) : घटित होता है, सफल होता है, लाभान्वित होता है।

सिज्झन (नपुं.) : घटना का होना, सफल होना।

सिञ्चक (वि.) : सींचने वाला।

सिञ्चति (क्रि.), सींचता है।

सिञ्चन (नपुं.) : सींचना।

सित : (वि.) श्वेत, सफेद, निर्भृत, आसक्त; (नपुं.) स्मित, मुस्कराहट।

सित्त (वि.) : सिंचित।

सित्थ (नपुं.) : मोम, भात का कण।

सित्थावकारकं (क्रि.वि.) : भात के दाने बिखेर-बिखेरकर।

सित्थक (नपुं.) : मोम।

सिथिल (वि.) : ढीला-ढाला।

सिथिलत्त (नपुं.) : शिथिलता, ढीलापन।

सिथिलभाव (नपुं.) : ढीलापन।

सिद्ध (वि.) : समाप्त, पूरा हुआ, उबला हुआ, पका हुआ।

सिद्धत्थ : (वि.) जिसका अर्थ सिद्ध हो गया; (पु.) शाक्य-मुनि गौतम बुद्ध का नाम।

सिद्धत्थक (नपुं.) : सरसों के दाने।

सिद्धि (स्त्री.) : सफलता।

सिनान (नपुं.) : स्नान, नहाना।

सिनिद्ध (वि.) : चिकना, नरम।

सिनेरु : सिनेरु या सुमेरु पर्वत।

सिनेह / स्नेह (पु.), प्रेम; तेल, चिकनाई।

सिनेहन (नपुं.) : चिकना करना।

सिनेहबिन्दु (नपुं.) : तेल की बूंद।

सिनेहेति (क्रि.) : स्नेह करता है, तेल चुपड़ता है।

सिन्दी (स्त्री.) : खजूर।

सिन्दूर (पु.) : (माथे पर लगाने का) सिंदूर।

सिन्धव : (वि.) सिन्ध सम्बन्धी; (पु.) सिन्धव नमक; सिन्धव घोड़ा।

सिन्धु (पु.) : समुद्र।

सिन्धु (स्त्री.) : हिमालय से निकल कर अरब सागर में गिरने वाली बड़ी नदी।

सिन्धुरट्ठ (नपुं.) : सिन्धु-राष्ट्र।

सिन्धुसङ्गम (पु.) : जहाँ नदी समुद्र में गिरती है।

सिपाटिका (स्त्री.) : फली, छोटी संदूक।

सिप्प (नपुं.) : शिल्प, हुनर, कला।

सिप्पट्ठान (नपुं.) : शिल्प की शाखा।

सिप्पसाला (स्त्री.) : शिल्प-शाला।

सिप्पायतन (नपुं.) : शिल्प की शाखा या आधार।

सिप्पिक / **सिप्पी** (पु.) : शिल्पी, कलाकार।

सिप्पिका (स्त्री.) : सीपी।

सिब्बति / **सिब्बेति** (क्रि.) : सीता है।

सिब्बन (नपुं.) : सीना।

सिब्बनी (स्त्री.) : सियून, उत्कट अनुराग।

सिब्बापेति (क्रि.) : सिलवाता है।

सिम्बलि / **सिम्बली** (स्त्री.) : सेमल का पेड़।

सिर (पु., नपुं.) : सिर।

सिरा (स्त्री.) : शिरा, नस।

सिरि / सिरी (स्त्री.) : भाग्य, ऐश्वर्य, धन।

सिरि-जातक : मुर्गे का मांस खाने वाला पीलवान राजा बना, उसकी पत्नी रानी बनी और तपस्वी राजा पुरोहित बना (२८४)।

सिरिकाळकण्णि-जातक : **सिरिकाळकण्णिपञ्ह** का ही एक और नाम (१९२)।

सिरिकाळकण्णि-जातक : बनारस के व्यापारी ने एक पलंग ऐसे ही किसी के लिए बिछवाकर रखा था, जो उसकी अपेक्षा अधिक शुद्ध-पवित्र हो (३८२)।

सिरिगब्भ (पु.) : धनी आदमी का शयनागार।

सिरिधर / सिरिमन्तु (वि.) : धन-संपन्न, ऐश्वर्यवान।

सिरिमन्द-जातक : **सिरिमन्दपञ्ह** के लिए ही एक और नाम (५००) । सेनक तथा महोसध पंडित के बीच लक्ष्मी तथा सरस्वती में से कौन अधिक श्रेष्ठ है, इस प्रश्न को लेकर जो विवाद हुआ था, वही सिरिमन्दपञ्ह कहलाता है।

सिरिविलास (पु.), ठाट-बाट।

सिरिसयन (नपुं.) : राजकीय शय्या।

सिरिंसप (नपुं) : रेंगता हुआ प्राणी, सांप।

सिरीस (पु.) : सिरस का पेड़।

सिरोजाल (वि.) : सिर ढकने की जाली।

सिरोमणि (पु.) : सिर की मणि।

सिरोरुह (पु., नपुं.) : सिर के बाल।

सिरोवेठन (नपुं.) : पगड़ी।

सिला (स्त्री.) : शिला, पत्थर।

सिलागुळ (नपुं.) : पत्थर का गोला।

सिलाघति (क्रि.) : प्रशंसा करता है, डींग मारता है।

सिलाघा (स्त्री.) : प्रशंसा।

सिलात्थम्भ (पु.) : पत्थर का खंभा।

सिलापट्ट (नपुं.) : पत्थर की पटरी।

सिलापाकार (पु.) : पत्थर की चारदीवारी।

सिलामय (वि.) : शिला-निर्मित।

सिलिट्ठ (वि.) : चिकना।

सिलिट्ठता (स्त्री.) : चिकनापन, चिकनाहट।

सिलुच्चय (पु.) : चट्टान, बड़ा पत्थर।

सिलुत्त (पु.) : धामिन, एक सांप।

सिलेस (पु.) : पहेली, श्लेषालंकार, लेसदार चीज।

सिलेसुम (पु.) : कफ, बलगम।

सिलोक (पु.) : प्रसिद्धि, श्लोक।

सिव : (वि.) कल्याण (स्थल), सुरक्षित (स्थान); (पु.) शिव (महादेव)।

सिवि-जातक : राजा शिवि की, अपना शरीर तक दान दे देने की कथा (४९९)।

सिविका (स्त्री.) : पालकी।

सिसिर : (पु.) शीत ऋतु, ठंडक; (वि.) ठंडा।

सिस्स (पु.) : शिष्य, विद्यार्थी ।

सीघ (वि.) : शीघ्र, तेज।

सीघं (क्रि.वि.) : शीघ्र, जल्दी, तेजी से।

सीघगामी (वि.) : शीघ्र-गामी।

सीघतरं (क्रि.वि.) : अधिक शीघ्रता से।

सीघसीघं (क्रि.वि.) : बहुत जल्दी।

सीघसोत (वि.) : शीघ्र-स्रोत।

सीत / सीतल : (वि.) ठंडा; (नपुं.) ठंड या ठंडक।

सीतभीरुक (वि.) : शीत से भयभीत, ठंड से त्रस्त।

सीता (स्त्री.) : हल की लकीर।

सीतिभाव (पु.) : शीतलता, शांति।

सीतिभूत (वि.) : शांतिभाव को प्राप्त, शमथ-प्राप्त।

सीतोदक (नपुं.) : ठंडा जल।

सीदति (क्रि.) : डूब जाता है, नीचे बैठ जाता है, हार मान लेता है।

सीदन (नपुं.) : डूबना।

सीन (वि.) : डूबा हुआ।

सीपद (नपुं.) : फील पाँव।

सीमट्ठ (वि.) : सीमा के भीतर स्थित।

सीमन्तिनी (स्त्री.) : औरत।

सीमा (स्त्री.) : सीमा, मर्यादा, भिक्षुओं का विनय-कर्म करने के लिए निर्धारित सीमा।

सीमाकत (वि.) : सीमित।

सीमातिग (वि.) : सीमा को लांघ गया।

सीमासमुग्घात (पु.) : पहले की सीमा को तोड़ दिया जाना।

सीमासम्मुति (स्त्री.) : नयी सीमा की स्थापना।

सीर (पु.) : हल, खेती का औजार।

सीरङ्ग (पु.) : हल का मुख्य भाग।

सील (नपुं.) : शील, सदाचार।

सीलकथा (स्त्री.) : शील की व्याख्या।

सीलक्खन्ध (पु.) : शील-स्कन्ध।

सीलगन्ध (पु.) : शील की सुगंधि।

सीलब्बत (नपुं.) : शील-व्रत।

सीलभेद (पु.), शील-भङ्ग, शीलपरिच्छेद।

सीलमय (वि.) : शीलवान, शील-संबंधी।

सीलवन्तु (वि.) : शील का पालन करने वाला।

सीलविपत्ति (स्त्री.) : शील की मर्यादा का उल्लंघन, दुराचार।

सीलविपन्न (वि.) : शील-भङ्ग करने वाला।

सीलसम्पत्ति (स्त्री.) : शील-पालन, सदाचार।

सीलसम्पन्न (वि.) : शीलवान, सदाचारी।

सीलन (नपुं.) : संयत रहना, विनय के अधीन रहना।

सीलवनाग-जातक : सीलव नागराज ने पथभ्रष्ट आदमी को उपकृत किया। दुष्ट ने सीलव नागराज के ही दांतों को जड़ तक उखाड़ा (७२)।

सीलवीमंस-जातक : तपस्वी ने शील का महत्व समझा (३३०)।

सीलवीमंस-जातक : तपस्वी ने रुपये की चोरी कर इस बात को प्रत्यक्ष किया कि विद्या की अपेक्षा भी शील की अधिक प्रतिष्ठा है (३६२)।

सीलवीमंसन-जातक : पुरोहित ने उक्त ढंग से ही विद्या-बल से भी शील-बल का महत्त्व समझा (८६)।

सीलवीमंसन-जातक : प्रथम सीलवीमंस जातक के ही समान कथा (२९०)।

सीलवीमंसन-जातक : ब्राह्मण ने अपने पांच-सौ शिष्यों में से जो सचमुच शीलवान था उसे ही अपनी कन्या प्रदान की (३०५)।

सीलानिसंस-जातक : नाई ने प्राणि-हत्या की। शीलवान उपासक ने अपने पुण्य का कुछ हिस्सा नाई को दे उसकी भी जान बचाई (१९०)।

सीलिक (वि.) : स्वभाव वाला, प्रकृति वाला।

सीली (वि.) : (समास में) शीलवाला, स्वभाव वाला।

सीवथिका (स्त्री.) : कच्चा श्मशान।

सीस (नपुं.) : शीर्ष, सिर; उच्चतम शिखर; धान की बाली; लेख का शीर्षक, सीसा।

सीसकपाल / **सीसकटाह** (पु.) : खोपड़ी।

सीसच्छवि (स्त्री.) : सिर की चमड़ी।

सीसच्छेदन (नपुं.) : सिर का काट डालना ।

सीसपरम्परा (स्त्री.) : एक सिर पर का भार दूसरे सिर पर लेना।

सीसप्पचालन (नपुं.) : सिर का हिलाना-डुलाना।

सीसवेठन (नपुं.) : पगड़ी।

सीसाबाध (पु.) : सिर का दर्द।

सीह (पु.) : सिंह, शेर।

सीहचम्म (नपुं.) : सिंह की चमड़ी।

सीहनाद (पु.) : सिंह-गर्जना।

सीहनादिक (वि.) : सिंह की तरह गर्जने वाला।

सीहपञ्जर (पु.) : सिंह का पिंजरा, झरोखा।

सीहपोतक (पु.) : शेर का बच्चा।

सीहविक्कीळित (नपुं.) : शेर का खेल।

सीहसेय्या (स्त्री.) : सिंह-शय्या, दाहिनी करवट पर।

सीहस्सर (वि.) : सिंह के समान स्वर वाला।

सीहहनु : (वि.) सिंह के समान जबड़े वाला; (पु.) शाक्य-मुनि गौतम बुद्ध के पितामह।

सीहकोट्ठक-जातक : शेर और गीदड़ी के संयोग से एक सिंह-बच्चा पैदा हुआ, जिसका स्वर गीदड़ का था (१८८)।

सीहचम्म-जातक : शेर की खाल ओढ कर चरते फिरते रहने वाले गधे को किसानों ने मार डाला (१८९)।

सीहबाहु : सिंहलद्वीप पर राज्य करने वाले राजा विजय का पिता।

सीहळ (वि.) : सिंहल द्वीप का रहिवासी।

सीहळदीप (नपुं.) : सिंहल द्वीप, लंका द्वीप।

सीहळभासा (स्त्री.) : सिंहल लोगों की भाषा।

सीहासन (नपुं.) : सिंहासन।

सु (उप.) : अच्छा।

सुक (पु.) : तोता।

सुक-जातक : तोते ने पिता के उपदेश की अवज्ञा की ओर जान गँवाई (२५५)।

सुकट / सुकत (वि.) : सुकृत, शुभ कर्म।

सुकर (वि.) : आसान, सुकर।

सुकुमार (वि.) : मृदु, कोमल, मुलायम।

सुकुमारता (स्त्री.) : मृदुभाव, कोमलता।

सुकुसल (वि.) : अत्यन्त दक्ष, सुकुशल।

सुक्क : (वि.) शुक्ल, सफेद; (नपुं.) शुभ कर्म।

सुक्कपक्ख (पु.) : महीने का शुक्ल पक्ष।

सुक्ख (वि.) : सूखा, अकाल।

सुक्खति (क्रि.) : सूखता है।

सुक्खन (नपुं.) : सूखना।

सुक्खापन (नपुं.) : सुखाना।

सुक्खापेति (क्रि.) : सुखाता है, सुखवाता है।

सुख (नपुं.) : सुख, आराम।

सुखं (क्रि.वि.) : सुखपूर्वक, आसानी से, आराम से।

सुखकाम (वि.) : सुख की इच्छा वाला।

सुखत्थिक / सुखत्थी (वि.) : सुखार्थी।

सुखद (वि.) : सुखदायक।

सुखनिसिन्न (वि.) : सुखपूर्वक बैठा हुआ।

सुखपटिसंवेदी (वि.) : सुख का अनुभव करने वाला।

सुखप्पत्त (वि.) : सुख प्राप्त।

सुखभागिय (वि.) : सुख में हिस्सा बंटाने वाला।

सुखयानक (नपुं.) : सुखद-यान, आरामदेह गाड़ी।

सुखविपाक (वि.) : सुख-फलदायी।

सुखविहरण (नपुं.) : सुखपूर्वक रहना।

सुखविहारी-जातक : राज्य-त्याग के बाद सुखपूर्वक विचरने वाले तपस्वी की कथा (१०)।

सुखसम्फस्स (वि.) : सुखद स्पर्श।

सुखसम्मत (वि.) : 'सुख' माना गया।

सुखसंवास (पु.) : सुखद संगति, सुखद सहवास।

सुखायति (क्रि.) : सुखी होता है।

सुखावह (वि.) : सुखद।

सुखित (वि.) : सुखी।

सुखुम (वि.) : सूक्ष्म, बारीक।

सुखुमतर (वि.) : बहुत सूक्ष्म ।

सुखुमत्त (नपुं.) : सूक्ष्मत्व, बारीकपन।

सुखुमाल (वि.) : सुकुमार, कोमल प्रकृति।

सुखुमालता (स्त्री.) : सुकुमारता।

सुखेति (क्रि.) : सुखित करता है।

सुखेधित (वि.) : सुख से पालित-पोषित।

सुगत : (वि.) सुगति-प्राप्त; (पु.) भगवान बुद्ध।

सुगतालय (पु.) : तथागत का निवासस्थान, सुगत की नकल।

सुगति (स्त्री.) : अच्छी अवस्था, सुखी लोक।

सुगती (वि.) : शुभ-कर्म करने वाला।

सुगन्ध (पु., वि.) : सुगंध, सुगंधि।

सुगन्धिक / **सुगन्धी** (वि.) : सुगंध सहित।

सुगहन (नपुं.) : सुग्रहण, भली प्रकार ग्रहण करना।

सुगुत्त / **सुगोपित** (वि.) : सुरक्षित।

सुग्गहित (वि.) : सुगृहीत, भली प्रकार धारण किया गया (पाठ)।

सुङ्क (पु.) : चुंगी, कर, शुल्क।

सुङ्कघात (पु.) : चुंगी-कर से बच निकलना।

सुङ्कट्ठान (नपुं.) : चुंगी घर।

सुङ्किक (पु.) : कर उगाहने वाला।

सुचरित (नपुं.) : सदाचरण।

सुचि (वि.) : पवित्र।

सुचिकम्म (वि.) : शुभ-कर्म करने वाला।

सुचिगन्ध (वि.) : सुगंध युक्त।

सुचिजातिक (वि.) : सफाई पसंद करने वाला।

सुचिवसन (वि.) : शुद्ध वस्त्रों वाला, साफ कपड़ों वाला।

सुचित्त / सुचित्तित (वि.) : अति विचित्र, सुचित्रित।

सुच्चज-जातक : रानी ने पूछा "यदि यह पर्वत सोने का हो जाये, तो क्या इसमें से मुझे कुछ दोगे ?" राजा का उत्तर था, "कण मात्र नहीं।" (३२०)।

सुच्छन्न (वि.) : अच्छी तरह ढका हुआ, अच्छी तरह छाया हुआ।

सुजन (पु.) : भला आदमी, सज्जन।

सुजा (स्त्री.) : यज्ञ में काम आनेवाली श्रुवा या लकड़ी की कड़छी; शुक्र की पत्नी का नाम।

सुजात (वि.) : सुजन्मा, अच्छे कुल में जन्मा।

सुजात-जातक : पुत्र ने कर्कश-भाषी माता को सुधारा (२६९)।

सुजात-जातक, राजा ने मिठाई बेचने वाली लड़की की मधुर वाणी सुन, उसे बुलाकर अपनी रानी बना लिया (३०६)।

सुजात-जातक : सुजात ने अपने शोकमग्न पिता के शोक को दूर किया (३५२)।

सुजाता : ऊरुवेला के पास के सेनानी गांव के मुखिया की लड़की, जिसने गौतम बुद्ध को वृक्ष-देवता मान खीर से संतर्पित किया था।

सुज्झति (क्रि.) : शुद्ध होता है।

सुञ्ञ (वि.) : शून्य।

सुञ्ञगाम (पु.) : शून्य-ग्राम, खाली गांव।

सुञ्ञता (स्त्री.) : शून्यता।

सुञ्ञागार (नपुं.) : शून्यागार, एकांत स्थल।

सुट्ठु (अ.) : अच्छा।

सुट्ठुता (स्त्री.) : अच्छापन।

सुण (पु.) : कुत्ता।

सुणाति (क्रि.) : सुनता है।

सुणिसा / सुण्हा (स्त्री.) : पुत्रवधू, बहू।

सुत (पु., नपुं) : पुत्र, लड़का; धर्म-ग्रंथ; (वि.), सुना हुआ।

सुतत्त (वि.) : भली प्रकार गर्म किया गया।

सुतधर (नपुं.) : बहु-श्रुत, धर्म-ग्रंथ को कंठस्थ करने वाला।

सुतनु (वि.) : सुंदर शरीर वाला।

सुतन-जातक : पुत्र ने आदमखोर यक्ष के पास जाना स्वीकार किया (३९८)।

सुतप्पय (वि.) : आसानी से सन्तुष्ट हो सकने वाला।

सुतवन्तु (वि.) : बहु-श्रुत, विद्वान।

सुति (स्त्री.) : श्रुति, अनु-श्रुति; वैदिक परंपरा; आवाज।

सुतिहीन (वि.) : बहरा।

सुत्त : (वि.) सोया हुआ; (नपुं.) धागा, बुद्धोपदेश, (व्याकरण का) सूत्र।

सुत्तकन्तन (नपुं.) : सूत कातना।

सुत्तकार (पु.) : सूत्तों का रचयिता।

सुत्तगुळ (नपुं.) : सूत का गोला।

सुत्तन्त (पु., नपुं.) : बुद्धोपदेश या प्रवचन।

सुत्तन्तिक (वि.) : सारे सुत्तपिटक या उसके एक हिस्से को कंठस्थ करने वाला ।

सुत्तनिपात : सुत्त पिटक के खुद्दक निकाय के ग्रंथों में से एक।

सुत्तपिटक : तीन पिटकों में से एक पिटक।

सुत्तमय (वि.) : सूत्र-निर्मित।

सुत्ति (स्त्री.) : सीप, घोंघा।

सुदं (अ.) : सर्वनाम, क्रियाविशेषण आदि के साथ प्रयोग में आने वाला एक शब्द प्रयोग, इसका कोई निश्चित अनुवाद नहीं है।

सुदन्त (वि.) : सुशिक्षित।

सुदस्स (वि.) : आसानी से देखा गया।

सुदस्सन (वि.) : सुदर्शन, सुंदर रूप वाला।

सुदिट्ठ (वि.) : भली प्रकार देखा गया।

सुदिन्न (वि.) : भली प्रकार दिया गया।

सुदुक्कर (वि.) : जो बड़ी कठिनाई से किया जा सके।

सुदुत्तर (वि.) : जिससे बड़ी कठिनाई से पार पाया जा सके।

सुदुद्दस (वि.) : जो बड़ी कठिनाई से देखा जा सके।

सुदुब्बल (वि.) : अत्यंत दुर्बल।

सुदुल्लभ (वि.) : अत्यंत दुर्लभ।

सुदेसित (वि.) : भली प्रकार उपदिष्ट।

सुद्द (पु.) : शूद्र, वर्ण व्यवस्था में चौथे वर्ण का।

सुद्ध (वि.) : शुद्ध, पवित्र, साफ।

सुद्धता (स्त्री.) / **सुद्धत्त** (नपुं.) : शुद्धता।

सुद्धाजीव (वि.) : शुद्ध आजीविका वाला।

सुद्धावास (पु.) : शुद्ध निवास स्थल, शुद्धावास – ब्रह्मलोक का आवास।

सुद्धावासिक (वि.) : शुद्धावास में रहने वाला।

सुद्धि (स्त्री.) : शुद्धि, पवित्रता।

सुद्धिमग्ग (पु.) : पवित्रता का मार्ग।

सुद्धोदन : कपिलवस्तु का शाक्य राजा तथा शाक्यमुनि गौतम बुद्ध के पिता।

सुधन्त (वि.) : अच्छी तरह फूंका गया या साफ किया गया।

सुधम्मता (स्त्री.) : अच्छा स्वभाव।

सुधा (स्त्री.) : अमृत; चूना।

सुधाकम्म (नपुं.) : चूना पोतना।

सुधाकर (पु.) : चंद्रमा।

सुधाभोजन-जातक : कंजूस कोसिय की कथा (५३५)।

सुधी (पु.) : बुद्धिमान आदमी।

सुधोत (वि.) : अच्छी तरह धोया गया ।

सुनख (पु.) : कुत्ता।

सुनखी (स्त्री.) : कुत्ती।

सुनख-जातक : मालिक के सो जाने पर कुत्ता भाग गया (२४२)।

सुनहात / **सुन्हात** (वि.) : अच्छी प्रकार नहाया हुआ।

सुनिसित (वि.) : भली प्रकार तेज किया गया।

सुन्दर (वि.) : आकर्षक, सुंदर।

सुन्दरतर (वि.) : अधिक सुंदर।

सुन्दरिका : कोसल जनपद की नदी।

सुनापरन्त : सुप्पारक पत्तन (बंदरगाह) के आसपास का प्रदेश।

सुपक्क (वि.) भली प्रकार पका हुआ।

सुपण्ण (पु.) : गरुड।

सुपत्त-जातक : सुपत्त कौवे की कथा (२९२)।

सुपति (क्रि.) : सोता है।

सुपरिकम्मकत (वि.) : अच्छी तरह से माँजा हुआ या साफ किया हुआ।

सुपरिहीन (वि.) : अत्यंत दुबला-पतला।

सुपिन / **सुपिनक** / **सुपिनन्त** (नपुं.) : स्वप्न, सपना।

सुपिनपाठक (पु.) : स्वप्नों की व्याख्या करने वाला।

सुपुप्फित (वि.) : फूलों से ढका हुआ, पूरी तरह से खिला हुआ।

सुपोठित / सुपोथित (वि.) : भली प्रकार पीटा गया।

सुप्प (पु., नपुं.) : सूप, छाज।

सुप्पटिपन्न (वि.) : सुप्रतिपन्न, सुमार्ग पर आरूढ।

सुप्पटिविध (वि.) : भली प्रकार समझ लिया गया।

सुप्पतिट्ठित (वि.) : भली प्रकार प्रतिष्ठित।

सुप्पतीत (वि.) : अच्छी तरह प्रसन्न।

सुप्पधंसिय (वि.) : आसानी से दबा दिया गया।

सुप्पबुद्ध : महामायादेवी तथा महापजापति गौतमी का भाई।

सुप्पभात (नपुं.) : सुप्रभात।

सुप्पवेदित (वि.) : भली प्रकार संतुष्ट।

सुप्पसन्न (वि.) : भली प्रकार प्रसन्न, श्रद्धावान।

सुप्पार : सुप्पारक, सुप्पारा बंदरगाह।

सुप्पारक-जातक : अंधे नाविक के मार्गदर्शन की कथा (४६३)।

सुप्फस्सित (वि.) : ठीक तरह से लगा हुआ।

सुबहु (वि.) : अत्यंत।

सुब्बच / सुवच (वि.) : आज्ञाकारी, विनम्र।

सुब्बत (वि.) : सदाचार-परायण।

सुब्बुट्ठि (स्त्री.) : सु-वृष्टि, पर्याप्त वर्षा।

सुभ (वि.) : शुभ, शुभ (मुहूर्त), अच्छा लगने वाला।

सुभकिण्ण : देवताओं की एक जाति।

सुभग (वि.) : सौभाग्यपूर्ण।

सुभगकरण (नपुं.) : सौभाग्यकरण, (किसी को) प्रिय बनाना अथवा वश में कर लेना।

सुभद्द थेर : भगवान बुद्ध परिनिवृत्त होने को थे। उस समय उन्होंने सुभद्द परिव्राजक को उपदेश दिया। यह भगवान बुद्ध क जीवन काल में उन्हीं के द्वारा दीक्षित उनका अंतिम शिष्य था।

सुभनिमित्त (नपुं.) : शुभ शकुन, सुंदर वस्तु।

सुभर (वि.) : जिसका आसानी से भरण-पोषण किया जा सके, जिसका किसी पर अधिक भार न हो।

सुभिक्ख (वि.) : सुभिक्ष, जहां आहार की कमी न हो।

सुमङ्गल-जातक : सुमङ्गल माली ने प्रत्येक-बुद्ध को हिरन समझ तीर का निशाना बनाया (४२०)।

सुमति (पु.) : बुद्धिमान आदमी।

सुमन (वि.) : प्रसन्न, प्रसन्न-चित्त।

सुमनपुप्फ (नपुं.) : चमेली का फूल।

सुमनमुकुल (नपुं.) : चमेली का कोंपल।

सुमनमाला (स्त्री.) : चमेली की माला।

सुमन सामणेर : भिक्षुणी संघमित्रा का पुत्र सुमन श्रामणेर। महास्थविर महिन्द्र के साथ यह भी सिंहल-द्वीप गया था।

सुमना (स्त्री.) : चमेली, प्रसन्न वदन स्त्री।

सुमनोहर (वि.) : अत्यंत आकर्षक।

सुमानस (वि.) : प्रसन्न चित्त।

सुमापित (वि.) : सुनिर्मित।

सुमुत्त (वि.) : सुविमुक्त, अच्छी तरह से विमुक्त।

सुमेध / सुमेधस (वि.) : बुद्धिमान।

सुमेरु : सुमेरु पर्वत।

सुयिट्ठ (वि.) : अच्छी तरह से आहुति दी गई।

सुयुत्त (वि.) : सुयुक्त, अच्छी तरह से नियुक्त किया गया।

सुर (पु.) : देवता, एक मानवी समूह।

सुरत (वि.) : भक्त, आसक्त, प्रेमी।

सुरत्त (वि.) : अच्छी तरह से रंगा हुआ, अत्यंत लाल।

सुरनदी (स्त्री.) : देवताओं की नदी।

सुरनाथ (पु.) : देवताओं का राजा।

सुरपथ (पु.) : आकाश।

सुरभि (वि.) : सुगंधित।

सुरभिगन्ध (पु.) : सुगंध।

सुररिपु (पु.) : देवताओं का शत्रु, असुर।

सुरसेन : सोलह महाजनपदों में से एक। इसकी गिनती मच्छ जनपद के साथ होती है।

सुरा (स्त्री.) : नशीला द्रव, शराब।

सुराघट (पु.) : शराब का घड़ा।

सुराधुत्त (पु.) : शराब के नशे में मस्त।

सुरापान (नपुं.) : शराब का पीना।

सुरापायिका (स्त्री.) : शराबी औरत।

सुरापीत (वि.) : जिसने शराब पी ली हो।

सुरामद (पु.) : शराब का नशा।

सुरामेरय (नपुं.) : सुरा तथा अन्य नशीले पदार्थ।

सुरासोण्ड / **सुरासोण्डक** (पु.) : शराबी।

सुरापान-जातक : तपस्वियों ने शराब पी ली और नंगे होकर नाचने लगे (८१)।

सुरिय (पु.) : सूर्य।

सुरियुग्गमन (पु.) : सूर्योदय।

सुरियग्गाह (पु.) : सूर्यग्रहण।

सुरियत्थङ्गम (पु.) : सूर्यास्त।

सुरियमण्डल (नपुं.) : सूर्य के इर्द-गिर्द का चक्कर।

सुरियरंसि / सुरियरस्मि (स्त्री.) : सूर्य की किरणे।

सुरुचि-जातक : सुरुचि कुमार तथा सुमेधा के गृहस्थ जीवन का वर्णन (४८९)।

सुरुङ्गा (स्त्री.) : जेलखाना, कैदखाना।

सुरुसुरुकारकं (क्रि.वि.) : खाते समय सुर-सुर की आवाज करना।

सुरूप / सुरूपी (वि.) : सुंदर।

सुरूपिनी (स्त्री.) : सुंदरी।

सुलद्ध (वि.) : सुलाभ।

सुलभ (वि.) : जो आसानी से मिल सके।

सुलसा-जातक : सुलसा वेश्या ने कृतघ्न सत्तक डाकू को चट्टान से गिराकर मार डाला (४१९)।

सुव (पु.) : तोता।

सुवण्ण : (नपुं.) स्वर्ण, सोना; (वि.) अच्छे रंग का, सुंदर।

सुवण्णकार (पु.) : सोनार, सोने का काम करने वाला।

सुवण्णगब्भ (पु.) : सोना रखने के लिए सुरक्षित कमरा।

सुवण्णगुहा (स्त्री.) : सुनहरी गुफा।

सुवण्णता (स्त्री.) : सुवर्णता।

सुवण्णपट्ट (नपुं.) : स्वर्ण-पट्ट, सोने का पट्ट।

सुवण्णपीठक (नपुं.) : स्वर्ण-पीठिका।

सुवण्णमय (वि.) : सोने का बना।

सुवण्णभिङ्कार (पु.) : सोने की झारी।

सुवण्णवण्ण (वि.) : सुनहरे रंग का।

सुवण्णहंस (पु.) : सुनहरा हंस।

सुवण्णकट्टक-जातक : केकड़े ने सांप तथा कौवे की हत्या कर किसान के प्राणों की रक्षा की (३८९)।

सुवण्णभूमि : तीसरी संगीति के बाद सोण तथा उत्तर स्थविरों की प्रचारभूमि।

सुवण्णमिग-जातक : शिकारी ने हिरणी के आत्म-त्याग की भावना से प्रभावित हो हिरण तथा हिरणी दोनों को मुक्त किया (३५९)।

सुवण्णहंस-जातक : लोभी पत्नी ने स्वर्ण-हंस के सभी पर एक साथ नोच लेने चाहे (१३६)।

सुवत्थि (स्त्री.) : स्वस्ति, कल्याण।

सुवम्मित (वि.) : भली प्रकार कवच पहने।

सुववत्थापित (वि.) : सुनिश्चित।

सुवाण (पु.) : कुत्ता, श्वान।

सुवाणदोणि (स्त्री.) : कुत्ते की नाँद या कठौती।

सुविजान (वि.) : आसानी से समझ में आने वाला।

सुविञ्ञापय (वि.) : जिसे आसानी से शिक्षित किया जा सके।

सुविभत्त (वि.) : भली प्रकार विभक्त या व्यवस्थित।

सुविम्हित (वि.) : अत्यंत चकित।

सुविलित्त (वि.) : भली प्रकार लेप किया गया, सुगंधित।

सुविसद (वि.) : साफ-साफ, अत्यंत स्पष्ट।

सुवुट्ठिक (वि.) : पर्याप्त वर्षा-युक्त।

सुवे (क्रि.वि.) : कल (आनेवाला)।

सुसङ्खत (वि.) : सुसंस्कृत, अच्छी तरह तैयार किया गया।

सुसञ्ञत (वि.) : पूर्ण रूप से संयत।

सुसण्ठान (वि.) : भले आकार-प्रकार का।

सुसमारद्ध (वि.) : अच्छी प्रकार से आरंभ किया गया।

सुसमाहित (वि.) : पूर्ण रूप से संयमित।

सुसमुच्छिन्न (वि.) : पूर्णरूप से उखाड़ दिया गया।

सुसान (नपुं.) : श्मशान, मरघट।

सुसानगोपक (पु.) : श्मशान पालक, मरघट का पहरेदार।

सुसिक्खित (वि.) : पूर्णरूप से शिक्षित, अच्छी तरह शिक्षित।

सुसिर : (नपुं.) खोंडर; (वि.) पोलवाला, छिद्रयुक्त।

सुसीम-जातक : सुसीम राजा के पुरोहीत का पुत्र तीन दिन में बनारस से तक्षशिला जाकर हस्ति-विद्या सीख आया (१६३)।

सुसीम-जातक : राजा ने राजमाता को अपने पुरोहित को सौंपा (४११)।

सुसील (वि.) : सुशील।

सुसु : (पु.) शिशु, बालक; (वि.) शिशु-स्वभाव वाला।

सुसुका (स्त्री.) : एक प्रकार की मछली।

सुसुक्क (वि.) : अत्यंत सफेद।

सुसुनाग : कालाशोक का पिता तथा मगध-राजा।

सुसुद्ध (वि.) : अत्यंत परिशुद्ध।

सुस्सति (क्रि.) : बिखर जाता है, सूख जाता है।

सुस्सरता (स्त्री.) : मधुर स्वर होना, सुस्वरता।

सुस्सूसति (क्रि.) : अच्छी तरह सुनता है।

सुस्सूसा (स्त्री.) : सुनने की इच्छा, आज्ञाकारिता।

सुस्सोन्दी-जातक : सुस्सोन्दी रानी गरुड से प्रेम करने लगी (३६०)।

सुहज्ज (नपुं.) : सुहृदयता, मैत्री।

सुहद (पु.) : मित्र, दोस्त।

सुहनु-जातक : महासोण तथा सुहनु अश्वों के बीच मित्रता स्थापित हो गई (१५८)।

सुहित (वि.) : संतुष्ट।

संसुमार (पुं.) : मगरमच्छ।

संसुमारगिरि : भग्ग जनपद का एक प्रसिद्ध नगर।

संसुमार-जातक : बंदर ने मगरमच्छ को छकाया (२०८)।

सूक (पु.) : जौ की सींक।

सूकर (पु.) : सूअर।

सूकरपोतक (पु.) : सूअर का बच्चा।

सूकरमंस (नपुं.) : सूअर का मांस।

सूकर-जातक : सूअर ने शेर को युद्ध के लिए ललकारा (१५३)।

सूकरिक (पु.) : कसाई, सूअरों की हत्या करने वाला।

सूचक (वि.) : सूचना देने वाला।

सूचन (नपुं.) : सूचना।

सूचि (स्त्री.) : सुई, बालों में लगाने का कांटा, बंद दरवाजे के पीछे लगाई जानेवाली लकड़ी।

सूचिका (स्त्री.) : सुई, अर्गला।

सूचिकार (पु.) : सुई बनाने वाला।

सूचिघटिका (स्त्री.) : अर्गला को संभालने वाली साकल।

सूचिघर (नपुं.) : सुई रखने की डिबिया।

सूचिमुख (पु.) : मच्छर।

सूचिलोम (वि.) : सुई जैसे कड़े बालों वाला।

सूचिविज्झन (नपुं.) : मोची का टेकुआ, सूजा।

सूचि-जातक : सुनार ने एक ऐसी सुई बनाई, जिसके एक के बाद एक सात घर (खोल) बनाये (३८६)।

सूजु (वि.) : सीधा, सरल।

सूत (पु.) : रथ हांकने वाला, सारथी।

सूतिघर (नपुं.) : प्रसूतिघर।

सूद / **सूदक** (पु.) : रसोइया, खाना पकाने वाला।

सून (वि.) : सूजा हुआ, फूला हुआ।

सूना (स्त्री.) : कसाई का थड़ा, वधस्थल।

सूनाघर (नपुं.) : कसाईखाना।

सूनु (पु.) : पुत्र, बेटा, लड़का।

सूप (पु.) : कढी, दाल, पतली।

सूपकार / **सूपिक** (पु.) : रसोइया।

सूपतित्थ (वि.) : अच्छे पत्तन या अच्छे घाटवाला।

सूपधारित (वि.) : सुविचारित।

सूपेय्य (वि.) : सूप (कढी) के लिए योग्य।

सूपेय्यपण्ण (नपुं.) : व्यंजन बनाने के लिए पत्ते।

सूयति (क्रि.) : सुना जाता है।

सूर : (वि.) शूर, बहादुर; (पु.) सूरज, सूर्य।

सूरत (वि.) : मृदु, करुणा करने वाला।

सूरता (स्त्री.) / **सूरत्त** (नपुं.) / **सूरभाव** (पु.) : शूरता, बहादुरी।

सूरिय (पु.) : सूरज, सूर्य।

सूल (नपुं.) : शूल, बर्छी, भाला।

सूलारोपण (नपुं.) : सूली पर चढाना।

सेक (पु.) / **सेचन** (नपुं.) : छिड़काव, छिड़कना।

सेख / **सेक्ख** (पु.) : सीखने वाला, उन्नति-पथ पर आरूढ, वह जो अभी अर्हत नहीं बना।

सेखर (नपुं.) : सिर पर धारण की जाने वाली पुष्प-माला।

सेखिय (वि.) : धार्मिक जीवन में अभ्यास-क्रम से संबंधित।

सेग्गु-जातक : पिता ने सेग्गु नामक अपनी बेटी के शील की परीक्षा की (२१७)।

सेट्ठ (वि.), श्रेष्ठ, बड़ा, महान।

सेट्ठतर (वि.) : श्रेष्ठतर, महान।

सेट्ठसम्मत (वि.) : श्रेष्ठ माना गया।

सेट्ठि / **सेट्ठी** (पु.) : सेठ, श्रेष्ठी, धनी, धनवान।

सेट्ठिट्ठान (नपुं.) : सेठ का पद।

सेट्ठिजाया / **सेट्ठिभरिया** (स्त्री.), सेठ की पत्नी, सेठानी।

सेणि (स्त्री.) : श्रेणि, एक-एक पेशा करने वालों की पृथक-पृथक परिषद।

सेणिय (पु.) : श्रेणि का मुखिया।

सेत : (वि.) श्वेत, सफेद; (पु.) सफेद रंग।

सेतकुट्ठ (नपुं.) : सफेद कोढ।

सेतच्छत्त (नपुं.) : श्वेत छत्र।

सेतपच्छाद (वि.) : श्वेत ओढावन, सफेद रजाई।

सेतकेतु-जातक : जाति-अभिमानी श्वेतकेतु को एक चांडाल ने नीचा दिखाया (३७७)।

सेतट्ठिका (स्त्री.) : वृक्षों का गेरुई रोग।

सेति (क्रि.) : सोता है।

सेतु (पु.) : पुल।

सेद (पु.) : पसीना।

सेदक (वि.) : पसीना आते हुए।

सेदन (नपुं.) : भाप से उबालना।

सेदावक्खित्त (वि.) : पसीने से तर, पसीना-पसीना।

सेदेति (क्रि.) : खौलता है, भाप से उबालता है, सेकता है।

सेन / सेनक (पु.) : चील, बाज।

सेना (स्त्री.) : फौज, सेना।

सेनानायक / सेनापति / सेनानी (पु.) : सेना का संचालक, सेना का प्रमुख।

सेनापच्च (नपुं.) : सेनापति का कार्यालय।

सेनाब्यूह (पु.) : सेना की रचना, चक्रव्यूह।

सेनासन (नपुं.) : शयनासन, सोने के लिए स्थान, निवास स्थान, सोने की व्यवस्था।

सेनासनगाहापक (पु.) : सोने के स्थानों की व्यवस्था करने वाला।

सेनासनचारिका (स्त्री.) : एक शयनासन से दूसरे शयनासन तक चलना।

सेनासनपञ्ञापक (पु.) : शयनासनों का व्यवस्थापक।

सेफालिका (स्त्री.) : शेफालिका, नील सिंधुवार का पौधा, निर्गुडी।

सेम्ह (नपुं.) : श्लेष्मा, कफ।

सेय्य (नपुं.) : श्रेष्ठतर।

सेय्य-जातक : मंत्री ने राजा के रनिवास में गड़बड़ी की। उसे देश निकाला दे दिया गया (२८२)।

सेय्यथापि (अ.) : जैसे की, जिस तरह।

सेय्यथिदं / **सेय्यथीदं** (अ.) : निम्नोक्त के अनुसार।

सेय्या (स्त्री.) : शय्या।

सेय्यो (अ.) : अच्छा, श्रेष्ठ।

सेरिचारी (वि.) : स्वेच्छाचारी, यथारुचि विचरने वाला।

सेरिता (स्त्री.) : स्वैर-भाव, स्वतंत्रता।

सेरिवाणिज-जातक : लोभी सेरिवा बनिये ने मुँह की खाई (३)।

सेरिविहारि (वि.) : जैसे चाहे वैसे रहनेवाला।

सेल (पु.) : शैल, पर्वत।

सेलमय (वि.) : पत्थर का बना।

सेलेय्य (नपुं.) : शिलाजीत, एक औषधी।

सेवक : (पु.) नौकर, सेवा करने वाला; (वि.) सेवा करता हुआ, संगति में रहता हुआ।

सेवति (क्रि.) : सेवा करता है, संगति करता है, उपयोग करता है, अभ्यास करता है।

सेवन (नपुं.) / **सेवना** (स्त्री.) : संगति, सेवा, उपभोग।

सेवा (स्त्री.) : सेवा-टहल।

सेवाल (पु.) : काई।

सेवित (वि.) : उपयोग में लाया गया, अभ्यस्त, संगति में रहा।

सेवी (वि.) : संगति करने वाला, अभ्यास करने वाला।

सेस (वि.) : शेष, बचा हुआ।

सेसेति (क्रि.) : शेष छोड़ता है।

सो (सर्व., पु.) : वह।

सोक (पु.) : शोक, दुक्ख ।

सोकग्गि (पु.) : शोकाग्नि।

सोकपरेत (वि.) : शोकाभिभूत।

सोकविनोदन (नपुं.) : शोक का दूर करना।

सोकसल्ल (नपुं.) : शोक-शल्य।

सोकी (वि.) : शोक करने वाला।

सोख्य (नपुं.) : स्वास्थ्य, सुख।

सोखुम्म (नपुं.) : सूक्ष्मता, बारीकी।

सोगन्धिक (नपुं.) : श्वेत कमल।

सोचति (क्रि.) : शोक करता है, पश्चात्ताप करता है।

सोचना (स्त्री.) : शोक करना, अफसोस करना।

सोचेय्य (नपुं.) : पवित्रता।

सोण (पु.) : कुत्ता।

सोणित (नपुं.) : शोणित, रक्त।

सोणी (स्त्री.) : कुत्ती, कटि प्रदेश।

सोण्ड / **सोण्डक** (वि.) : नशेबाज।

सोण्डा : (स्त्री.) हाथी की सूँड; (वि.) नशेबाज औरत।

सोण्डिक (वि.) : शराब बेचने वाला।

सोण्डिका / **सोण्डी** (स्त्री.) : पर्वतों में प्राकृतिक जलाशय।

सोण्ण (नपुं.) : स्वर्ण, सोना।

सोण्णमय (वि.) : स्वर्ण-निर्मित।

सोत : (नपुं.) कान; (पु.) स्त्रोत, धारा।

सोतद्वार (नपुं.) : कर्णेन्द्रिय।

सोतबिल (नपुं.) : कान का छेद।

सोतवन्तु (वि.) : कान वाला।

सोतविञ्ञाण (वि.) : श्रोत्र-विज्ञान।

सोतविञ्ञेय्य (वि.) : कान द्वारा (सुनने से) जानने योग्य।

सोतायतन (नपुं.) : कर्णेन्द्रिय, कान।

सोतब्ब (वि.) : सुनने योग्य।

सोतापत्ति (स्त्री.) : धम्म-पथ रूपी स्त्रोत में आ पड़ना, धम्म-पथ की पहली मंजिल।

सोतापन्न (वि.) : धर्म-पथ रूपी स्त्रोत में आ पड़ा।

सोतिन्द्रिय (नपुं.) : श्रोत्रेन्द्रिय, कान।

सोतु (पु.) : सुनने वाला।

सोतुकाम (वि.) : सुनने की इच्छा वाला।

सोत्थि (स्त्री.) : स्वस्ति, कल्याण, सुरक्षा, आशीर्वचन।

सोत्थिकम्म (नपुं.) : आशीर्वचन।

सोत्थिभाव (पु.) : स्वस्ति-भाव, कुशलता।

सोत्थिसाला (स्त्री.) : अस्पताल।

सोदक (वि.) : भीगा हुआ, पानी चूता हुआ।

सोदरिय (वि.) : एक ही माता की संतान, सहोदर।

सोधक (वि.) : सफाई करने वाला, शुद्ध करने वाला।

सोधन (नपुं.) : सफाई, शुद्धि।

सोधापेति (क्रि.) : साफ कराता है, शुद्ध कराता है।

सोधित (वि.) : साफ किया गया, शुद्ध किया गया।

सोधेति (क्रि.) : साफ करता है, शुद्ध करता है।

सोनक-जातक : अरिंदम तथा सोनक की कथा (५२९)।

सोनन्द-जातक : नंद ने माता-पिता को कच्चा फल ला दिया था। यह उसके भाई सोन के रोष का कारण हुआ (५३२)।

सोपाक (पु.) : चांडाल जाति का व्यक्ति।

सोपान (पु., नपुं.) : सीढी।

सोपानपन्ति (स्त्री.) : सीढियों की कतार।

सोपानपाद (पु.) : सीढियों का आरंभ।

सोपानफलक (नपुं.) : एक सीढी।

सोपानसीस (नपुं.) : ऊपर की सीढी।

सोप्प (नपुं.) : नींद।

सोब्भ (नपुं.) : गड्ढा, जलाशय।

सोभग्ग (नपुं.) : सौभाग्य, सौंदर्य।

सोभग्गपत्त (वि.) : सौभाग्यवान, सुंदर।

सोभण / सोभन (वि.) : शोभन, चमकने वाला, सुंदर।

सोभति (क्रि.) : चमकता है, सुंदर लगता है।

सोम (पु.) : चन्द्रमा, चांद।

सोमदत्त-जातक : अग्निदत्त के पुत्र सोमदत्त की कथा (२११)।

सोमदत्त-जातक : तपस्वी अपने पोषित सोमदत्त नाम के हाथी के बच्चे की मृत्यु पर दुःखी हुआ (४१०)।

सोमनस्स (नपुं.) : सौमनस्य, प्रसन्नता, सुख।

सोमनस्स-जातक : ठग तपस्वी ने राजकुमार सोमनस्स को दंडित कराना चाहा (५०५)।

सोम्म (वि.) : सौम्य, अनुकूल।

सोरच्च (नपुं.) : विनम्रता।

सोवग्गिक (वि.) : स्वर्ग ले जाने वाला।

सोवचस्सता (स्त्री.) : आज्ञाकारिता, विनम्रता।

सोवण्ण (नपुं.) : सोना।

सोवण्णमय (वि.) : स्वर्ण-निर्मित।

सोवत्थिक (नपुं.) : स्वस्तिक।

सोवीरक (पु.) : कांजी, सिरका।

सोस (पु.) : शोषण, सूखना।

सोसन (नपुं.) : सुखाना।

सोसानिक (वि.) : श्मशान में रहने वाला।

सोसेति (क्रि.) : सुखाता है, सुखवाता है।

सोस्सति (क्रि. – भविष्य.) : सुनेगा।

सोहज्ज (नपुं.) : मित्रता।

स्वाकार (वि.) : अनुकूल प्रकृति वाला, भली प्रकृति वाला।

स्वाक्खात (वि.) : भली प्रकार व्याख्या किया गया, या उपदेश किया गया।

स्वागत (वि.) : स्वागत, कंठस्थ।

स्वागतं (क्रि.वि.) : स्वागत (स्वागत हो!)।

स्वातन (वि.) : (आनेवाले) कल से संबंधित।

स्वातनाय (चतुर्थी विभक्ति) : कल के लिए।

स्वे (क्रि.वि.) : (आनेवाला) कल।

ह

हञ्ञति (क्रि.) : मारा जाता है, हनन किया जाता है, नष्ट किया जाता है।

हञ्ञन (नपुं.) : यातना देना, जान से मार डालना।

हट (वि.) : ले जाया गया।

हट्ठ (वि.) : हृष्ट, संतुष्ट, आनंदित।

हट्ठतुट्ठ (वि.) : प्रसन्न-चित्त।

हट्ठलोम (वि.) : रोमांचित।

हठ (पु.) : हिंसा, जिद।

हत (वि.) : मारा गया, जख्मी हुआ, नष्ट कर दिया गया।

हतन्तराय (वि.) : बाधा-रहित।

हतभाव (पु.) : नष्ट किये जाने का भाव।

हतावकासो (वि.) : शुभाशुभ की सीमा से परे।

हत्थ (पु.) : हाथ, हत्था, हात-भर का माप।

हत्थक : (पु.) हत्था, (वि.) हाथ वाला।

हत्थकम्म (नपुं.) : शारीरिक श्रम।

हत्थगत (वि.) : हस्तगत, जिस पर अपना अधिकार हो।

हत्थगहण (नपुं.) / हत्थ-गाह (पु.) : हाथ से पकड़ना।

हत्थच्छिन्न (वि.) : जिसके हाथ कटे हों।

हत्थच्छेद (पु.) / **हत्थछेदन** (नपुं.) : हाथों का कटना।

हत्थतल (नपुं.) : हथेली।

हत्थपसारण (नपुं.), हाथ फैलाना।

हत्थपास (पु.) : हाथ की लंबाई।

हत्थवट्टक (पु.) : हाथ की गाड़ी।

हत्थविकार (पु.) : हाथ का संचालन।

हत्थसार (पु.) : मूल्यवान वस्तु, चलसंपत्ति।

हत्थापलेखन (नपुं.) : भोजनान्तर हाथ चाटना।

हत्थाचरिय (पु.) : हाथी को सिखाने वाला।

हत्थाभरण (नपुं.) : बाजूबंद।

हत्थारोह (पु.) : पीलवान, महावत।

हत्थि / हत्थी (पु.) : हाथी।

हत्थिकन्तवीणा (स्त्री.) : हाथियों को बुझाने की वीणा।

हत्थिकलभ (पु.) : हाथी का बच्चा।

हत्थिकुम्भ (पु.) : हाथी का मस्तक।

हत्थिकुल (नपुं.) : हाथियों की जाति।

हत्थिक्खन्ध (पु.) : हाथी की पीठ।

हत्थिगोपक (पु.) : महावत।

हत्थिदन्त (पु., नपुं.) : हाथी का दांत।

हत्थिदमक (पु.) : हाथी को संयत रखने वाला।

हत्थिदम्म (पु.) : सिखाया हुआ हाथी।

हत्थिनख (पु.), हस्तिनख नाम का गृहविशेश ।

हत्थिपद (नपुं.) : हाथी का पांव या कदम।

हत्थिपाकार (पु.) : हाथियों की शक्ल उत्कीर्ण की हुई दीवार।

हत्थिप्पभिन्न (वि.) : पगलाया हुआ हाथी।

हत्थिबन्ध / हत्थिमेण्ड (पु.) : महावत, हाथी का रखवाला।

हत्थिमत्त (वि.) : हाथी जितना बड़ा।

हत्थिमारक (पु.) : हाथियों का शिकारी।

हत्थियान (नपुं.) : हाथी की सवारी।

हत्थियुद्ध (नपुं.) : हाथियों का युद्ध।

हत्थिरूपक (नपुं.) : हाथी का चित्र।

हत्थिलेण्ड (पु.) : हाथी की विष्ठा।

हत्थिलिङ्गसकुण (पु.) : हाथी की सूंड सदृश चोंच वाला गीध।

हत्थिसाला (स्त्री.) : हस्ति-शाला।

हत्थिसिप्प (नपुं.) : हस्ति-शिल्प, हाथियों को प्रशिक्षित करने की विद्या / कला।

हत्थिसोण्डा (स्त्री.) : हाथी की सूंड।

हत्थिनी (स्त्री.) : हथिनी।

हदय (नपुं.) : दिल, हृदय।

हदयङ्गम (वि.) : अनुकूल, आकर्षक।

हदयनिस्सित (वि.) : हृदय-आश्रित।

हदयमंस (नपुं.) : हृदय का मांस।

हदयवत्थु (नपुं.) : हृदय का सार।

हदयसन्ताप (पु.) : हृदय का संताप या पश्चात्ताप।

हदयस्सित (वि.) : हृदय-संबंधी।

हनति / हन्ति (क्रि.) : मारता है, चोट पहुंचाता है, जख्मी करता है।

हनन (नपुं.) : मारना, चोट पहुंचाना।

हनु / हनुका (स्त्री.) : दाढ, जबड़ा।

हन्तु (पु.) : जान से मारने वाला, चोट पहुंचाने वाला।

हन्त्वा (पूर्व.क्रि.) : मार डाल कर।

हन्द (अ.) : अच्छा, अब, (मेरी बात पर ध्यान दो, इस अर्थ में अव्यय)।

हम्भो (संबोधन) : अपने समान लोगों को संबोधन करने का ढंग।

हम्मिय (नपुं.) : अनेक तल्लों का मकान।

हय (पु.) : घोड़ा।

हयपोतक (पु.) : बछेड़ा।

हयवाही (वि.) : घोड़ों द्वारा खींची गई (गाड़ी)।

हयानीक (नपुं.) : घुड़सवार सेना।

हर (वि.) : ले जाने वाला, लाने वाला।

हरण (नपुं.) : ले जाना।

हरणक (वि.) : ले जाता हुआ, ले जाया जा सकने वाला (पदार्थ)।

हरति (क्रि.) : ले जाता है, चुरा लेता है, लूट लेता है।

हरायति (क्रि.) : लज्जित होता है, चिंतित होता है।

हरिण (पु.) : मृग, हिरन।

हरित : (वि.) हरा, ताजा; (नपुं.) सागसब्जी।

हरितत्त (नपुं.) : हरितपन, हरियाली।

हरितब्ब (वि) : ले जाये जाने योग्य।

हरिताल (नपुं.) : पीली हरताल, हरिताल।

हरितु (पु.) : ले जाने वाला।

हरित्तच (वि.) : सुनहरे रंग का।

हरिस्सवण्ण (वि.) : सुनहरी झलक वाला।

हरीतक (नपुं.) / **हरीतकी** (स्त्री.) : हरड़।

हरे (संबोधन) : अपने से निम्नस्तरीय व्यक्ति को संबोधित करने के लिए शब्द।

हल (नपुं.) : (खेत जोतने का) हल।

हलं (अ.) : पर्याप्त।

हलाहल (नपुं.) : हलाहल, विष।

हलिद्दा / **हलिद्दी** (स्त्री.) : हल्दी।

हवे (अ.) : निश्चय से, सचमुच।

हव्य (नपुं.) : आहुति।

हसति (क्रि.) : मुस्कराता है, हँसता है।

हसन (नपुं.) : हँसी।

हसित (वि., नपुं.) : मुस्काया, हँसी।

हसितुप्पाद (पु.) : मुस्कराहट।

हस्स (नपुं.) : हास्य, हँसी, मजाक।

हंस (पु.) : हंस पक्षी।

हंसति (क्रि.) : रोमांचित होता है।

हंसन (नपुं.) : रोमांचित होना।

हंसपोतक (पु.) : हंस का बच्चा।

हंसी (स्त्री.) : हंसिनी।

हंसेति (क्रि.) : रोमांचित करता है।

हा (अ.) : अफसोस!

हाटक (नपुं.) : सोना, स्वर्ण ।

हातब्ब (वि) : त्याज्य, त्यागना चाहिए।

हातुं (अ.) : त्याग देने के लिए।

हानभागिय (वि.) : छोड़ने के अनुकूल ।

हानि (स्त्री.) : नुकसान।

हापक (वि.) : हानि का कारण, हानि पहुंचाने वाला।

हापन (नपुं.) : हानि ।

हापेति (क्रि.) : उपेक्षा करता है, विलंब करता है, कम कर देता है।

हायति (क्रि.) : घटाता है, व्यर्थ नष्ट करता है।

हायन (नपुं.) : कमी, ऱ्हास, वर्ष।

हायी (वि.) : छोड़ देने वाला।

हार (पु.) : फूलों की माला या मोतियों आदि की माला।

हारक (वि.) : हटाता हुआ, ले जाता हुआ।

हारिका (स्त्री.) : हटाती हुई, ले जाती हुई।

हारिय (वि.) : ले जाया जा सकने वाला।

हास (पु.) : हँसी।

हासकर (वि.) : आनंद-प्रद।

हासेति (क्रि.) : प्रसन्न करता है, हँसाता है।

हि (अ.) : निश्चय से, वास्तव में ।

हिक्का (स्त्री.) : हिचकी।

हिङ्गु (नपुं.) : हींग।

हिङ्गुलक (नपुं.) : सिंदूर।

हित : (नपुं.) भलाई; (वि.) उपयोगी; (पु.) मित्र।

हितकर (वि.) : हित करने वाला, लाभदायक।

हितावह (वि.) : हितकर ।

हितेसी (पु.) : हितैषी, हित चाहने वाला।

हिन्ताल (पु.) : खजूर।

हिम (नपुं.) : बर्फ।

हिमवन्तु (वि.) : हिमालय पर्वत।

हिय्यो / **हीयो** (क्रि.वि.) : कल (गुजरा हुआ)।

हिरञ्ञ (नपुं.) : सोना।

हिरि (स्त्री.) : लज्जा, संकोच।

हिरिमन्तु (वि.) : शर्मीला, संकोची।

हिरीयति (क्रि.) : लज्जा करता है।

हिरीयना (स्त्री.) : लज्जा, संकोच।

हिरोत्तप्प (नपुं.) : लज्जा-भय (पाप से), लज्जा तथा पापभीरुता।

हिंसति (क्रि.) : हिंसा करता है, चोट पहुंचाता है, चिढाता है।

हिंसन (नपुं.) / **हिंसना** / **हिंसा** (स्त्री.) : हिंसा करना, चोट पहुंचाना, चिढाना, मारना।

हिंसापेति (क्रि.) : कष्ट दिलवाता है, हिंसा करवाता है।

हीन (वि.) : नीच, घटा हुआ।

हीनजच्च (वि.) : हीन-जन्मा।

हीनाधिमुत्तिक (वि.) : मंदोत्साह, नीची ओर झुकाव वाला।

हीयति (क्रि.) : हानि को प्राप्त होता है, त्याग दिया जाता है।

हीर / **हीरक** (नपुं.) : खमाची।

हीळन (नपुं.) / **हीळना** (स्त्री.) : घृणा करना।

हीळेति (क्रि.) : घृणा करता है।

हुङ्कार (पु.) : हुंकार, 'हुं' की आवाज।

हुत (नपुं.) : आहुति।

हुतासन (नपुं.) : अग्नि, आग, अंगार।

हुत्त (नपुं.) : यज्ञ, होम।

हुत्वा (पू.क्रि.) : होकर।

हुरं (क्रि.वि.) : दूसरे लोक में, परलोक में।

हे (अ.) : संबोधन के लिए शब्द।

हेट्ठतो (क्रि.वि.) : नीचे से।

हेट्ठा (क्रि.वि.) : नीचे।

हेट्ठाभाग (पु.) : नीचे का हिस्सा।

हेट्ठामञ्चे (क्रि.वि.) : चारपाई के नीचे।

हेट्ठिम (वि.) : नीचला।

हेठक (वि.) : कष्ट पहुंचाने वाला।

हेठेति (क्रि.) : कष्ट पहुंचाता है।

हेतु (पु.) : कारण, हेतु, उद्देश।

हेतुक (वि.) : कारण से संबंधित।

हेतुप्पभव (वि.) : कारण से उत्पन्न।

हेतुवाद (पु.) : हेतुफल का सिद्धांत।

हेम (नपुं.) : सोना।

हेमजाल (नपुं.) : स्वर्ण-जाल।

हेमन्त (पु.) : हेमंत ऋतु, ठंड का मौसम।

हेमन्तिक (पु.) : हेमंत ऋतु संबंधी।

हेमवण्ण (वि.) : सुनहरे रंग वाला।

हेमवतक (वि.) : हिमालय का, हिमालय में रहने वाला।

हेरञ्जिक (पु.) : सुनार।

हेसा (स्त्री.) : घोड़े का हिनहिनाना।

हेसारव (पु.) : घोड़े के हिनहिनाने की आवाज।

होति (क्रि.) : होता है।

होम (नपुं.) : आहुति।

होमदब्बि (स्त्री.) : यज्ञ करने की करछी, यज्ञ करने की कड़छी।

होरा (स्त्री.) : घंटा (समय)।

होरापाठक (पु.) : ज्योतिषी, भविष्य कथन करने वाला।

होरायन्त (नपुं.) : बड़ी घडी।

होरालोचन (नपुं.) : घड़ी।